

চিত্ৰ-ভাগৱত

মহাপুৰুষ
শ্ৰীমন্ত শঙ্কৰদেৱৰ বচিত মহাভাগৱতৰ বৰ্ণিত শ্ৰীকৃষ্ণৰ
শিশু আৰু কিশোৰলীলাৰ প্ৰাচীন চিত্ৰ
আৰু বৰ্ণনা।

সংগ্ৰহ কৰোঁতা
শ্ৰীহৰিনাৰায়ণ দত্তবৰুৱা সাহিত্যৰত্ন

প্ৰথম সংস্কৰণ
৫০১ শঙ্কৰাব্দ

প্ৰকাশক
দত্তবৰুৱা ব্ৰাদাৰ্চ এণ্ড কোং
নলবাৰী, অসম।

মূল্য : ত্ৰিশ টকা।

চিত্ৰ-ভাগৱত

মহাপুৰুষ
শ্ৰীমন্ত শঙ্কৰদেৱ দ্বাৰা ৰচিত মহাভাগৱতম্ বৰ্ণিত
ভগৱান্ শ্ৰীকৃষ্ণকী শিশুকালীন এণ্ড কিশোৰকালীন
লীলাশ্ৰীকা সচিত্ৰ বৰ্ণন।

সংগ্ৰহকৰ্তা
শ্ৰীহৰিনাৰায়ণ দত্তবৰুৱা সাহিত্যৰত্ন

প্ৰথম সংস্কৰণ
৫০১ শঙ্কৰাব্দ

প্ৰকাশক
দত্তবৰুৱা ব্ৰাদাৰ্চ এণ্ড কম্পনী
নলবাৰী, অসম।

HANDLE WITH CARE
RARE



Printed by Phani Bhusan Roy,
at the Prabartak Printing & Halftone Ltd.,
52/3, Bowbazar Street, Calcutta.

35755

759.541
D 954 c

FOREWORD

by

K. K. HANDIQUI, M.A. (Cal. et Oxon),
Vice-Chancellor, Gauhati University.

The history of medieval Indian painting has been the subject of considerable research in recent years, both in India and the West; but very little is known about the materials available in Assam, especially the illuminated manuscripts several of which are known to exist in private and other collections. The present publication is the first systematic attempt to reproduce the paintings incorporated in one such manuscript, that of a portion of the tenth *Skandha* of the Assamese *Bhágavata* composed by Sankardeva. According to the editor, the manuscript is dated *Saka* 1461 or A.D. 1539, and contains both the text and the illustrations. The text was published separately some years ago, and the present volume contains only the illustrations with explanatory notes in Assamese and Hindi. The descriptive notes just below the pictures are in old Assamese and given from the manuscript. Although many of the pictures have been reproduced in one colour, there are enough examples to give an idea of the brilliant colour sense of the original paintings.

The publication of these illustrations will be welcome to all students of medieval Indian painting. The art of illuminated manuscripts, which was

developed in Gujarat or Western India in the twelfth century, and at first practised on palm leaves for embellishing Jaina texts like the *Kalpasútra*, was later extended to Vaishnava works like the *Bhágavata* and especially the *Gitagovinda*, not only in Gujarat but in Rajputana and the Hill States of the Western Himalayas. Large series of paintings were executed to illustrate the *Rámáyana* of Tulsí Dás. and reference may be made also to the miniatures illustrating secular poems; for example, the *Rágamálá* and *Vasantavilása* paintings. The pictures reproduced here illustrate the stories of Krishna's childhood as narrated in the Assamese version of the tenth *Skandha* of the *Bhágavata*. These stories were popular with Rajput painters; and scenes from Krishna's early life form the subject-matter of some of the best known examples of the Kángrá school, which flourished in the second half of the eighteenth century. The Assamese manuscript dated in A. D. 1539 is of special interest in view of the paucity of known examples of Rajput painting earlier than the seventeenth century, and represents one of the earliest attempts to illustrate a version of the *Bhágavata* composed in the vernacular.

The paintings in the original manuscript deserve careful study in relation to those of other Indian schools. The pictures of trees with flowers or birds have considerable charm; and animal life is vividly portrayed with observant sympathy and tenderness of feeling. The maneless Indian lion occurs more than once, and the bison (*methan* in Assamese) which is almost extinct in the province will attract the attention of the student. The costumes follow a conventional pattern, but it is interesting to find the drum and the horn (*pepá*), the familiar auxiliaries of the *Bihu* festival. Treatment of popular mythological topics, in connected sequence, and representation of realistic scenes of rural life constitute a genre in which Rajput painting excels; and these features are exhibited to a considerable extent in the

pictures in our manuscript, though not with a draughtsmanship comparable to the best examples of Rajput art. A detailed study of the original pictures is essential for a correct appreciation of their technical traits and the aims and methods of the Assam school of painting and its relation to folk art.

The publication of a work like this would have done credit to any research institution, but actually we owe it to the enterprising zeal of Srijut Hari Narayan Datta Borooah, a retired school teacher who has devoted his life and energies to the study and publication of old Assamese texts. The labours of the veteran scholar will be amply rewarded if some of his younger contemporaries emulate his example and help to widen our knowledge of a little known phase of Assamese culture.

Gauhati,
April, 1949.

मुखबन्ध

आमि देखा बस्तुबोबब भितबत यिवोब वेहि मनतखोरा, सेहिवोब श्वाभारिकेह मनत थाके। आमि भालपोरा बस्तुबोब बक्षु-बाक्करक बुजावले नाना वर्णना दिँठ आक केतियावा माटित वा पातत आंकिओ देखुवाँठे। आदिम कालत मानुहे बनबीया पशु-पक्षी, गछ-लता आक निजब प्रेमिक-प्रेमिका, शक्र-मित्र आदिबो चिन बाखिवले चित्र अङ्कन वा मूर्ति निर्माण कबिछिन।

किछुमाने कर—मातृजातिकेह प्रथम चित्रकब वृत्ति। प्रस्तुब-युगत येतिया मानुहे चिकार कबि खाइछिन, सेह समयत गुहात थका आइसकले शब तूगत चबाइ, पशु आदिब चित्र खोदित कबिछिन। बयन-शिल्लत येतिया आइसकले पोनते हात दिये, सेह समयतो तेथेतसकले कापोबत नाना फूल बाखिवले आवस्तु कबिछिन। शिल समान कबि चित्र अङ्कन कबा कार्यतो आइसकले पुरुषब लगत हात निदि नाथाकिछिन हेनो। आजिलेके आमाब भाबतब किछुमान ठाईब आइसकले घबब वेबत नाना चित्र अंका, माटिब साजत नाना चित्र अङ्कन कबा, कथाक अनङ्काब पिक्काँते मणुल अंका, बब-बबणब पिबा बजा आदि देखिले आइसकलब चित्रकनाले श्वाभारिक धाँउतिब परिमाण अनुमान कबिब पाबि।

आमाब प्राचीन कामकपब बाणबजाब छुहिता उषाब सथी चित्र-लेखाइ भाबतब सकनो बजा-महाबजा, बाजकौरब आक यदुबंशधब-सकलब चित्र अंकि सथी उषाब आगत धबिछिन वृत्ति पुथित पोरा गाय। इयाब पबा सेहकालब कामकपब चित्रबिद्या-चर्काब अनप

मुखबन्ध

जिन चीजोंको हम देखते हैं, उनमेंसे जो हमें ज्यादा पसन्द आती हैं—सहजही हमारे मानसपट पर अंकित हो जाती हैं और स्वभावतः हम अपनी पसन्द की चीज अपने लोगोंको दिखाना चाहते हैं। इस दिखानेकी एक मात्र क्रिया, उस वस्तुका अंकन कर दिखलाना; यही चित्रकला है। वर्णन से चित्रज्ञान सहज-बोधगम्य है और यह चित्रकला मानव की अविकसित अवस्था में भी थी जो आज मानव-विकासके साथ साथ विकसित हो गयी है।

आदिम-युग में मानव, पशु पक्षियों और पेड़-पौधों आदि का तथा अपने प्रेमी-प्रेमिका, बन्धु-बान्धव, मित्रादियों की पहिचान के लिये उनका चित्रांकन या प्रस्तर मूर्तियों का निर्माण क्रिया करते थे।

कितने ही लोगों का यह कहना है कि आदि चित्रकार—मादृ-जाति है। प्रस्तर-युग में जब मनुष्य शिकार पर ही अपना जीवन-यापन करता था—उस समय कन्दराओंमें रहनेवाली स्त्रियाँ शरों के तूणीरों पर और अन्य वस्तुओं पर पशु-पक्षियों के तथा फूल-पत्तियाँ अंकित किया करती थीं। बुनने के काम को प्रारम्भ करनेवाली माताये भी आदि में फूल-पत्तियोंके चित्र खींचना सीखती थीं। पत्थर को समान कर चित्र खींचने के काम में भी स्त्रियाँ पुरुषों से किसी प्रकार कम न थीं।

आज भी हमारे भारतीय हिन्दु घरोंमें स्त्रियोंके चित्रकला के प्रति प्रेमका उदाहरण मिलता है। घरोंकी दीवारों

प्रमाण पौराण्यः ; किन्तु तार निदर्शनहे सठिकके आङ्गुलियाव नोराबि।

चित्र-शिल्लर उन्नतिर लगे लगे भावतब चित्रवोबत दार्शनिक भार फुटि उठिबलै धवे। भावतब मानुह साभारिकेई दार्शनिक ; सेई कारणे भावतब प्रायवोब चित्र दार्शनिक भारपूर्ण है उठे। खः पूः तिनि हाजार बहब आगर महेज्जोदबो आक हाबाप्लार मूर्ति आक चित्रवोबतो सेई भार देखा याय।

बौद्धयुगत बहूत चित्र खोदित हय।* ऐतिहासिक पण्डित तारानाथे बौद्धचित्रक तिनि श्रेणीत भाग करे—देव, यक्ष आक नाग। तेर्ब मते खः पूः ७ठ शतिकाबपवा खः पूः ७य शतिकालेके देरभारब चित्र मगधत अंकित हैछिल। खः पूः ७य शतिकाबपवा खः ७य शतिकालेके अलौकिक भारब आक भूत-प्रेत आदिब यक्ष नामब चित्रवोब तैयाब हैछिल। कणिकर पाछत मधाभावतत नागवंशीय बजासकले बाजत करे। ७य शतिकाबपवा ९म शतिकालेके तैयाब होरा भारतीय चित्रवोबक नाग भारब बोले।†

कुशान आक नागवंशीय बजासकलर दिनत उदुव-भावतब पूव, मधा आक पश्चिम ऐइ तिनि ठाईत चित्र-चर्चाब तिनटा प्रधान केन्द्र है उठिछिल। खः पूः ७य शतिकाब मगधब महारजा विन्दुसाबब दिनत

* प्राचीन चित्रकबसकलर निजर अंकित चित्रब तलत नाम खोदित कबाब दस्तब नाछिल ; सेई कारणे चित्रकबसकलर नाम पौरा नायाय।

† अमबारतीब खोदित चित्रवोब नागाङ्गुनर समयब।

पर अनेक प्रकारके चित्र खींचना मट्टीके बर्तनो पर चित्रांकन, दुलहिन को जेवर पहनाते समय मंडल बनाना, वर-वरणके पाट को रंगना इत्यादि से हम सहजज्ञा में अनुमान कर सकते हैं कि चित्रकला में मातृजाति भी कितना जिज्ञासा है।

प्राचीन काल के हमारे इस कामरूप में बाण राजा की दुहिता ऊषा की सखी चित्रलेखा भारतके प्रत्यक्त राजा-महाराजा और राजकुंवरों के चित्र अंकित कर राजकुमारों ऊषा को दिखलाती थी ; ऐसा कई पुस्तकों में मिलता है। इस बात से कामरूपमें उस काल की चित्रकला की चर्चाका कुछ प्रमाण अवश्य मिलता है ; किन्तु इसका निदर्शन ठीक तरहसे नहीं किया जा सकता।

चित्रकला भी ज्यों ज्यों उन्नत हाती गई उसमें दार्शनिकता के भाव प्रकट होने लगे। भारतीय जन स्वभावतया दार्शनिक हैं ; इसलिए प्रायः भारतीय चित्र भी पूर्णतः दार्शनिक ही मिलते हैं। इसको सन् के तीन हजार वर्ष पूर्व की सभ्यताके मोहे'जोदड़ी और हड़प्पा में निकले हुए पत्थर पर अंकित चित्रों और मूर्तियों में भी यही भाव दिखाइ पड़ता है।

बौद्धकालमें बहुते चित्रों और मूर्तियों का निर्माण हुआ है।* ऐतिहासिक विशेषज्ञ पं० तारानाथ ने बौद्ध-चित्रों का देव, यक्ष और नाग इन तीन श्रेणियों में विभाजन किया है। उनके मतानुसार ई० पू० ६ठी सदी से ई० पू० ३री सदी तक मगधमें

* प्राचीन चित्रकारी में अपने हारे अंकित चित्रों पर अपना नाम देने की प्रथा नहीं थी ; इसलिए चित्रकारों का नाम उनमें नहीं मिलता है।

चित्रविद्याब विशेष उन्नति हय, किन्तु सेहैबोब आगब देरुभारब । बिन्दुसारक एहै कारणे प्राचीन कलाबन्कक बोले । चित्रशिल्पब चर्चाब केन्द्र पश्चिमे बाङ्गपूतनात हैहिल । १म शतिकाब शिलादित्यब समयत घाईकै यङ्गुभारब चित्र-चर्चा इयात हैहिल । ९म शतिकाब पूबब प्राचीन गौड़त (बाबेन्द्र) धर्मपाल आक देरुपाल बजाब दिनत नाना भारब चित्र नानाबिध धातुपातत चर्चा हैहिल । ७ठ शतिकाबपवा १० शतिकाकै काश्मीर, नेपाल, कामकप, ब्रह्म आक दक्षिणापथब बहत ठाईत देरु, यङ्गु आक नाग भारब चित्र-चर्चाब चिन पोरा याय ।

गुप्तयुगब बाङ्गुयानब कामसूत्रत हिन्दु-चित्रब छयटा अंशब कथा उल्लेख आछे ; येने—(१) रूपभेद अर्थां दर्शनज्ञान, (२) प्रमाण अर्थां अनुभूत, परिमाण आक अवयवब धावणा, (३) भाव अर्थां आकृतिब अनुभूति, (४) लारण्य योजना अर्थां कमनीयता, (५) सादृश्य आक (६) कर्णिकाभङ्ग अर्थां तुली आक बङ्गब ज्ञान ।

१म शतिकाब बाणभट्टब हर्षचरितत कापोबत अंका यमपुत्रीब चित्रब कथा उल्लेख आछे । एहै समयब कामकपब बजा भाङ्गब बन्धने हर्षबर्द्धनकै पठौरा उपटोकनब भितरत बङ्गिन चित्रब उल्लेख आछे ।* आमाब डिमापुबब बाङ्ग-कावेङ्गब चित्रारलीओ वेछि पूबनि बुलि किछुमाने कय । श्रीसूर्या पाहाबब वेछि भाग मूर्ति बोद्धयुगब । खः पूः २य शतिकाबपवा उतुब भाबतत भागरत धर्म प्रचारित हय ; एहै समयत अनेक बिष्णुमूर्ति शिलत थोदित

देवभावमूलक चित्रों का अंकन होता था । ई० पूर्व ३री सदी से ईसवी ३री सदी तक भूत प्रतादियों और अलौकिक भाववाले यक्ष नामक चित्रों का अंकन होता था । कनिष्क के बाद नाग-वंशीय राजाओं ने मध्यभारत पर राज्य किया था । अतः ई० ३री सदी से लेकर ६वीं सदी तक जितने भारतीय चित्र तैयार हुए वे नागभावके चित्र कहलाते हैं ।*

कुशान और नागवंशीय राजाओं के राजत्वकालमें उत्तर भारतके पूर्व, मध्य और पश्चिम के तीनों स्थान चित्रकलाके मुख्य केन्द्र बन गये थे । मगधराज बिन्दुसार के समय में ई० पू० ३री सदी में चित्रकला की विशेष प्रगति हुई । वे चित्र पहले के देव-भावमूलक हैं ; इसलिए बिन्दुसार को प्राचीन चित्रकला का रक्षक कहा जाता है । पश्चिम में चित्र-शिल्पकला का केन्द्र राजपूताना था । ७वीं सदी में शिलादित्य के समयमें मुख्यतया यक्ष भाव के चित्रों की चर्चा ही थी । पूर्व के प्राचीन गौड़ (वारिन्द्र) में ६वीं सदी के धर्मपाल और देवपाल के शासनकाल में अनेक भावों के चित्रों का निर्माण विविध धातु-पत्रों पर हुआ था ।

गुप्त कालीन वाङ्गुयान के कामसूत्र में हिन्दु चित्रों के ६ भेद उल्लिखित हैं—जैसे—(१) रूपभेद यानि दर्शन ज्ञान । (२) प्रभाव यानि अनुभव ; परिमाण और अवयव की धारणा । (३) भाव यानि आकार का अनुभव । (४) लावण्य-योजना यानि

* Early History of Kamrup : By K. L. Baruah, Page 95.

* अमरावतीके प्रस्तर चित्रोंमें नागार्जुनकाल के चित्र हैं ।

হৈছিল। গুপ্তবংশৰ ৰজাসকল বৈষ্ণৱ আছিল; এওঁলোকৰ সময়ত ভাৰতত বিষ্ণু আৰু শিৱপূজা বহুলৰূপে প্ৰচলিত হৈছিল। এই সময়ত শিল্পকলাৰ সম্পূৰ্ণ বিকাশ হোৱা বুলিব লাগে। এই সময়ৰ শিল্পীসকলে পুৰাণৰ ধৰ্মভাৱ লৈ সেইবোৰ তুলিব সহায়েৰে প্ৰকাশ কৰিছিল। অজন্তাৰ গুহাৰ চিত্ৰাৱলী এই সময়তেই তৈয়াৰ হৈছিল বুলি বহুতে ঠাৱৰায়।

আমাৰ কামৰূপৰ ভাস্কৰ বৰ্মণৰ সময়ত দেশত বৌদ্ধপ্ৰভাৱ পৰে; পালবংশৰ ৰাজত্বকালত বৌদ্ধপ্ৰভাৱ বেছি হয়; কিন্তু তাৰ পাছত গোটেই উত্তৰ-পূব ভাৰতত পুনৰ হিন্দু-ধৰ্মই বিশেষকৈ শৈৱ সম্প্ৰদায়ে দেখা দিয়ে। বুঢ়াগোঁসাইৰ থানবোৰ আজিলৈকে তাৰ অৱশেষস্বৰূপে আমাৰ ইয়াত আছে। এই সময়ত কটা কিছুমান বুদ্ধমূৰ্ত্তি বিষ্ণুমূৰ্ত্তিত পৰিণত হয়।

প্ৰায় ১৩ শ শতিকাত পূৰ্বদেশ তন্ত্ৰপ্ৰধান হৈ উঠে; এই সময়ত কামৰূপৰ যোগিনীতন্ত্ৰ আদি বচিত হয়। বিশেষকৈ পৰ্বতৰ ওচৰৰ বহুত ঠাইত কোনো সমথলতো বৌদ্ধ-তান্ত্ৰিক মত চলে। লক্ষ্মামপুৰৰ কেঁচাখাতী, শেষত “তাৰা” নাম থকা দেৱালয়বোৰ এই সময়ৰেই বুলি কিছুমানে ঠাৱৰায়।

প্ৰাচীন কামৰূপত ভাগৱতী ধৰ্ম আৰু বিষ্ণুপূজা ১৫শ শতিকালৈকে থকাৰ চিন পোৱা যায়; কিন্তু সি অতি ক্ষীণভাৱে আছিল। এই সময়ত ব্ৰাহ্মণপণ্ডিত কিছুমানৰ ভিতৰত ভাগৱত চৰ্চা অলপ অচৰপ আছিল যদিও সৰ্বসামাধাৰণ ইয়াৰ বসৰপৰা বঞ্চিত আছিল। মহাপুৰুষ শ্ৰীমন্ত শঙ্কৰদেৱৰ আবিৰ্ভাৱৰ পাছৰপৰাহে দেশত ভাগৱত চৰ্চা কোবালভাৱে চলে। এই সময়ত

কমনীয়তা। (৫) সাট্ৰয় আৰু (৬) কৰ্ণিকা ভংগ যানি তুলিকা আৰু ৱংগীকা জ্ঞান।

সাতবীঁ সদী কে বাণভট্ট লিখিত হৰ্ষচৰিত মঁ ‘কপড়ী’ পৰ অংকিত যমপুৰীকে চিত্ৰী কী বাত কা উল্লেখ হৈ। তত্কাৰীন কামৰূপকে ৱাজা ভাস্কৰ বৰ্মনকে দ্বাৰা হৰ্ষবৰ্ধনকে পাস ভেট-স্বৰূপ ভেজী গৰ্হী বস্তুত্ৰী মঁ ৱংগীন চিত্ৰী কা উল্লেখ মিলতা হৈ।*

ভীমাপুৰকে ৱাজমহলকী চিত্ৰাবলী ভী বহুত প্ৰাচীন হৈ এসা কৰ্হী লোগ বতলাতে হৈঁ। অ্যীসূৰ্য্য পহাড়কী মূৰ্ত্তীয়াঁ বৌদ্ধকালীন হৈঁ। ইং পূ. ২ৱী সদী সে উত্তৰ ভাৰতমঁ ভাগবত ধৰ্মকা প্ৰচাৰ হুআ। ইসী কাৰণ ইস সময় মঁ বিষ্ণুমূৰ্ত্তীয়াঁ পত্থৰ পৰ অংকিত হোতী থীঁ। গুমবংশকে ৱাজাগণ বৈষ্ণব থে; অত: উনকে শাসনকালমঁ বহুলতাसे বিষ্ণু আৰু শিব কী পূজাকা প্ৰচাৰ হুআ থা। ইস সময় শিল্প-কলা কা পূৰা বিকাশ হুআ এসা কহা জা সকতা হৈ। ইস সময়কে শিল্পীয়াঁ নে পুৰাণ সে ধৰ্মভাবকী লেকৰ তুলিকায়াঁ দ্বাৰা উসে প্ৰগট কিয়া থা। অনুমানত: ‘অজন্তা’ গুফাকী চিত্ৰাবলী ইস কাল মঁ হী তৈয়াৰ হুই হৈ।

হমাৰে কামৰূপমঁ ভাস্কৰ বৰ্মন কে ৱাজত্বকাল মঁ দেশ পৰ বৌদ্ধধৰ্মকা বহুত প্ৰভাব থা; আৰু পালবংশ কে ৱাজাত্ৰী কে সময় মঁ বৌদ্ধধৰ্মকা জ্যাदा প্ৰসাৰ হুআ; পৰন্তু উসকে বাদ সমস্ত উত্তৰ-পূৰ্ব্ব ভাৰতমঁ ফিৰসে হিন্দুধৰ্ম বিশেষকৰ শ্ৰেব সম্প্ৰদায় কা বোলবালা হী গিয়া। হমাৰে যহাঁ আজ ভী ‘বুড়া গীসাৰ্হী’ কে

* Early History of Kamrup, by K. C. Baruah, page 95.

दिल्ली के मोगल बादशाह जेजालउद्दिन आकबर आक कामरूपत सुविख्यात महाबाज नवनावायण । आकबरे निज के चित्रक के खोज अकूल चामादक (चिवाज) आक समबकन्दर महम्मद नाखिबक हिन्दू आक मुहलमान चित्रकसकलक चित्राङ्कन शिक्षा दिवले नियुक्त कविहिल । मोगल बादशाह जहाङ्गीर के समयत उन्त-भारतत चित्र-विद्या के उन्नति हैहिल । आमा के सर्गदेउ शिरसिंह, महाबाज नवनावायण आक परवर्ती कोच बजासकल के दिनत चित्रविद्या के विशेष चर्चा हैहिल । एहबेव चित्र के धरन मोगली । एतेके भारतीय चित्रके तनि श्रेणीत भाग करि के पावे—हिन्दू, बौद्ध आक मोगली । भारतीय चित्रके अङ्कन के षाठ (style) अङ्कन के षाठ-नामके आके पाहते नामके हय—येने दिल्ली, काङ्गावा, काश्मिरी, जयपुरी इत्यादि । जयपुरी चित्रक आमा साधारणके बाजपुत्री चित्र केवले । बाजपुत्री चित्रत घरवा चित्र, मानुस के चलन-फुवण फुटि उठिहिल । बौद्धचित्रत बौद्धधर्म के मधुव भारके फुटिहिल । मोगली चित्रके प्राय बाजपुत्री चित्र के देवे; किन्तु सेहबेवत धर्मके नई—प्राय-केवले ऐहिक सुख-सुखके । एक कथात केवले हले हिन्दू आक बौद्ध-चित्रके भारतीय आङ्कन के विकास, मोगली-चित्रके पार्थिक आक श्वाभरिक । आमा के प्राचान कामरूप के षोडश शतके चित्रके बाजपुत्री; ईय के लता, गह, जौर-जुन के चित्र आदित अरुके कामके वेशिष्ठा आह । महापुरुष श्रीशङ्करके अङ्कित चित्रके पट (वैकुण्ठ के पट), वृन्दारनी के पार, सचित्र के पुर्वि साँचीपतीया भारत (संस्कृत, असमीया) ।

यानों के रूप में इस के अवशेष प्राप्त हैं । इसी समय में बौद्ध-मूर्तियाँ विष्णुमूर्तियों में रूपान्तरित कर दी गई थीं ।

१३वीं सदी के आस-पास पूर्वदेश तन्त्रप्रधान बन गया । इसी समय कामरूप में योगिनी-तन्त्र आदि प्रचलित हुए । प्रधानतया पहाड़ के समीपवर्ती अनेक स्थानों में और कहीं कहीं समतल स्थान पर भी बौद्ध-तान्त्रिक मत चला । कई विद्वानों के मत के अनुसार लखीमपुर की केचाखाती (कच्चीखानेवाली) और तारायुक्त देवालयों की स्थापना इस काल में ही हुई ।

यह प्रमाण भी मिलता है कि प्राचीन कामरूप में साधारणतया भागवती धर्म और विष्णुपूजा पन्द्रहवीं सदी तक थी । ब्राह्मण पण्डितों में भागवती-चर्चा थोड़ी-बहुत इस समय अवश्य थी; परन्तु सर्व साधारण लोग उसके रस से बंचित थे । महापुरुष श्रीशङ्करके प्रादुर्भाव के पश्चात् ही भागवत की चर्चा देश में प्रबल रूपसे चली थी । इस समय देहली में मुगल सम्राट जलालुद्दीन अकबर और कामरूप में सुविख्यात नरेन्द्र नरनारायण थे । अकबरने अपने चित्रकार ख्वाजा अब्दुल समद (शिराज) को और समरकन्द के चित्रकार महम्मद नसीर को, हिन्दू और मुसलमान चित्रकारों को चित्राङ्कन सीखाने को नियुक्त किया था । मुगल सम्राट जहाँगीर के समय में उत्तर भारत में चित्रकला की बहुत उन्नति हुई । हमारे यहाँ भी महाराज शिवसिंह, महाराज नरनारायण और परवर्ती कोच राजाओं के समय में चित्रकला एक विशेष चर्चाके विषय था । इस काल के चित्रोंका ढंग मुगली

धर्मपूजा, हस्तौविद्यामहार्णव, कीर्तनघोषा, शंखचूडवध आदि पुथिब चित्रबोब कामरूपीय चित्रब निदर्शन। पूबनि शिलब मठ-मन्दिर, शिलब बाङ्ग-काबेडब थूटा, दुराब, मूर्ति, काठब आक हाती-दांतब सिंहासन, दोला-खाटोला, नामघबब बेब, धातूब पात्र येने— शबाइ, बाटि, काँही आदित कामरूपीय शिलब आदर्श आजिओ देखिवलै पोरा याय।

प्राचीन कामरूपत अतीजबेपबा कपाही, पाट, मूंगा, मेजाङ्गबी— सूताब कापोबब चलन्ति आछे; एहिवोब सूतात उपत्याकाब बहते बनबीया गहब छाल-पातब बोल दि नाना बडब सूता तैयाब कबे आक सेहिवोबेबे बिचित्र कापोब बई ब्यरहाब कबे। खामतौ, नगा आदि पबतीया भाइसकलेओ बहकालबेपबा कपाही सूतात नाना बं दिया दसुब चलाई आहिछे। एह कापोबबोबत नाना फूल बहा प्रणालीओ बहकालब पबा देशत आछे। बौद्ध भिक्कुसकले सोणब पात कबि ताब षुपबत नाना चित्र अङ्कन कबि पुथि लिथिछिल। आमार षुचब पर्वतब कोषत थका बापुचाडब भिक्कुसकलब हातत एने हगूल्य पुथि एतियाओ देखिवलै पोरा याय।* एह समस्त कामरूपीय चित्रब अरुशेष।

आमि नाना ठाईत बहते सचित्र पुथि देखिवलै पाईछिले।। ताब भितबत योबहाटब श्रीश्रीफूलबाबी सत्रब कीर्तन-घोषा, श्रीश्रीआडनिआटि सत्रब हस्तौविद्यामहार्णव, नगारब श्रीश्रीकचूर सत्रब

* शिबसागबत आमि निजे पानीभाषाब एने पुथि देखिछिले।।

है। इसलिये इस समय के भारतीय चित्रों को हिन्दू, बौद्ध और मुगली इन तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।

भारतीय चित्रों के अंकन की शैली (style) का स्थान के नाम के अनुसार बाद में पृथक् पृथक् नामकरण हो गया है। जैसे—इरानी, देहली, कंगरा, काश्मीरी, जयपुरी इत्यादि। जयपुरी चित्रको मूलतया राजपूती चित्र ही कहा जा सकता है। राजपूती चित्रमें गृह-चित्र, मनुष्यका चलन, स्वभाव आदि प्रकट होते हैं। बौद्ध चित्रों में तो बौद्धधर्मके मधुर-भावों का ही प्रकाश मिलता है। मुगली चित्र तो प्रायः राजपूती चित्रों जैसे ही हैं; किन्तु इनमें धर्मभाव न होकर ऐहिक सुख-संभोग की प्रधानता है। सारांश यह कि—हिन्दू और बौद्ध चित्रों में तो भारतके आध्यात्मिक जीवनका विकास था और मुगली चित्र थे—पार्थिव और लौकिक (स्वाभाविक)।

हमारे प्राचीन कामरूपके १६वीं सदीमें चित्रित चित्र राजपूती शैलीके ही हैं; किन्तु फिरभी उनमें लता-पेड़, पशु-पक्षी आदिका चित्रण कामरूपी वैशिष्ट्य अवश्य है। महापुरुष शङ्करदेव के द्वारा अंकित चिञ्जयाताके पट (चिञ्जयाता का पट, वैकुण्ठ का पट), वृन्दावनी कपड़ा, सचित्र पुराने सांचीपत्रों पर लिखित भागवत (संस्कृत और असमिया), धर्म-पुराण, हस्तिविद्या-महार्णव, कीर्तनघोषा, शंखचूड वध आदि पुस्तकोंके चित्र कामरूपी चित्रों का निदर्शन है। पत्थरोंके मठ-मन्दिर, राज-महलके पत्थरके खम्भे, किवाड़, मूर्तियाँ, लकड़ी और हाथोदाँत के सिंहासन, दोला-खटोला (पालकी), नामघर की दीवार, धातुओं के वर्तन, जैसे—शराइ, कटोरा, थाली आदि प्राचीन अवशिष्टों पर कामरूपीय शिल्पों की झलक आज भी देखने को मिल जाती है।

हमारे इस कामरूप प्रदेश में कपास, पाट, मूंगा, मेजाङ्करी आदिके सूत के कपड़ों का प्रचलन अतीत कालसे ही है। इन

संस्कृत भागवत (श्रीधर स्वामीव टीका थका.) श्रीश्रीबालि सत्रर आठ-दशम-स्कृत भागवत आरु अरुण्डेय डाः सूर्यकुमार डूण डाडुबीयाई संग्रह कबा “धर्मपुबाण” प्रधान । एई सकलौबोव पुथिब भितबत श्रीश्रीबालि सत्रर श्रीयुक्त शिरेन्द्रनाबायण देराधिकारव घबत पोरा आठ-दशमखन वेछि पुबणि वुलि बोधहोरात आमि संग्रह कर्बो ।* आरु बाडुनाई चन्द्र धरिवलै हात मेलाव दवे इयाव प्रकाश-कार्य हातत लुँ ।

आमि पोरा मूल पुथिखनब पातबोवब आकार १९" × ११" ; पुथिब प्राय प्रति पातते पदत उल्लेख कबा प्रेतोक घटनाब चित्र आरुणक वुजि डाडुब-सक कबि तिनि बडुत अरुण कबा । १म पृष्ठाब शुकरदेर आरु पबौकितब चित्रखन ४" × ७" डाडुब ; २य पृष्ठाब चित्रखन १८" × ७" डाडुब इत्यादि । पुथित अंका आकारत सकलौबोव चित्र आमि तैराव कबिब नोराबिले । प्रायबोव चित्रकेई आधा आकारत, केईखनमान एक चतुर्थांश आकारत तैराव कबोरा हल । आरु सकलौबोव चित्र तिनि बडुत तैराव कबाले खबचब परिमाण बब वेछि हय देथि किछुमान तिनि बडुत तैराव कबाई बाकीबोव केरल एक बडुत तैराव कबाई छपा कबाले ।

असनीया आठदशम अर्थां दशम स्कृत भागवतब १म खण्ड महापुरुष श्रीमन्तु शरुबदेर बचित महाभागवतब प्रधान अंश ।

* १८१ पृष्ठाब चित्रब उपरत “चतुर्दसि तिथित पातियो पदुर्वाग । कबा निरपुजा काटा अदंथात चाग ॥” वि शारी पद आछे, तातेई सेई समयब लिपि आरु बानाव निदर्शन देथा पाव ।—सम्पादक ।

सूतो पर उपत्यका के लोग जंगली पेड़ों के छिलकों और पत्तों का रंग देकर विभिन्न रंगों के सूत तैयार करते हैं और उनसे विभिन्न रंग-विरंगा कपड़ा बुनकर काम में लाते हैं । खासी, नंगा आदि पहाड़ों पर बसनेवाले लोग बहुत दिनों पहले से ही कपास के सूत पर अनेक प्रकारके रंग लगाने का कार्य करते आये हैं । इन कपड़ों पर नाना प्रकार के फूल-पत्ते निकालने की प्रणाली भी बहुत समय से चलती आई है । बीड़ भिक्षुओं ने सोनेके पत्रों पर अनेक चित्र अंकित कर पुस्तक लिखी थी । हमारे समीपवर्ती पहाड़ के किनारे पर अवस्थित बापु चांग के भिक्षुओं के पास ऐसी दुष्प्राप्य पुस्तक अब भी विद्यमान है ।*

हमारे देखने में अनेक प्राचीन सचित्र पुस्तकों आयी हैं—जिनमें, जोरहाट के श्रीश्रीफूलबाड़ी सत्रका “कीर्तन-घोषा”, श्रीश्रीआउनिआटी सत्र का “हस्तविद्यामहार्णव”, नौगांव के श्रीश्रीकुंग सत्र का “संस्कृत-भागवत” (श्रीधर स्वामी की टीका सहित), श्रीश्रीबालि सत्र का “आद्य दशम स्कन्ध भागवत” और अरुण्डेय डा० सूर्यकुमार भूइयाँ द्वारा संगृहीत “धर्मपुराण” प्रधान हैं । इन सभी पुस्तकों के देखने पर हमें श्रीश्रीबालि सत्र के श्रीशिवेन्द्रनारायण देवाधिकार के घरमें जो आद्य दशम स्कन्ध मिला, सबसे प्राचीन प्रतीत होने पर उसका हमने संग्रह किया और वामनके चांद पकड़ने के समान ही उसके प्रकाशन का कार्य हमने अपने हाथमें लिया ।

जो मूल प्रति हमें प्राप्त हुई उसके पत्रों का आकार १८" × ७" है और प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर पदों में उल्लिखित प्रति घटना का चित्र

* शिवसागरमें ऐसी पुस्तक जो पानी भाषामें थी, अपनी आँखोंसे देखी है ।

† १८१ पृष्ठ के चित्र के उपर “चतुर्दशी तिथि में धनुर्ग्राम मनाथा, शिवकी पूजा करो, अनगिनत बकरे काटो” वाली पंक्तिमें उस समय की लिपि और वर्णनका निदर्शन मिलेगा ।

“भागवत” बुलिले असमिया मानुहे साधारणते এই आठदशमकेई वुजे। अनुमान হয়—বৈকুণ্ঠৰ পট অঙ্কন কৰোঁতা মহাপুৰুষ শ্ৰীমন্ত শঙ্কৰৰ নিৰ্দেশমতে তেওঁৰ ৰচিত পদৰ মাজে মাজে প্ৰত্যেক ঘটনাৰ চিত্ৰবোৰ অঙ্কন কৰোৱা হৈছিল; অৰ্থাৎ এই চিত্ৰবোৰ সম্ভৱতঃ মহাপুৰুষে নিজে অনুমোদন কৰিছিল। অৱশ্যে আমি পোৱা সচিত্ৰ আঠদশমখন মহাপুৰুষে আগত থাকি নকল কৰোৱা নহব পাৰে; পৰৱৰ্তী কালত এই পুথি নকল কৰা আৰু চিত্ৰবোৰ অঙ্কন কৰা হলেও মহাপুৰুষৰ অনুমোদিত চিত্ৰৰ অনুৰূপে অঙ্কন কৰা বুলি ধৰিলে বোধকৰোঁ ভুল নহব। পুথিখনিৰ শেষত ১৪৬১ শ'ক লিখা আছে; গতিকে এই পুথিৰ আখৰ আৰু চিত্ৰবোৰ ১৪৬১ শ'কৰ অৰ্থাৎ ১৫৩৯ খৃষ্টাব্দৰ বা ষোড়শ শতিকাৰ আদি ভাগৰ বুলি ধৰিব পাৰি। এই সময়ত শ্ৰীমন্ত শঙ্কৰদেৱৰ বয়স ৯০ বছৰ। আমি পোৱা উক্ত আঠদশম স্কন্ধ ভাগৱতৰ পদবোৰ হুবহু ছপা কৰি তাৰ মাজে মাজে পুথিৰ তিনি বঙৰ চিত্ৰবোৰ ছপা কৰা আমাৰ পক্ষে অসম্ভৱ; সেই কাৰণে পদবোৰ পুথিৰ বানানতে সুকীয়াকৈ ছপা কৰা হৈছে আৰু চিত্ৰবোৰ ভগৱানৰ কৃপাত আজি প্ৰায় ন বছৰ পাছতহে সুকীয়াকৈ প্ৰকাশ কৰা হ'ল। চিত্ৰবোৰ বুজিবৰ সুবিধাৰ অৰ্থে প্ৰত্যেক চিত্ৰৰ তলে তলে অতি সংক্ষিপ্ত বিৱৰণ দিয়া হ'ল। বিৱৰণবোৰত চিত্ৰ অনুসাৰে শ্ৰীকৃষ্ণৰ শৈশৱ আৰু কৈশোৰ লীলা ফুটাই তুলিবলৈ যত্ন কৰা হৈছে। এই কাৰণে পুথিখনিৰ নাম চিত্ৰ-ভাগৱত ৰখা হ'ল। ই চাৰি শ বছৰ আগৰ প্ৰাচীন কামৰূপৰ ভাগৱতীসকলৰ ভাগৱত প্ৰচাৰৰ এটা জীৱন্ত নিদৰ্শন।

আৱশ্যকতাকৈ অনুরূপ ছোটো যা বড়ো, তিন रंगों में चित्रित है। यथा—पहले पृष्ठ पर शुक्रदेव और परीक्षितका चित्र ४"×३॥" तथा दूसरे पृष्ठ का चित्र १८"×३॥" नापका है। पुस्तक में रहे नापों में हम सभी चित्रों को तैयार नहीं करवा सके। प्रायः आधे और कुछ चौथाई आकार में ही चित्र बनवाये हैं। सभी चित्रों को तीन रंग में तैयार करने पर व्यय अधिक होने की संभावनासे कुछ तो तीन रंगों में बनवाये गये हैं बाकी सिर्फ एक रंग में ही तैयार कर छपवाया है।

असमिया आद्य दशम यानि दशम स्कन्ध भागवत का पहला खंड, महापुरुष श्रीमन्त शङ्करदेव रचित महाभागवत का एक अंश है। “भागवत” कहने से साधारणतया असमिया लोग इस आद्य दशम को ही समझते हैं। अनुमानतः वैकुण्ठ के पटके अंकनकारी महापुरुष श्रीमन्त शङ्करदेव के निर्देशानुसार ही, उनके द्वारा रचित पदों के बीच-बीच में प्रति घटनाके चित्र अंकित किये गये थे, अर्थात्—चित्रों के लिए महापुरुषने स्वयं ही अनुमोदन किया था। हमें जो आद्य दशम मिला है उसकी, ही सकता है महापुरुषके सामने नकल न की गई ही; पर बाद में प्रतिलिपि की जा सकती है और चित्रों का अंकन भी हो सकता है। फिर भी महापुरुष द्वारा अनुमोदित आधार पर चित्रों का अंकन किया गया ऐसा मान लेने पर, शायद कोई भूल न होगी। पुस्तक के अंत में १४६१ शक लिखा हुआ है अतः इस पुस्तक के अक्षर और चित्र १४६१ शक यानि १५३८ ई० या सोलहवीं सदी के प्रथम भाग के हैं ऐसा माना जा सकता है। इस समय में श्रीमन्त शङ्करदेव की आयु ८० वर्ष की थी।

हमें जो आद्य दशम की मूल प्रति मिली उसके पदों की उसी प्रकार छपवाकर उसके बीच-बीच में तीन रंगों के चित्रों का छपवाना हमारे लिए असंभव था; इस लिए पदों की पुस्तक के

(॥०० ')

শ্রীযুত কৃষ্ণানন্দ গোস্বামী—এশ টকা ; শ্রীযুত গোপালচন্দ্র বৰুৱা
(বৰুৱা এজেন্সি)—পঞ্চাশ টকা ; আৰু নলবাৰীৰ শ্রীযুত
চৌথমল চেৰাউগী—এটকা ।

ইমান খৰচবহুল কাম আমাৰ দ্বাৰা হোৱা অসম্ভৱ ; বাইজৰ
শুভইচ্ছা, সাধুসকলৰ—বিশেষকৈ পুথিৰ স্বত্বাধিকাৰী গোস্বামীদেৱৰ
আশীৰ্বাদ আৰু ভগৱানৰ কৃপাতহে ই সম্ভৱ হৈছে । এতেকে
এই কামটো মহাপুৰুষৰ ইচ্ছাতহে হোৱা বোধে—যাতে আমাৰ
হিয়াত উঠিব পৰা গৰ্ব ভাৱক উঠিব নিদিয়ে, তাৰ বাবে
বাইজৰ মাজেদি শ্রীভগৱানৰ চৰণত প্ৰাৰ্থনা জনালোঁ ।

নলবাৰী, কামৰূপ, অসম । }
২২ অগষ্ট, ৫০১ শঙ্কৰাব্দ । }

শঙ্কৰকিঙ্কৰ
হৰিনাৰায়ণ

শ্রীশ্রীদীহিংগ সত্ৰাধিকাৰ ২০, শ্রীশ্রীদক্ষিণপাট সত্ৰাধিকাৰ ৩০,
গুৱাহাটীকে শ্রীযুত কৃষ্ণানন্দ গোস্বামী ১০০, শ্রীযুত গোপালচন্দ্র
বৰুৱা (বৰুৱা এজেন্সী) ৫০, শ্রী নলবাৰীকে শ্রীযুত চৌথমল
সৱাগী ১ ।

ইতনে ব্যয়বহুল কাৰ্য্যকাম হামাৰে দ্বাৰা হোনা অসম্ভৱ থা ; কিন্তু
সজ্জনোঁ কী শুভ ইচ্ছা, সাধুশ্রীকী আশীৰ্বাদ শ্রীৰ ভগৱান্ কী
কৃপাকৈ কাৰণ হী যহ সম্ভৱ হুয়া হৈ । অতঃ যহ কাম মহা-
পুৰুষোঁ কী ইচ্ছাসে হী হুয়া সম্ভৱকৰ হামাৰে মনমোঁ উঠ
সকনেৱালৈ গৰ্ব্ভাৱ ন উঠ পাবি' উসকৈ লিএ হামাৰে দেশৱাসিয়োঁ
দ্বাৰা শ্রীভগৱানকৈ চৰণোঁ মে' প্ৰাৰ্থনা কৰতা হুঁ ।

নলবাৰী (কামৰূপ), অসম । }
২৫ অগষ্ট, ৫০১ শঙ্কৰাব্দ । }

শ'কৰ-কিঙ্কৰ
হৰিনাৰায়ণ

श्रीमन्तु शङ्करदेव

श्रीमन्तु शङ्करदेव १४४२ ख्रिष्टाब्दत असमव नगाँउ जिलाव वटङ्गराव ँचवव आलिपुखुवी नामे ठाईत जन्मे । तेउँव पित्रुव नाम कुसुम्बव शिवोमणि भूँयाँ । श्रीमन्तु शङ्करदेवव जन्मव अनप दिन पाछतेई पितृ-मातृ स्वर्गी हय; वृट्टीमाक खेवसृती आईव लालन-पालनत तेउँ डाडव हय ।

श्रीमन्तु शङ्करव रूप-गुणव कथा तेउँव चिबसङ्गी महापुरुष श्रीमाधवदेवे ऐइदेवे वर्णना कबिछे—श्रीशङ्करव वर्ण गौव, मूव छत्राकाव, नयन आयत, अधव बातुल, उक, जानु, जङ्गा आदि सकलो अङ्ग देखिवलै सुशोभन, डिडित धरल उतुवौ, वक्कसुलत कर्णमणि, हियात सुवर्णव हाव, छुई हातत ठाँव, हातव आङ्गुलित आङ्गठि, नीला पाविष हेङ्गुलीया भुनि, मुखत मिचिकीया हाँहि, बाणी मेघव दवे गञ्जीव, गजगति गमन, धीव मति, देवताव दवे तेउँव वितोपन रूप ।

श्रीमन्तु शङ्करदेवे तेव वछव वयसत महेश्वर कन्दली नामे पण्डितव पाठशालात विद्या शिक्षा आबस्तु कवे । तेउँ चावि वछवतेई हिन्दूधर्मव आरङ्गकौय समस्त शास्त्र अध्यायन काव शेष कवे । ताव पाछत घबलै याय आक योग अभ्यास कबिबलै धरे । ईयाव पाछत भागरत आलोचनात मग्न हय । ताके देखि खुवाकसकले तेउँक विद्या कबाई दिये आक पितृव शिवोमणि विषय शोधाई दिये । श्रीशङ्करे एबाव नोरावि छुयोटा विषय पानते किछुदिन चलावलै धबिले । किन्तु पाछलै तेउँव धर्मचिन्ता

श्रीमंत शंकरदेव

श्रीमंत शंकरदेव सन १४४८ में आसामके नौगाव जिलाके वटद्रवाके नजदीक आलिपुखुरी नामके स्थानमें जन्म ग्रहण किया था । उनके पिताका नाम था कुसुम्बर शिरोमणि भुजाँ । श्रीमंत शंकरदेवके जन्मके थोड़े दिन बाद माता पिता इस दुनियासे चल बसे । वे नानीकी परवरिशमें बड़े हुये ।

श्रीमंत शंकरदेवके रूप-गुणकी बात उनके चिरसंगी महापुरुष श्रीमाधवदेवने इस तरह बयान की है—श्रीशंकरदेव गौरवर्ण, कृत्वाकार मस्तक, आयत नयन, रक्ताभ अधर, उरु, जानु-जंघा आदि सब अंग देखनेमें सुशोभित; गलेमें धवल उत्तरीय, वक्षःस्थलमें कंठमणि, हियमें सुवर्णहार, बाजूमें तार, अंगुलीमें अङ्गुठी, नीली पारिकी केशरिया धोती, मुखपर मंदहँसी, वाणी मेघकी तरह गंभीर, गज-गमन, धीर मति, देवताकी तरह उनका सुशोभित रूप ।

श्रीमंत शंकरदेव १३ वर्षकी अवस्थामें महेश्वर कन्दली पंडित की पाठशालामें विद्याध्ययनके लिये प्रविष्ट हुये और चार वर्षोंमें ही “हिन्दूधर्म” का अध्ययन समाप्त कर लिया । इसके पश्चात् घर आकर योगाभ्यास करने लगे और भगवत् चिंतनमें अपनीकी लगा दिया । घरवालोंने यह देखकर इनका विवाह कर इनको सांसारिक गृहस्थ कर्म करनेकी अनुप्रेरित किया । घरवालोंके अनुरोध की न रख सकनेके कारण वे दोनों कर्म करने रहे पर अपने मानसिक इंदुको न रोक सकनेके कारण वे अपना ध्यान

প্রবল হৈ উঠে, আন কি বেছিভাগ নিশা তেওঁৰ আত্ম-চিন্তাতে যাবলৈ ধৰে।

সেই সময়ত আমাৰ দেশত শাক্তধৰ্ম প্রবল আছিল, আৰু কিছুমানে ধৰ্মৰ নামত তন্ত্ৰৰ বিকৃত মতে চলি নানা অনাচাৰ আৰু ব্যভিচাৰ কৰিছিল। শ্ৰীমন্ত শঙ্কৰে তাত বাধা দি দেশত এক ঈশ্বৰ উপাসনা প্রচাৰ কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰে। তেওঁ গোলোকধামৰ পট আঁকি চিহ্নযাত্ৰা ভাওনা কৰি সকলোৰে মন ভগৱন্মুখী কৰিলে আৰু ব্ৰাহ্মণৰপৰা কৈৱৰ্ত্তলৈকে সকলো শ্ৰেণীৰ মানুহৰ মাজত “কলিৰ পৰম ধৰ্ম জানা হৰি নাম” বুলি ঘোষণা কৰিলে। পাছলৈ শ্ৰীশঙ্কৰৰ এই ধৰ্ম পৰ্ব্বতীয়া আৰু মুছলমান ভাইসকলেও গ্ৰহণ কৰি আনন্দ লাভ কৰিবলৈ ধৰে। এইসকলৰ ভিতৰৰপৰা আকৌ কেইজনমানে বিশিষ্ট ভক্ত হৈ উঠি প্রচাৰক বা ধৰ্মাচাৰ্য্য পদো লাভ কৰে। অস্পৃশ্যতা আৰু মাদকতা বৰ্জন, অহিংসা, ভূতদয়া আৰু ত্যাগ তেওঁৰ ধৰ্মৰ মূলনীতি হ'ল।

শ্ৰীশঙ্কৰে প্রচাৰ কৰিবলৈ ধৰিলে—

(একেশ্বৰবাদ) “এক দেৱ এক দেৱ ;
এক বিনে নাই কেৱ।”

আকৌ কলে,—

(সাংখ্য বাদ) “নাহি ভকতিত জাতি আচাৰ-বিচাৰ।
কৃষ্ণ-ভকতিত সমস্তৰে অধিকাৰ ॥” (কীৰ্ত্তন)

আৰু কলে—

(অহিংসা) “ব্ৰাহ্মণ-চণ্ডাল-চোৰ-দাতা-ক্ৰূৰ-শাস্ত।

সবাতে আমাক তুমি দেখিবা নিতান্ত ॥” —ভক্তিবন্ধাকৰ

ভগবত্ চিন্তন মে' হী লগানি লগী আৰু অপনি ইন গুণো' সে বে সবকী নজরমে' ঐষ্ট জ'চনী লগী।

ওস সময় হমাৰে দেশমে' শাক্ত-ধৰ্মকা প্রভাব থা ; আৰু কিছু লোগ তো ধৰ্মকে নামপৰ তন্ত্ৰকো ক্ৰান্তিকারী গতিমে' চল কৰ অতিশয় অনাচাৰ কৰতি থে। আঁমন্ত শংকৰনে রাম রাম কৰকে ওসমে' বাধা ডালী। আৰু ওহোনে এক ইশ্বৰ কা ধ্যান কৰনেকা মত প্রচাৰ কিয়া। বে গোলোকধামকে পট অঁকন কৰ চিহ্নযাত্ৰা তথা “ভাবনা”সে সবকা মন ভগবন্মুখী কৰনে লগী আৰু ব্ৰাহ্মণসে লিকৰ স্তেচ্ছ তক সৰ্মী ঐশীকে বীচমে' “কলিকা পৰম ধৰ্ম হৰিনাম হৈ” কহ'কৰ প্রচাৰ কৰনে লগী। পীঠে তো ইনকা ধৰ্ম পহাড়া ভাই তথা মুসলমান ভাইয়োনি খুশীকে সাথ গ্ৰহণ কিয়া। ইন লোগোকে বীচমে'সে চ'ন্দ লোগ তো, বিলক্ষণ ভক্ত বন গয়ে আৰু ধৰ্ম প্রচাৰ কৰকে প্রচাৰক যানী ধৰ্মাচাৰ্য কহলাতি থে। অহিংসা, কৃত, আৰু মাদক দ্ৰব্য বৰ্জন, ভূতদয়া, ত্যাগ আদি ওনকে ধৰ্মকী নীতি হুই। আঁশংকৰ প্রচাৰ কৰনে লগা—

(একেশ্বৰবাদ) “এক দেব এক সেব।
এক বিনা নাহি কেব ॥”

ফিৰ কহা—

(সাংখ্যবাদ) “নাহি ভকতিমে' জাতি আচাৰ বিচাৰ।
কৃষ্ণ ভকতিমে' সবকা অধিকাৰ ॥” (কীৰ্ত্তন)

আৰু কহা—

(অহিংসা) “ব্ৰাহ্মণ চ'ডাল চোৰ দাতা ক্ৰূৰ শান্ত।

সবাতে আমাক তুমি দেখিবা নিতান্ত ॥” (ভক্তিবন্ধাকৰ)

हात दाङ्गि घोषणा कबिले,—

(पबम-तत्र)—“समस्त भूतरे हृदयत आहोँ। आमि।

पबम सुहृद महेश्वर अन्तर्यामी ॥”

हेन बुद्धि करि सर्वदाय ज्ञाना-मोक।

एतेके तबिवा संसारर दुख शोक ॥”

—भक्ति प्रदीप

श्रीशङ्कर प्रचारित धर्म दास्यभार प्रधान; तेउँब मते श्रीकृष्णइ पबम ब्रह्म, तेरेँइ सनातन, तेरेँइ ज्ञानमय, तेउँ पुरुष प्रकृतिर पब। तेउँ निजक कृष्ण-किङ्कर वुलि य'ते त'ते टिनाकि दि गैछे। दास भारे कृष्ण नामगुण शरण कौर्तन कवाकेइ तेउँ भक्तिर प्रधान उपाय वुलि घोषणा करि गैछे। तेउँब मते अग्र देर-देरौ मिछा, केरल एक कृष्णतेइ जौरे शरण लै तेउँब नाम-गुण शरण-कौर्तन कबिले सकलो सिद्धि হয়। এই कारणे श्रीशङ्कर प्रचारित मतक एक शरण धर्म बोले।

श्रीशङ्करे आलिपुखुरी अशुचल बोधकवि ज्ञातिसकलर सैते पूर्वपुरुषर भेटी-वटद्वरातै उठि याय आरु तात हाटि बाटि पाति आरु कौर्तन घर आदि सजाइ वास करे। अल्प दिन पाछतेइ इयात हवि-कौर्तनर बोल बर बेछि हे उठिल आरु बहते तेउँब शिष्य ग्रहण कबिले। इयाव केइवहवमान पाछत श्रीशङ्करर पत्नी वियोग হয়। ताब पाछतेइ तेउँ बाबजन भक्त लगत लै वाब बहब काल गोटेइ भावतर् तीर्थबोब दर्शन कबि फुवे। तीर्थर पवा घुबि आहि वटद्वरात किछुदिन थकार पाछत कछाबि विद्रोह হয়; तेतिया श्रीशङ्करे ज्ञातिसकलर सैते उजनीले याय। उजनी

(परम तत्त्व) “समस्त भूतरे हृदयत आहोँ। आमि।

परम सुहृद महेश्वर अन्तर्यामी ॥

हेन बुद्धि करि सर्वदाय ज्ञाना मोक।

एतेके तरिवा संसारर दुख शोक ॥”

—(भक्तिप्रदीप)

श्रीशङ्करके प्रचारित धर्ममे दास्यभाव प्रधान है। उनके अनुसार श्रीकृष्ण ही परम ब्रह्म है। वे ही सनातन, तथा ज्ञानमय हैं। वे पुरुष प्रकृतिसे परे हैं। वे अपने को कृष्ण-किङ्कर कह कर प्रचार किया है। दास भावसे नामगुण श्रवण कीर्तन करनाही भक्तिका प्रधान मार्ग बतलाया है। उनके मतानुसार केवल एक कृष्णकी ही शरण लेकर उसीका नाम गुण तथा श्रवण कीर्तन करनेसे सर्व सिद्धि प्राप्त होगी। इस लिये श्रीशङ्करके प्रचारित मतको “एक शरण धरम” कहते हैं।

श्रीशङ्कर 'आलिपुखुरी'को अनुपयुक्त स्थान संभक्ति हुये अपने संबन्धियों साथ वटद्वराको चले गये और इसमें हाट, बाट बनाकर और कीर्तन-घर आदि बनवाकर वास करने लगे। थोड़े दिनोंके बाद प्रचारके बाहुल्यके कारण ज्यादा लोगोंने शिष्यत्व ग्रहण किया। कुछ साल बाद उनकी पत्नी चल बसी। बादमें वे अपने १२ भक्तों साथ १२ बरसों तक सारे भारतवर्षमें तीर्थ-भ्रमण करते रहे। भ्रमणके बाद वटद्वरा लौट आये और वहाँ रहे। कुछ दिन रहनेके बाद कछारी जातिमें गदर हुवा; तब श्रीशङ्करदेव संबन्धियों साथ “उजनी”को चलेगये। उजनीमें कई जगहोंमें रहकर आखीरकार धुजाँहाटमें रहने लगे।

केईवा ठाईतो थार्क शेषत धुएँहाटात गै वास करे । ईयात तेउँ उँठर वरुव काल अकेवाहे थार्क वरुतक अक शरण धरुत शरण दिये । महापुरुष त्रीमधरदेरे ईयातेई त्रीशरुवर सङ्ग लाठ करे । अई समयरपरवा अक शरण धरुत उँजनौत कोराल भारे चलिवले धरे । किरुत किरुतदिन पाछतेई ररुवार कोपदृष्टि परवात त्रीशरुवे उँजनौ असम त्याग करि ठटियाई आहि महारुज नरनारायणर बारुज कामरुपर पाटवाउसी पायहि । त्रीशरुवे शिष्यसकलर सैते पाटवाउसीत वरुकाल थार्के ।

त्रीशरुवेदेरे प्राचीनकालर वौद्धसंघारुमर दरुवे सत्रपाति वरुतो उँदासीन आरु गृहस्थी ठकत वास करेवारुव वरुरुस्था करिछिल । सत्रवोव गणतान्त्रिक नियमे चलोरुाईछिल ; तुरुपरि प्रतेक सत्रते पुथिभवाल, पाणुठ, लिखा-पठा शिकार वरुरुस्था, उँषध तैयार करवा शिकुा, चित्र विद्या, खनिकरि विद्या आदिर चरुर्चारुवो वरुरुस्था आछिल ।

त्रीमरुत शरुवेदेरुव प्रधान करुमरुक्खेतरु पाटवाउसी धाम ; ईयात थका कालतेई त्रीदामोदरुदेरु, त्रीहरुविरुदेरु, त्रीगोपाल देरु (आता) आरु त्रीनारायण ठाकरुवे तेउँर सङ्गलाठ करि अक शरण धरुत प्राचीन कामरुपत वरुलभारुवे प्रचार करे । किरुतदिन अईदरे धरुतप्रचारुव हलत त्रीशरुवेरु उँपरवत महारुज नरनारायणर कोपदृष्टि परे ; किरुत पाछत महारुजे त्रीशरुवेरु गुण-गरुमा वुजि पाई तेउँक विशेष आदर करे आरु निज बारुधानीर उँचरुते तेउँर थका मेलाव वन्दोरुस्त करि दिये । त्रीशरुवे प्राय २१ वरुव वयसत अई पाटवाउसीर परवा १२० जन शिष्य लगत लै २२ वरु

यहाँ लगातार १८ वरुस तक रह कर वरुत लोगुंकी अक शरण धरुतकी शिकुा दीकुा दी । महापुरुष माधवदेव यहींपर इनके सत्संगमे आये । इसी समयसेही उँजनौमे अक शरण धरुतका प्रभाव जोरुसे हीने लगा । लेकिन थोड़े दिनोके बाद वे राजाकी कोपदृष्टिमे पड़ कर उँजनौ असम छोड़ कर महाराज नरनारायणके राज्यमे तथा कामरुप जिलेके पाटवाउसी नामक स्थानमे चले गये और अपने शिष्यो सहित वहीँ पर अनेक दिनो तक रहे ।

श्रीशंकरदेवने बौद्ध संघारुम कहीं कहींपर सत्र बनवाकर वरुतसे उँदासीन और गृहस्थी भक्तुंकी बसानेकी व्यवस्था की थी । सत्रुंकी गणतान्त्रिक पद्धतिसे चलानेकी व्यवस्था थी । उसमे भी हर सत्रमे पुस्तकालय, शिकुा देनेकी व्यवस्था, श्रौषध बनानेकी शिकुा, चित्रविद्या, तथा कारुीगरी विद्या आदिकी चरुर्चारु करनेकी व्यवस्था थी ।

श्रीशंकरदेवका प्रधान करुमरुक्खेतरु पाटवाउसी है । इस समयमेही श्रीदामोदरुदेव, श्रीहरुविरुदेव, श्रीगोपालदेव (आता) और श्रीनारायण ठाकरु आदि पुरुषुंने उनका संग लाभ किया था । वे एक शरण धरुतका प्रचार, कामरुपमे करते थे । किरुतदिन इसी तरह धरुतप्रचार करनेके बाद महाराज नरनारायणकी कोपदृष्टि पड़ी— लेकिन बादमे महाराजने श्रीशंकरकी गुण-गरुमा देखकर उनहे विशेष सम्मानित कर अपनी राजधानीके नजदीक ही उनके रहनेकी व्यवस्था करवा दी । श्रीशंकरदेवने करुीव ८१ वरुस ही उँम्रमे पाटवाउसीसे ही १२ शिष्युं को लेकर दूसरीवार

তীৰ্থ পৰ্যটন কৰে। এইবাৰ তেওঁ নিশা য'তেই বাস কৰিছিল, ত'তেই একোখন সত্ৰ হৈ উঠাৰ দৰে হৈছিল। তীৰ্থৰ পৰা ঘূৰি আহি কিছুকাল পাটবাউসীত থকাৰ পাছত পুনৰ মহাৰাজ নৰনাৰায়ণৰ ৰাজধানী কোচবিহাৰলৈ যায় আৰু তাতে আঢ়ৈ বছৰ কাল থকাৰ পাছত ১৫৬৮ খৃষ্টাব্দত বৈকুণ্ঠ প্ৰয়াণ কৰে।

শ্ৰীমন্ত শঙ্কৰদেৱ নিজে গৃহাশ্ৰমী আছিল, আৰু খেতিবাতি কৰি জীৱিকা নিৰ্বাহ কৰিছিল; কিন্তু তেওঁৰ প্ৰধান সঙ্গী মহাপুৰুষ শ্ৰীমাধৱদেৱ উদাসীন আছিল। শ্ৰীমাধৱদেৱৰ আদৰ্শকে লৈ কিছুমান ভক্তে সংসাৰ ত্যাগকৰি ধৰ্মপ্ৰচাৰ কৰিছিল; এই উদাসীন ভক্তৰ সবহভাগেই সত্ৰৰ হাটি বহাত বাস কৰিছিল।

শ্ৰীমন্ত শঙ্কৰদেৱে বহুতো শাস্ত্ৰ প্ৰণয়ণ কৰে; তাৰ ভিতৰত এইকেইখন প্ৰধান—(১) কীৰ্ত্তন ঘোষা, (২) শ্ৰীমদ্ভাগৱত ১ম, ২য়, ৩য় স্কন্ধ (অনাদি পাতন)। ৬ষ্ঠ স্কন্ধ (অজামিল উপাখ্যান), ৮ম স্কন্ধ (অমৃত মথন—বলিহলন), আঢ়ৈ দশম, কুৰুক্ষেত্ৰ, একাদশ স্কন্ধ, নিমিনৱ সিক, দ্বাদশ স্কন্ধ, গুণমালা, বাৰাণস (উত্তৰাকাণ্ড), হৰিশ্চন্দ্ৰ উপাখ্যান, ভক্তি-বত্নাকৰ (সংস্কৃত), টোটেয়, বড়গীত, অঙ্কোয়া নাট—কালিদমন, পত্নীপ্ৰসাদ, কেলিগোপাল, কল্পিণী হৰণ, পাৰিজাত হৰণ, বামবিজয় ইত্যাদি।

শঙ্কৰ-কিঙ্কৰ
হৰিনাৰায়ণ

তীৰ্থ পৰ্যটন কৰনিকো নিকলে। ইয়াৰ বাৰ কী উনকী যাত্ৰা তথা স্থান জহাঁ ২ বে ঠহৰতি থে মানো সত্ৰ সে মালুম হীতি থে। তীৰ্থসে লৌট কৰ কুছ দিন তক পাটবাউসীমে' রহনেকি বাদ ফিৰ মহাৰাজ নরनारायणकी राजधानी कूचबिहारमे' ढाई बरस तक रहै। आखिर सन १५६८ मे' वैकुण्ठगामी हुये।

श्रीशंकरदेव गृहस्थी थे; और खेती-बारी करके जीवन विताते थे। लेकिन उनके प्रिय और प्रधान संगी महापुरुष माधवदेव उदासीन थे। श्रीमाधवदेवके आदर्श की अपना कर कुछ भक्तोंने धर्मचर्चा की थी। इन उदासीन भक्तोंमेंसे ज्यादा लोग तो सत্ৰके हाटिडेरैमें बास करते थे।

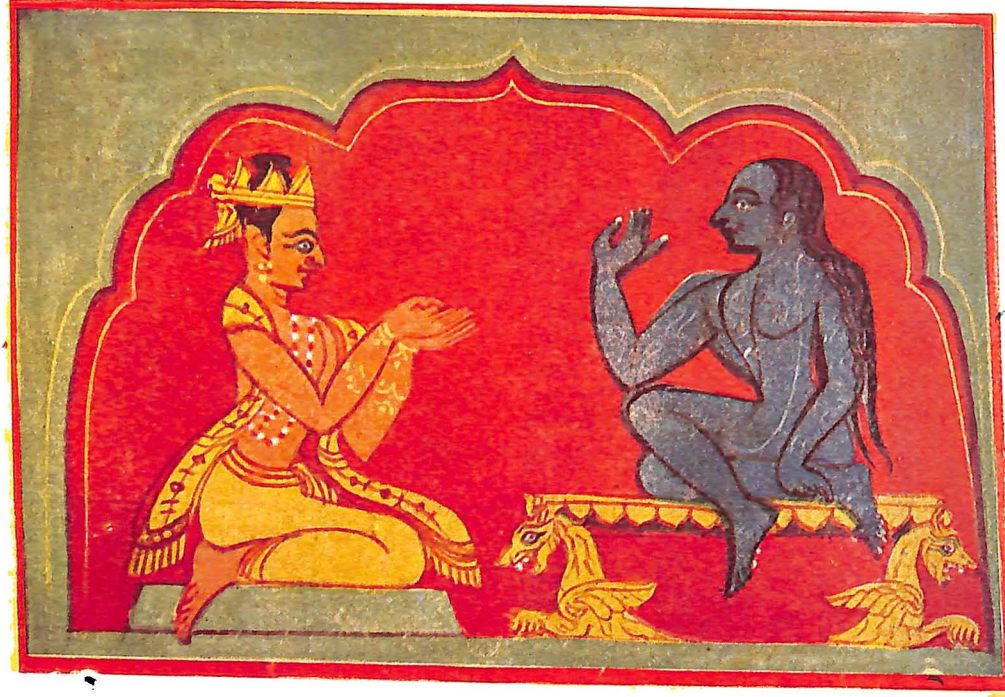
श्रीमंत शंकरदेवने बहुतसे शास्त्रोंका प्रणयन किया। उनमेंसे नौके लिखे शास्त्र प्रधान हैं:— (१) कीर्तन घोषा, (२) श्रीमद्भागवत पहला, दूसरा, तीसरा, स्कन्ध (अनादि पातन) छठा स्कन्ध (अजामिल उपाख्यान), आठवाँ स्कन्ध (अमृत मथन—बलिहलन), आय दशम, कुरुक्षेत्र, ग्यारहवाँ स्कन्ध, निधि नवसिद्ध, बारहवाँ स्कन्ध, गुणमाला, रामायण (उत्तराकांड), हरिश्चन्द्र उपाख्यान, कल्पिणी हरण, भक्तिप्रदीप, (संस्कृत), टोटय, बड़गोत, अंकीया नाट, कालिय दमन, पत्नीप्रसाद, केलि-गोपाल पारिजात हरण, रामविजय इत्यादि।

शङ्कर-किङ्कर
हरिनारायण

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

चित्र-भागवत :: चित्र-भागवत

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।



बाजा पबीक्षिं

शुकदेव

शुकदेवब मुखबपबा भागरत शुनिबलै पबीक्षितब आग्रह :- श्रीमद्भागवतब आबस्तन । ब्राह्मणब शापत भय थाई महाराज पबीक्षिते व्यासब आदेशत भागरत शुनिबलै शुकदेवब आगत हातयोब करि आठूँलै बहिछे । पबम वैष्णव शुकदेवे उपबलै हात दाडि महाराजक भय करिबलै बाधा दि भागरत शुनावलै आबस्त करिछे ।

महर्षि शुकदेवके मुँहसे भागवत सुननेका महाराज परीक्षितका आग्रह : ब्राह्मणके अभिशापके डरसे महाराज परीक्षित व्यासके आदेशानुसार भागवत सुनने के लिए महर्षि शुकदेवके सामने हाथ जोड़कर घुटने टेककर बैठे हुये हैं । परम वैष्णव शुकदेव महाराज अभय देते हुये श्रीभागवत सुनाना प्रारंभ करते हैं ।



সূৰ্য্য

বৰুণ

বায়ু

অগ্নি

বসুধতিয়ে ব্ৰহ্মাত দুখ নিবেদন কৰিছা

ইন্দ্ৰ

কুবেৰ

চন্দ্ৰ

যম

ধেনুকুপা পৃথিবীৰ ব্ৰহ্মাৰ ওচৰত দুখ নিবেদন। অসংখ্য দৈত্যৰজাৰ পীড়নত পৃথিবী পীড়িত হৈ তাৰ ভাব সহিব নোৱাৰি ধেনুকুপ ধৰি ব্ৰহ্মাৰ আগত দুখ নিবেদন কৰিছে। ব্ৰহ্মাই সেই গাভী-কুপা পৃথিবীক আগত লৈ সূৰ্য্য, বৰুণ, বায়ু, অগ্নি, ইন্দ্ৰ, কুবেৰ, চন্দ্ৰ, যম আদি ত্ৰিংশ কোটি দেৱতাৰ সৈতে কীৰ্ত্তি সাগৰৰ পাৰত পুৰুষ-সূক্ত মন্ত্ৰেৰে মাধৱক আৰাধনা কৰোঁতে সমাধিত আকাশী বাণী শুনে।

ধেনুরূপমে' পৃথ্বী'কা ব্ৰহ্মা কে पास दुःख निवेदन : असंख्य दैत्यराजाओंके पीड़नसे पृथ्वी पीड़ित होकर भीष्म सङ्घर्षमें असमर्थ हो धेनु रूपमें ब्रह्माके सामने दुःख निवेदन करती है। ब्रह्माने उस गार्भी-रूप पृथ्वीको साथ लेकर सूरज, वरुण, वायु, अग्नि, इन्द्र, कुबेर, चन्द्र, यम प्रभृति तीस करोड़ देवताओं के साथ क्षीर सागरके किनारे पुरुष-सूक्त मन्त्र से माधवकी आराधना करती हुये आकाश वाणी सुनी।



কংসৰ দাস

কংস ৰাজা

কংসৰ সেৱক

বসুদেৱৰ পুত্ৰ কীৰ্ত্তিমল্লক
সত্যক ৰাথি দিছা

পূৰ্বপ্ৰতিশ্ৰুতি মতে ৰজা কংসৰ ওচৰত সন্তানৰ সৈতে বসুদেৱৰ উপস্থিতি। আগৰ প্ৰতিশ্ৰুতি মতে বসুদেৱে প্ৰথম সন্তানটো ওপজা মাত্ৰকে কোলাতলৈ কংসৰ ওচৰলৈ আহে। কংস ৰাজ-সিংহাসনত বহি আছে; এজন সেৱকে পিছ ফালৰপৰা তেওঁৰ ওপৰত বিচিত্ৰ ৰত্নমণ্ডিত বগা ছত্ৰ ধৰিছে, সমুখৰ ফালে আন এজন সেৱকে চন্দনাৰ গন্ধ দ্ৰব্যৰ পাত্ৰ বাওঁহাতত লৈ আগহাত ওপৰলৈ তুলি ৰজাৰ স্তব কৰিছে। এনে সময়ত কংসই বসুদেৱক সন্তানটো লৈ অহা দেখি বসুদেৱক সত্যবাদী বুলি জানি সন্তানটো উলটাই নিবলৈ আদেশ কৰে।

পূৰ্ব প্ৰতিশ্ৰুতীকৈ অনুসৰি ৰাজা কংসকৈ পাস সন্তানকৈ সাথ বসুদেৱকা আগমন। পূৰ্ব প্ৰতিজ্ঞানুসৰি বসুদেৱে পহলী সন্তানকো জন্মতহী গোদীমৈ লৈকৰ কংসকৈ পাস আয়া। কংস ৰাজসিংহাসনপৰ বৈঠা হৈ; এক সেৱক পৌছেসে ওসকৈ জপৰ বিচিত্ৰ ৰত্নসি সজা হুন্না সফেদ ছত্ৰ ডুলা ৰহা হৈ, সমুখকী আৰ এক দূসৰা সেৱক চন্দনাৰি গন্ধ দ্ৰব্যকী বায়ে হাথমৈ লৈকৰ দাহিনী হাথসে ৰাজা কা স্তবন কৰ ৰহা হৈ। এসৈ সময়মৈ কংসনৈ বসুদেৱকী সত্যজাত শিশুকী লৈকৰ আতি দেখ বসুদেৱকী সত্যবাদী জান সন্তান কী লীটা লৈ জানিকা আদেশ দিয়া।



বখীয়া

বসুদেব-দৈরকী

বখীয়া

নারদ ঋষি

কংস রাজা

কংসর অনুচর

দৈরকী-বসুদেব কাবাগাবত আবদ্ধ। বসুদেবে সন্তানটি ফিরাই লৈ যোরাব পাছতেই মহর্ষি নারদ কংসর ওচরত উপস্থিত হল। নারদে কংসক কবলৈ ধরিলে “অবোধ কংস, তই বুজা নাই নে যে বসুদেব, নন্দ আদি সকলোবিলাক বিষ্ণু অংশ দেবতা। দৈরকী, যশোদা আদি সকলোবিলাক দেবনাৰী; তই পূর্বত কালনিমি আছিলি। বিষ্ণু দৈরকীৰ গৰ্ভত পুনৰ জন্মি তোক মাৰিব। তোৰ যিবিলাক জ্ঞাতি সকলোবিলাক তোৰ বৈৰী।” কংসই নারদৰ কথা শুনা মাত্রেই ভয় খাই দূত পঠাই দৈরকী-বসুদেবক আনি লোহা লগাই বন্দাশালত থোৱালে আৰু বখিবলৈ অনুচৰ নিযুক্ত কৰিলে।

এই সময়ত কংস বহু-সিংহাসনত বহিছে, তেওঁৰ এজন অনুচৰে মূৰৰ ওপৰত বিচিত্র বস্ত্রখচিত ছত্ৰ ধৰিছে; এজন গা বখীয়া সৈন্যই ঢাল-তৰোৱাল লৈ বজাৰ আদেশলৈ অপেক্ষা কৰি আগত বহি আছে।

দৈবকী-বসুদেব কংসকৈ কাৰাগাৰমৈ। বসুদেব সন্তান কী লীটা লৈ জানিকৈ বাদ মহর্ষি নারদ কংসকৈ পাশ হাজির হুএ। নারদ কহনে লগে—‘অবোধ কংস! তুনে ক্যা সমভা নহী কী বসুদেব, নন্দ বগৈৰহ সমী বিষ্ণুকৈ অংশ দেবতা হৈ, দৈবকী, যশোদা আদি সমী দেবনাৰিয়া হৈ; তুঁ পহলে কালনিমি থা। বিষ্ণু দেবকীকৈ গৰ্ভমৈ ফিৰ জন্মকৈ তুমে মাৰিগে। তৈৰে জিতনে কুটুম্বী হৈ সমী বৈৰী হৈ। কংস নে নারদ কী বাত সুনতে হী ডরকৈ দূত ভেজকৈ দৈবকী-বসুদেব কী লাকৈ লীহী কী জঁজীৰ লগাকৈ কৈদখান মৈ ডলবা দিয়া আৰু পহৰা দৈনিকৈ লৈ অচুচৰ নিযুক্ত কৰ দিয়া।

ইস সময় কংস বহুসিংহাসনত বহিছে। এক অনুচৰ সিরপৰ বিচিত্র বস্ত্র খচিত ছত্ৰ ডুলা রহা হৈ, এক দৈহ রচী সৈনিক ঢাল তলবার লৈকৈ রাজাকৈ আদেশকী অপেক্ষা কৰ রহা হৈ।



কংসৰ ৰখীয়া

বন্দীশালত বসুদেৱ-দৈৱকী

কংসৰ দাস

কংস ৰাজা

কংসৰ অনুচৰ

কংসৰ কাৰাগাৰত দৈৱকী আৰু বসুদেৱ বন্ধন অৱস্থাত আছে; ৰখীয়াই বন্দীশাল পহৰা দিছে। গৰ্ভৱতী দৈৱকী চিন্তাযুক্ত হৈ আছে; বসুদেৱে তেওঁক নানা প্ৰবোধ-বাক্যেৰে আশ্বাস দিছে। কংসৰ অনুচৰে দৈৱকীৰ গৰ্ভহোৱা সংবাদ কংসৰ আগত দিলত কংস চিন্তাযুক্ত হল; পাছত জন্মহীন বিষ্ণুৰ জন্ম ভয়ত দৈৱকীৰ প্ৰত্যেক সন্তান জন্ম মাত্ৰেই মাৰিবলৈ স্থিৰ কৰি বন্দীশালত খৰ দৃষ্টি ৰাখিবলৈ অনুচৰক আদেশ কৰিছে।

কংসকে কৌটিল্যনামে দেবকী আৰু বসুদেব বন্ধী হুই হালতমি হৈ। পহৰদাৰ কৌটিল্যনামে পহৰা দে ৰহা হৈ। গৰ্ভবতী দেবকী চিন্তিত হৈ; বসুদেব অনেক প্ৰবোধ বাণী সে আশ্বাসন দে ৰহি হৈ। কংস দূতসে শিশু-জন্মকী সূচনা পাৰু চিন্তিত হুআ। ফিৰ জন্মৰহিত বিষ্ণুকে জন্মকে ভয়সে দেবকীকী হৰ সন্তানকী জন্মতেহী মাৰনকা নিশ্চয় কৰ কৌটিল্যনামে পৰ কড়ী নজৰ ৰখনিকৈ লিএ অনুচৰকী আদেশ দিয়া।



বৰুণ বায়ু নাবদ ব্ৰহ্মা বসুদেৱ-দৈৱকী মহেশ ইন্দ্ৰ চন্দ্ৰ

(দেৱগণে বন্দীশালত কৃষ্ণক তুতি কৰিছা)

কংসৰ বন্দীশালত দেৱী-কাপিনী দৈৱকীৰ গৰ্ভত ভগবান স্থিতি লাভ কৰিছে। এই কথা দৈৱকী আৰু বসুদেৱক জনাবৰ কাৰণে আনৰ অদৃশ্যে নিজ নিজ বাহনত চৰি ব্ৰহ্মা, যম, বৰুণ, চন্দ্ৰ, ইন্দ্ৰ আদি দেৱতাসকল কাৰাগাৰলৈ আহি ভগবানৰ স্তৱ কৰিছে।

কংসকে কৈদখানীমেঁ দেৱী-স্বৰূপিণী দেৱকীক গৰ্ভমেঁ ভগবান নে স্থিতি লাভ কৰিছে, ইয়াৰ বাতকা দেৱকী আৰু বসুদেৱকো জান কৰানীকৈ লিখি দুসৰোকো দৃষ্টি বচাৰুৱাৰে আপনো আপনো সবাৰীপৰ চড়কৰ ব্ৰহ্মা, যম, বৰুণ, চন্দ্ৰ, ইন্দ্ৰ আদি দেৱগণ কাৰাগাৰমেঁ আকৰ ভগবানকো স্তুতি কৰি ৰহিছে।

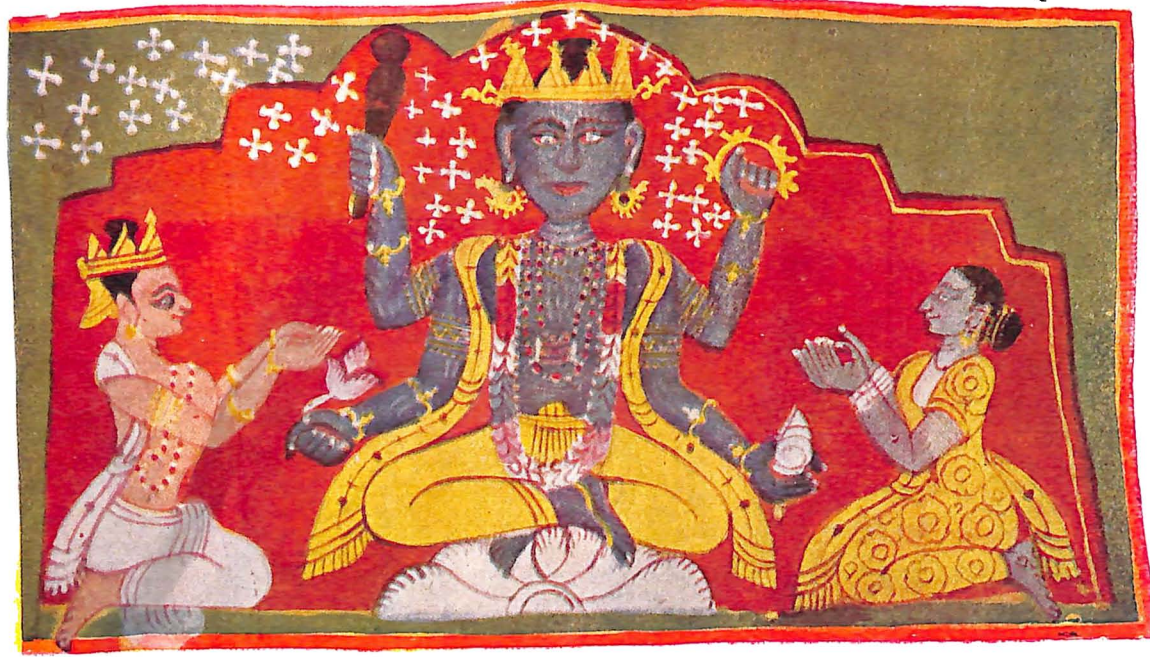


ব্ৰহ্মা যম বৰুণ বসুদেৱ-দৈৱকী চন্দ্ৰ ইন্দ্ৰ

(বসুদেৱ-দৈৱকীক আশ্বাস বুলিছা। দেৱগণে বিদায় কৰি নিজথানে যাস্ত)

বসুদেৱ দৈৱকীক ভগবান বিষ্ণুৰ আবিৰ্ভাৱৰ কথা কৈ আশ্বাস দি তেওঁলোকৰ পৰা বিদায় লৈ নিজ নিজ বাহনত উঠি ব্ৰহ্মা, যম, বৰুণ, চন্দ্ৰ, ইন্দ্ৰ আদি দেৱতাসকল ভগবান বিষ্ণুক সম্মুখত বাখি পিছুৱাই পিছুৱাই নিজ নিজ স্থানলৈ গল।

বসুদেৱ দেৱকীসে ভগবান বিষ্ণুক আবিৰ্ভাৱকো বাত কহকৰ আশ্বাসন কৈ উনসে বিদা লৈকৰ আপনো আপনো সবাৰীপৰ চড়কৰ ব্ৰহ্মা, যম, বৰুণ, চন্দ্ৰ, ইন্দ্ৰ আদি দেৱগণ ভগবান বিষ্ণুকো সামনে ৰখকৰ পিছে হট হট কৰ আপনো আপনো স্থান পৰ চলি গয়।



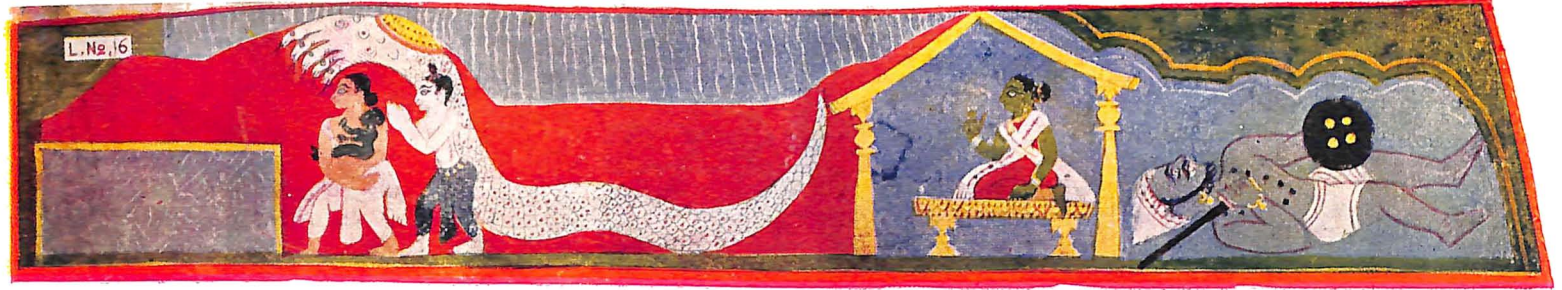
বসুদেৱে তুতি কৰিছা

বসুদেৱ-দৈৱকীক কৃষ্ণে নিজৰূপে দেখা দিছা

দৈৱকী তুতি কৰিছা

শ্ৰীকৃষ্ণৰ আবিৰ্ভাৱ আৰু বসুদেৱ-দৈৱকীৰ স্তৱ।
দেৱী দৈৱকীৰ পৰা ভগবান বিষ্ণু চতুৰ্ভুজৰূপে শঙ্খ, চক্ৰ, গদা, পদ্ম
কৰত লৈ আবিৰ্ভূত হ'ল। কণ্ঠত কৌস্তুভ, গাত পীত বস্ত্ৰ, কাণত
কুণ্ডল, মেঘসম শ্যাম বৰ্ণ, হিয়াত শ্ৰীবৎসপাশ্চ, গলত বনমালা,
কটিত বস্ত্ৰ মেখলা, কৰত কঙ্কণ, পাদপদ্মত বহুময় নুপুৰৰ অঙ্কিত
বালকৰ জ্যোতিয়ে স্মৃতিকা ঘৰ প্ৰকাশ কৰা দেখি বসুদেৱে মনতে
স্নান আৰু ধেনুদান কৰিলে; আৰু দেৱতাসকলৰ কথা স্মৰণ কৰি

শ্ৰীকৃষ্ণাকা আবিৰ্ভাৱ আৰু বসুদেৱ-দৈৱকীৰ স্মৃতি-
গান কৰতা। দেৱী দেৱকীক গৰ্ভসে ভগবান বিষ্ণু চতুৰ্ভুজ
ৰূপে শঙ্খ, চক্ৰ, গদা, পদ্ম কৰোঁ লৈক আবিৰ্ভূত হু। কৰত
কৌস্তুভ, গাত পীত বস্ত্ৰ, কাণত কুণ্ডল, হৃদয়ত শ্ৰীবৎস
পাশ্চ, গলত বনমালা, কটত কঙ্কণ, পাদপদ্মত বহুময়
নুপুৰৰ অঙ্কিত বালকৰ জ্যোতিয়ে স্মৃতিকা ঘৰ প্ৰকাশ
কৰা দেখি বসুদেৱে মনতে স্নান আৰু ধেনুদান কৰিলে;
আৰু দেৱতাসকলৰ কথা স্মৰণ কৰি



যমুনা

নন্দৰ গৃহক বসুদেৱে কৃষ্ণক লৈ যান্ত, অনন্ত ফণায়ে
ছত্ৰ ধৰিছা, আকাশত কণিকা বৃষ্টি কৰিছা।

বন্দীশালত
দৈৱকী

বথীয়া অচেতনে শুতিছা

শ্ৰীকৃষ্ণৰ আদেশৰ লগে লগে বসুদেৱৰ পাৰৰ নিহল ছিগিছে। গোকুলত যশোদাৰ গৰ্ভৰপৰা যোগমায়া জন্মিছে। বসুদেৱে কৃষ্ণক কোলাত লৈ গোকুললৈ যাব ওলাইছে; অনন্তদেৱে ফণা মেলি ওপৰত ছত্ৰ ধৰি হাতযোৰে স্তুতি কৰিছে। সেই সময়ত ধাৰাসাৰে বৰষুণ হৈছে; যমুনা নদী ফেনে ফোটোকাৰে উপচি পৰিছে; পালি পহৰীয়াবোৰ অচেতন হৈ পৰিছে, দৈৱকী কংসৰ কাৰাগাৰত আগৰ দৰে আছে।

যহু কহকৰ ভগবান শ্ৰীকৃষ্ণনি দুৱীকী সামনি শিশুকা ৰূপ ধাৰণ কিয়া। ভগবান্ কৃষ্ণকে আদেশ কে সাথ সাথ বসুদেবকে পৈৱীকী জঁজীৰ টুট গথী। বসুদেব কৃষ্ণকী গোদমঁ লিকৰ গোকুল জা ৱহি হৈ। শিষ-ভগবান্ অৰুনি ফণ ফৈলাকৰ ভগবান্ পৰ ছত্ৰসা কৰদিয়া হৈ। উস সময় ঘৌৰ বৰ্ষা হৌৱহী হৈ। যমুনা নদৌ উমড় ৱহী হৈ। পহুৱেদাৰ বেসুধ পড়ি হৈ, দেবকী কংসকে কৈদখানিমঁ পহলে জঁসী হী হৈ।



সেৱকিনী।

যশোদাৰ লগে কৃষ্ণ
শুতিছা।

বসুদেৱ-দৈৱকীৰ সঙ্গ
যোগমায়া শুতিছা।

বথীয়া কংসত জান দিতে
নব মাৰিছা।

যশোদাৰ কন্যা-হৰণ :—বসুদেৱে যমুনা পাৰ হৈ গোকুললৈ গৈ টোপনিত অচেতন হৈ থকা যশোদাৰ কোলাত কৃষ্ণক থৈ যোগমায়াক লৈ আহিল ; আৰু দৈৱকীৰ কোলাত শুৱাই থলে। তেওঁ নিজে আগৰ দৰে শিকলি লগাই বন্ধন অৱস্থাত থাকিল। কংসৰ কাৰাগাৰৰ দুৱাৰ আগৰ দৰে বন্ধ হ'ল। কাৰাগাৰত কেচুৱাৰ কান্দোনৰ শব্দ উঠিল। পালি পহৰীয়াবিলাক জাগি উঠিল আৰু কংস বজাক খবৰ দিবলৈ বুলি এজন প্ৰহৰী লৰা-লৰিকৈ যাব ধৰিলে।

यशोदा कौ कन्याकाहरण : वसुदेव जमुना पार करके गोकुल जाकर नींदमें अचेतन होकर पड़ी हुई यशोदाकी गोदमें कृष्णको रखकर योगमायाकी ले आये ; और देवकीकी गोदमें सुला दिया। वसुदेव पहले जैहीसे बंधनमें बंध गये। कंसके कैदखानिका दरवाजा पहले जैसा बंद हो गया। कारागारमें बच्चेके रोनेकी आवाज उठी। पहरदार जाग उठे और कंस राजाकी खबर देनेके लिए एक पहरदार दौड़कर जानी लगा।



বসুদেৱ

দৈৱকী কংসক কাৰ্পূণ্য কৰিছা

কংসে যোগমায়াক ধৰিছা

কংসৰ দ্বাৰা যোগমায়া বধৰ চেষ্টা :—বজা কংসই দৈৱকীৰ সন্তান হোৱা সংবাদ পাই বিহ্বল হৈ লৰি যমৰ দৰে কাৰাগাৰলৈ

कंसके द्वारा योगमायाके वध की चेष्टा : राजा कंस देवकीका संतान होने का संवाद पाकर विह्वल होकर दौड़कर

আছে। কংসৰ বাক্ষসৰ দৰে মূৰ্তি দেখি দৈৱকী ভয় খায়; কিন্তু পিছ মুহূৰ্ত্তে নিজক চম্ভালি কন্যাটী ভিক্ষা কৰে আৰু কোলাত সাৱটি লৈ আত'ৰাৱে কান্দিবলৈ ধৰে। তাকে দেখি কংসই দাঁত কামুৰি নানা ভৎসনা কৰি কন্যাটীৰ ভৰি ছুখনত ধৰি টানি আনিবলৈ খুজিছে। বসুদেৱেও যেন কন্যাটীক ভিক্ষা দিবৰ কাৰণে হাত পাতি বৈ আছে।

यम जैसा कैदखानेमें आया। कंसकी राक्षस जैसी मूर्ति देखकर देवकी डर गयी; लेकिन दूसरे क्षणही अपनेको संभाल कर लड़कीकी भीख मांगती हुई पैरपकड़कर आर्तस्वर से रोने लगी। उसे देखकर कंस दाँत निकाले भिड़कते हुवे लड़कीके दोनों पैरों को पकड़कर खींच लाना चाहता है। वसुदेव भी मानो कन्याके जीवन की भीख मांगते से हाथ फैलारहे हैं।



কিন্নৰ

চাৰণ

বিছাধৰী

যোগমায়া

কংস বাজা যোগমায়াক শিনাত আফানিছা

কংসৰ পতন

মায়ামোহিত বজা কংসই বসুদেৱ-দৈৱকীৰ কাকূতি মিনতিলৈ ক্ৰক্ষেপ নকৰি যোগমায়াৰ ভৰি ছুখনত ধৰি দৈৱকীৰ কোলাৰপৰা আজুৰি আনিলে আৰু এটা ডাঙৰ শিলৰ ওপৰত আফাল মাৰি দিলে। পিছ মুহূৰ্ত্তে যোগমায়াই অষ্টভূজা ৰূপ ধৰি প্ৰভাতৰ সূৰ্য্যৰ

मायामुग्ध राजा कंस वसुदेव देवकीकी विनतीकी परवाह न कर योगमायाके दोनों पैरोंकी पकड़कर देवकीकी गोदसे छीनकर एक बड़े पत्थर पर दे मारा दूसरे क्षणमें योगमाया अष्टभुजाके रूपमें प्रभात कालीन सूर्यकी भाँति दिग्विदिक् को

দৰে দিগ্‌বিদিক পোহৰ কৰি আকাশলৈ উঠিল। অসংখ্য বিছাধৰীয়ে
নৃত্যগীত আৰু চাৰণ-কিন্ধৰে যোগমায়াক তুতি কৰিবলৈ ধৰিলে।

প্রকাশিত কর আকাশপর চড় গयी। असंख्य विद्याधरी नृत्य
गीतसे और चरण, किन्नरगण योगमाया की स्तुति करने लगे।



দাসী

দৈৱকী

বসুদেৱক কংসে মিনতি বুলিছা

কংসৰ অশুচৰ

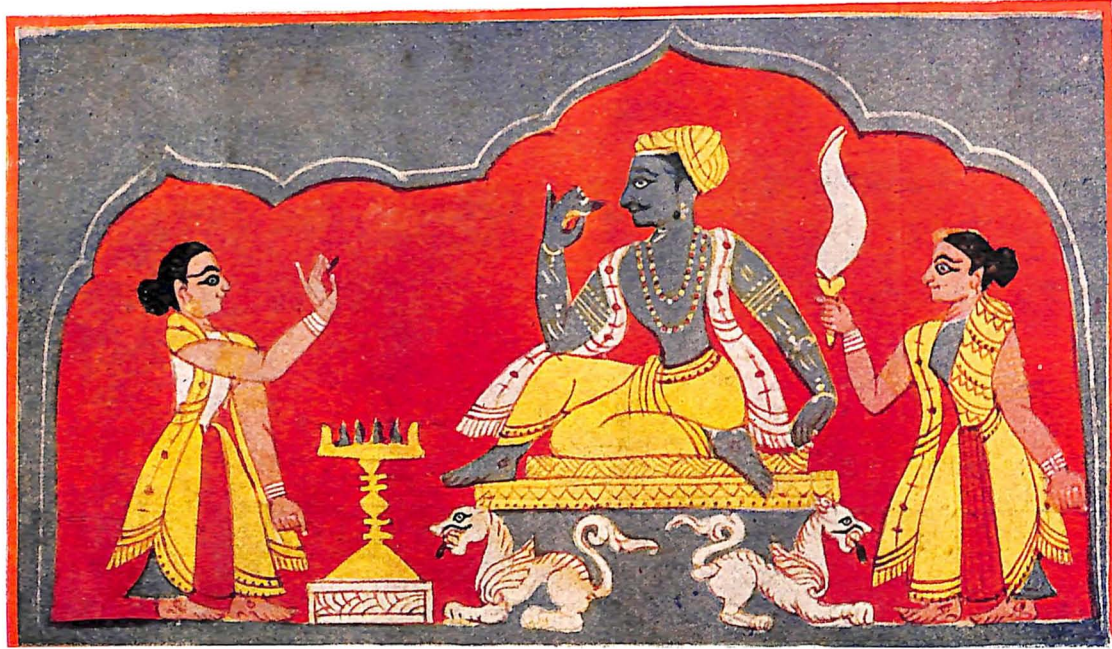
কংসৰ ক্ষমা ভিক্ষা : যোগমায়াই আকাশৰপৰা কংসৰ
বৈৰীৰ সংবাদ দিলত কংস আচৰিত হল আৰু মিছাতে ভাগিন-
বধৰূপ অকাৰ্য্য কৰা বাবে অল্পতপ্ত হৈ বসুদেৱ-দৈৱকীৰ বন্ধন
খুলি দিলে। কংসই বসুদেৱৰ ভৰিৰ ওচৰলৈ হাত নি ভাগিন-
বিলাকক মৰাৰ বাবে নানা ভাৱে ক্ষমা খুজিলে।

कंसकी क्षमा याचना : योगमाया का आकाशसे कंसके
वैरीका संवाद देनेपर कंस को अचरज हुआ और व्यर्थ ही
भागिनी-वध जैसा पाप कर्म करनेके कारण पश्चात्ताप करते हुये
वसुदेव-देवकीका बंधन खोलकर कंसने वसुदेवके पैरोंपर
पड़कर नाना रूपसे माफी मांगी।



রাজা কংসের মন্ত্রণাসভা :—কংসই বসুদেব-দৈবকীরপবা বিদায় লৈ যোগমায়াৰ বাণী স্মৰণ কৰি সচিন্তিত মনে ঘৰলৈ উভতিল। পিছত পূতনা, অঘাসুর, বকাসুর, কেশী, অবিষ্ট আদি অসুৰবিলাকৰ সৈতে সভাপাতি যোগমায়াৰ বাণীৰ বিষয়ে আলোচনা কৰে। দৈত্যবিলাকে সগৰ্বে হাত তুলি আশ্বাস দি কলে—“আপোনাৰ শত্ৰু কোনোবা ঠাইত জন্মিছে যেতিয়া ৰাজ্যত যিমান শিশু বিচাৰি পাওঁ সকলোকে মাৰোঁ। দেৱতাবিলাকৰ মূল মাধৱ; বিষ্ণুৰ সেৱক হৈছে যজুৰ্বেদী ব্ৰাহ্মণ; সেই কাৰণে তপস্বী ঋষিবিলাকক বধ কৰোঁ আৰু যাগ-যজ্ঞ নষ্ট কৰোঁ; বিষ্ণুৱে খাবলৈ নাপাই আপুনি মৰিব।

রাজা কংসকী মন্ত্রणासभा : वसुदेव-देवकीसे विदा लेकर योगमायाकी वाणी याद कर सोचते सोचते कंस घर लौटा। बाद में पूतना, अघासुर, बकासुर, केशी अरिष्ट आदि असुरोंके साथ सभामें योगमायाकी वाणीके बारेमें आलोचना की। दैत्योंने गर्वके साथ हाथ उठाकर आश्वासन देकर कहा—“जब आपका शत्रु किसी जगह जन्मा है, तो राज्यके समस्त शिशुओंकी ढूँढकर मारेंगे। देवताओंके, विष्णुके सेवक हैं यजुर्वेदी ब्राह्मणगण; इसलिए तपस्वी ऋषियोंका वध करनेपर और यज्ञादि भ्रष्ट कर देनेपर भोजन न मिलने से विष्णु आप ह मर जायगा।”



কংসৰ মহাদৈ

কংস গৃহত পশিছা

দাসী

চিন্তায়ুক্ত ৰাজা কংস : কংস ৰজাই সভাভঙ্গ কৰি চিন্তায়ুক্ত মনে সিংহাসনত বহি আছে। এজনী দাসীয়ে পিছৰ ফালৰ পৰা চামৰেৰে বিচিছে। সম্মুখত কংসৰ মাদৈয়ে কংসক চিন্তায়ুক্ত দেখি হাত জোকাৰি চিন্তা কৰিবলৈ যেন বাধা কৰিছে।

চিন্তায়ুক্ত ৰাজা কংস : ৰাজা কংস সভা সমাপ্ত কৰণেৰে বাবে সোঁচৰে সিংহাসনত বহি আছে। এক দাসী পিছৰে চামৰেৰে হাবা কৰিছে। সামনে কংসৰে ৰানী কংসক চিন্তা দেখি হাত হিলাকৰি সোঁচৰে মনো মনা কৰিছে।



তিলৰ পৰ্বত ।

কৃষ্ণৰ জন্মত মহোৎসৱ মিলিছা । যশোদা কৃষ্ণক কোলা লৈছা । নন্দে জাতকৰ্ম কৰাইছা । গৰ্গ ঋষি

গোকুলত কৃষ্ণ-জন্মোৎসৱ : — ইফালে গোকুলত নন্দ-যশোদাৰ আনন্দৰ পাৰকুল নাই। গোপৰাজ নন্দই পুত্ৰ-জন্ম আনন্দত বিভোৰ হৈ স্নান কৰি বত্ন-বস্ত্ৰৰ সৈতে পৰ্বত প্ৰমাণ তিল ব্ৰাহ্মণক দান কৰিলে। গোকুলৰ কোনোৱে খোল, কোনোৱে তাল কোনোৱে বা কালি বজাই বজাই নাচি বাগি আনন্দত আত্মহাৰা হৈ পৰিছে। মহামুনি গৰ্গই বসুদেৱৰ আদেশত গোকুললৈ আহি গোপনে গোপনে কৃষ্ণৰ নামকৰণ কৰিলে। ভগৱান কৃষ্ণক কোলাত লৈ যশোদা দেবীয়ে পিয়াহ খুৱাইছে। গোপৰাজ নন্দ গৰ্গ মুনিৰ সন্মুখৰ ফালে বহি আগহাত মেলি পুত্ৰৰ কোষ্ঠীৰ ফল কেনে তাকেহে শুনিবলৈ যেন প্ৰতীক্ষা কৰিছে।

গোকুল में कृष्ण-जन्मोत्सव : इधर गोकुलमें नन्द यशोदाके आनन्दका कूल किनारा ही नहीं है। गोपराज नन्द पुत्रजन्मके आनन्दसे बसुध होकर स्नानके बाद रत्न-वस्त्रोंके साथ ढेरके ढेर तिलोंका ब्राह्मणोंको दान दिया। गोकुल-वासी आनन्दसे नाचते गाते आत्महारा हीगये। महामुनि गर्गने वसुदेवके आदेशसे गोकुल आकर छिपाकर कृष्णका नामकरण किया। भगवान कृष्णको गोदमें लेकर यशोदा-देवी स्तनपान करा रही हैं। गोपराज नन्द गर्गमुनिके सामने बैठकर दाहिना हाथ फैला कर पुत्रकी जन्मपत्रिकाका फल सुननेकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।



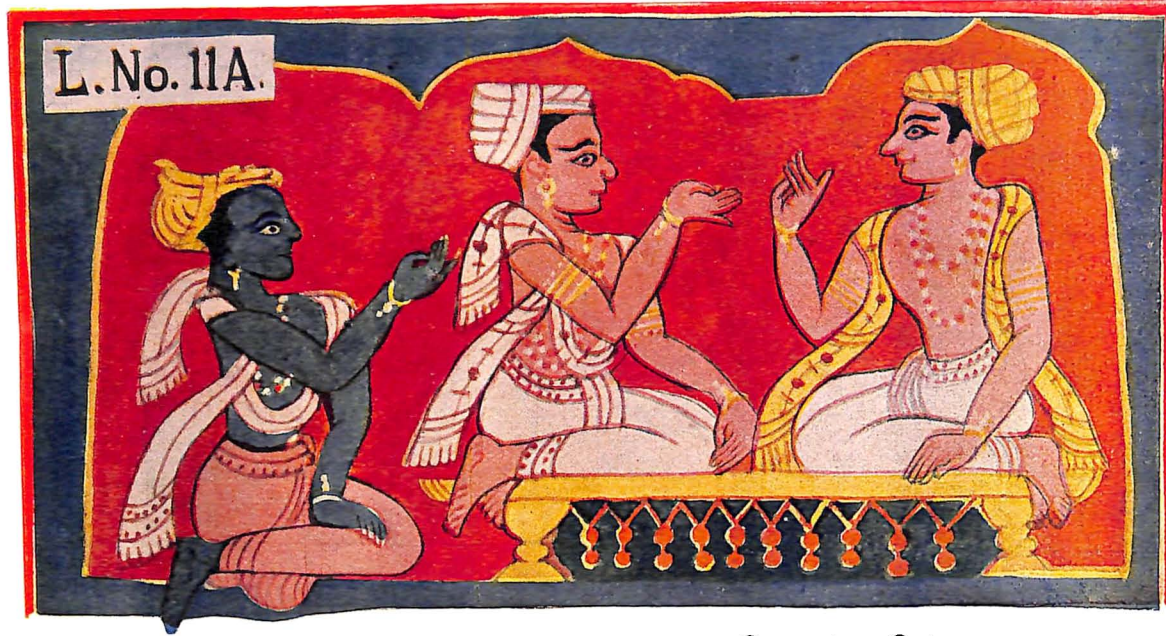
গুরানগণে আনন্দ কবিছা।

যশোদা কৃষ্ণক কোনা নৈছা; গোপীসবে দুর্কীর্ণত সিঞ্চিছা।

নন্দোৎসব : গোকুল আনন্দে উপচি পবিছে। গোপ-গোপিনীসকলে যশোদাৰ পুত্র-জন্ম সংবাদ পাই নতুন বস্ত্র অলঙ্কার পিন্ধি গোকুলতেল লৈ গোপৰাজ নন্দৰ ঘৰ ভৰি পবিছে। গোপ-সকলৰ কোনোৱে শঙ্কা, কোনোৱে শিঙা বজাইছে আৰু আনন্দত পৰস্পৰে ইটোৱে সিটোৰ মুখত, সিটোৱে ইটোৰ মুখত লাক খুৱাই দিছে। যশোদাই কৃষ্ণক কোলাত লৈ স্তন খুৱাই বহি আছে। গোপীসকলে চিবজীৱী হওক বুলি শিশুক আশীৰ্বাদ দিছে আৰু হালধিৰ গুড়া তেল-পানী মিহলাই আনন্দত ছিটাছিটি কবিছে। ৰজা নন্দই সকলোকে যথাযোগ্য সম্ভাষণ কবিছে।

৩

নন্দোৎসব : গোকুল আনন্দে উভৰ গয়া হৈ। গ্বাল-গ্বালিন যশোদা কো পুত্র হুআ যহ সংবাদ মিলতি হী নয়ে কপড়ি জেবর পহনকর इत्वादि लगाकर गोपराज नन्द के घर जमा हो गये। ग्वालो'मेंसे किसीने शंख, किसीने सींगा बजाया और आनन्दसे आपस में एक दूसरे के मुँह में लड्डु खिला रहे हैं। यशोदा कृष्णको गोद में लेकर स्तन पिला कर बैठी हैं। ग्वालिन गण "चिरंजीव हो" कहकर शिशु को आशीर्वाद दे रही हैं और हल्दीका चूर्ण तेल-पानी मिलाकर आनन्दसे उबटन कर रही हैं। राजा नन्द सबसे यथायोग्य संभाषण कर रहे हैं।



गुराल ।

बसुदेवे नन्दे प्रिय सन्तापन कबिछा ।

गोपराज नन्द आरु बसुदेवर आलाप : गोपराज नन्दइ पुत्रर जन्मोत्सव समाप्त करि गोपसकलक गोकुल बङ्गार भाव दि कंसक दिवलगीया वार्षिक कर सोंधावलै मथुवालै गै कर दि उठि मित्र बसुदेवर घबलै गैछे । बसुदेवे बहुदिनर गूबत नन्दक देखि आथेवेथे समादर करि छुयो मुखामुथिकै बहि नाना आलाप करिछे । नन्दर पिछर फाले एजन गुराले आठू लै बहि तैँलोककर आलाप सुनिछे । बसुदेवे गोकुलत नानाप्रकाव उंपात हव पाबे बुलि नन्दक वेगेते गोकुललै यावलै कोरात गोपराज नन्दइ मित्रत विदाय लैछे ।

गोपराज नन्द और बसुदेवका प्रेमालाप : गोपराज नन्द पुत्रके जन्मका त्यौहार समाप्त कर ग्वालोंकी गोकुलकी रक्षाका भार देकर कंसका सालाना कर देनेके लिए मथुरा आकर कर देनेके बाद मित्र बसुदेवके घर गये । बहुत दिनोंके बाद नन्दकी देखकर बहुत आदरके साथ बसुदेव नन्दके आमने सामने बैठकर अनेक चर्चाये कर रहे हैं । नन्दके पीछे एक ग्वाला घुटने टेककर बैठकर उनकी चर्चा सुन रहा है । नन्दकी अनुपस्थितिमें गोकुलमें अनेक प्रकारकी घटनाएं हो सकती हैं यह बसुदेवके कहनेपर गोपराज नन्द मित्रसे बिदा लेते हैं ।



শকটত নন্দ

নন্দৰ গোকুললৈ প্ৰত্যাহৰ্ত্তন : নন্দই মিত্ৰ বশুদেৱৰ
কথা মতে গৰুৰ গাড়ীত উঠি গোকুলৰ মূৰা হৈ উভতিব
ধৰিছে

মহাৰাজ নন্দকা গোকুল লৌটনা : নন্দ মিত্ৰ
বসুদেবকে কহলৈকে অনুসৰ বৈলগাড়ীপৰ চড় কৰ গোকুলকী আঁৰ
লৌট ৰহে হৈঁ ।



শয্যাতে কৃষ্ণে শুতিছা।

নন্দর গৃহত পূতনা পশিছা।

গোকুলত পূতনা প্রবেশ : সিফালে কংসই পাঠোরা পূতনা নামে বাক্ষসী এজনীয়ে সুন্দরী বমণী বেশে কৃষ্ণক বধিবলৈ গোকুলত উপস্থিত হৈছে। যশোদাই কৃষ্ণক সৰু খাট এখনত শুৰাই থৈছে। পূতনাই হাতত পছমফুল এটা লৈ লাহে লাহে কৃষ্ণক ওচৰ চাপিছে। পূতনাক দেখি কৃষ্ণই—

“আচাৰন্তু ভৰি ভোখে কান্দন্তু সাক্ষাত
দেখি নিশাচৰী হাসি মেলিলন্তু হাত।”

গোকুলম্ পূতনাকা প্রবেশ : উধর कंस द्वारा मेजीहुई पूतना नामकी राक्षसी सुंदर रमणीकी वेशमें कृष्णका वध करनेके लिए गोकुलमें आई। यशोदाने कृष्णको पलंगपर सुलां रखा था। पूतना हाथमें एक कमलका फल लेकर धीरे धीरे कृष्णके पास पहुंची। पूतनाकी देखकर कृष्ण हाथपैर मारतेहुवे रोने लगे मानों भूखे रो रहे हैं। निशाचरी यह देखकर हाथ फैलाती है।



তনে সমে কৃষ্ণে পূতনাৰ প্ৰাণ শুষিছা ।

গোপিনী হানি যশোদা । বোহিণী ।
চাহিছা কৃষ্ণক ।

পূতনা-বধ : পূতনাই কৃষ্ণক পিয়াহ দিবলৈ হাত মেলি কোলাত লৈছে। যশোদা-বোহিণী আদিয়ে পূতনাৰ কপত মুগ্ধ হৈ ব লাগি চাই আছে। পাছত যেতিয়া নিশাচৰীয়ে কৃষ্ণক মাৰিবলৈ বিযময় স্তন দিলে, তেতিয়া স্মযোগ পাই—

“আটি ধৰি মুখে হৰি কোপে ছপিলন্তু ।
তনে সমন্বিতে তাইৰ প্ৰাণ শুষিলন্তু ॥”

বজ্ৰপাত পৰাৰ দৰে পূতনা মাটিত পৰি গল আৰু মুগ্ধেদি ফেন উলিয়াব ধৰিলে; কৃষ্ণে পূতনাৰ ওপৰত পৰি স্তন পান কৰি থাকিল।

পূতনা বধ : পূতনা স্তন পিলাইকৈ লিখি কৃষ্ণক হাত ফৈলাকৈ গোদম লৈছিল। যশোদা-বোহিণী আদি পূতনাৰে পৰি মুগ্ধ হৈ পলকৰে দেখিছিল। জৰুৰীতে নিশাচৰীয়ে কৃষ্ণক মৰিবলৈকৈ লিখি অতি বিশাল স্তন মুগ্ধেদি দিয়া তে কৃষ্ণক মানোঁ সুযোগ মিলি গিয়া আৰু পূতনাৰে স্তনকো দৰাকৈ চূসনে লগি। স্তনকৈ সাথ উসকী জানিও চূসিলি। পূতনা বজ্ৰপাতৰে জৰুৰীতে গিৰ পড়ি আৰু মুগ্ধেদি ফেন নিকলি লগি; কৃষ্ণ পূতনাৰে স্তনকো চূসি চূসি স্তনপান কৰিছিল।



গোপী । বোহিনী । কৃষ্ণ । যশোদা । গোপী ।

পুতনা প্রাণ ছাড়িল ।

পুতনাই হাত ভৰি মেলি বাজ আলিৰ দৰে পৰি আছে ; কৃষ্ণই তাইৰ বুকত বঙে ক্রীড়া কৰি আছে । যশোদা-বোহিনী আদিয়ে অতি বিস্ময় হৈ মৃত পুতনাৰ বুকৰপৰা আখে বেখে কৃষ্ণক আনিলে আৰু চক খোৱা বুলি মূৰত থুথুৰিয়াই দি খাট এখনত শুৱাই থৈ মূৰৰ ফালে যশোদা আৰু ভৰিপিন্ধনাৰ ফালে বোহিনীয়ে বক্ষাৰ কবচ বান্ধিছে । ছয়োৰে পিছফালে ছজনী গোপীনীয়ে আচৰিত হৈ হাত তুলি যেন ভূত-প্ৰেত দূৰ হোৱা ঔষধহে যোগাইছে ।

পুতনা হাত-পৈৰ ফৈলাকৰ ৰাজসড়কসী লম্বী পড়ী হৈ । লক্ষণ ওসকী ছাতিপৰ আনন্দসে ক্রীড়া কৰিছে । যশোদা ৰোহিণী আদিৰে মূৰ বিস্মিত হৈ কৰি মৰী হুই পুতনাৰ ছাতিসে জল্দিসে লক্ষণক উঠায়া আঁৱ ডৰি গয়া সোচকৰ পুচকাৰ কৰি পলংগপৰ সুলাকৰ সিরহানে যশোদা আঁৱ পৈথানে ৰোহিণী ৰক্তা-কবচ বাঁধিছে । দুইকৈ পীছে দুই গোপীয়া বিস্ময়সে হাত উঠাকৰ মানো' মৃত-প্ৰেত মগানেবাৰী দবাৰা প্ৰবন্ধ কৰিছে ।



গোপসবে পূতনাক দহিছা।

নন্দত বার্তা কহিছা। গুৰান। যশোদা। বোহিণী।

পূতনাৰ শ দাহ : কেইজনমান গুৱালে কুঠাবেৰে খৰি কাটি জুই জলাই পূতনাক দাহ কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে। নন্দ বজা মথুৰাবৰপৰা ঘূৰি গৈ পাওঁতেই এজন গুৱালে পূতনাৰ বাতৰি দিলত নন্দই আচৰিত হৈ আথে বেথে কৃষ্ণক কোলাত লৈ যুৰ সূঙিব ধৰিছে। পাছৰ ফালে আন এজন গুৱালে হাত তুলি একো অনিষ্ট হোৱা নাই বুলি যেন কৈছে। নন্দ বজাৰ পিছফালে যশোদা আৰু বোহিণীয়েও যেন কৃষ্ণৰ একো অপকাৰ কৰিব নোৱাৰাৰ কথাকে কব ধৰিছে।

পূতনা শব দাহ : কই গ্বালি কুলহাড়ীসে লকড়ী কাটকৰ আগ জলাকৰ পূতনাকা দাহ কৰনা শুরু কৰতি হৈ। নন্দৰাজ মথুৱাসে লীটকৰ পহুঁচতিহী এক গ্বালীনে জব পূতনাকী খবৰ দী তো নন্দ তত্পৰতাসে কৃষ্ণকী গোদমে' লৈকৰ সির সূঁঘনে লগ। পীছি এক দূসৰা গ্বাল হাথ উঠাকৰ মানো' কহ রহাই কুচ্চমী হানি নহী পহুঁচী। নন্দৰাজক পীছি যশোদা আৰু বোহিণী মী মানো' কৃষ্ণকা কুচ্চ অপকাৰ কৰ ন সকনেকী বাতহী কহ রহী হৈ।



বাঘ বিপ্রে যশোদা কৃষ্ণক গোপী । যশোদা গোপীক ভুঞ্জাইছাঁ । চবণ আঘাতে শকট পবিছাঁ । পবীক্ষিত । শুক ।
 বাজাইছাঁ । তুতি কবিছাঁ । নোরাইছাঁ ।

শকট ভঞ্জন : মহারাজ পবীক্ষিতে একাগ্রচিত্তে হাতযোৰ কৰি আঠুলৈ ভাগৱতৰ কথা শুনিছে । শুকদেৱে শ্ৰীকৃষ্ণৰ শিশুলীলাৰ কথা কব ধৰিছে । ভগবান কৃষ্ণ অলপ ইফাল সিফাল কৰিব পৰা হোৱাত বজা নন্দই “অঙ্গ-পৰিৱৰ্ত্তন” নামে উৎসৱ পাতি ব্ৰাহ্মণ জ্ঞাতিক নিমন্ত্ৰণ কৰিছে । এনে সময়ত কৃষ্ণৰ টোপনি অহা দেখি যশোদাই তেওঁক এখন গাড়ীৰ তলত গুৱাই থৈ ঠগীত কৰি লাড়ু আদি আনি মানুহক খুৱাব ধৰিছে । ইপিনে কৃষ্ণই সাৰ পাই পিয়াহত কান্দিব ধৰিছে । যশোদাই সেইফালে কাণ নকৰাত কৃষ্ণই ভৰি তুলি কান্দোঁতে আগ ভৰিব আঘাতত গাড়ীখন উলটি পৰিল । শব্দ শুনি যশোদাই ঘাৰ ফিৰি চায় যে গাড়ীখন উলটিছে আৰু তাত থকা দধি, ছুফ, ঘৃতৰ কলহবোৰ কাতি হোৱাত সেইবোৰ পৰিব ধৰিছে ।

শকট ভঞ্জন : মহাৰাজ পৰীক্ষিত একাগ্ৰচিত্তে হাতযোৰ কৰি আঠুলৈ ভাগৱতৰ কথা শুনিছে । শুকদেৱে শ্ৰীকৃষ্ণৰ শিশুলীলাৰ কথা কব ধৰিছে । ভগবান কৃষ্ণ অলপ ইফাল সিফাল কৰিব পৰা হোৱাত বজা নন্দই “অঙ্গ-পৰিৱৰ্ত্তন” নামে উৎসৱ পাতি ব্ৰাহ্মণ জ্ঞাতিক নিমন্ত্ৰণ কৰিছে । এনে সময়ত কৃষ্ণৰ টোপনি অহা দেখি যশোদাই তেওঁক এখন গাড়ীৰ তলত গুৱাই থৈ ঠগীত কৰি লাড়ু আদি আনি মানুহক খুৱাব ধৰিছে । ইপিনে কৃষ্ণই সাৰ পাই পিয়াহত কান্দিব ধৰিছে । যশোদাই সেইফালে কাণ নকৰাত কৃষ্ণই ভৰি তুলি কান্দোঁতে আগ ভৰিব আঘাতত গাড়ীখন উলটি পৰিল । শব্দ শুনি যশোদাই ঘাৰ ফিৰি চায় যে গাড়ীখন উলটিছে আৰু তাত থকা দধি, ছুফ, ঘৃতৰ কলহবোৰ কাতি হোৱাত সেইবোৰ পৰিব ধৰিছে ।



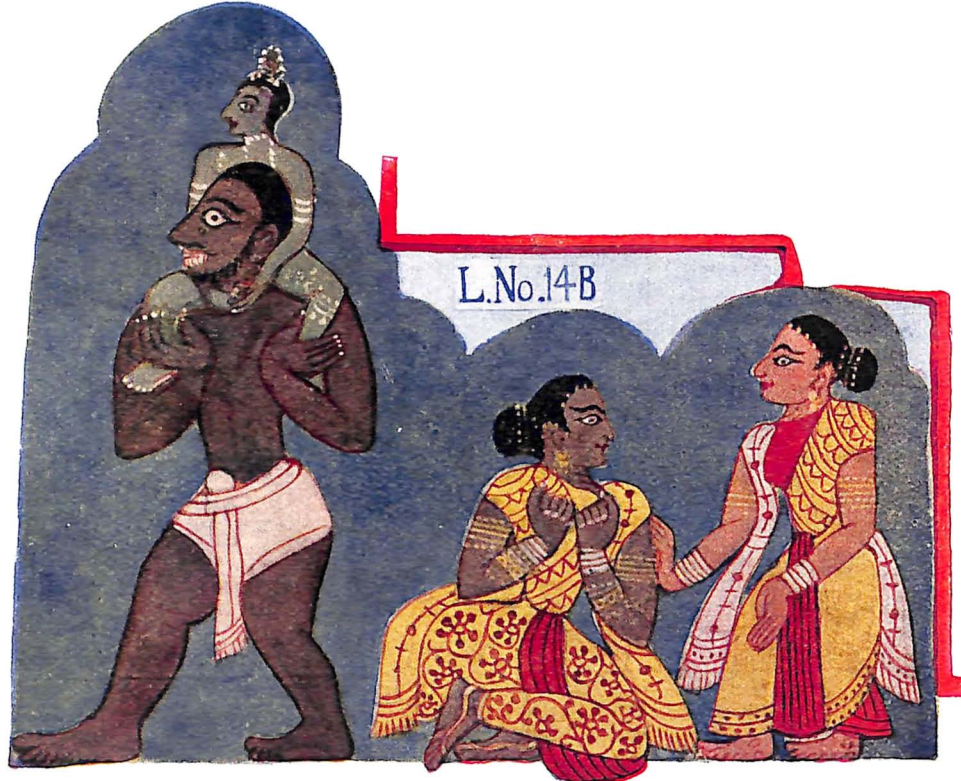
ব্রাহ্মণক নন্দে দান দিছ। সভাসদ। উপনন্দ। নন্দ। ব্রাহ্মণে বেদমন্ত্র যশোদা কৃষ্ণক গোপগণে শকট পূর্করতে থৈছ।
উচ্চাৰিছ। তন দিছ।

কৃষ্ণই কান্দি থকা দেখি যশোদা আথে-বেথে গৈ কৃষ্ণক কোলাত লৈ পিয়াহ দিলে আৰু ব্রাহ্মণক মতাৰ্হি আনি বক্ষা-মন্ত্ৰ পাঠ কৰালে। বলবান্ গুৱালবিলাকৰ হাতুৱাই গাড়ীখন আগৰ দৰে ঠিক কৰি, কলহবোৰ তুলি থলে। বজা নন্দই সভাসদ আৰু উপনন্দৰ সৈতে পৰামৰ্শ কৰি ব্রাহ্মণক কাপোৰ, অলঙ্কাৰ আৰু ধেনু দান কৰিলে। ব্রাহ্মণসকলে দান-দক্ষিণা লৈ আশীৰ্ব্বাদ কৰি ঘৰলৈ গল।

চক্রবাতকপী তৃণাবৰ্ত্ত বধ : এদিন যশোদাই কৃষ্ণক ৰঙতে নচুৱাই থাকোঁতে বৰ বেছি গধুৰ পাই নমাই থলে। এনে সময়তে এটা বৰ ভীষণ বারমাড়লি আহি পূলা-মাটিৰে একো নেদেখা কৰি পেলালে। এই সুযোগতে কংসই পঠোৱা চক্রবাত নামৰ অসুৰ এটাট কৃষ্ণক হৰি নিলে। কৃষ্ণই অসুৰৰ গলত সাৱট মাৰি ধৰি আছে।

কৃষ্ণকো ৰোতি দেখুৱাৰ যশোদানে জলদী আকৰ কৃষ্ণকো গৌদমে লৈকৰ দুধ পিলায়া আৰু ব্ৰাহ্মণীকো বুলাকৰ ৰক্ষামন্দকা পাঠ কৰায়া। বলবান্ গ্বালীকো দ্বাৰা গাড়ীকো পহলি জৈসী ঠিক কৰকি ঘড়ীকো উঠবাৰু ৰক্বা। ৰাজা নন্দ সভাসদ আৰু উপনন্দকে সাথ সলাহ কৰ ব্ৰাহ্মণীকো কপড়া, জিৱৰ আৰু ধেনু আদিকা দান দিয়া। ব্ৰাহ্মণগণ দান-দক্ষিণা লৈকৰ আশীৰ্ব্বাদ দেকৰ ঘৰ গয়ে।

হৃণাবৰ্ত্ত বধ : একদিন যশোদানে কৃষ্ণকো আনন্দমে নচাতি নচাতি বহুত মাৰী মালুম হীনেপৰ সুলা দিয়া। ইতনেমেঁ এসা কাল পীলা তূফান আয়া কী কুছমী দেখাৱ নহী পড়ে। ইস সংযোগমেঁ কংসকো দ্বাৰা ভীষ্মা চক্রবাত নামক এক অসুৰ কৃষ্ণকো চুৱা লৈ গয়া। কৃষ্ণ অসুৰকো গলীকো জকড়কৰ পকড়



চক্রবাতে কৃষ্ণক আকাশলৈ নিছা ।

যশোদা সন্তাপ কৰিছা ।

গোপী ।

বারমাড়লি যোৱাত যশোদাই কৃষ্ণক নেদেখি ইফালে সিফালে
চাই কাতৰভাৱে মাটিত আঠু কাঢ়ি পৰি হিয়া ভুকুৱাই যেন কান্দিব
ধৰিছে । এজনী গোপিনীয়ে কৃষ্ণক বেগেতে পাব বুলি যশোদাক
বেজাৰ কৰিবলৈ হাক দি হাত তুলি আশ্বাস দিছে ।

ৰখা হৈ । ববঁডৰকী চলি জানেকী বাদ যশোদা কৃষ্ণকী ন দেখক
ইধৰ ভধৰ তাকতেহুএ কাতৰ ভাবসী জমীনপৰ গিৰকৰ বিলাপ কৰ
ৰহী হৈ । এক গোপী “কৃষ্ণ জলদী আ পহুঁ চিগা” কহকৰ যশোদাকী
আশ্বাসন দে ৰহী হৈ ।



चक्रवात बध हईछा ।

कृष्क गोपी आक्रमि धरिछा ।

सेरकिनौ ।

यशोदा कृष्क तन दिछा ।

नन्द ।

यशोदाब विश्व-दर्शन : कृष्क नेदेखि गोकुलब यशोदा आदि बमनीसकन कान्दि-काति उत्रारन है आछे; एनेते एटा भौषण शक हल। गोपीबिनाके कान्दिवनै एबि सेइफाले चाई देखे, ये एटा बब डाडब अशुब हात भबि मेलि दाँत निकटाई मबि पबि आछे आक ताब गलत कृष्क गुनमि आछे। एजनौ गोपीये सेइ मबा अशुबब बुकबपबा कृष्क आनिब धरिछे; कृष्कइ गोपीब गलत एखन हात आक कंकानत एखन हात दि गोपीब कोनात उठिब खुजिछे। गोपीये कृष्क नि यशोदाब कोनात दिलत यशोदाई कृष्क कोनात लै तेउँब मुखब फाले एकेबाहे आनन्दमने चाई थाकिन। कृष्कइ यशोदाब कोनात उठि हासि मारिलत यशोदाई कृष्क मुखब भितबत समस्त जगत देखि सुक हल। आगब फाले सेरकिनौ गोपीये

यशोदाका विष्व-दर्शन : कृष्कको न देखकर यशोदा आदि गोकुल की रमणियाँ अधीर हो रो रही हैं; इतनेमें एक डरावनी आवाज होती है। ग्वालिनें रोना छोड़कर उसकी ओर ताककर देखती हैं कि एक बहुत बड़ा असुर हाथ पैर फैलाकर दाँत निकाले मरा पड़ा है और उसके गलेमें कृष्क लटका हुआ है। एक गोपी उस मरे हुए असुरकी छातीसे कृष्कको गोदमें ला रही है। कृष्क गोपीके गलेमें एक हाथ और कमरमें एक हाथ देकर गोपीकी गोदमें आना चाहता है। जब गोपीने कृष्कको लाकर यशोदाकी गोदमें दिया तो यशोदा कृष्कको गोदमें लेकर उसके मुँहकी ओर एक टक देख रही हैं। इतनेमें कृष्क अपना मुँह खोलते हैं। कृष्कके गर्भमें समस्त जगतकी देखकर यशोदा स्तब्ध हो गयी। सामने सेविका गोपी हाथ फैलाकर सेवा

হাত মেলি সেৱা কৰিছে। পিছৰ ফালে নন্দ যেন বিশ্বয় হৈ এখন আসনত হাত তুলি বহি আছে।

কৰ্তী হৈ। পীছে নন্দ বিস্মিতসে হীকৰ এক আসন পর বৈঠ হৈ।



গোপী।

ৰোহিণী।

বলভদ্ৰ। যশোদা।

কৃষ্ণ। নন্দে জাতকৰ্ম কৰাইছা।

গৰ্গ ঋষি।

শ্ৰীকৃষ্ণৰ জাতকৰ্ম আৰু নামকৰণঃ যাদৱৰ পুৰোহিত গৰ্গ ঋষি বশুদেৱৰ দ্বাৰা প্ৰেৰিত হৈ গোকুললৈ আহি কৃষ্ণ-বলৰামৰ নামকৰণ আৰু জাতকৰ্ম কৰিলে। তেঁও এখন উচ্চ আসনত বহি হাত দাঙি কৃষ্ণ-বলৰামৰ কোষ্ঠীৰ ফলাফলৰ কথা কৈছে। নন্দ ওচৰতে আঠু লৈ হাতযোৰ কৰি বহি আছে। নন্দৰ পিছফালে কৃষ্ণক হাতত ধৰি থিয় কৰি যশোদাও আঠুকাঢ়ি বহিছে। তেঁওৰ পাছত বলভদ্ৰক থিয় কৰি লৈ ৰোহিণীও আঠু লৈ বহিছে। পিছৰ ফালে এজনী গোপী আঠু কাঢ়ি বহি যেন কৃষ্ণ-বলৰামৰ গুণাগুণৰ কথা শুনিব ধৰিছে।

শ্ৰীকৃষ্ণাকা জাতকৰ্ম আৰু নামকৰণঃ যাদৱীকৈ পুৰোহিত গৰ্গ ঋষি বসুদেৱ দ্বাৰা প্ৰেৰিত হৈ গোকুল আয়ে আৰু কৃষ্ণ বলৰামকা নামকৰণ ব জাতকৰ্ম কৰিয়া। বহ এক উচ্চ আসনপর বৈঠকৰ হাথ উঠাকৰ কৃষ্ণ বলৰামকী জন্মপত্ৰীকা ফলাফল কহ रहे हैं। नन्द पासही हथ जोड़ि बैठि है। नन्दके पीछे कृष्णका हथ पकड़ करके यशोदाभी बैठी है। उसके पीछे बलभद्रके पास रोहिणी भी बैठी है। पीछे एक गोपी मानो कृष्ण बलरामका गुण अवगुण सुन रही है।



কৃষ্ণ-বলভদ্রে দামুবিব
লাঞ্জত ধরিছা।

যশোদা বোহিণী
নিষেধিছা।

যশোদা-বোহিণী পুত্রক ধরি
ইফাল সিফাল করিছা।

বোহিণী-যশোদা পুত্রক
কোলে লৈছা।

পরীক্ষিত। শুক।

কৃষ্ণ-বলবামব বাল্যলীলা : কৃষ্ণ বলবাম ডাঙব হৈ দামুবি চাবিব পবা হৈছে। এদিন কৃষ্ণ-বলবাম ছয়ো ছটা দামুবিব লেজত ধরি খেদি নিব ধরিছে। পিছব ফালে যশোদা আক বোহিণীয়ে দামুবিব লেজত ধরিবলৈ হাত দাঙি নিষেধ করিছে। যশোদা আক বোহিণীয়ে কৃষ্ণ-বলবামব হাতত ধরি তহলিব ধরিছে। যশোদা-বোহিণীয়ে কৃষ্ণ-বলবামক কোলাত লৈ আনন্দ করিব ধরিছে।

কৃষ্ণ এদিন বলভদ্রক লগত লৈ এষব গোরালব ঘবত সোমাই দামুবি এটা এবি দিব ধরিছে। বলভদ্রে পিছ ফালে থিয় দি চাই আছে; ঘবব গিবিহঁতনী গোপীয়ে হাত তুলি দামুবিটো এবি দিবলৈ বাধা করিছে। আন এদিন যশোদাই কৃষ্ণক কোলাত লৈ বহি আছে। এজনী গোপী যশোদাব ওচবত

কৃষ্ণ বলরামকী বাল্যলীলা : কৃষ্ণ বলরাম জব গায়ৈ' চরানে যোগ্য হুয়ে তব একদিন কৃষ্ণ বলরাম দুইনোঁ দু বচ্ছড়োঁকী পুঁছ পকড়কর ভগা রহে হৈ'। পীছে যশোদা আঁর রোহিণী বচ্ছড়োঁকী পুঁছ পকড়কর হাথ উঠাকর মনা করতী হৈ'। যশোদা আঁর রোহিণী কৃষ্ণ বলরামকী হাথ পকড়কর টহল রহী হৈ'। যশোদা রোহিণী কৃষ্ণ বলরামকী গোদিয়োঁ মঁ লেকর আনন্দ রহী হৈ'।

একদিন কৃষ্ণ বলভদ্রকী সাথ লেকর এক গ্বালকী ঘর ঘুসকর এক বচ্ছড়েকা বাঁধ-খোল রহে হৈ'। বলভদ্র পীছে খড়া হোকর দেখ রহা হৈ'। ঘরকী মালকিন গোপী হাথ উঠাকর বচ্ছড়েকী খোলনেসে মনা করতী হৈ'। দুসর, একদিন যশোদা কৃষ্ণকী গোদমঁ লেকর বৈঠী হৈ'। এক গোপী যশোদাকী পাশ বৈঠকর কৃষ্ণকী গুণ



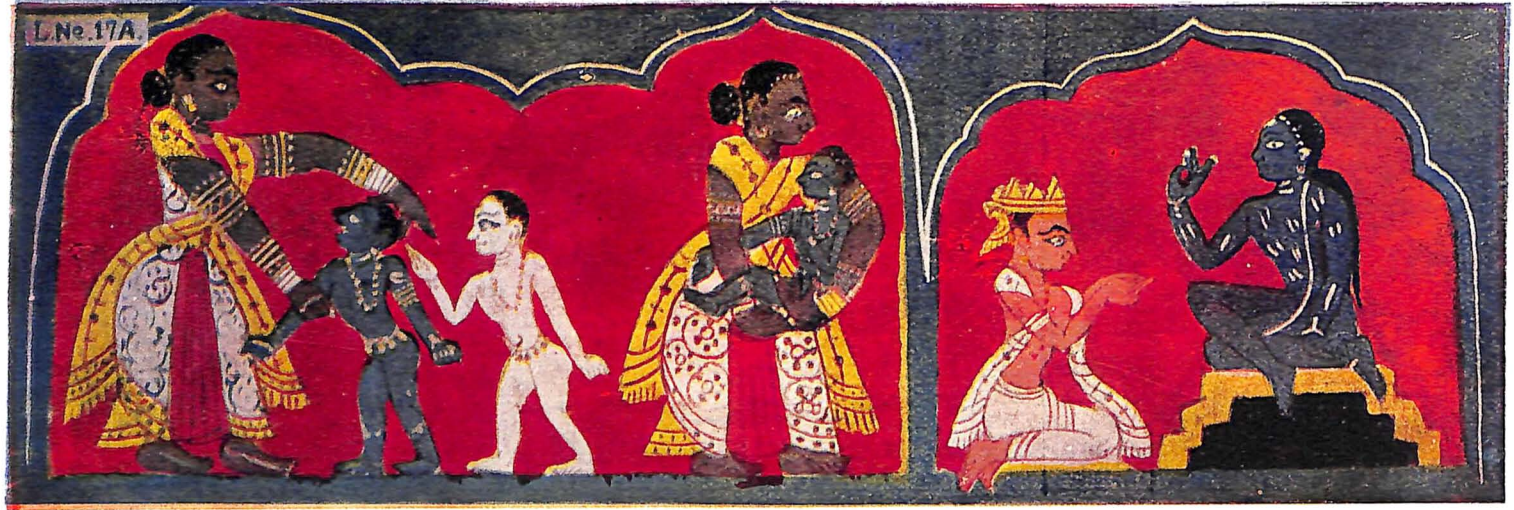
বনভঙ্গ-কৃষ্ণ দামুৰি মেলিছা। গোপী নিষেধিছা। গোপী-যশোদাত কৃষ্ণৰ গুণ কহিছা। গোপীসব।

বহি কৃষ্ণৰ গুণৰ কথা কব ধৰিছে। আন ছজনী গোপী যশোদাৰ পিছৰ ফালে বহি হাত তুলি সেই গোপীৰ কথাকেই যেন সমর্থন কৰিছে।

বখান রহী है। दूसरी दो गोपियां यशोदाके पीछे बैठी उस गोपीकी बातकाही मानो' समर्थन कररही हैं।

মাটি নাই খোৱা বুলি কৃষ্ণই মুখ মেলোঁতে যশোদাৰ জগত দৰ্শন : এদিন গোপশিশুসবে কৃষ্ণই মাটি খোৱা বুলি গেৰিয়াই কলত, যশোদাই কিয় মাটি খাইছা বুলি আগহাতেৰে কৃষ্ণৰ আগহাতত আৰু বাওঁহাতেৰে মূৰত ধৰি সোধে। কৃষ্ণই ভয়ত মাটি নাই খোৱা বুলি কৈ কলে—“ইহঁতে মিছা কৈছে। যদি নপতিওৱা চোৱাঁ”—এই বুলি মুখ মেলি দিয়ে। তেতিয়া যশোদাই কৃষ্ণৰ গৰ্ভত শশী, সূৰ্য্য, তৰা, আৰু সমাগৰা মহীবে সৈতে ব্ৰহ্মাণ্ডকেই

विपुत्र दर्शन : एकदिन ग्वालबाले जब कहा कि कृष्णने मिट्टी खायी, तो यशोदा “क्यों मिट्टी खातेही” कहकर दाहिने हाथसे कृष्णके दाहिने हाथकी और बायें हाथसे सिर पकड़कर पूछती है। कृष्णने डरकर कहा, “ये भूठ कहते हैं; अगर न मानती हो तो देखो” यह कह अपना मुँह खोल दिया। तब यशोदाने कृष्णके गर्भमें शशि, सूर्य, तारे और ससागरा महीके साथ साथ सारा ब्रह्मांड देखा। इसके बाद जब



যশোদা কৃষ্ণব মুখ চাহিছা। বলভদ্রে কথা কহিছা। যশোদা কৃষ্ণক
কোলে লৈছা। পরীক্ষিত। শুকদেব।

দেখা পালে। ইয়াব পাছতেই কৃষ্ণই যশোদাক বৈষ্ণবী মায়াবে
মোহিত কবাত পুত্র বুলি তেওঁক আথে-বেথে কোলাত ললে।

যশোদাৰ দ্বাৰা শ্ৰীকৃষ্ণ-বন্ধন : আন একদিন যশোদাই
কৃষ্ণগুণ গাই এটা কলহত দধি মথি আছে। এনেতে কৃষ্ণই পিয়াহত
আতুৰ হৈ লবি আছি মথনি ডালত ধবিলে। তেতিয়া যশোদাই
দধি মথিবলৈ এৰি আথে-বেথে কৃষ্ণক কোলাত ললে আৰু এখন
পিয়াত বহি কৃষ্ণক পিয়াহ দিব ধবিলে। যশোদাই ওচৰতে
এটা চকত গাখীৰ তপত হবলৈ দিছিল; গাখীৰ উতলি পাবে দেখি
যশোদাই কৃষ্ণক আধা পিয়াহ দিয়েই নমাই থৈ গাখীৰ চক

কৃষ্ণনি বৈষ্ণবী মায়াসে মুগ্ধ কিয়া তব যশোদা পুত্ৰ মানক
গোদম' উঠা লিয়া।

যশোদাকৈ দ্বাৰা কৃষ্ণ-বন্ধন : যশোদা কৃষ্ণ-গুণ গাতি
হুই দহী বিলি রহী হৈ। ইতনম' প্যাসসে ব্যাকুল কৃষ্ণ দৌড়ক
আয়া আঁৰ মথনিকা ভাঙা পকড় লিয়া। তব যশোদা দহী মথনা
ছৌড়ক লাড়সে কৃষ্ণকো গোদম' লৈ চৌকীপৰ বৈঠক কৃষ্ণকো
স্তনসে দুধ পিলাতী হৈ। যশোদানে পাসহী এক বরতনম' দুধ গৰ্ম
হোনেকলিএ আগপৰ রাখা থা; দুধ উভড়ক গিরতি দেখক যশোদা



कृष्ण मथनित धरिछ । यशोदा दधि मथिछा । यशोदा कृष्णक कोले लैछा । यशोदा कृष्णक गाबिब वारि लैछा । कृष्ण बानबक लरनु दिछा ।

नमावलै गल । माके तेनेकै नमाई थै योरात कृष्णक थं
उठिल आक तेउं पाटकु एटा दलियाई मथा दधिव हाँडि भाँडि
पेलाले । ताब पाछत पोपवात सुमाई उवलत बहि शक्ति
नयने लरनु चुब करि निजे खारलै धरिछे आक पोहनीया
वानबक दिब धरिछे ।

“हेन देखि यशोदा हातत लैया वारि ।
जुम्पि जुम्पि यानु पिम्पवार नहि सारि-॥१.०.११३
मारिवे आसनु मार देखि कृष्ण डवे ।
दिलनु लरव भिबे नामि उवलवे ॥”

कृष्णकी आधा स्तन टिकरही गोदसे उतार दूधके बरतनकी हटाने
गयी । माँके इस व्यवहारसे कृष्णकी गुस्सा आया और एक
पत्थरका पीसनेका टुकड़ा फेंककर दहीकी मटकी फोड़ डाली ।
उसके बाद आँवरीमें घूसकर आँखलपर चढ़ डरती आँखोंसे मलाई
चोरी करके खुदभी खा रहाहै और पालतू बन्दरोंकी भी खिला
रहा है । उसे देखकर यशोदा हाथमें डंडा लेकर क्विपे क्विपे
आ रही है ; मारनेके लिए माँको आति देख कृष्ण आँखलसे
उतर कर भाग गया ।



যশোদাই কৃষ্ণক পাছে পাছে খেদি ভাগবা দেখি কৃষ্ণই পলাব নোরাবা ভাও জুরি আদবতে কান্দিব ধবিলে। মাকে লগ পাই কৃষ্ণেব হাত ছখনত ধবি ধমকি দি ককালত জবী লগাই এটা উবলত বান্ধি থলে। কৃষ্ণ বান্ধ খাই আঠু কাঢ়ি আছে। আগব ফালে এজনী গোপীয়ে জবী আনি যশোদাক দিছে।

যমলাজুন ভঞ্জন : যশোদাই কৃষ্ণক উবলত বান্ধি থৈ যোরাব পাছত কৃষ্ণই উবলটো টানি আঠু কাঢ়ি কাঢ়ি গৈ থাকোঁতে উবলটো যমলাজুনব মাজত বজাত গছ ছুজোপা উঘলি পবিল।

অপনি পৌছি দৌড়তি, যশোদাকো দেখকর লুণা মানোঁ ভাগ নহীঁ সকতা এসা দিখাकर प्यारसे रोने लगा। माँने मिलतेही लुणाके दीनोँ हाथ पकड़ ड़ाँटकर कमरमेँ रस्सी बाँधकर एक उखलके साथ बाँध दिया। बंधनमें बंधा लुणा घुटनोँके बल चलता रहा है। सामने एक गोपी रस्सी लाकर यशोदाको देती है।

যমলাজুন ভঞ্জন : যশোদা লুণাকো উখলকো সাথ বাঁধকর চলী গयी। उसकी बाद घुटनोँके बल लुणा उखलको खींचते खींचते जब यमलाजूनोँके बीच उखलके उलभत जानेसे

L No.18B



गोपशिशु ।

कुश ।

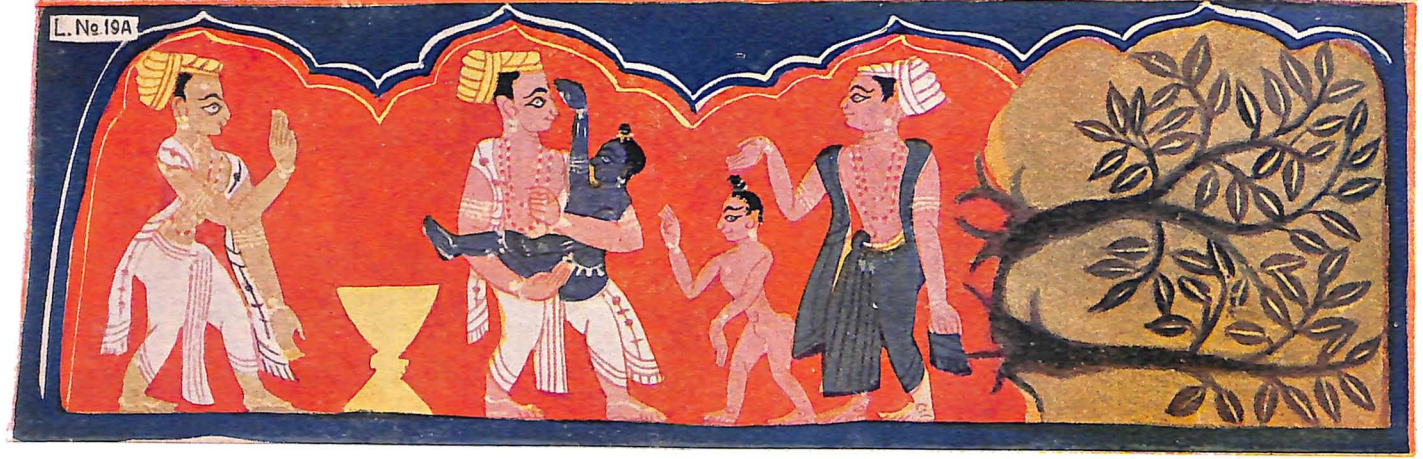
यमलाजूर्ने तूति करिहा ।

गह पवा शक शुनि कुशइ घृषि चाय ये ँचवते छुटा दिव्य पुरुषे
गलवस्तु है आठुं काटि हातयोव कवि सुति कविब धबिछे । ताव
पाह फाले गह छुजोपा उघलि पबि आछे । कुशर समूखर फाले
समवयसैया गोपबालक छुटाई आग हात पाति कुशत येन किवा
थुजि थिय है आछे ।

दीनों पेड़ उखड़ गये । पेड़ोंके गिरनेकी आवाज सुनकर कृष्णने
मुंह मोड़कर देखा कि पासही दो दिव्य पुरुष घुटने टेककर,
हाथ जोड़े सुति कर रहे हैं । उनके पीछे दीनों पेड़ उखड़े पड़े
हैं । कृष्णके सामने सम-वयस्क दो गोपबालक दाहिने हाथ
फैलाकर कृष्ण मानों कुछ मांग रहे हैं ।

यमलाजूर्न उघलि पवा घटनाटो एजन गोपशिशुरे नन्द आदिब
आगत कोरात नन्द, उपनन्द आदि गुरालबिलाक लबि गै देथे

यमलाजूर्न उखाड़ फेकनेकी घटनाकी एक गोपबालक, नन्द,
उपनन्द, आदिके सामने जब बताया तो नन्द, उपनन्द



উপনন্দ । নন্দে কৃষ্ণক কোলা লৈছা । গোপশিশু বার্তা গুৱাল । অছূ'ন উভৰি পৰিছা ।
কহিছা ।

যে ঘটনাটো সঁচা ; কৃষ্ণ তেতিয়াও উৰলত বান্ধ খাই গছ ছুজোপাব মাজতে আছে । বজা নন্দই তৎক্ষণাৎ উৰলৰ পৰা কৃষ্ণক মোকলাই কোলাত ললে । কৃষ্ণই আগ হাতখন নন্দৰ মুখৰ ওচৰলৈ তুলি যেন স্নেহহে ঢালি দিছে । উপনন্দই পিছৰ ফালৰ পৰা বেগাই অহাৰ দৰে আহি হাতখন তুলি কোনো অনিষ্ট নোহোৱাৰ আশ্বাস দিছে । নন্দৰ আগৰ ফালে এটা গোপবালকে হাত দাঙি আছে ; তেওঁৰ পিছৰ ফালে আন এজন গুৱাল থিয় দি হাত তুলি যেন সেই ঘটনাৰ কথা কৈছে ।

আদি ম্বালীনি দীড়কৰ জাকৰ দেখা কি ঘটনা সচী হৈ ; কৃষ্ণ তব ধী উৰলমে বঁধা হুয়া হী হৈ । রাজা নন্দনে ভট উৰলমে কৃষ্ণকো মুক্ত কৰ গৌদমে উঠা লিয়া । কৃষ্ণ দাহিনী হাথকো নন্দকে মুঁহকে পামতক উঠাৰ মানো' স্নেহ ঠাল ৰহা হৈ । উপনন্দ পৌছেসে মানো' তেজীমে আকৰ দাহিনী হাথ উঠাৰ কৃষ্ণ হানি নহী হোনিকা আশ্বাসন দে ৰহী হৈ ।



গোপী কৃষ্ণক নচাইছা।

গোপীৰ আগত কৃষ্ণে
পিৰা পানৈ ধৰিছা।

পসাৰী কৃষ্ণৰ হস্তত
ফল দিছা।

কৃষ্ণে বলভদ্রে গোপশিশু সমে
মালাৰি কৰিছা।

বাল্য-লীলা : কৃষ্ণই গোকুলক আনন্দিত কৰি নানাকৰুপ ক্ৰীড়া কৰি আছে। কোনো সময়ত কৃষ্ণই ধান দি কল লৈছে। কেতিয়াবা কৃষ্ণ আৰু বলভদ্রই গোপশিশুৰ সৈতে মাল-যুজ খেলিছে।

বাল-লীলা : লক্ষ্মণ গোকুলবাসিনীক আনন্দ দিহুই নানা-প্রকারকী ক্ৰীড়া কৰিছে। কৰ্মী লক্ষ্মণ আৰু বলভদ্র গোপশিশুক সৈতে মল্লযুদ্ধ কৰিছে।



যশোদাই কৃষ্ণক ধৰি আনিছা।

বোহিনী পুত্ৰক ভুঞ্জাইছা।

যশোদা কৃষ্ণক ভোজন কৰাইছা।

কৃষ্ণ বলৰামৰ ভোজন : এদিন যশোদাই কৃষ্ণক খেলাৰ ঠাইৰ পৰা হাতত ধৰি ঘৰলৈ আনিছে। বোহিণী আৰু যশোদাই কৃষ্ণ বলৰামক পিৰাত বলুৱাই খুৱাব ধৰিছে। কৃষ্ণ বলৰামে খাব ধৰিছে। যশোদা-বোহিণীয়ে ওচৰতে বহি আদৰ কৰি খুৱাব ধৰিছে।

কৃষ্ণ-বলৰামৰ ভোজন : একদিন যশোদা কৃষ্ণকো খেলকী জগহুসে হাথ পকড়কৰ ঘৰ লায়ী। বোহিণী আৰু যশোদা কৃষ্ণ-বলৰামকো চীকীপৰ বিঠাকৰ প্যারসে খিলা রহী হৈ।



শকটত বোহিণী যশোদা পুত্ৰক কোলে লৈছা ;

নন্দ। উপনন্দ।

বৃন্দাবনক যাইবাক প্ৰতি নন্দে
উপনন্দ গোপসমে আলোচ কৰিছা।

নন্দ-আদিৰ বৃন্দাবনলৈ গমন : শ্ৰীকৃষ্ণই এইদৰে কিছুদিন ক্ৰীড়া কৰি থকাৰ পাছত গোকুলত নানা উৎপাত হব ধৰিলে ; তাকে দেখি নন্দ, উপনন্দ আদি গুৱালবিলাকে পৰামৰ্শ কৰি বৃন্দাবনক যাবলৈ ঠিক কৰিলে। এখন গাড়ীত যশোদা আৰু বোহিণীয়ে কৃষ্ণ আৰু বলৰামক কোলাত লৈ বহিছে। তাৰ পাছ ফালে আন এখন গাড়ীত নন্দ উপনন্দ উঠি বৃন্দাবনলৈ যাত্ৰা কৰিছে।

গোপ-গোপিয়ীকা বৃন্দাবন গমন : শ্ৰীকৃষ্ণ ইসী तरह कुछ दिनोंतक क्रीड़ा करते रहै। गोकुलमें अनेक उत्पात होतै देखकर नन्द, उपनन्द आदि गवालींनी सलाह करके बृन्दावन जाना तय किया। एक गाड़ीपर यशोदा और रोहिणी, कृष्ण और बलरामको गोदियोंमें लेकर बैठी हैं। उनके पीछे दूसरी गाड़ीपर नन्द उपनन्द चढ़कर बृन्दावन की यात्रा करते हैं।



বকাসুরে কৃষ্ণক গিলিছা। গোপশিশু সন্তাপ কৰিছা।

কৃষ্ণে বৎসাসুর বধিছা। বলভদ্র। শ্রীদাম। সুদাম।

বৎসাসুর আৰু বকাসুর বধ : বৃন্দাবনত বসতি কৰা সময়ত এদিন কৃষ্ণ বলৰাম আদিয়ে দামুৰি চাৰি থাকোঁতে এটা অশুৰে দামুৰি ৰূপ ধৰি দামুৰি পালৰ মাজত সোমাল। কৃষ্ণই ইঙ্গিতেৰে বলাইক দেখুৱাই তাৰ ওচৰলৈ গল, আৰু—

“লাঙ্গুৰে সহিতে পাছ ছুয়ো ভৰি
ধৰি তাক চক্ৰপাণি।
পাক ফুৰাই আনি কপিথক লাগি
পাঠাইলন্ত মেলি হানি।”

বলৰাম, শ্রীদাম আৰু সুদাম তেওঁৰ পিছৰ পিনে আচৰিত হৈ হাত দাঙি থিয় দি থাকিল।

আন এদিন বকাসুর নামে আন এটা অশুৰে আহি কৃষ্ণক হঠাৎ ঠোঁট মেলি গিলিলে। কৃষ্ণক বকাসুৰে আধা গিলা কৰা দেখি

বত্সাসুর আৰু বকাসুর বধ : বৃন্দাবনমৈ রহনৈকে समय एकदिन कृष्ण बलराम आदि जब बछड़े चरारहे थे तब एक असुर बछड़ेका रूप धरकर बछड़ोंके बीच घुस गया। कृष्ण दृशारासे बलरामको दिखाकर उसके पास गया और पूँछके साथ पीछेके दोनों पैर पकड़कर घुमा दिया और कपिल्य पेड़पर गिरकर वह मर गया। बलराम, श्रीवास और सुदाम उसके पोछे विस्मित होकर खड़े हैं।

दूसरे एकदिन बकासुर नामका एक असुर आकर चौंच फौलाकर हठात् कृष्णको निगल गया। कृष्णकी, बकासुरको आध-

লগবীয়া গোপশিশুসবে ইজনে সিজনৰ মুখলৈ চোৱা-চুই কৰি বেজাৰ কৰিছে। দামুৰিবোৰেও বেজাৰ মনে কাষতে থিয় হৈ আছে।

गिला देखकर साथी गोपशिशुगण एक दूसरेका सुँह ताकते हुए रो रहे हैं। बछड़ेभी दुःखी मनसे पासही खड़े हैं।



গোপশিশু বৎস আনিছা।

কুষ্ণ বকাসুৰৰ ঠোট চিৰিছা।

বল ভঙ্গ।

কুষ্ণ বকাসুৰৰ পেটত জুইব দৰে লগাত বকাসুৰ বিগূৰ্ছিত হৈ বতিয়াই দিলে। কিন্তু অলপ পাছতে সি পুনৰ ঠোটেৰে কুষ্ণক মাৰিবলৈ খেদি গল। কুষ্ণই ছুই হাত ছয়ো

कृष्ण वकासुरके पेटमें अग्नि जैसा लगनेसे बकासुर मूर्च्छित होकर कौ करदी। लेकिन थोड़ी देर बादही वह फिर चांचसे कृष्णको मारनेके लिए आगे बढ़ गया। कृष्णने दोनों हाथोंसे दोनों



দেবগণের আনন্দ ; পুষ্পবৃষ্টি ।

ঠোঁটত ধরি মুখ ফালি মাঝি পেলালে । তাকে দেখি দেবগণে
পুষ্পবৃষ্টি করিছে ।

চাঁচ পকড়কর মুঁহা ফাড়া ডালা, বকাসুর মর গয়া । যহ
দেখকর দেবতালীগোঁনি পুষ্পবৃষ্টি করনি লগি ।

বৃন্দাবনত বনভোজন আর ক্রীড়া : কৃষ্ণ-বলরামে বাঁহী
বজাই নিতো গরু চবাবলৈ বৃন্দাবনলৈ যায় । লগতে সমবয়সীয়া
গোপবালকসকলে দধি-ভাত শিকিয়াত আৰি লৈ পাছে পাছে
যায় । বৃন্দাবনত কিছুমানে গছত উঠি বান্দৰৰ লেজত ধৰি
টানাটানি কৰি ধেমালি কৰে, কোনোৱে বা নাচে । কোনোৱে বা

বৃন্দাবনলৈ বনভোজন আৰি ক্রীড়া : কৃষ্ণ বলরাম
গোপ বাঁসুরো বজাকর গায়ৈ' চরানিকেলৈ বৃন্দাবন জাতি হৈ ।
সাথমে সাথী গোপবালকগণে দধী-ভাত লটকায়ে পীঠে
পীঠে জাতি হৈ । বৃন্দাবনমে কই পেড়াঁপৰ চড়কর বৃন্দগোঁকী
পুঁছ পকড়কর খীঁচাতানী করকৈ আনন্দ করতি হৈ তো



কৃষ্ণে মৈবাক শিহাবিছা।

কৃষ্ণ। বনভ্রম।

গুহান।

চৰাইচিৰিকতিৰ মাত মাত্তি আনন্দ কৰে। এইদৰে নানা প্ৰকাৰ কৈশোৰ কালৰ খেমালি কৰি আছে।

কোৱ নাচতা হৈ। ইয়াৰে নানা প্ৰকাৰকৈ বালপনকী খেল খেলত হৈ।



অঘৰ গৰ্ভত গোপ গক পশিছা।

অঘাসুৰ বধ : এদিন কৃষ্ণই গোপবালকসকলৰ সৈতে গক চৰাই থাকাঁতে পুতনাৰ ভায়েক অঘ নামে অসুৰ এটাই প্ৰকাণ্ড সাপৰ আকৃতি ধৰি তেওঁলোকৰ বাটত পৰি থাকিল। এই বাটেদি

অঘাসুৰ বধ : একদিন কৃষ্ণে जब गोपबालकों के साथ गायी चरारहे थे, पूतनाका भाई अघ नामका एक असुर प्रकांड सापके आकारमें उनकी राहमें पड़ा रहा। इसी राहसे कई बछड़े

কেইটামান দামুৰি গৈ তৰ্কিব নোৱাৰি অঘৰ গৰ্ভত সোমাই গল।
কেইটামান দামুৰি বাজতে থাকিল। ইয়াকে দেখি গোপ-
শিশুসবে থমকি কৃষ্ণৰ ফালে চালে। গোপশিশুবিলাকৰ পিছৰ
ফালে কৃষ্ণ বলবামে হাতত মুদ্ৰা দি কিবা বনগীত গাই আছিল।

অনজাতি জাৰু অঘৰী পেটম্বে সমা গযে। কই বাহুৰহী রহে।
ইসে দেখুৰু গোপশিশুগুণ ভয়সে কৃষ্ণকী অর দেখা। গোপ-
শিশুঅীকে পীঠেকী অর কৃষ্ণ বলরাম হাথীসে মুদ্ৰা দেৰু কৌই
বনগীত গা রহে থে।

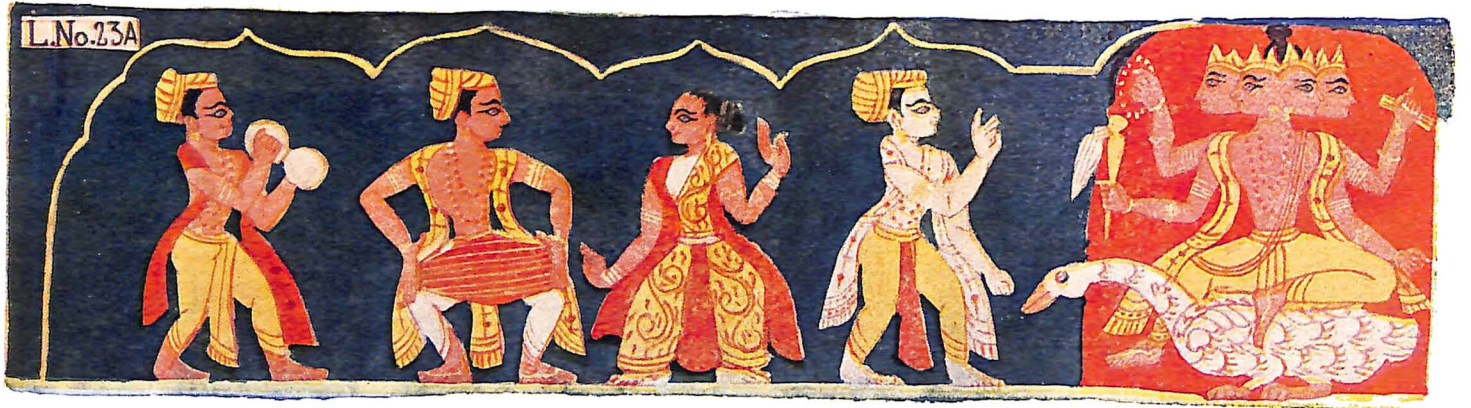


কৃষ্ণে অঘৰ গৰ্ভৰপৰা গোপ গৰুসমে বাজু ভৈল।

অঘৰ বাসুৰ অশুব।

সৰ্পাকৃতি অশুবক মাৰিবলৈ গোপশিশুবিলাক আগবাঢ়ি গৈ
সাপৰ পেটত সোমাই গল। তাকে দেখি ভকত-বৎসল কৃষ্ণয়ে।

সৰ্পাকৃতি অসুৰকী মারনকে लिए गोपशिशुगुण आगे बढ़कर
साँपके पेटमें समा गये। ऐसा देख कर भक्तवल्लभ (भक्तके प्रति



গৰুৰু।

অপেশ্বৰ।

দেবতা।

ব্রহ্ম।

বলভদ্রব সৈতে সাপব পেটত সোমাল। তেতিয়া অশুব্ব জ্ঞাতি-
বিলাকে কৃষ্ণ আদিব বিনাশ হল ভাবি আনন্দ কবি হাঁহিবলৈ
ধরিলে। আনফালে কৃষ্ণ মহিমাগুণে অঘ অশুব্ব পেট ফিকি
উশাহ নাপাই মরি গল। সাপব বিষত মৃতপ্রায় গৰু আৰু গোপ-
শিশুসবক কৃষ্ণই অমৃত হাত বুলাই জীৱিত কৰিলে আৰু অঘব

অত্যন্ত দয়াবান্) কৃষ্ণাৰ্জুনী বলভদ্রকৈ সাথ সাঁপকৈ পেটমৈ ঘুস গয়ে।
তব অসুরকৈ কুটুংবিয়োঁনি কৃষ্ণ আদিকা বিনাশ হুআ যহ সৌচকর
আনন্দ মনসে হুঁসনে লগে। ইধর কৃষ্ণ কৌ মহিমা কৈ প্রভাবসে অঘ
অসুরকা পেট ফুলকর শ্বাস-প্রশ্বাস বন্দ হৌকর মর গয়া। সাঁপকৈ
বিষসে মুর্দা জৈসে গায়ৈ আঁর গোপশিশু আঁকৌ কৃষ্ণনে হাথ ফৈরকর



দেৱতা।

পেটবপবা তেওঁলোকক উলিয়াই দি নিজেও ওলাই আহিল।
গোপশিশুবোৰে আগব দৰে কাষত শিঙা, কান্ধত লৰু আৰু মুখত
বাঁহী লৈ অঘব পেটবপবা ওলাইছে। কৃষ্ণ আগত, তেওঁব পাছতে
বলদেৱ আৰু তাব পাছত অন্যান্য গোপবালকমকল। ইয়াকে
দেখি গন্ধৰ্ববিলাকে খোল-তাল লৈ গীত গাইছে আৰু বিছাধৰীয়ে

জীৱিত কিয়া আঁর অঘকৈ পেটসে उनको निकालकर आपभी निकाल
आया। गोपशिशुगण पहले जैसे पासमें सींगा कन्धेपर डंडा आँर
मुँहमें बाँसुरी लेकर अघकै পেटसे निकाल रहे हैं। कृष्ण आगी
आगी उसकै पीछे बलदेव आँर उसकै पीछे दूसरे गोपबालकगण।
यह देखकर गंधर्वगण खोल ताल लेकर गीत गा रहे हैं आँर

নাচিছে। প্রজাপতি ব্রহ্মাই হংসযানত উঠি ভগবানৰ মহিমা চাবলৈ বৃন্দাবনত উপস্থিত হৈছে।

विद्याधरीगण नाच रही हैं। प्रजापति ब्रह्मा हंसकी सवारीपर चढ़कर भगवानकी महिमा देखनेके लिए वृन्दावनमें आये।



কৃষ্ণে গোপগণসমে দধিভাত ভুঞ্জিছা।

कृष्णे वृन्दावनत दाम्बुवि विचाविछा।

বনভোজন : অঘাসুরৰ বধ আৰু সবৎস গোপশিশুৰ মুক্তিৰ পাছত কৃষ্ণই গোপবালকসকলৰ লগত বনভোজনৰ ব্যৱস্থা কৰিলে।

“থৈলা দধিভাত শিকিয়াবপৰা মেনি।
কৃষ্ণে সমে ভুঞ্জিবে লাগিলা কৰি কেলি ॥
মাধৱক মধ্য কৰি কৰে সবে খেড়ি।
পদ্মৰ চকাক যেন পত্ৰে আছে বেড়ি ॥
পদ্মৰ কণিকা ভৈলা নন্দেৰ তনয়।
গোপশিশুগণ পদ্ম পত্ৰৰ আনয় ॥
কেহো পুষ্পপত্ৰত থৈলন্তু দধিভাত।
ফলপল্লৱত কতো থৈলা শিকিয়াত ॥”

গোপশিশুবিলাকে কাষলতিৰ তলত শিঙা চেপা মাৰি খাবলৈ আৰম্ভ কৰিছে।

“अन्धो अन्धे देखारन्तु कतो हात तुलि।
सवातो अधिक मोर अन्नखाद वुलि ॥”

বন-ভোজন : অঘাসুরকা বধ আৰু বহুড়ীকৈ সাথ গোপশিশুসকলক উদ্ধাৰকৈ বাদে কৃষ্ণই গোপবালকসকলকৈ সাথ বনভোজনকী ব্যৱস্থা কৰি। গোপশিশুগণে ভুজাসকলকৈ সীংগাসকলকৈ দৰাৰ খানা শুরু কৰি। কৃষ্ণকী বীচমৈ লৈকৰ চাৰী আৰু গোপশিশুগণে বৈঠকৰ আনন্দকৈ সাথ ভোজন কৰিছে হৈ।



কৃষ্ণে সমস্তবে কপ ধরি ব্রহ্মক যান্ত ।

গুবান ।

গক ।

গোপশিশু ।

ব্রহ্মার গোপবালক আৰু দামুৰি চুৰি; কৃষ্ণৰ গোপ-বালক আৰু দামুৰিকপ ধাৰণ :—কৃষ্ণ আৰু গোপশিশুসবে ভোজন কৰি থাকোঁতে কোমল ঘাঁহৰ লোভত দামুৰিবোৰ বহু-দূৰলৈ গল। গোপবালকবিলাকে দামুৰি বিচাৰি নাপাই কৃষ্ণত জনালে। কৃষ্ণই গৰখীয়া গোপশিশুসবক বেজাব কৰিবলৈ হাঁক দি নিজে বনত বহুত বিচাৰিলে; পাছত দামুৰি নাপাই ঘূৰি আহি গোপশিশুসবকো নেদেখি হৃদয়ত ধ্যান কৰি দেখে যে ব্রহ্মাই চুৰি কৰি নিছে। পাছত ভগবান কৃষ্ণই নিজে গৰখীয়া দামুৰিব কপ ধৰি কাষত শিঙা, হাতত লৰু লৈ বাঁহী বজাই বজাই ব্রজলৈ উলটিল। ব্রজত গৈ যি গাইৰ যি দামুৰি তাক পিবলৈ ধৰিলে। কোনো কোনো দামুৰি শুই থাকিল। কৃষ্ণ, গোপ আৰু গোপ-বালকসকলে নিৰীথি নিৰীথি সিহঁতক চাবলৈ ধৰিলে।

ब्रह्माको गोपबालक और बछड़ोंको चोरी : कृष्ण और गोपशिशुगण जब भोजन करते थे तब नरम घासकी चाहसे बछड़े बहुत दूर तक गये। गोपबालकगण बछड़ोंको खोजते खोजते न मिलनेपर कृष्णसे कहा। कृष्ण गायें चरानिवाले गोपशिशुओंकी दुःखी देखकर खुद वनमें ढूँढने लगे। बादमें बछड़े न मिलनेपर लौट आकर गोपशिशुओंकी भी न देखकर हृदयमें ध्यान किया तो मालुम हुआ कि ब्रह्माने चोरी की है। तब भगवान कृष्ण खुद गायें चरानिवाले व बछड़ोंके रूपमें पासमें सीगा, हाथमें डंडा लेकर बाँसुरी बजाते बजाते ब्रजकी लीटे। ब्रजमें आकर बछड़े अपनी अपनी मा का दूध पीने लगे। कीड़े कीड़े बछड़ा जंघ रहा था। कृष्ण ग्वालबालोंके साथ उन्हें चावसे देख रहे हैं।



গোপীমবে পুত্রক
কোলে লৈছা।

গোপী পুত্রক
ধুৰাইছা।

বামক বোহিণী
ভোজন কৰাইছা।

কৃষ্ণক যশোদা
ভোজন কৰাইছা।

গোপীমকলৰ নিজ নিজ পুত্রক আদৰ-সাদৰ :—কৃষ্ণ-বলরাম আৰু গোপশিশুসৰ আহি ঘৰত উপস্থিত হ'লত গোপী-বিলাকে নিজ নিজ পুত্রক কোলাত লৈ আদৰ কৰিছে; কোনো গোপীয়ে বা তেল-কুৰ ঘাঁহি নিজ পুত্রক গা ধুৰাইছে। বোহিণীয়ে বলরামৰ আগত খোৱা বস্ত্ৰ দি আগ হাত দাঙি খাবলৈ মাতিছে। যশোদাই কৃষ্ণক খাবলৈ দিছে। কৃষ্ণ-বলরাম ছয়ো ছখন পিৰাত বহি খাবলৈ ধৰিছে। বলরামৰ ওচৰত বোহিণী আৰু কৃষ্ণৰ ওচৰত যশোদা বহি কিবা দিব নে বুলি সুধি আছে।

গোপীয়াঁকা অপনি অপনি পুত্ৰীকি প্রতি আদৰ :
কৃষ্ণা, বলরাম আৰু গোপশিশুগণে जब घर आयि तो गोपिनीगण
अपनि अपनि पुत्रीकी गोदमें लेकर ध्यार करनि लगीं; कीई कीई
गोपी तो तेल उबटन मलकर अपनि पुत्रीकी नहलानि लगी।
रोहिणी बलरामके सामनि खानिकी चीजं देकर दाहिनि हाथ उठाकर
खानिके लिए बुलाती है। यशोदा कृष्णको खानि देती है। कृष्ण
बलराम दीनों दी चौकियोंपर बैठकर खानि लगी। बलरामके पास
रोहिणी और कृष्णके पास यशोदा बैठकर और कुछ दें क्या
पुछ रही हैं।



গুরালে পুত্ৰসকলক ধৰিছা। শ্ৰীদাম। কৃষ্ণ। বাম।

কৃষ্ণ-বলৰাম আদিৰ ক্ৰীড়া : খাই বৈ উঠি কৃষ্ণ-বলৰাম গোপশিশুবিনাকে খেলা কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে। শ্ৰীদাম, কৃষ্ণ আৰু বলৰামে নানা ভঙ্গি কৰি নাচিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে। কোনোবা গোপে মৰম কৰি নিজ পুত্ৰক পিছ ফালবপৰা ধৰি বং কৰিছে। আন ফালে গোহালি-ঘৰত সোমাই থোৱা গাই-বিলাকক দামুৰিবোৰে পিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে।

বলভদ্ৰৰ মোহ : ইয়াৰ পিছত এদিনাখন গোৱালবিলাকে গোবৰ্দ্ধন পহাৰৰ ওপৰত গাই চবাই আছিল, পাছত হঠাৎ দেখিলে যে গাইবিলাক অতি বেগাই হৰ হৰ কৰি নামি যাব ধৰিছে। গুৱালবিলাকে আগুৰিবলৈ বহু যত্ন কৰিও নোৱাৰি লাজ পাই পাছে পাছে খেদি গৈ কিছুমানে আগত ডাং লৈ থিয় দিলে, কোনো কোনো আকৌ পাছে পাছে গল; পাছত দেখে যে নিজৰ

কৃষ্ণ-বলৰাম আদিকী ক্ৰীড়া : খানি পীনিকৈ বাদ উঠকৰ কৃষ্ণ বলৰাম আৰু গোপবালকগণ খেলনা শূৰু কৰতৈ হৈ। শ্ৰীদাম, কৃষ্ণ আৰু বলৰাম অনেক মংগিয়োসে নাচনা শূৰু কৰিছে। কোঁই গ্বাল প্যাৰসে অপনে পুত্ৰকী পীছিকী আৰসে পকড়কৰ আনন্দ কৰিছে। ইধৰ গোশালাআঁমিঁ ঘুসতী হুই গায়ীকী বহুড়ীনে পীনা শূৰু কৰিছে।

বলভদ্ৰকা মৌহ : একদিন গ্বালগণ গোবৰ্দ্ধন পহাড়পৰ গায়ীকী চৰা হুই থি। বাদমিঁ হঠাৎ দেখা কি সমী গায়ীে খুব তেজীসি পহাড়সি উতৰি হুই হৈ। গ্বালীনে রীকনিকৈ লিএ বহুত কৌশিগ কী। পৰ রীক ন সকনেপৰ লজাতি হুএ পীছি পীছি খেডেডতি হুএ আকৰ কই সামনে ড'ডা লেক্ৰ হুই হুএ। কই পীছি পীছি হী গয়ে; বাদমিঁ দেখা কি অপনে



গোবর্দ্ধন পর্ত্ততবপৰা খেলুসব ডেৰ কৰিছা।

গুৱালে আগ ভেটিছা।

গুৱালে স্নেহত পুত্ৰক ধৰিছা।

শিশুসন্তানবিলাকে ওচৰতে দামুৰি চৰাই আছে। তেতিয়া তেওঁলোকে হাতৰ ডাং দলিয়াই পেলাই নিজৰ সন্তানবিলাকক পিছৰ ফালৰপৰা সাৰোট মাৰি ধৰিলে। ইতিমধ্যে গাইবিলাকে গৈ নিজৰ দামুৰিক মৰমেৰে পিয়াবলৈ ধৰিলে।

অপনি শিশুগণ পাসহী বহুড়ি চৰা রহি हैं। तब वे हाथका डंडा फ़िककर अपने अपने पुत्रोंकी पीछेसे जकड़कर पकड़ रहे हैं। इसी बीच गायें आकर अपने अपने बछड़ोंकी दूध पीलानि लगीं।



খেলুসবে নৱ বংস এৰি বোকুণাক তন দিছা।

কৃষ্ণত বামে অদভূত দেগি স্থিছা।

গোপগণে পুত্ৰক ধৰিছা।

বলৰামে গাইবোৰক নতুন সৰু সৰু দামুৰি এৰি বখনীয়া দামুৰিক পিয়োৱা আৰু বুঢ়া গুৱালবিলাকে মৰমেৰে গোপশিশু-

गायें नये नळे नळे बछड़ीकी छोड़कर बड़े बड़े बछड़ीकी पीलानि और बूढ़े ग्वालोंने गोपशिशुओंकी जकड़कर पकड़ति

বিলাকক সারট মাৰি ধৰা দেখি অতি অদ্ভুত আৰু বিশ্বয় মানিলে। বলৰামে এনে অদ্ভুত দেখি সস্মুখত থকা কৃষ্ণক আগহাত দাঙি সুধিছে। সেই সময়ত গাইবিলাকে বখনীয়া দামুৰি পিয়াইছে, সকু দামুৰি কাষত থিয় হৈ আছে। গোৱালবিলাকেও নিজ নিজ সন্তানক আদৰ কৰি সারট ধৰি থিয় হৈ আছে।

देखकर बलरामकी बड़ा अचरज मालुम हुआ। बलरामने सस्मुख खड़े कृष्णसे दाहिने हाथ उठाकर इसका कारण पूछा। उस समय गायें उम्रवाले बछड़ोंकी पीला रहीं हैं; छीटे बछड़े पासमें खड़े हैं। ग्वालगण भी अपने अपने बेटोंकी प्यारसे जकड़ते हुए खड़े हैं।



ব্রহ্মা বিশ্বয় দেখিছা।

কৃষ্ণে বাম সমে ধেনু চাবিছা।

ব্রহ্মায়ে বৎস-শিশু গণিছা।

ব্রহ্মাৰ মোহ : বলৰামে সোধাত কৃষ্ণই কলে যে ব্রহ্মাই মোৰ মাহাত্ম্য পৰীক্ষা কৰিবলৈ গোবৎস চুৰি কৰি নিয়াত আকৌ তেনে দামুৰি আৰু শিশুকৰূপ ধৰি আৰ্হোঁ। ইফালে বছৰ পাৰ হৈ যোৱাত ব্রহ্মাই আহি দেখে যে কৃষ্ণ আদি শিশুবিলাকে দামুৰি-বোৰক আগবদৰে চাৰি আছে। তাকে দেখি ব্রহ্মাই আগৰ লুকাই থোৱা খলত গৈ গণি দেখে, যে সকলোবোৰ দামুৰি আগবদৰে শুই আছে আৰু গোপশিশুবিলাক দামুৰিবোৰৰ কাষত বহি আছে। ব্রহ্মাই অতি বিশ্বয় মানিলে।

ब्रह्माका मोह : बलरामके पुछनेपर कृष्णने कहा कि ब्रह्मा मेरी परीक्षा लेनेके लिए गो-वत्स चोरी कर ले गये थे, तबसे उनका रूप मैंने धारण कर रखवाई। इधर साल पूरा होनेके बाद ब्रह्माने आकर देखा कि कृष्ण आदि शिशुगण बछड़ोंकी पहलीही जैसे चरा रहीं हैं। ऐसा देखकर ब्रह्माने पहले जहाँ छिपाया था उस जगहपर देखा कि सभी बछड़े पहले जैसे सो रहीं हैं और गोपशिशुगण बछड़ोंके पासही बैठे हैं। ब्रह्माकी बड़ा अचरज मालुम हुआ।



কৃষ্ণক গাৰে গাৰে একো ব্ৰহ্মা
তুতি কৰিছা।

মহামায়া নৰ্ত্তকী।
তুতি কৰিছা।

ব্ৰহ্মা।

কৃষ্ণৰ পাবত ব্ৰহ্মা পৰিছা।

ব্ৰহ্মাৰ কৃষ্ণস্তুতি : পাছত ব্ৰহ্মাই আঠকাটি হাতযোৰ কৰি আগত নৈবেদ্য দি স্তুতি আৰম্ভ কৰিছে। সেই সময়ত মহামায়াইও অষ্টভূজাকপে আঠ লৈ স্তুতি কৰিছে। গন্ধৰ্বই খোল বাইছে আৰু বিছাধৰীয়ে নাচিছে। সেই সময়ত ভগৱান কৃষ্ণই শঙ্খ, চক্ৰ, গদা, পদ্ম ধৰি চতুৰ্ভূজকপে ব্ৰহ্মাৰ আগত দেখা দিছে। ব্ৰহ্মাই চতুৰ্ভূজকপে ভগৱানক দেখা পাই বাহনৰ সৈতে ভগৱানৰ চৰণত পৰি প্ৰণিপাত কৰিছে।

ব্ৰহ্মাৰ কৃষ্ণস্তুতি : ব্ৰহ্মা ঘুটনে টেককৰ হাত জোড় কৰি সামনে নৈবেদ্য ৰখকৰ স্তুতি কৰিছে। তেওঁৰ সময়ত মহামায়াইও অষ্টভূজাকপে ঘুটনে টেককৰ স্তুতি কৰিছে। গন্ধৰ্ব বাজি বজা কৰিছে আৰু বিছাধৰীয়ে নাচিছে। তেওঁৰ সময়ত ভগৱান কৃষ্ণই শঙ্খ, চক্ৰ, গদা, পদ্ম লৈকৰ চতুৰ্ভূজাকপে ব্ৰহ্মাৰ সামনে প্ৰগট কৰিছে। ব্ৰহ্মা চতুৰ্ভূজাকপে ভগৱানক দেখি ভগৱানক চৰণত পৰি প্ৰণিপাত কৰিছে।

ভগৱান কৃষ্ণই দেখিলে যে ব্ৰহ্মা অচেতন হৈ নিজ চৰণত পৰি আছে। তেতিয়া স্মৃপ্ৰসন্ন হৈ ভগৱানে নিজ মায়া সংহাৰ কৰিলে। পিছত ব্ৰহ্মাই ভগৱান কৃষ্ণৰ অনুগ্ৰহত চৈতন্য লাভ কৰি উঠি দেখে যে সন্মুখত বিতোপন বৃন্দাৱন বিৰাজিত। বাঘ, ছাগ, সিংহ

ভগৱান কৃষ্ণই দেখা কি ব্ৰহ্মা বেহীশ হৈকৰ চৰণত পৰিছে। তেওঁৰ প্ৰসন্ন হৈকৰ ভগৱানই অৰ্চনা কৰিছিল। ফলত ব্ৰহ্মাই ভগৱান কৃষ্ণক জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰি, উঠকৰ দেখা কি সামনে সুন্দৰ



ব্রহ্মা। কৃষ্ণ। ছাগল। বাঘ। সিংহ। ব্রহ্মা। কৃষ্ণ।

তাত একেলগে খেলা কৰি আছে। তাৰ মাজতে কৃষ্ণক অকলে কাষতলিত শিঙা আৰু বাওঁহাতেৰে ভাতৰ পাত্ৰ লৈ আগ হাতেৰে ভাতৰ গবাহ মুখত ভৰাবলৈ ধৰা দেখা পালে।

“হেন বৃন্দাবন মध्ये পাছে গ্রাস কৰে।

দেখন্তু আছন্তু মাত্ৰ কৃষ্ণ একেশ্বৰে ॥” ৪৭৭।

বৃন্দাবন হৈ। বাঘ, বকৰী, সিংহ বহা এক साथ খেলি
 রহি হৈ। উনকি बीचহী কৃষ্ণকি অকলি বাহুকি নীচি
 সীংগা অৰি বায়ে হাত্মমি ভাতকা বরতন লৈকর दाहिनि
 हाथसे भातके ग्रासको मुँहमें भरति हुए दिखाइ
 दिये।

ব্রহ্মাই কৃষ্ণক তেনে অৱস্থাত দেখি অতি বিস্মিত হৈ স্তুতি কৰিবলৈ ধৰিলে। সেই সময়ত ব্রহ্মাই নিজৰ বাহন হংসৰ ওপৰত উঠি হাতযোৰ কৰি আছে। কৃষ্ণেও কাষতলিত শিঙা লৈ

ब्रह्मा कृष्णको वैसी हालतमें देखकर अत्यंत विस्मित होकर
 स्तुति करनी लगी। उस समय ब्रह्मा अपनी सवारी हंसपर चढ़कर
 हाथ जोड़ रहि हैं। कृष्णभी भुजाके बीच सींगा दबाये दिभुज

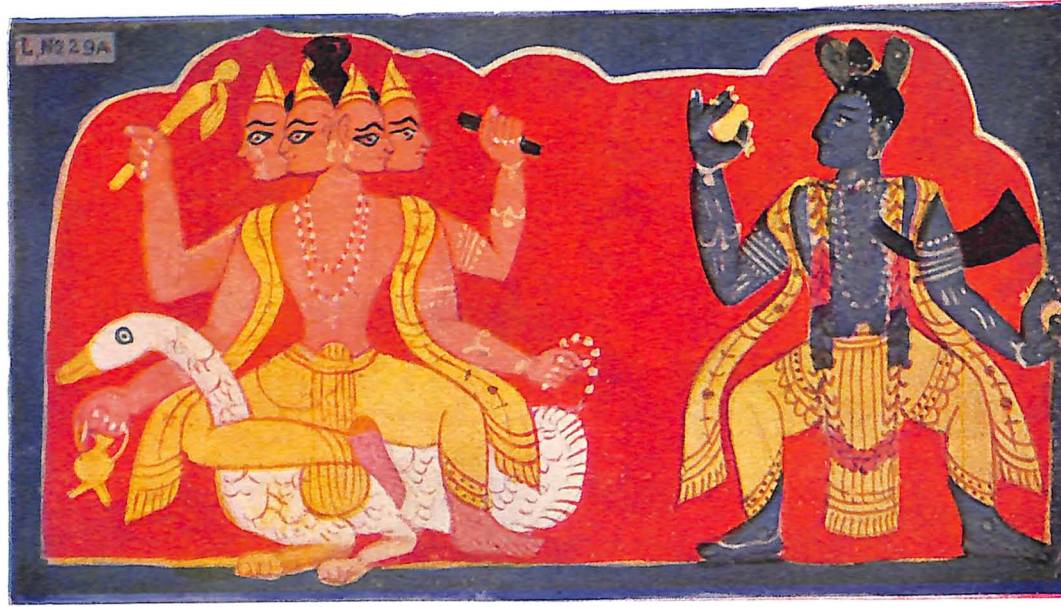


ব্রহ্মা তুতি করিছ।

কৃষ্ণ।

দ্বিভুজরূপে আগহাতেবে ভাতৰ গবাহ লৈ ব্রহ্মাৰ আগত থিয়
দি আছে।

রূপে দাহিনী হাথসে ভাত (চাবল) কা গ্ৰাস লৈকৰ ব্রহ্মাৰ
সামনে খুঁই হৈ।



ব্রহ্মা ।

কৃষ্ণ ।

ব্রহ্মার সান্ত্বনা লাভ : ভগবান কৃষ্ণ ব্রহ্মার স্তুতিত মন্ত্ৰে হৈ ব্রহ্মাক আশ্বাস দিয়াত তেওঁ আশ্বস্ত হৈ নিজ আসনত সুস্থ মনে বহি থাকিল ।

ব্রহ্মাका आश्वसन लाभ : भगवान् कृष्ण ब्रह्माकी स्तुतिसे प्रसन्न होकर ब्रह्माकी आश्वसन देनिपर ब्रह्मा आश्वस्त होकर शांत मनसे बैठे हैं ।



गोपसवे कृष्क बाट चाई आछा ।

कृष्ण धेनुगण आनिछा ।

गोपशिशुविलाकर कृष्णलै अपेक्षा : ईफाले गोप-शिशुबोबे कृष्क बहू पर नेदेथि खोरा बसुबोब हातत लै बाटचाई बै आछे । हेन समयते कृष्णई हातत लक आक कान्कत बाँही लै धेनुबोब खेदि लै आहिव धबिले । गौबोब कृष्ण आगे आगे शारीपाति आहिव धबिले ।

गोपशिशुओं की कृष्णकी अपेक्षा : इधर गोपशिशुगण कृष्णकी बहुत देरतक न देखकर चीजोंको हाथमें लिये इन्तजार कर रहे हैं । इसी समय कृष्ण हाथमें डंडा और कंधेपर बाँसुरी लेकर गायोंको हाँकते हाँकते आ रहा है । गायें कृष्णके आगे आगे पंक्तिसे आ रही हैं ।

गोपशिशुसबब घबलै प्रत्यावर्तन आक अघासुब वध वर्णना : साँजबेलिका गोपबालकविलाके आगत दामुबोबोब लै बाथानत उपस्थित हल । सम आगत कृष्णई शिङ्गा बजाई आहिछे ; ताब पिछत बलराम, ताब पिछत अन्नाशु शिशुविलाकेओ बाँही बजाई बजाई आहिव धबिछे । शिशुविलाक घबलै आहि गौब

गोपशिशुओंका गृह प्रत्यावर्तन और अघासुर वधका वर्णन : साँझके समय गोपबालकगण बछड़ोंकी लेकर गोपुरीमें आयि । सबसे आगे कृष्ण सींगा बजाता आ रहा है ; उसके पीछे बलराम, उसके पीछे दुसरे गोपबालक भी बाँसुरी बजाते बजाते आ रहे हैं । शिशुगण घर आकर गाय बछड़ोंकी



শিশুসবে ব্রজত অঘ-বধ কহিছা।

কৃষ্ণ। বাম। শূদাম। শ্রীবাম।

দামুৰিবোৰ গোহালিত সুমাই থৈ নিজ নিজ মাকৰ ওচৰত থিয় হৈ আচৰিত ভাৱে হাতৰ মুদ্ৰা দি অঘাসুৰ বধৰ কথা কব ধৰিছে। মাকসকলেও লৰাৰ কাষতে বহি সেই কথা বিস্ময়ান্বিত হৈ শুনি আছে।

গোশালামে ছোড়কৰ অপনী অপনী মাঁকি পাৰ খড়ে হাঁকৰ অজীৰ প্ৰকাৰকে হাতকী মুদ্ৰা দেকৰ অঘাসুৰকে বধকী কহানী কহ रहे हैं। मातायेभी लडकीके पासही बैठकर विस्मित होकर उस बातको सुन रही हैं।



মৃগ।

গাভী।

কৃষ্ণ।

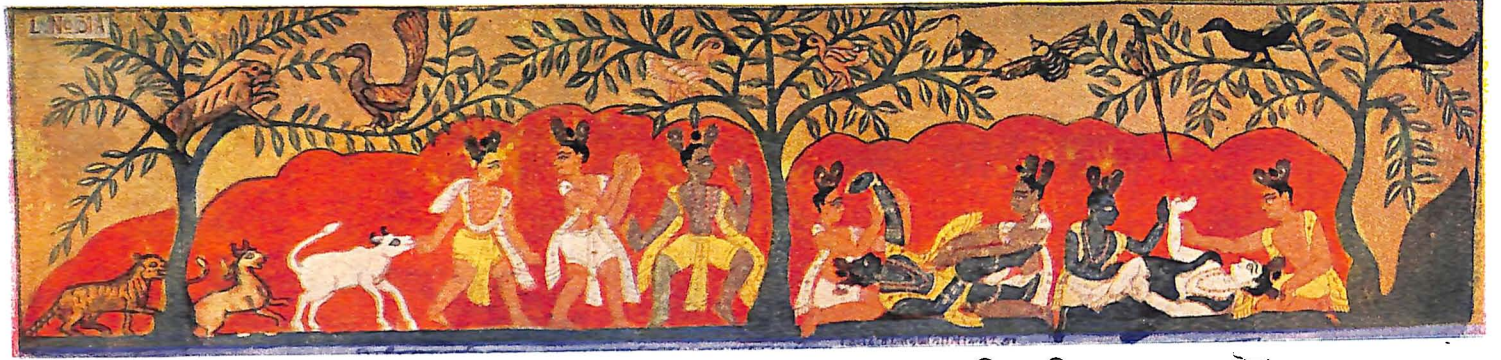
বাম। বশুদাম।

কৃষ্ণ-বলৰাম আদিৰ ধেনু চৰোৱা : কৃষ্ণ আৰু বলৰামে এইদৰে দামুৰি চাৰি লাহে লাহে ডাঙৰ হৈ গাই চাৰিব পৰা

कृष्ण-बलराम आदिका धेनुचराना : कृष्ण और बलराम इसी तरह बछड़ा चराकर धीरे धीरे बड़े होकर गायें

হল। কৃষ্ণ প্রধান গুরাল হৈ বলরাম আৰু সুদাম আদিৰ সৈতে বৃন্দাবনত গাই চাৰি ফুৰিবলৈ ধৰিলে। গাইবিলাকে পছুবোৰৰ সৈতে একলগে ঘাঁহ খাই ফুৰে। কৃষ্ণই বলরামক হাত পাতি কিবা খুঁজিছে; বলরাম আৰু সুদামে হাতত বাঁহী আৰু কাষত শিঙা লৈ কৃষ্ণৰ পাছে পাছে গৈছে।

চরানি लायक हुए। कृष्ण मुख्य ग्वाल होकर बलराम और सुदाम आदिके साथ बृन्दावनमें गायें चराकर घूमने लगे। गायें हिरनोंके साथ मिलकर एकसाथ चरती हैं। कृष्ण बलरामसे हाथ पसारकर कुछ मांग रहा है; बलराम और सुदाम हाथमें बाँसुरी और पासमें सींगा लेकर कृष्णके पीछे पीछे जा रहे हैं।



বাঘ। সিংহ। সিংহ-বাঘ দেখি ভয়ে গোপগণে লব দিছা। গোপগণে নৃত্য কৰিছা। গোপৰ কোলাত সিথান দি শুইছা; গোপগণে হাত পাৰ জাটিছা। বলভদ্র শুইছা; কৃষ্ণে পাৰ জাটিছা।

বৃন্দাবনত গোপশিশু-সবৰ সম্প্রীতি: এদিন সকলো গোপবালক বৃন্দাবনত গৰু চৰাবলৈ গৈছে। বৃন্দাবন নানাবিধ গছ-লতাৰে ভৰপূৰ; ময়ূৰ আদি পাখীবোৰে গছৰ ডালত পৰি বং মনে বিহাৰ কৰিছে। সিংহ, বাঘ, গৰু আদি জন্তুবোৰে হিংসা দেখে এৰি একেলগে চৰি ফুৰিছে। কোনো কোনো গোপশিশুৱে হিংস্ৰ জন্তু দেখি পলাব খুজিছে। কোনো ঠাইত কৃষ্ণ শুইছে।

বৃন্দাবনম্ গোপশিশুগণাকী সম্প্রীতি : एकदिन सभी गोपबालक गायें चरानिके लिए बृन्दावन गये। बृन्दावन तरह तरहके पेड़-पौधोंसे भरा है। मोर आदि पंखी पेड़की टहनियोंपर बैठकर आनन्दसे विहार कर रहे हैं। सिंह, बाघ, गाय-बैल आदि जानवर हिंसा, द्वेष छोड़कर एक साथ चर रहे हैं। कोई कोई गोपशिशु हिंसुक जानवरकी देखकर भागना चाहता है।

কোনো গোপবালকে কৃষ্ণের হাত টিপিব ধবিছে; কোনোরে বা ভবি নিজৰ গাত তুলি পিহিব ধবিছে। কৃষ্ণই বলবামৰ ভবি ছুখন আনন্দেৰে নিজৰ কোলাত তুলি লৈছে। আন এজন গোপবালকে বলবামৰ হাত টিপিব ধবিছে।

কিসী জগহু লুণী সী রহা হৈ। কৌই গোপबालक लुणके हाथ दबा रहा है तो कौई पांवकी अपनी बदनपर रखकर मल रहा है। लुणाने बलरामके दोनो पैर आनन्दसे अपनी गोदमें बैठा लिए। दुसरा गोपबालक बलरामके हाथकी दबा रहा है।



ধেনুকাসুরে তালক বাখিছা।

শ্রীদাম।

বনভদ্রে

তালক বাখিছা।

সুদাম।

শ্রীদাম।

কৃষ্ণ।

বাম।

ধেনুকাসুর বধ :- বৃন্দাবনত ধেমালি কৰি থাকোঁতে শ্রীদাম, সুদাম আদি গোপবালকসকলে পকা তালৰ গোক পাই কৃষ্ণ আৰু বলবামৰ আগত তালফল খাবলৈ ইচ্ছা প্ৰকাশ কৰিলত ছয়ো ভাই হাঁহি তালবনত সোমাল। বামে ছয়ো হাতেৰে এজোপা তাল গছ জোকৰি দিলত ডাঙৰ ডাঙৰ পকা তালবোৰ সৰি পৰিল। তাল পৰা শব্দ শুনি ধেনুকাসুর খেদি আহি পাছ ঠেং ছখন ওপৰলৈ তুলি বামৰ বুকত লাথি মাৰিলে।

ধেনুকাসুর বধ : বৃন্দাবনমি খেল রহি थे तो पके हुए ताड़की गंध पाकर श्रीदाम, सुदाम आदि गोपबालकगणने लुण और बलरामके सामने ताड़का फल खानेकी इच्छा प्रगट की। दोनो भाई हँसकर ताड़बनमि घुस गये। बलरामने जब दोनो हाथीसे एक ताड़के पेड़की जीरसे हिला दिया तो बड़े बड़े पके हुए ताड़ गिर गये। ताड़के गिरनेकी आवाज सुनकर धेनुकासुर आकर पीछेकी दोनो पैरोंको ऊपर उठाकर रामकी छातीपर प्रहार किया।



বলভদ্রে ধেনুকাস্থবক মাৰিছা।

গোপসবে তালফল ভোজন কৰিছা।

কৃষ্ণ ধেনুকাস্থবৰ জাতিক বধ কৰিছা।

বলভদ্র তাতে অতি কষ্ট হৈ ধেনুকাস্থবৰ পাছ ঠেং ছুখন জপাই ধৰি ওপৰলৈ তুলি ঘূৰাওঁতে সি মৰিল; তেতিয়া তেওঁ তাক তাল গছৰ গাটলৈ মাৰি পঠালে। ধেনুকক এইদৰে মাৰা দেখি তাৰ জ্ঞাতিবিলাক খেদি আহিল। কৃষ্ণ-বলবাসে সিহঁতকো পাছ ঠেঙত ধৰি ওপৰলৈ তুলি তাল গছলৈ দলি মাৰিব ধৰিলে। তালগছত পৰি ধেনুকৰ জ্ঞাতিবোৰ মৰিব ধৰিলে আৰু গছবোৰ জোকাৰ খোৱাত বহুত তাল সৰি পৰিল। তাকে দেখি দেৱতা-বিলাকে প্ৰশংসা কৰিবলৈ ধৰিলে, গন্ধৰ্ববিলাকে নৃত্য কৰিবলৈ

বলভদ্র ইসে অত্যাঁত ক্রুদ্ধ হীকৰ ধেনুকাস্থবক পীড়কৈ দীনোঁ পৈৰীকী সাথ মিলাকৰ পকড়কৰ জপৰ ওঠা ঘুমাৰ পৃথীপৰ দে মারা স্বীৰ রামনি उसकी ताड़के पेड़पर फेंक दिया। धेनुककी इस तरह मारति देखकर उसकी रिश्टीदारगण दीड़कर आयि। कृष्ण बलराम उन्ही भी पकड़कर जप उठाकर ताड़के पेड़पर फेंकने लगे। ताड़के पेड़पर गिरकर धेनुकके रिश्टीदारगण मरने लगे और पेड़ोंमें धक्का लगनेके कारण हिलनसे बहुतसे ताड़ गिर पड़े। इसे देखकर देवतागण स्तुति करने लगे, गंधर्वगण नाचने लगे।



দেবগণ ।

ধবিলে ; ইপিনে গোপবালক সবে পকা তাল বং মনে কাবাঁকাবি
কবি খাবটৈ ধবিলে ।

इधर गोपबालकगण पके हुए ताड़ोंकी आनन्दसे छीनाभपटीकर
खाने लगे ।

বলভদ্রব দলিত অশুৰ মুখঠেকেচা খাই মাটিত পবিল ।
বলদেৱে আগ হাত মুঠা মাৰি দাঙি বাওঁহাত মুঠি মাৰি আগবঢ়াই

बलभद्रके फेंकनेसे असुर मुँहमें चीट खाकर मिट्टीमें गिर पड़ा ।
बलदेव दोनो हाथोंकी कसकर बाँधकर वीरवेशसे खुड़ा है ।



বলভদ্র ।

মবা ধেনুকাস্তব ।

গোপগণে ফল খাইছা ।

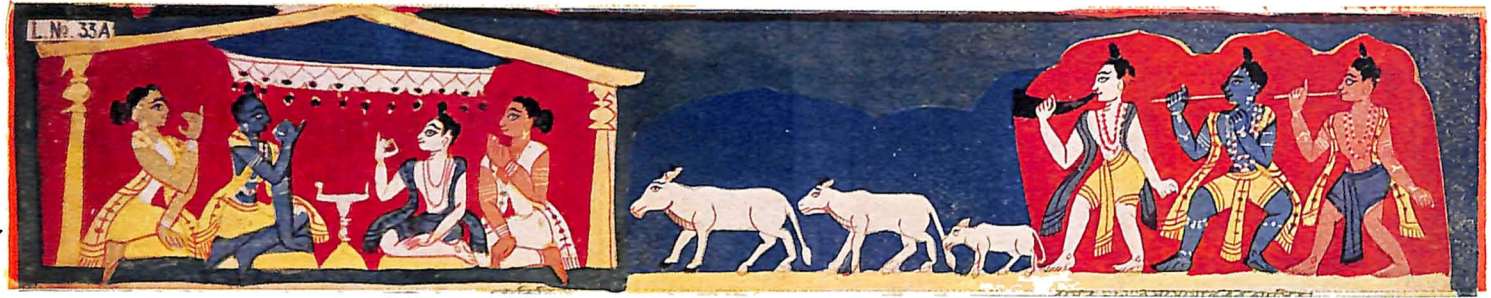
কৃষ্ণ ।

বীৰবেশে থিয় দি আছে । গোপবালকবিলাকৰ কোনোৱে আঠু কাঢ়ি তাল বুটলিছে, কোনোৱে বা ফল কাৰাকাৰি কৰিছে । কোনো কোনো গোপবালকে আকৌ কৃষ্ণক এটা ফল দিছে আৰু নিজেও খাবলৈ ফল মুখৰ ওচৰলৈ নিছে ।

গোপবালকোঁমঁ কোঁই ঘুটনি টেককৰ তাড় বটোৱ ৰহা হৈঁ তোঁ কোঁই ফলকে লি়ে ছীনাৰুপটী কৰ ৰহা হৈঁ । কোঁই কোঁই গোপবালক ফিৰ কৃষ্ণকো এক ফল দে ৰহা হৈঁ আঁৰ খুদ মী খানিকে লি়ে মুঁহক পাস ফল লা ৰহা হৈঁ ।

কৃষ্ণ-বলৰাম আদিৰ ব্ৰজলৈ প্ৰত্যাহৰ্ত্তন : ধেনুকাস্তবক বধ কৰি কৃষ্ণ-বলৰাম আৰু অন্যান্য গোপবালকসকল ধেনু লৈ ব্ৰজলৈ উভতিল । ধেনুবোৰ আগত, তাৰ পাছতে শিঙা বজাই

কৃষ্ণ-বলৰাম আদ্যিওঁকা ব্ৰজমঁ প্ৰত্যাৱৰ্ত্তন : ধেনেকাসুৰকা বধ কৰনিকে ৰাদ কৃষ্ণ বলৰাম আঁৰ দুসৰে গোপ-বালকগণ ধেনু লেকৰ সীংগা ৰাঁসুৰী বজাতি হু়ে ব্ৰজমঁ আ ৰহঁ হৈঁ ।



যশোদা । কৃষ্ণ । বাম । বোহিণী ।

বাম-কৃষ্ণ গোপসমে গোকুলক আসিছা ।

বলভদ্র, তাৰ পাছত বাঁহী বজাই কৃষ্ণ আৰু গোপবালকবিলাক আহি ব্ৰজত উপস্থিত হল। কৃষ্ণ-বলবাম অহা দেখি যশোদা আৰু বোহিণীয়ে এখন শৰাইত খোৱাবস্তু সজাই তেওঁলোকৰ আগত দিছে। ছুয়ো ভাই-ককাই বং মনে সেই বস্তু খাবলৈ ধৰিছে।

कृष्ण बलरामको आति देखकर यशोदा और रोहिणी एक टगीमें* खानेकी चीजें सजाकर उनको देरही हैं। दोनों भाई मिलकर आनन्दसे वे चीजें खा रहे हैं।

* असमके काँसिका धरतन, जिसमें प्रसाद, पान वगैरह लिया जाता है।



কৃষ্ণে পৰশি গোপ-গৰু জীয়াইছা ।

হৃদৰ জল পান কৰি গোপ-গৰু মৰিছা ।

কালীয় দমন : তাৰ পাছত আন এদিনাখন কৃষ্ণই গোপ-বালকবিলাকৰ সৈতে যমুনাৰ পাৰত গৰু চৰাবলৈ গল। কৃষ্ণ আন ফালে থকা সময়ত গৰু আৰু গোপবালকবিলাকে পিয়াহত

कालीय-दमन : एकदिन कृष्ण गोपबालकोके साथ यमुनाके किनारे गायें चराने गये। कृष्ण दुसरी और रहनेके समय गायें और गोपशिशुगण प्याससे विह्वल होकर कालीय-

আতুৰ হৈ কালীয়া হৃদৰ পানী খাই বিষ লাগি মৰি পৰি থাকিল।
কৃষ্ণই গোপ-গৰুৰ অৱস্থা দেখি অমৃত-হাত বুলাই সকলোকে
জীয়ালে ; সকলোবোৰে আগৰ দৰে চলি ফুৰিব ধৰিলে।

হৃদকা জহৰীলা পানী পীকৰ মৰ গয়ে। কৃষ্ণ গ্বাল অঁৱৰ
গায়ীকী হালত দেখকৰ অমৃত-হাতসে মলকৰ সবকী জীৱিত
কিয়া অঁৱৰ সমী পহলী জৈসে চলনে-ফিৰনে লগে।



কৃষ্ণে কদম্বত চড়িছা।

कालीय हृदय पारत एजोपा कदम गह आछिल । कृष्णइ सेइ कदमत उठि छुटा ठानित भवि छुथन मेलि दि थुपनि पूति छुइ हातेदि छुटा ठानित टानकै मुठि मारि धरि आछे ।

कालीय हृदके किनारे कदम्बका एक पेड़ था । कृष्ण उस कदम्बपर चढ़कर दो टहनियोंपर पैर लटकाकर जोरसे दोनों हाथोंसे दो टहनियोंको मुझे बाँधकर पकड़े हुये है ।



कालि आसि कृष्णकप वर्णइछा ।

कृष्ण कालिब हृदत पबिहा ।

श्रीकृष्णइ कदम गहब डालत धुलनि दि हृदय माजत जाप दि पबिलत हृदय पानी उथलि उठिल । कालीय नागे ताके देखि खण्डत खेदि आहिल ; आक कृष्णब गूरव ओपबत सहस्र फणा तुलि जिभा मेलि कोराबि चेलैकबलै धरिले ।

श्रीकृष्ण कदम्बकी डालोंमें भूलकर हृदके बीचमें जब कुद पड़ा तो हृदका पानी उछल पड़ा । उसे देखकर कालीय नाग क्रोधसे कृष्णके सिरपर सहस्र फणोंको उठाकर जीभ लपलपाने लगा ।

कालीय नागे कृष्णक मेबाइ धरिले, आक फणाबोब कृष्णब गूरव ओपबत तुलि येन कृष्णक आसहे कबिबलै उठत हल । कृष्ण

कालीय नाग कृष्णके चारों ओर लिपट गया और फणाको कृष्णके सिरपर उठाकर मानो कृष्णकोही निगलनेके लिए उद्यत हुआ ।



কালীয়ে কুম্বক সৰ্কগারে মেবাই ধৰিছা।

গোপ-গৰু সন্তাপ কৰিছা।

বিষৰ জ্বালত অচেতন হৈ পৰি থকা ভাৱ জুৰিলে। কুম্বক সেই অৱস্থা দেখি পাবত থকা গোপবালকবিলাক অতি বিষন্ন মনে মূৰে কপালে হাত দি আঠু কাটি বহি কান্দিবলৈ ধৰিলে। ধেনু-বিলাকেও গল দাঙি দাঙি যেন কুম্বক বিৰহত অফুট শব্দেৰে বিলাপহে কৰিব ধৰিলে।

ইফালে গোকুলত বিমঙ্গলৰ নানা চিন দেখি কুম্ব আদিৰ বিপদ আশঙ্কা কৰি গোপ-গোপীবিলাক গৈ নন্দৰ ঘৰত উপস্থিত হৈছে। নন্দ বজা বহি আছে; এজন গোপে হাতযোৰ কৰি উৎপাতৰ কথা নন্দক কৈছে। আৰু আন এজনী গোপী পাছৰ ফালে থাকি হাত দাঙি হুঙ্কাৰ ধৰিছে। কোনো গোপে আকৌ হাতত লাখুটি ধৰি কুম্বক পদচিহ্ন চাই বন ফেৰি ফেৰি আগে আগে

ক্ৰমশঃ বিঘ্নকী জ্বালাসি বেহীশীকা বহানা কিয়া। ক্ৰমশঃকী এমী হালত দেখকৰ কিনাৰকী গোপবালক অত্যন্ত দুঃখকী সাথ সিরপৰ হাথ ৰখকৰ ঘুটনকী বল বৈঠকৰ রোনি লগি। গায়ীমী গলা উঠা উঠাকৰ ক্ৰমশঃকী বিৰহমী মূক আবাজসেহী রোনি লগী।

ইধৰ গোকুলমী অশকুনীসি শংকিত হীকৰ ক্ৰমশঃ আদিকী অমংলকী আশংকাকী কাৰণ গ্বাল-গ্বালিনী নন্দকী ঘৰমী হাজিৰ হুয়ি। নন্দ রাজা বৈঠি হৈ। এক গ্বাল হাথ জোড়কৰ উত্পাতকী বাত নন্দসি কহৰহা হৈ। দুসৰী এক গ্বালিনী পীকী খুড়ী উসকা সমর্থন কৰ রহী হৈ। কৌই গ্বাল ফিৰ হাথমী লাঠী লীকৰ ক্ৰমশঃকী পদচিহ্ন দেখতা হুবা বনকী অীৰ আগী আগী জা রহা হৈ; কই



নন্দ আদি গোপ-গোপীগণে যশোদা-বোহিণী কৃষ্ণৰ খোজত বলভদ্র । গোপী । গোপ-গোপী বিমঙ্গল দেখি নন্দব মন্দিবে একঠাই হইছা ।
কৃষ্ণক দেখিতে বৃন্দাবন পবন্তে বাস্ত ।

গৈছে ; কেইজনীমান গোপীয়ে সেই পদচিহ্ন হালি হালি দেখাই
তাৰ অনুসৰণ কৰিছে । তাৰ পাছত বলভদ্র আৰু সমশেষত এজনী
গোপী কৃষ্ণৰ অনুসন্ধান কৰিব ধৰিছে ।

‘ম্বালিনী’ उन पद-चिह्नोंको देखकर उसका अनुसरण कर रही
है’ । उनके पीछे बलभद्र और एक गोपी कृष्णकी खोजमें
आरहे हैं ।



কৃষ্ণক কালিয়ে ডকিছা ।

যশোদা হিয়া-মুণ্ড ভকুবাই নন্দ । বলভদ্র । বোহিণী । গোপী । গোবাল ।
কান্দিছা ।

কৃষ্ণ কালীয় হৃদত কালী নাগর মেবত মেব খাই ভবি ছখন
ছই ফালে মেলি দি ঘোবাত উঠি থকাব দৰে আছে। নাগে
আকৌ কৃষ্ণৰ মূৰটো গিলিবলৈ খুজি যেন ফণা মেলি আছে।
তাকে দেখি যশোদাই আতুব হৈ কৃষ্ণৰ গুণ বর্ণাই কপাল ভুকুৰাই
মাটিত আঠুকাটি কান্দিব ধৰিছে। নন্দয়ো হাত ওপৰলৈ তুলি
অদৃষ্টক ধিয়াই কান্দি আছে। তাৰ পিছত বলদেৱ, ৰোহিণী
আৰু অশ্বাশ্ব গোপ-গোপীবিনাকেও কৃষ্ণৰ অৱস্থা দেখি শোকাতুব
হৈ বিলাপ কৰিব ধৰিছে।

কৃষ্ণ কালীয় হৃদম্ কালীয় নাগসে লিপটে হুয়ে দোনাঁ ফপোঁ
পর पैर राखे शोभायमान हैं मानो घोड़ेपर चढ़े हैं। नाग फिर
कृष्णको निगलनेकी इच्छासे फणा फैला रहा है। इसे देखकर
यशोदा अस्थिर होकर कृष्णके गुणोंका वर्णन करती हुई
सिर पीटकर जमीनपर घुटने टककर रो रही है।
नन्दभो सिर पीट रहे हैं। बलदेव, रोहिणी और दुसरे ग्वाल-
ग्वालिन भी कृष्णकी अवस्था देखकर शोकसे विह्वल होकर
रो रहे हैं।



বনভঙ্গ্রে নিষেধ কৰিছা।

কৃষ্ণৰ শোকত আতুব হৈ যশোদা আৰু নন্দই কালীয় হৃদত
জাপ দি আত্মহত্যা কৰিবলৈ ওলোৱা দেখি বলদেৱে যশোদাৰ
হাত ছখন সাৱট মাৰি ধৰি “কৃষ্ণৰ বিনাশ নাই, তুমি ভয়

কৃষ্ণকে शोकसे विह्वल होकर यशोदा और नन्द कालीय हृदम্
कूदकर प्राण गँवाना चाहते हैं। बलदेव यशोदाके दोनोँ हाथ
थामते हुये “कृष्णका विनाश नहीं है, तुम डरो मत। वह अभी

নকৰিবা ; তেওঁ এতিয়াই সৰ্পৰ দৰ্প চূৰ্ণ কৰি পানীৰপৰা উঠি আহিব' ইত্যাদি কথা কৈ আশ্বাস দিছে। যশোদাৰ পিছত এজন গোপ আৰু এজনী গোপী থিয় দি আছে।

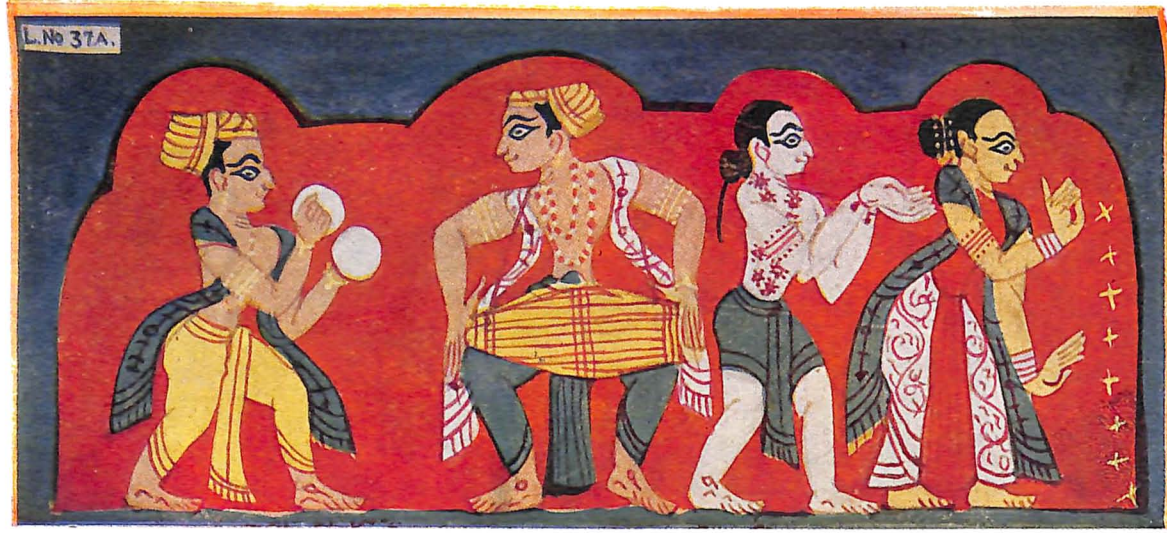
সাঁপকা গৰ্ব চূৰ কৰকি পানীসে নিকল আয়েগা" আদি কহতি হুবে আশ্বাসন দে রहा है। यशोदाके पीछे एक गोप और एक गोपी खड़ी है।



কৃষ্ণে কালীৰ শিৰত নাচিছা।

বিষ লাগি মানুহ পৰি থকাৰ দৰে কৃষ্ণ পৰি থকা দেখি কালী ফণা মেলি উঠিল। সেই চেগতে কৃষ্ণই কালীৰ মূৰত উঠি তাৰ সহস্র শিৰক ছুফাল কৰি ছুই ফালে ছুখন ভৰি দি নানা ভঙ্গি কৰি

সাঁপকা বিষসে ম্ৰিয়মান অৱস্থা প্ৰাপ্ত কৃষ্ণকো দেখকৰ কালীয়ে ফুফকৰ উঠা। उस संयोगमें कृष्णने कालीयके सिरपर चढ़कर उसके हजार सिरोंको दो तरफ बांटकर दोनों और दो



গন্ধর্ষ ।

বিদ্যাধর ।

দেবমুনি ।

অপেশ্বরী নাচিছা ।

নাচিবলৈ আৰম্ভ কৰিলে । তাকে দেখি আকাশত গন্ধৰ্ব্বই তাল, বিদ্যাধৰে খোল, দেবমুনিয়ে স্তুতি আৰু অপেশ্বৰাই নৃত্য কৰিবলৈ ধৰিলে ।

পৈরীসে দ্বাৰক অনেক মুদ্রাস্ত্রীসে নাচনা শুরু কর दिया । इसे देखकर आसमानमें गंधर्व ताल बजाने, विद्याधर खोल बजाने, देवर्षिगण स्तुति करने और अप्सरागण नाचने लगीं ।

কুষ্ণই কালীৰ মূৰ্ত্ত উঠি এনেদৰে নৃত্য আৰম্ভ কৰিলে যে, কালী অতিষ্ঠ হৈ পৰিল । কালীয়ে যেতিয়াই যিটো মূৰ দাঙে কুষ্ণই সেইটোতে উঠি নাচিবলৈ ধৰে । কালীৰ সেই আতুৰ অৱস্থা

कृष्णके तांडव नृत्यसे मर्माहत कालीय जिस सिरको उठाता है कृष्ण उसी सिरपर चढ़कर नाचने लगता है । कालीय की ऐसी नाजुक हालत देखकर उसकी पत्नियाँ



শিশুক আগকবি নাগপত্নীসবে কৃষ্ণক তুতি কবিছা।

কৃষ্ণে কালিৰ শিবত নৃত্য কবিছা।

দেখি পত্নীসকলে শিশু-সন্তানবিলাকক লগত লৈ হাতযোৰ কৰি
কৃষ্ণৰ ওচৰত উপস্থিত হ'লগৈ।

শিশু-সন্তানীকো সাথ লৈকৰ হাত জোড়কৰ কৃষ্ণকো সামনে
আই'।



নাগপত্নীসবে তুতি কবিছা।

নাগপত্নীসকলৰ স্তুতি :—নাগপত্নীসকলে শিশু-সন্তানবোৰৰ সৈতে কৃষ্ণৰ ওচৰলৈ গৈ আঠুকাটি হাতযোৰ কৰি স্তুতি আৰম্ভ কৰিছে। কৃষ্ণই হাত তুলি কালীয়াৰ মূৰত উঠি নানা ভঙ্গিৰে অবিৰাম নৃত্য কৰি আছে।

নাগপত্নীসকলৰ স্তুতি :—নাগপত্নীসকলে শিশু-সন্তানসকলৰ সৈতে কৃষ্ণৰ ওচৰলৈ গৈ আঠুকাটি হাতযোৰ কৰি স্তুতি আৰম্ভ কৰিছে। কৃষ্ণই হাত তুলি কালীয়াৰ মূৰত উঠি নানা ভঙ্গিৰে অবিৰাম নৃত্য কৰি আছে।



নাগপত্নীৰ তুতিত কৃষ্ণ তুষ্ট হৈয়া, কালীৰ শিৰ নামি, নিৰ্ভয় দিছা।

নাগপত্নী আৰু নাগ-শিশুবিলাকৰ প্রার্থনাত কৃষ্ণ তুষ্ট হৈ কালীয়াৰ মূৰত পৰা নামিল ; আৰু আগহাত দাঙি কালীয়াৰ নিৰ্ভয় দিলে। কালীয়ায়ে কৃষ্ণক পৱত সহস্র ফণা নমাই হাতযোৰ কৰি স্তুতি কৰিলে।

নাগপত্নী আৰু নাগশিশুসকলৰ প্রার্থনাত কৃষ্ণ সন্তুষ্ট হৈ কালীয়াৰ মূৰত পৰা নামিল ; আৰু আগহাত দাঙি কালীয়াৰ নিৰ্ভয় দিলে। কালীয়ায়ে কৃষ্ণক পৱত সহস্র ফণা নমাই হাতযোৰ কৰি স্তুতি কৰিলে।

কালীয়াৰ স্তুতি :—কালীয়াই কৰপুটে মূৰ দৌৱাই কৃষ্ণক স্তুতি কৰি থাকোঁতে নাগপত্নী আৰু নাগশিশুবিলাকে কালীয়াৰ পিছফালে

কালীয়াৰ স্তুতি :—কালীয়াই কৰপুটে মূৰ দৌৱাই কৃষ্ণক স্তুতি কৰি থাকোঁতে নাগপত্নী আৰু নাগশিশুবিলাকে কালীয়াৰ পিছফালে



নাগপত্নীসব।

কালিয়ে হাতজোবে কুম্বক তুতি কৰিছা।

কালিক কুম্বে বিদায় দিছা।

হাতযোৰ কৰি থিয় দি আছিল। কালীয়ই ধূপ, নৈবেদ্য আদি কুম্বৰ আগত দি স্তুতি কৰাত কুম্ব সন্তুষ্ট হৈ আগ হাত দাঙি আশ্বাস দি কলে যে, 'হে কালীয়, তুমি এই ঠাইৰপৰা আন ঠাইলৈ যোৱা।' কালীয়ই কুম্বৰ আদেশ ক্ৰমে সেই ঠাই এৰি আন ঠাইলৈ যাবলৈ আৰম্ভ কৰিলে।

सुति की तो भगवान् कृष्ण संतुष्ट होकर आश्वासन देते हुये कहा "हे कालीय ! तुम इस जगहसे दूसरी जगह चले जाओ।" कालीयने कृष्णके आदेशानुसार उस जगहको छोड़ दूसरी जगह जानिका वचन माना।

কালীয়ৰ সপৰিবাৰে কালিন্দী হ্ৰদ ত্যাগ :—কালীয়ই কুম্বৰপৰা বিদায় লৈ গল। নাগপত্নী আৰু নাগশিশুবিলাকে

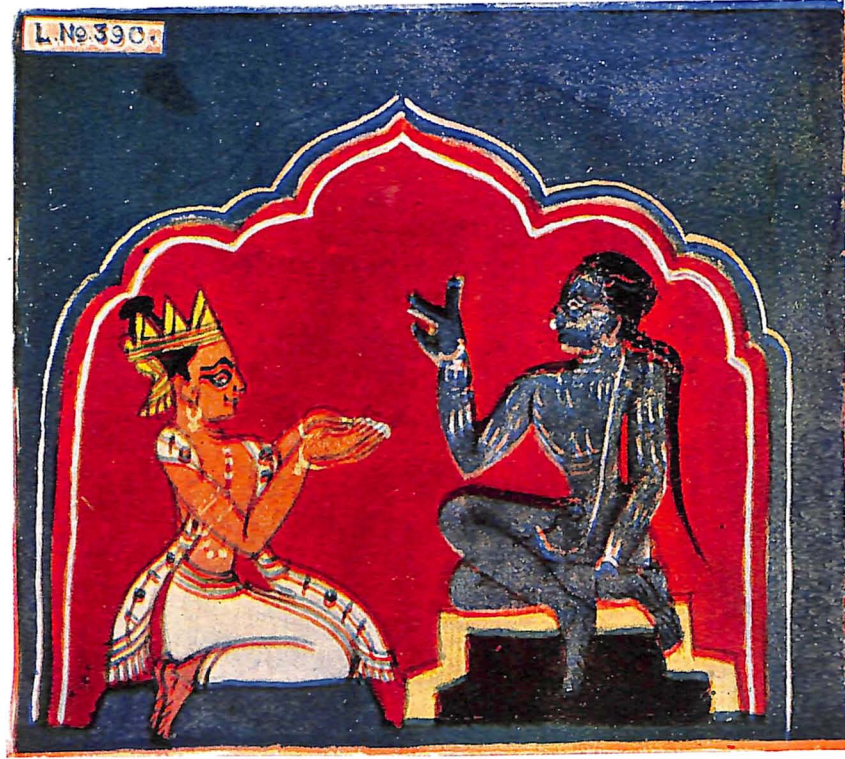
कालीय नाग द्वारा कालिन्दी ऋटका परित्याग : कालीय कृष्णसे विदा लेकर चला गया। नागपत्नी और नाग-



কালীয়ে পুত্র পত্নীসমে বমণক যাস্ত ।

কালীয়াৰ পিছে পিছে যাবলৈ ধৰিলে। শুকদেৱ গোষাামীয়ে এই কথাবোৰ বজা পৰীক্ষিতৰ আগত কব ধৰিছে; আৰু পৰীক্ষিতে হাতযোৰ কৰি শুনি আছে।

शिशुगणभी कालीयके पीछे पीछे जानि लगि। महर्षि शुक्रदेव इन बातोंको राजा परीक्षितके सामने कह रहि है; और परीक्षित हाथ जोड़कर सुन रहि है।



পৰ্বীক্ষিত ৰাজা।

শুকদেৱ।

কালীয় আৰু গৰুড়ৰ যুদ্ধ :— কালীয়ই সপৰিয়ালে
হৃদ এৰি আন ঠাইলৈ যাত্ৰা কৰোঁতে গৰুড়ে দেখা পাই
পূৰ্বৰ শত্ৰুতা স্মৰি কালীয়ক আক্ৰমণ কৰিলে। কালীয় আৰু

কালীয় নাগ আৰু গৰুড়ক যুদ্ধ :— জব কালীয়
পৰিবাৰীকৈ সাথ ফুৰি ছোড়কৰ দূসৰী জগহকী যাত্ৰা কৰিহা থা
তব গৰুড়নে দেখকৰ পহলেকী দুশমনী যাদ কৰ কালীয় পৰ



কালিযে গৰুড়ে যুদ্ধ কৰিছা।

গৰুড়ৰ যুদ্ধ হল; গৰুড়ে কালীয়ক নখপুতি ধৰিলে, কালীয়য়ো গৰুড়ক লেজেৰে মেৰাই ধৰি মুখত ডকিবলৈ চেষ্টা কৰিলে।

হমলা কৰিয়া। কালীয় আঁৱ গৰুড়কী লড়াই হুই; গৰুড়নি কালীয়কী নখী'সে নীচ লিয়া। কালীয়নি মী গৰুড়কী পূঁছমঁ লপটকৰ মুঁহসে' উঁক মারনকী চেষ্টা কী।



গৰুড়ে কালীয়ক খেদি আহিছ।

কালীয়ৰ যমুনা হৃদত আশ্রয়ঃ—গৰুড়ে কালীয়ক খেদি কাৰ্ত্তীক যমুনামে' আশ্রয় লিলা : জন্ম গৰুড়নে
 দেখি নিতান্ত নিকপায় হৈ যমুনা হৃদত সোমাল গৈ। কাৰ্ত্তীককো খুদেড়া তী লাচার হীকর কাৰ্ত্তীক যমুনাক ক্লদমে'



গরুড় পালটি আসিলা ।

কালীয় ভূদে বৃড় দিলা ।

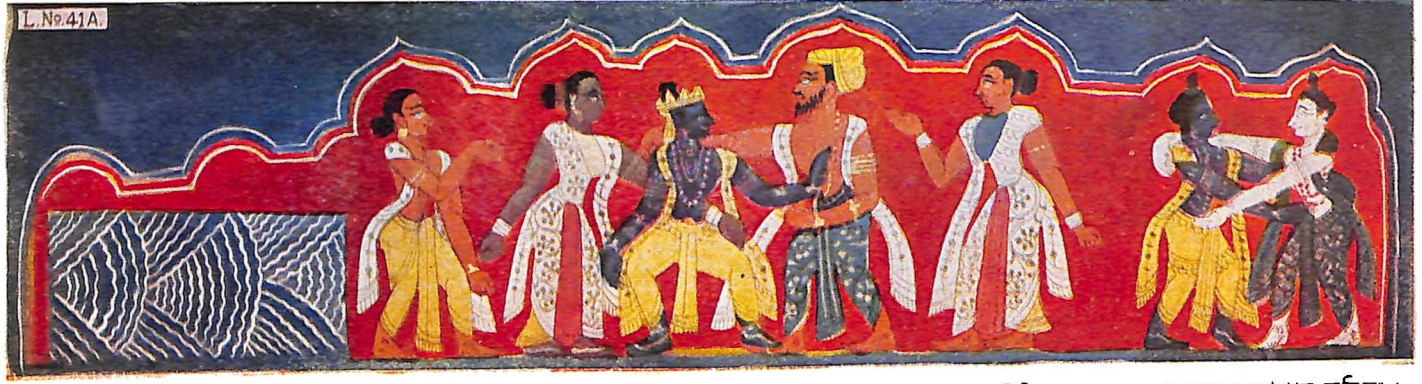
বাজা পবীক্ষিত । শুকদেব ।

গরুড়ে মুনি সৌভরিব শাপলৈ ভয় কৰি কালীয়ক এৰি উভতি আহিল ।

ঘুম গয়া । গরুড় মুনি সৌমরিকি অমিশ্রাপকি ডরসে কালীয়কো কীড়কর লৌট আয়া ।

কালীয় দমনৰ পাছত কৃষ্ণৰ আনন্দ :- কৃষ্ণই কালীয়ক সেইদৰে দমন কৰি হাঁহিমুখে ঘবলৈ উভতি আহিল । কৃষ্ণক অহা দেখি এফালে যশোদা আৰু আনফালে বজা নন্দই এখন হাতেৰে কৃষ্ণৰ হাতত ধৰি আনখন হাতেৰে গলত সারট মাৰি স্নেহালিঙ্গন কৰিছে । ওচৰতে এজনা ব্রাহ্মণ থিয় দি হাত তুলি আশীৰ্বাদ দিছে । নন্দৰ পিছৰফালে বোহিণীয়ে বং মনে

কালীয় দমনসে কৃষ্ণকো আনন্দিত হোনা : কৃষ্ণ उसी तरह कालीयका दमन करके हंसमुँहसे घर लौट आया । कृष्णको आति देखकर एक ओर यशोदा और दूसरी ओर राजा नन्द एक हाथसे कृष्णके हाथ पकड़कर दुसरे हाथको गलमें डालकर स्नेहसे आलिंगन कर रहे हैं । पासही एक ब्राह्मण हाथ उठाकर आशीर्वाद दे रहा है । नन्दके पीछे रोहिणी आनन्द मनसे खड़ी



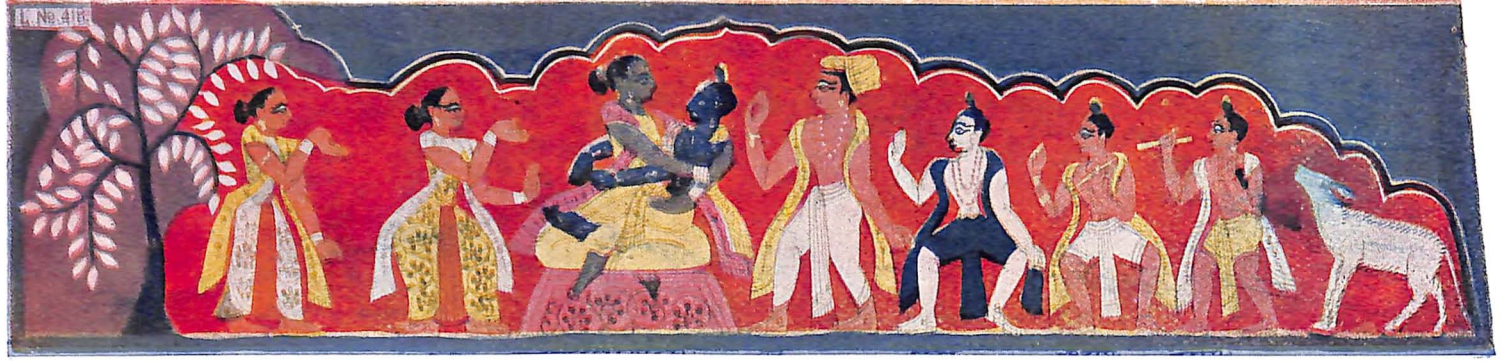
विष्णु । यशोदाया नन्दे कृष्णकआश्रम कबिछा । बोहिनी । बलभद्रे कृष्णक आश्रम कबिछा ।

थिय दि आछे । बलभद्रे कृष्णक हात-गले धराधरि कबि पबस्पाबे
स्नेहलिङ्गन कबिछे ।

हैं । बलभद्र कृष्णसे गले लगकर परस्पर स्नेहलिङ्गन कर
रहे हैं ।

यशोदाबाणीब आनन्द आक नन्द-बोहिनीब आशीर्वाद :—
ताब पाछत यशोदाबाणीये अति सन्तुष लाभ कबि कृष्णक कोलात
लै सारटि धरिले । कृष्णयो माकब फाले मुख घूबाई यशोदाब
गलत सारटि माबि धरिले । एफाले नन्द आक आन फाले
बोहिनीये आनन्दत हात दाडि येन आशीर्वाद दिछे । बोहिनीब
पिछब फाले गोपी आक नन्दब पिछब फाले बलराम, श्रीदाम,

यशोदाका प्रेम और नन्द रोहिणी का आशीर्वाद :
उसके बाद यशोदा राणीने अत्यंत संतोष पाकर कृष्णको गोदमें
लेकर प्यार किया, कृष्णने भी माँकी ओर मुँह मोड़कर यशोदाके
गलेमें गलवांही डालदी । एक और नन्द और दुसरी ओर रोहिणी
आनन्दसे हाथ उठाकर मानो आशीर्वाद दे रही हैं । रोहिणीके
पीछे गोपी और नन्दके पीछे बलराम, श्रीदाम, सुदाम आदि



গোপী । বোহিণী । যশোদা কৃষ্ণক কোলা লৈছা । নন্দ । বলভদ্র । শ্ৰীদাম । সূদাম ।

সূদাম আদি গোপগোপীসকল থিয় দি আছে । তাত থকা গৌপগণ খড়্দি হৈ' । বহাঁকী গায়'মী মানো আনন্দসে অতপ্ৰীত হী
ধেহুবিলাকেও যেন আনন্দত উৎফুল্ল হৈছে ।



শ্ৰীদাম । বাম । কৃষ্ণ । বনবহিত ত্ৰাস হুয়া নন্দে গোপ-গকসমে কৃষ্ণত শৰণ পশিছা ।

বন্যাগ্নি পান :- এনেভাৱে থকাৰ পিছত এদিনা হঠাৎ সেই
বৃন্দাবনত দাবানল জ্বলি উঠিল । বন-বহি দেখি নন্দ আদি গোপ

বন্যাগ্নি পান : ইম তৰহসে বহনিকৈ বাদ একদিন
অকস্মাত্ বৃন্দাবনমিঁ দাবানল জল উঠা । বনমিঁ আগ

আর যশোদা আদি গোপীবিলাক অতি সন্ত্রস্ত হৈ কৃষ্ণব ওচবলৈ গৈ হাতযোৰ কৰি স্তুতি আবস্ত কৰিলে। তেতিয়া কৃষ্ণ-বলবামে বন-বহিৰপৰা তেওঁলোকৰ ভয় নাই বুলি হাত দাঙি আশ্বাস দিছে ; বনৰ চাৰিওফালে হু হু কৰি জুই জ্বলি উঠিছে।

দেখক নন্দ আদি গোপ ঐর যশোদা আদি গোপিনীগণে অত্যন্ত ভয়भीত হৌকর कृष्णकी पास जाकर हाथ जोड़कर स्तुति करनीपर कृष्ण, बलराम उन्हें अभय देरहे हैं।



কৃষ্ণে বনবহি পান কৰিছা।

বলভদ্র।

নন্দ।

বোহিণী।

যশোদা।

শ্রীদাম।

সুদাম।

কৃষ্ণই নিজ-মাহাত্ম্যৰ বলত বন বহি পান কৰিবলৈ আবস্ত কৰিলে। কৃষ্ণই বহি পান কৰা দেখি বলভদ্র, নন্দ, যশোদা আদি গোপ-গোপীসকলে আচৰিত হৈ আগহাত দাঙি কৃষ্ণক লক্ষ্য কৰি কোৱাকুই কৰিবলৈ ধৰিলে, যে কৃষ্ণ মানুহ নহয়—এওঁ পৰম পুৰুষ।

अपने माहात्म्यकी प्रभावसे भगवान् कृष्ण वन बहिका पान शुरू करदिया। कृष्णको बहिका पान करती देखकर बलभद्र, नन्द, यशोदा आदि गोप गोपीगण अचरज हौकर दाहिने हाथ उठाकर कृष्णकी ओर दृशारा करके कहा-सुनी करनी लगीं कि कृष्ण मनुष्य नहीं परम पुरुष हैं।



কৃষ্ণ । বলরাম । শ্রীদাম । গোবান্দী ।

ধেনু আগত লৈ কৃষ্ণ-বলরামৰ গোপবালকৰ সৈতে বৃন্দাবনলৈ গমন :—বনাগ্নিবপৰা বৃন্দাবন বক্ষা কৰাৰ পাছত কৃষ্ণ এদিন লগৰীয়া গোপবালকৰ সৈতে গৰু চৰাবলৈ ওলাল। আগত গাইবোৰ, পাছত দামুৰিবোৰ যাবলৈ ধৰিলে; কৃষ্ণই বাওঁহাতেৰে লক আৰু আগহাতেৰে বাঁহী বজাই গৈছে। কৃষ্ণৰ পিছত বলভদ্ৰ বাঁহী ফুকিয়াই লগৰীয়া গোরালৰ সৈতে যাব ধৰিছে; তাৰ পিছতেই গোপীবিলাকো গৈ আছে।

কৃষ্ণ-বলরাম আৰু অন্যান্য গোপবালকবিলাকে গাই দামুৰি-বোৰক আগত লৈ বাঁহী বজাই বজাই বৃন্দাবন পালেগৈ, আৰু মনৰ আনন্দে গৰু চাৰিবলৈ ধৰিলে। গৰু আৰু বনৰ হৰিণাবোৰ

गायों की आगे लेकर कृष्ण-बलरामका ग्वालकी साथ बृन्दावनकी ओर यात्रा : वनकी आगसे बृन्दावनकी रक्षा करनके बाद कृष्ण एकदिन साथी गोप बालकीसे गायें चरानि निकला। आगे गायें, पीछे बछड़े जा रहे हैं; कृष्ण बायें हाथसे डंडा और दाहिनि हाथसे बांसुरी बजाता जा रहा है। कृष्णके पीछे बलभद्र बांसुरी फुँकते फुँकते साथी ग्वालोंके साथ जानि लगा; उसके पीछे पीछे गोपिनीगण भी जा रही हैं।

कृष्ण बलराम और दूसरे गोपबालकगण गाय बछड़ोंकी आगे लेकर बांसुरी बजाते बजाते बृन्दावन पहुँचे और मनकी खुशीसे गीएँ चरानि लगे। गीएँ और वनकी हिरनियाँ एक साथ एकही



গোপ-গক ।

কৃষ্ণে বংশী বাইছন্ত । বনভদ্র । স্বদাম । বসুদাম ।

একে ঠাইতে চবিছে আক সিহঁতে ঘাঁহবপবা মুখ তুলি কৃষ্ণব
বংশীধ্বনি কাগপাতি শুনিছে ।

जगह चर रही हैं और वे घाँससे मुँह उठाकर कृष्णकी बाँसुरीकी
आवाज सुन रही हैं ।

বুন্দাবনৰ কি মনোহৰ দৃশ্য ! নানা জাতিৰ ফুল, তৰুলতাই
মূৰ তুলি দিগন্ত বিস্তৃত সৌৰভ বিস্তাৰ কৰিছে । ভোমোবাবোৰে
ফুলত পৰি মধুৰ গুঞ্জন কৰি মধুপান কৰিব ধৰিছে । ময়ূৰ আদি
নানা জাতীয় পক্ষীবোৰে কিমান চেও ধৰি নাচিছে ; স্বচ্ছ
সৰোবৰত পদ্মফুল ফুটি আছে ; হাঁহ আদি জলচৰ পক্ষীবোৰে মনৰ
আনন্দত অব্যক্ত মধুৰ শব্দ কৰি জলক্রীড়া কৰিছে । এনে হেন

बुन्दावनका दृश्य कैसा खूबसूरत है ! भाँति भाँतिके फूल, पेड़-
पीधे-बेल-बुटियां सिर उठाकर दूर आसमानक तक सौरभ
फैला रही हैं । भ्रमर फुलों पर बैठकर मृदु मधुर गुंजन करके
मधुपान कर रहे हैं । मोर प्रभृति नाना जातिके पंखी नाच रहे हैं ;
स्वच्छ सरोवरमें कमलके फूल खिल रहे हैं ; हंस आदि जलचर
पक्षीगण मधुर आवाजसे जलक्रीड़ा कर रहे हैं । एसेही मनोहर



যুগ ।

পক্ষীসব সর্বোববত চৰিছা ।

কৃষ্ণে গোপগকসমে বৃন্দাবন
প্রবেশ হইছা ।

বাম । সূদাম ।

মনোহর বৃন্দাবনত কৃষ্ণ-বলভদ্র আদি গোপবিলাক মনর আনন্দে
সোমাইছে ।

বৃন্দাবনমি কৃষ্ণ-বলভদ্র আদি গোপবালকগণ আনন্দ মনসে
প্রবেশ কর রহি হৈ ।



গোপসবে বাহুযুদ্ধ কৰিছা ।

বলভদ্রে গোপক তুলি ধৰিছা ।

কৃষ্ণে নৃত্য কৰিছা ।

শ্রীদাম । সূদাম ।

कृष्ण-बलभद्रब गोपबालकविलाकब लगत खेला :—बुन्दावनत सोमाई गोपबालकविलाके नानाप्रकाव क्रीड़ा कबिबलै धबिछे । कोनोरे हातत धबाधबि कबि बाह्युद्ध कबिछे, कोनोरे वा ठैलाठैलि कबिछे । बलभद्रे एटा गोपबालकक हातत तुलि दिगदिग दिछे । कृष्णई नृत्य कबिछे । श्रीदाम, सुदाम आदिव कोनेओ बाँही, कोनेओवा शिडा बजाइछे ।

कृष्ण-बलरामका ग्वालवालकोंकी साथ क्रीड़ा : बुन्दावनमें घुसकर गोपबालकगण तरह तरहकी क्रीड़ाये करलै लगे । कोई आपसमें बाहुयुद्ध कर रहै हैं ; कई धकेलना-ठेलना कर रहै हैं । बलभद्र एक गोपबालकको हाथमें चढ़ाकर दिग्-दिग् दे रहा है । कृष्ण नृत्य कर रहा है । श्रीदाम, सुदाम आदि कोई बांसुरी तो कोई सींगीही बजा रहा है ।



गोपबालकब लगत कृष्णब खेला ।

बुन्दावनत कृष्ण बहि आछे ; तेउँ आग हात दाडि गोपबालक-विलाकक आदेश दिछे । कोनो बालके हातजोब कबि येन कृष्णक स्तुति कबिछे ; कोनोरे वा फल बूटलिछे ; कोनोरे आको दोबिछे ; कोनोरे वा मोक भुछुवि बुलि हात जोकाबि

बुन्दावनमें कृष्ण बैठा है ; वह दाहिना हाथ उठाकर गोप-बालकोंकी आदेश दे रहा है । कोई बालक हाथ जोड़कर मानो कृष्णकी स्तुति कर रहा है ; कोई फल बटोर रहा है ; कोई फिर-दीड़ रहा है ; कोई मुझे मत छू कहकर हाथ हिलाकर मना

হাক দিছে। কোনোৱে আকৌ গছত জবী লগাই গুলমি-চুলনি দিছে। বলভদ্ৰই থিয় হৈ আগ হাতেবে কাপোবৰ আঁচল দাঙি যেন কৃষ্ণৰ মূৰত ছত্ৰহে ধৰিছে।

कर रहा है तो कोई पेड़में रस्सी लगाकर लटककर भूल रहा है। बलभद्र खड़ा होकर दाहिने हाथसे कृष्णके सिरपर आँचलके फथमें छत्र डुलारहा है।



প্ৰলম্বৰ বলভদ্ৰক বৈ নিছা।

গোপবালক সবে পৰম্পৰে বৈ নিছা।

বলভদ্ৰৰ প্ৰলম্বাসুৰ বধ :—কৃষ্ণ আদি গোপবালকসকল বন-বিহাৰ কৰি থাকোঁতে এদিনাখন প্ৰলম্ব নামে অসুৰ এটা গোপবেশ ধৰি তেওঁলোকৰ মাজত সোমাল। ভগৱান কৃষ্ণই বুজ পাই গোপবালকবিলাকক কলে, যে আমি দুটা দলহৈ এটা খেলা কৰোঁ ; এই খেলাত যি দল ঘাটে সেই দলে জিকা দলক কান্ধত বৈ নিব লাগিব। কৃষ্ণ আৰু বলবাম দুই দলৰ নেতা হৈ

बलभद्रकी द्वारा प्रलंबासुर बध : कृष्ण आदि गोपबालकगण जब वनविहार कर रहे थे तो एकदिन प्रलंब नामका एक असुर ग्वालके विशमें उनके बीच आ घुसा। भगवान कृष्णने यह जानकर गोपबालकोसे कहा कि हम दो टोलियोंमें बाँटकर एक खेल खेलें। इस खेलमें जो टोली हारेगी वही जीतनेवाली टोलीको कंधोंपर चढ़ाकर घुमेगी। कृष्ण और बलरामने दोनों टोलियोंका

খেলা আরম্ভ করিছে। খেলাত কৃষ্ণৰ পক্ষ হাবিল আৰু আগৰ বন্দোবস্ত মতে কৃষ্ণ আদিয়ে বলবামৰ পক্ষক কান্ধত বট নিবলগীয়া হল। কৃষ্ণৰ পক্ষত প্রলম্ব অশ্বৰ আছিল। প্রলম্বাশ্বৰে বলদেৱক কান্ধত তুলি নিব ধৰিলে।

নাযক বনকৰ খেল আৰম্ভ কৰিয়া। খেলমত কৃষ্ণকী টোলী হাৰ গয়ী আৰু পহলীকী বাঢ়ীকী মুতাৰিক কৃষ্ণ আঢ়ীকী বলৰামকী টোলীকী কান্ধেপৰ ঠৌ কৰ লানা পড়া। কৃষ্ণকী টোলীমত প্রলম্ব অশ্বৰমী থা। প্রলম্বাশ্বৰ বলদেবকী কান্ধেপৰ লৈকৰ জানি লগা।



প্রলম্বে বলোক সীমাকো চৰাই নিছা।

ভাণ্ডিৰ বট।



আন গোপগণে খেলা সীমাতে পসাই।

তেওঁলোকৰ খেলাৰ এটা সীমাৰেখা আছিল; আন আন বালকে বৈ নিয়া বালকবিলাকক সীমাত নমাই থলে কিন্তু প্রলম্বে বলভদ্রক সীমা চেৰাই লৈ গল। তাকে দেখি গোপবালকবিলাকে ইটোৱে সিটোৱে হাত দাঙি সীমা অতিক্রম কৰি যাবলৈ যেন বাধাহে দিছে। এই সময়ত বালকবিলাকে আগবদৰে কাষত

उनकी खेलका एक हद था। और और बालकोंने ढोए हुए बालकोंकी हदपर उतार दिया; लेकिन प्रलम्बने बलभद्रकी हदसे आगे ले चला। उसे देखकर गोपबालकगण हाथ उठाकर हद्द अतिक्रम करनीको मानो मना कर रहे हैं। इस समय बालकगण पहले जैसे पासमें सींगा और हाथमें डंडा

शिङ्गा आरु हातत लरु लै आछे । इफाले दैतुाई बलदेरुब असुहा डार बहन करिव नोराबि गोपवेश एबि निजुब डुयङ्कर असुब मुर्ति धरि बलबामक कारुत लै आछे । बलदेरु असुबब कारुत उठि उवतत हात थै निर्डुये बहि आछे ।

ले लिये हैं । इधर दुष्ट दैत्य बलभद्रके वीरुसे घबराकर गोपका वेश छोड़कर अपनी डरावनी असुर मूर्ति प्रगट करदी । फिरभी बलदेव निर्भय मनसे असुरके कंधेपर चढ़ेहुये जांघोंपर हाथ धरे बैठे हैं ।



अपेसुवुा नरुचिछु ।

थूलसुव असुबब डुपवत बलदेरु किछु डर थरुकि डुकरत तेडुँब कुनुनु लगरुबीरुकर देखा नरुडरुडु तारु डुवरुडुसरुडु बुरुजुव डरुबिले ; बलदेरुब थरु उठिल ; तेडुँ डुँठ करुडुडु असुबब डुवत वङ्ग सदुश डुडुडु डुररुहरु करुवत तारु डुव डरुलिल आरु सि तेजे वतुडुडुडु डरुबि

डरुरी करुडुडु असुर डरु चढ़े जब बलदेवने देखा कि डरुडरुडु डरुडुके कुडुडु सरुथु नरुही है तु डरुडुकरु डरुतलडु डरुडुडुडुडु आरुडु आरुडु डुरुसुडु आरुडु ; वरुह हुरुठ चडुकरु असुरके सरुडरुडु बङ्गजेसी डुडुडुकरु डुररुहरु करुने लगे ; डुरुडुडु डरुडुकरु सरुडु डरुडु आरुडु डुरुडुडु डु



প্রলম্ব প্রাণ ছাড়ি পবিল।

বামক কৃষ্ণে আশ্বাস কবিছ।

গোপগণ।

গল। প্রলম্ব অম্বুব মবা দেখি গন্ধর্ব্বই খোল বাইছে আৰু
বিদ্যাধবে নাচিছে। কৃষ্ণই সন্তোষ লাভ কৰি বলদেৱক আলিঙ্গন
কৰিছে; আৰু এওঁলোকৰ পিছৰ ফালে থাকি অন্যান্য গোপবালক-
বিলাকেও আগহাত দাঙি বলদেৱক ধন্যবাদ দিছে।

কৰকি গির পড়া। প্রলম্ব অসুরকো মরতি দেখকর গंधर्व खोल
बजा रहे हैं और विद्याधर नाच रहे हैं। कृष्ण मंतोष पाकर
बलदेवकी आलिङ्गन करता है; गोपबालकगणभी दाहिनी हाथ
उठा उठाकर बलदेवकी धन्यवाद दे रहे हैं।



কৃষ্ণৰ কান্ধ বগাই গোপগণে হৰিষ কৰিছ।

কৃষ্ণ।

বাম।

সুদাম।

কৃষ্ণ-বলবামৰ গোপবালকৰ সৈতে খেলা :—প্রলম্বাশ্বুবক
মাবাৰ পিছত কৃষ্ণ-বলবাম আদি গোপবালকবিলাকে আকৌ সেই

कृष्ण-बलरामकौ गोपबालकौके साथ क्रीडा :
प्रलंब असुरकी मारनेके बाद कृष्ण बलराम आदि गोपबालकगण

ভাণ্ডিৰ বটবৃক্ষৰ তলত লগলাগি আগৰ দৰে এফালে কৃষ্ণ আৰু আন ফালে বলদেৱ দলপতি হৈ সকলোৱে হাত তুলি মুখামুখি হৈ খেলা আৰম্ভ কৰিছে।

फिर उसी भांडीर बटवृक्षके नीचे इकठ्ठे होकर पहले जैमि एक और कृष्ण और दूसरी ओर बलदेव टोलीनायक होकर सभी हाथ उठा उठाकर आमने सामने रहकर खेल आरंभ करते हैं।



বনবহি।

ধেহুগণ মুঞ্জবন পশিছা।

মহিষ।

মেথন।

ছাগল।

গোপগণ গৰুৰ খোজ নিহানি
মুঞ্জবন পশিছা।

শ্ৰীকৃষ্ণৰ দ্বাৰা গোপ-গৰুক দাবাগ্নিৰ পৰা উদ্ধাৰ :—কৃষ্ণ আদি গোপবালকবিলাকে তেনেদৰে খেলা কৰি থাকোঁতে গাই, দামুৰি, ম'হ, মেথন, ছাগলি আদি সকলোবোৰ চৰণীয়া পশু নতুন ঘাঁহৰ লোভত ঘাঁহ খাই খাই গৈ মুঞ্জবন নামৰ বনত সোমাল। সেই বনত চাৰিওফালে দপ্ দপকৈ জুই জলিব ধৰাত গৰু-ম'হ-বিলাকে জুই দেখি ভয়তে ঘাঁহ খাবলৈ এৰি মূৰ দাঙি আটাই ধৰিছে। ইফালে গোপবালকবিলাকে গৰুবোৰ দেখা নাপাই গৰুৰ খোজ চাই চাই মুঞ্জবনত সোমাইছে গৈ।

श्रीकृष्णकी द्वारा ग्वाल-गायोंका दावाग्निसे उद्धार : कृष्ण आदि गोपबालकगण जब खेल रहे थे तब गाय, भैंस, आदि सभी पालतू जानवर नये घासकी चाहसे घास खाते खाते मुंजवनमें चले गये। उस वनमें चारों ओर दप् दप् कर आग जलनके कारण पशु आग देखकर डरकर घास खाना छोड़कर सिर उठा उठाकर चिल्ला रहे हैं। इधर गोपबालकगणभी गायी की न देख उनके पदचिह्नोंका पीछा करते हुये उसी वनमें जा घुसे।



বক্ষির হাশাস পাই গোপ-গক কৃষ্ণক তুতি কবিছা ।

কৃষ্ণে সবাকো নির্ভয় দিছা ।

গোপবালকবিলাকে সেই মুঞ্জবনত সোমাই দেখে যে চাৰিও-ফালে দাবাগ্নি দপ্ দপ্ কৰি জ্বলিব ধৰিছে । জুইৰ তাপত সন্তুষ্ট হৈ গৰুবিলাকে মুখ তুলি আৰু গোপবিলাকে কাষত শিঙা লৈ হাত-জোৰ কৰি কৃষ্ণৰ স্তৱ কৰিব ধৰিলে ; আৰু কৃষ্ণক কববাত দেখা পায় নে কি দূৰৰপৰা ওপৰলৈ নিৰেখি চাব ধৰিলে । ভক্ত-বৎসল কৃষ্ণই তেতিয়া ওখ গছ এজোপাত ধৰি ছুটা ঠানিত হুখন ভৰি দি বাঁহী বজাই গাইবিলাকক নাম ধৰি ধৰি মাতাত সকলো গাই আৰু গোরাল গোট খালে । কৃষ্ণই গোপ-গৰুক বক্ষা কৰিবলৈ দাবাগ্নি পান কৰিলে ।

গোপবালকগণীনি মু'জবনমঁ দেখা কি চাৰোঁ तरफ दावाग्नि दप् दप् कर जल रही है । आगके तापसे डरकर गायें मुँह उठाकर और गोपगण बगलमें सींग लीकर हाथ जोड़कर कृष्णका स्तवन करने लगी ; और कहीं कृष्ण दिखाई देता है क्या मीचकर दूरसे देखने लगी । भक्त-वत्सल कृष्ण तब एक ऊँचे पेड़पर चढ़कर दो टहनियोंपर दो पैर रखकर बांसुरी बजाकर गायोंकी नाम ली लेकर पुकारने पर सभी गौएँ और गोपगण भगवानके समीप आ गये और भगवान श्रीकृष्णाने दावाग्नि पान कर उनकी वचा लिया ।



কৃষ্ণে গোপ-গৰু পুহু ভাণ্ডিবৰ তলে আনিছ।

শ্ৰীকৃষ্ণৰ দাবাগ্নি পান :—দাবাগ্নিবপৰা বক্ষা পৰি গোপ-বালকবিলাকে আঠু লৈ হাতজোৰ কৰি কৃষ্ণক স্তুতি কৰিছে। কৃষ্ণই সেই গছৰ তলত থিয় হৈ আগহাত দাঙি গোপবালক-বিলাকক আশ্বাস দিছে। কৃষ্ণৰ পিছৰ ফালে গছৰ তলত গৰুবিলাকে কৃষ্ণৰ ফালে মুখ কৰি মূৰ দাঙি শাবী পাতি আছে।

গোপবালকৰ সৈতে শ্ৰীকৃষ্ণৰ গোকুললৈ প্ৰত্যাৱৰ্ত্তন :—গাই আৰু গোপবালকবিলাক গোকুলত আহি উপস্থিত হল। গাইবিলাকে দামুৰিৰ বাবে উৎকণ্ঠিত হৈ যেন মূৰ দাঙি আহিছে।

শ্ৰীকৃষ্ণাৰ দাবাগ্নি পান : দাবাগ্নিসে রক্ষা পাৰে গোপবালকগণ ঘুটনে টেককৰ হাত জোড়তি হুए कृष्णकी स्तुति कर रहे हैं। कृष्ण उसी पेड़के नीचे खड़ा हो कर दाहिना हाथ उठाकर गोपबालकोंको आश्वसन दे रहा है। कृष्णके पीछे पेड़के नीचे गायें कृष्णकी तरफ मुँह करके सिर उठाकर पंक्तिमें खड़ी हैं।

গোপবালকীকৈ সাথ শ্ৰীকৃষ্ণাৰ গোকুললৈ প্ৰত্যাৱৰ্ত্তন : गायें और गोपबालकगण गोकुलमें आ कर हाजिर हुए। गायें बछड़ोंके लिए उत्कण्ठित होकर मानो सिर उठाकर आ रही हैं।



কৃষ্ণ আসিবার শুনি গোপীগণে চাইছা।

গোপগণসমে কৃষ্ণ বাম গোকুলক আসিছা।

গাইবোবব পাছত কৃষ্ণ, বলরাম, শ্রীদাম আদিয়ে বাঁহী বজাই হাতত লক লৈ আনন্দেবে আহি গোকুলে পালেহি। কৃষ্ণক অহা দেখি গোপীসকলে হাত আগবঢ়াই যেন আহ্বানহে কবিছে।

গায়োঁকি পীঠে কৃষ্ণ, বলরাম, শ্রীদাম আদি বাঁসুরী বজাতি বজাতি হাথমি ড'ডা লৈকর আনন্দসে আ কর গোকুল পহুঁচে। কৃষ্ণকো আতি দেখকর গোপীগণ হাথ বড়া বড়াকর মানো আহ্বান কর রহী হৈ।



গোপশিশু প্রলম্ব বধ ব্রজত কহিছা। যশোদা। নন্দ

কৃষ্ণ। বলভদ্র।

কোনো কোনো গোপবালকে গোকুললৈ ঘূরি আহি নিজব মাক-বাপেকব মাজত বহি প্রলম্বক মবার কথা কৈছে। কৃষ্ণ-

কোঁই কোঁই গোপবালক গোকুলমি লীটকর অপনি অপনি পরিজনোঁ কে বীচ বৈঠকর প্রলম্বকি মারনিকি কহানী কহ রহা হৈ। কৃষ্ণ-বলরাম

बलरामे गाईबोब आगत लै बाँही बजाई अहा सुनि नन्द आरु यशोदा बाणीये येन तेउँलोकक आगवटाई आनिबलैहे गैछे ।

गायींको आगि लेकर बाँसुरी बजाते आते सुनकर नन्द और यशोदा रानी मानो उनका स्वागत करनेके लिए ही आ रहे हैं ।



मैबा ।

कृष्ण ।

बलभद्र ।

वर्षाकालत कृष्ण-बलरामर वृन्दावन-लीला :—वर्षाकालत वृन्दा-वनत कृष्ण-बलरामे नाना क्रीड़ा करिछे । वृन्दावनर वर्णना अवर्णनीय । नानाविध फूलि थका गछ-लता हालि जालि आछे ; सबोवबत हाँहबोबे जल-क्रीड़ा करिछे । मयूर आरु मयूरीविलाके चालि धरि नृत्य करिछे । वाम आरु कृष्णई सेई वृन्दावनत गाईबोब चबाई नानाभारे नाचि बागि फुबिछे ।

कृष्ण-बलरामे वृन्दावनत सोमाई नाना भङ्गि करि वंशीध्वनि कबत वनर गक, छागल, हबिण आदिये मूर दाडि काण

वर्षाकालमे' कृष्ण-बलरामका वृन्दावन-लीला : वर्षाकालमे वृन्दावनमे कृष्ण-बलराम नाना क्रीड़ा करने लगे । वृन्दावनकी शोभा वर्णनसे परे है । भाँति भाँतिके फूलोसे पेड़-पौधे, बेल-बूँटे हिलते-दुलते हैं । सरोवरमे हंसगण जलक्रीड़ा कर रहे हैं । मोर और मोरनीगण आनंदसे नृत्य कर रहे हैं । राम और कृष्ण उसी वृन्दावनमे गाये चराते हुये नाचते बजाते घूमते हैं ।

कृष्ण-बलरामने जब वृन्दावनमे घुसकर अनेक रागिनियोमे वंशी बजाई तो वनको गाये, बकरियाँ, हिरन वगैरह सिर उठाकर



বনভঙ্গ । কৃষ্ণ ।

থিয় কবি উদ্‌গ্ৰীব হৈ কৃষ্ণর ওচরলৈ লবি আহিছে। আন কি বনব গছ-লতাবিলাকেও যেন ফলব ভৰতে দৌ খাই কৃষ্ণর মধুর বংশী-ধ্বনিহে শুনিছে।

কান খড়্‌কে করকে উদ্‌গ্ৰীব হোকার কৃষ্ণকে पास টীড়কর আয়। বনকে পেড়-পীধে আর বেল-বুটে' भी फलोंके बोभसे भुके हुये मानो कृष्णकी मधुर बंशीध्वनिही सुन रहे हैं।

কৃষ্ণর মধুর বংশীধ্বনি শুনি কিবাতব বমণীবিলাকেও আনন্দতে পিঠিব বোজা পিঠিতে বাখি আঠু কাঢ়ি কপালত হাত দি প্রণাম কৰিছে। পৰ্বতব পশু, পক্ষী, তৰু, তৃণবিলাকে বংশীব ধ্বনি শুনি

कृष्णकी मधुर बंशीध्वनि सुनकर किरात रमणियांभी आनन्दमें पीठके बोभकी पीठपर ही बांधेहुये घुटने टेककर सिरपर हाथ रख कर प्रणाम कर रहीं हैं। पहाड़के जानवर, पंखी, पेड़, पीधे



কিষ্টি ভাৰ্যাসব ।

শ্ৰীদাম । বলভদ্র । কৃষ্ণ ।

আনন্দত মগ্ন হৈছে । শ্ৰীদাম, বলভদ্র আৰু কৃষ্ণ আদিয়ে বনব বংশীকী ধ্বনি সুনকৰ আনন্দমে মগ্ন হী গয়ি হৈঁ । শ্ৰীদাম, বলভদ্র পকা ফল খাই ফুৰি ফুৰিছে ।

আৰু কৃষ্ণ আদি বনকে পকে ফল খা কৰ ঘূম রহি হৈঁ ।



বৃক্ষৰ ছাত গৰু শুতিহা ।

বাম-কৃষ্ণ গোপসমে দধি-ভাত ভুঞ্জিছা ।

गाईबोबे ब'दत कष्ट पाले गह्व तलत शुई पबे ; सेई समयत कृष्ण-बलवाम आदिये आनन्द मने निज निज काँशी बाटित दधि-भात लै खबलै धरे । बलवाम आक कृष्णर माजत एखन बाचनत खाछ लै छुयो भगई खय । तेऊँलोकब छुयो फाले आन गोपबालकबिलाके बहि दधि-भात खय ।

दो पहरमें गायेँ पेड़ांकी नीचे विश्राम कर रही हैं । कृष्ण बलराम आदि आनन्द मनसे अपने अपने थाल कटोरोमें दही भात खा रहे हैं । बलराम और कृष्ण आपसमें बांट कर खा रहे हैं । उनके दोनों ओर गोपबालकगण दही भात खा रहे हैं ।



गोपीमवे कृष्ण आसिबाब जानि गृहब बजाईछा ।

कृष्ण-बाम गोपसमे ब्रजक गान्त ।

गोपबालकब सैते गोधन लै श्रीकृष्णब गोकुललै प्रत्यावर्त्तन :- सक्या समयत गोप-गकबिलाकब सैते कृष्ण गोकुललै घृबि आहोते गोपीबिलाके आनन्देबे शारी पाति आगवाटि गैछे । सम आगत कृष्ण, माजत बलवाम आक शेषब फाले अछाछ गोपबालकबिलाके कोनेओ बाँशी, कोनेओ शिङ्गा बजाई गोधन आगत लै गोकुलत सोमाई छे ।

गोपबालको की साथ गायेँ लेकर श्रीकृष्णका गोकुलमें प्रत्यावर्त्तन : शामको जब गोप-गायोँकी साथ कृष्ण गोकुल लौटते हैं तब गोपिनीगण आनन्दके साथ पंक्तिमें आगे बढ़ कर आती हैं । सबसे आगे कृष्ण, बीचमें बलराम और पीछे पीछे दुसरे गोप-बालकगण कोई बाँसुरी, कोई सींगा बजाते बजाते गोधनको आगे ले कर गोकुलमें घुस रहे हैं ।



বাম ।

কৃষ্ণ ।

পর্বত মূলত ময়ূৰ ।

শবৎকালত কৃষ্ণ-বলরামৰ বৃন্দাবন-লীলা : — ভগবান শ্ৰীকৃষ্ণই এনেকৈ নানা ক্ৰীড়া কৰি বৰ্ষাকাল কটোৱাৰ পাছত মনোহৰ শবৎকাল পৰিল । বৃন্দাবনৰ গছবোৰ ফুলে জকমক হৈছে । ময়ূৰবিলাক তাত পৰি মধুৰ স্বনি কৰিছে ; ভোমৰাবোৰ ফুলত পৰি মো পান কৰিছে । ভগবান কৃষ্ণই বলরামৰ সৈতে বাঁহী বজাই ধেনু চাৰিবলৈ গৈছে ।

কৃষ্ণ-বলরামে হাতত লৰু লৈ বাঁহী বজাই আৰু শিঙা ফুকিয়াই গোধন আগত লৈ যেতিয়া বৃন্দাবনলৈ ওলাই যায়, তেতিয়া গোপীবিলাকে ইটোৱে সিটোৱে ফালে চাই হাত তুলি পৰস্পৰে

শরৎকালমে' कृष्ण-बलरामकी बृन्दावन-लीला : वर्षा ऋतु इसी तरहकी अनेक क्रीड़ा करके भगवान श्रीकृष्णनि बितायी । उसको बाद मनोहर शरत्काल आ गया । बृन्दावनके पेड़-पौधे फूलोंसे जगमगाने लगे । मोरगण उनमें बैठकर मधुर आवाज करने लगे । अलिंगण फूलों पर बैठकर मधुरस पान करने लगे । भगवान कृष्ण बलरामके साथ बांसुरी बजाते हुये धेनु चराने जा रहे हैं ।

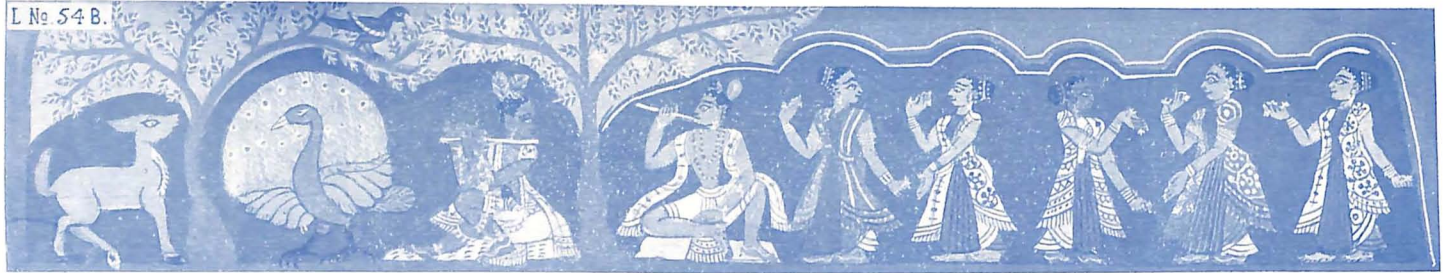
कृष्ण-बलराम हाथमें डंडा लेकर बांसुरी बजाते और सींग फूंक कर गोधनको सामने लेकर जब बृन्दावनसे निकल जाते हैं, तब गोपिनीगण एक दुसरीकी ओर ताक कर हाथ उठाकर परस्पर



কৃষ্ণ বৃন্দাবনে দাস্ত । বাম । শ্রীদাম । সুদাম । কৃষ্ণ বাচাস্তে গোপীমবে খেদ কবিছা ।

কৃষ্ণের বিবাহ বেদনা প্রকাশ করে আর লগত কৃষ্ণের নানা গুণ কীর্তন করে ।

কৃষ্ণাকী বিরহ-বেদনা প্রকট করতী হৈঁ । অর সাথহী কৃষ্ণাকী অনেক গুণাঁকা কীর্তন করতী হৈঁ ।



হবিধ । ময়ব । কৃষ্ণ বংশী বজাইছা । গোপবালক । গোপীমবে কৃষ্ণ গুণ-কীর্তন কবিছা ।

কৃষ্ণই বৃন্দাবনৰ এজোপা গছৰ তলত বহি বাঁহীৰ ফুক দিছে ।
তেওঁৰ কাষত আন এজন গোপবালকেও বাঁহী বজাইছে । কৃষ্ণৰ
মনোহৰ মেঘগস্ত্রীৰ বংশীধ্বনি শুনি মেঘৰ গৰ্জন বুলি ভুল কবি

কৃষ্ণ বৃন্দাবনকে পেড়কে নীচে বৈঠকর বাঁসুরীमें फूंक दे रहा
है । उसके पासही दुसरा एक गोपबालकभो बाँसुरी बजा रहा है ।
कृष्णकी मनोहर, मेघसी गंभीर बंशोध्वनि सुनकर मेघ गर्जन सयभ

ম'বাই পেখান ধৰি নাচিছে। হৰিণাই মুখ তুলি কৃষ্ণৰ সেই মধুৰ বংশীধ্বনি যেন কাণ পাত্তিহে শুনিছে। ইফালে গোপীবিলাকে ইটোৱে সিটোৱে লগলাগি মুখামুখি হৈ, কোনেওবা পাছফিৰি কৃষ্ণৰ গুণকীৰ্ত্তন কৰিছে।

ভুলসে মৌৱ নাচ রহি हैं। हिरण सुँह उठाकर कृष्णकी बह मधुर ध्वनि मानी कानोंसे सुन रहि हैं। इधर गोपिनीगण एक इसरीसे मिलकर आपने सामने हीकर, कोई कोई सुँह मोड़कर कृष्णके गुणोंका कीर्तन कर रही हैं।



বন্দাবনত কৃষ্ণে বংশী ডাক দিছা।

গোপী গুণ বৰ্ণাইছ কৃষ্ণৰ।

কৃষ্ণই বন্দাবনৰ তৰুতলত বহি বংশীৰ শুললিত ধ্বনি কৰিছে। গৰুবোৰে পাহাৰৰ টিলাত উঠি ঘাঁহ খাবলৈ পাহৰি যেন সেই বংশীধ্বনিহে মুখ তুলি অনাইছে। কৃষ্ণৰ কাষতে আন আন গোপবালকেও বাঁহী বজাইছে। কৃষ্ণৰ বিবহাতুব গোপীসকলে হাত তুলি কৃষ্ণৰ গুণাৱলীৰ কথোপকথন কৰিছে।

কৃষ্ণ বন্দাবনকে পেড়কে नीचे बैठकर बंशी बजा रहा है। गायें पहाड़के टिलोंपर चढ़कर घाँस खाना भुलकर मानी उस बंशीकी टेरमें मगन ही रही हैं। कृष्णके पासही दुसरे गोपबालकगणभी बाँसुरी बजा रहि हैं। कृष्ण-विरहाकुल गोपिनीगण कृष्ण-गुणावली गा रही हैं।

গোপবালকৰ সৈতে গোধন লৈ শ্ৰীকৃষ্ণৰ ব্ৰজলৈ প্ৰত্যাৱৰ্ত্তন :—কৃষ্ণই বাঁহী, আন আন গোপবালকৰ কোনেও

গোপবালকী কী साथ गायें लेकर श्रीकृष्णका ब्रजमें प्रत्यावर्त्तन : कृष्ण बाँसुरी, और और गोपबालक बाँसुरी,



यशोदा कृष्णक चाहिछ।

कृष्ण गोप गरुममे ब्रजक थासु।

बाँहौ, कोनेओ शिडा बजाई आगत धेनु लै ब्रजब फाले यात्रा कबिछे। ब्रज आहि पालत यशोदाई कृष्णक एखन आसनत बज्राई किवा थावलै दिछे। कृष्णई थावलै आबसु कबिछे। यशोदाई कृष्ण कबत बहि कृष्ण मुखलै चाई आछे। गोपीसकलेओ आनन्दते हात तुलि कृष्ण कबत थिय दि आछे।

सींगा बजाते गौश्रीके साथ ब्रजकी ओर आ रहे हैं। ब्रज पहुँचने पर यशोदा कृष्णको एक आसनपर बिठाकर कुछ खानेकी देती हैं। कृष्ण खा रहा है। यशोदा कृष्णके पास बैठकर कृष्णका मुख निहार रही हैं। गोपिनीगण कृष्णके पास खड़ी हैं।

हेमन्तकालत गोपाङ्गनासकलर कात्यायणी व्रत :- ईयाब पिछत गोपाङ्गनासकले हेमन्तकालत यमुनात स्नान कबि धूप, दीप, नैवेद्य आदि दि महामायाक पूजा कबि तेउँब ओचवत बहि हात-योर कबि कृष्णक पति पावलै सुत्र कबिछे। किछुमाने वा बंगमने

हेमन्तकालमें गोपाङ्गनाश्रीका कात्यायणी-व्रत : इसके बाद हेमन्तकालमें गोपाङ्गनाएँ जमुनामें स्नान कर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से महामायाकी पूजा करनेके बाद उसके पासही बैठकर हाथ जोड़कर कृष्णको पति रूपसे पानेके लिए स्तुति कर रही हैं।



গোপীসবে পূজা কৰিছা।

কাত্যায়ণী দেবী।

গোপীসবে কাত্যায়ণী পূজা কৰিবাক যাগু।

হাতে কান্ধে ধৰাধৰি কৰি পুষ্প বিগাৰিছে। কোনেও আকৌ
সৰোবৰত নামি স্নান কৰিছে।

কৌই কৌই গলবাংহী ডালি আনন্দ মনসে ফুল টুটুৱাই হৈ। কৌই
ফিৰ সৰোবৰমেঁ উতৰকৰ স্নান কৰ হৈ হৈ।



গোপীসবে স্নান কৰিছা।

শ্ৰীদাম। শ্ৰীকৃষ্ণ বস্ত্ৰ লৈয়া স্বদাম।
কদম্বত চড়িছা।

বস্তুহরণ :— এদিনাখন গোপীবিলাকে লগ হৈ যমুনাৰ পাবত কাপোৰ থৈ উলঙ্গ হৈ জলক্রৌড়া কৰি আছে। এনে সময়ত কৃষ্ণ ততাতৈয়াকৈ আহি গোপীব কাপোৰবোৰ কোচাই লৈ যমুনাৰ পাবৰ কদম গছত উঠিল গৈ। কদমৰ ডালত কাপোৰবোৰ আলাই থৈ কৃষ্ণই ছুই ভৰিৰে ছুটা ঠানিত ধৰি গছৰ ওপৰতেই থাকিল। গছৰ তলত শ্ৰীদাম আৰু সুদাম ছুয়ো থিয় হৈ আগ হাত দাঙি যেন কৈছে—“কৃষ্ণই গোপীব কাপোৰ নিয়া কথা আমাৰ নকবা।” ইফালে গোপীবিলাকৰ জল-ক্রৌড়া শেষ হ'লত দেখে, যে পাবত কাপোৰ নাই। ইফালে সিফালে চাই দেখে, যে কৃষ্ণই কাপোৰবোৰ গছত আৰি থৈ থিয় হৈ আছে। গোপীবিলাকে তাকে দেখি পানীৰ পৰাই আজলি পাতি কৃষ্ণত কাপোৰ প্ৰাৰ্থনা কৰিছে।

বস্তুহরণ :— एकदिन गोपिनीगण मिलकर जमुनाके किनारे कपड़े रखकर नंगी होकर जलक्रीड़ा कर रही हैं। ऐसे समयमें कृष्ण जल्दी आकर गोपियोंके कपड़ोंको लेकर जमुनाके किनारेके एक कदम्ब पेड़ पर चढ़ गया और कदम्बकी टहनियोंमें कपड़ोंको लटका दिया। पेड़के नीचे श्रीदाम और सुदाम दोनों खड़े होकर दाहिने हाथोंको उठाकर मानो कहते हैं कि हम गोपियोंसे नहीं कहेंगे। इधर जब गोपियोंकी जलक्रीड़ा खतम हुई तो देखा कि किनारे पर कपड़े नहीं हैं। इधर उधर ताककर देखा कि कृष्ण कपड़ों को लिये पेड़पर बैठा है। गोपोगण पानीमें से ही अंजलि फेंलाकर कृष्णसे कपड़ोंकी याचना कर रही हैं।



গোপীসবে কৃষ্ণত বস্তু প্ৰাৰ্থনা কৰিছা।

কৃষ্ণে কদম্বৰ তলে নামিছা।

গোপীরা প্রার্থনাত কৃষ্ণই গোপীসকলক পানীর পবা উঠি আহি কাপোব নিবলৈ কোরাত গোপীবিলাকে এখন হাতেবে গুপ্তাঙ্গ ঢাকি আন হাত তুলি লাজকুবীয়া ভাবে পাবলৈ উঠি আহি কাপোব দিবলৈ কৃষ্ণক কাকৃতি কবিলে। তেতিয়া কৃষ্ণই এক হাতেবে কাপোব খুজিব নাপায় বুলি আগ হাত দাঙি নিষেধ কবি কাপোব কাকৃত লৈ কদমব তলত থিয় দিলেহি।

গোপियोंकी प्रार्थना पर कृष्णने जब गोपियोंसे कहा कि पानीसे निकल कर कपड़े ले लो तो गोपीगणने एक हाथसे गुमांग ढक कर लजाते हुए किनारे आकर कपड़ा देनेके लिए कृष्णसे विनती की। तब कृष्ण एक हाथसे कपड़ा मांगना नहीं चाहिए कह कर दाहिने हाथको उठा कर मना करते करते कपड़ोंकी कंधेपर ले कर कदम्बके नीचे आ गया।



যমুনা।

গোপীসবে তুতি কবিছা।

কৃষ্ণত বস্ত্র মাগিছা। শ্রীদাম গোপ।

গোপীবিলাকে নিকপায় হৈ কৃষ্ণর আদেশ মতে হাত পাতি কৃষ্ণত কাপোব মাগিছে। কদমব তলত কৃষ্ণই বাঁহাতেবে কাপোববোব লৈ আগ হাত দাঙি কোনো লাজ নাই বুলিয়ে যেন গোপীবিলাকক লাজ কবিবলৈ হাক দিছে। সেই সময়ত শ্রীদাম গছতলব একাষত থিয় হৈ বাঁহী বজাই আছে।

गोपीनीगण लाचार होकर कृष्णके आदेशके अनुसार दोनों हाथोंको फैलाकर कृष्णसे कपड़े मांग रही हैं। कदम्बके नीचे कृष्ण बायें हाथसे कपड़ोंको लेकर दाहिना हाथ उठाकर कोई शर्म नहीं कहकर मानो गोपियोंकी लज्जा करनेको मना कर रहा है। उस समय श्रीदाम, पेड़के नीचे एक किनारे खड़ा होकर बाँसुरी बजा रहा है।



গোপী ।

গোপীসবে বস্তু পিন্ধি কৃষ্ণক নগিছা ।

শ্রীকৃষ্ণৰ গোপীসকলক আশ্বাস :—গোপীবিলাকে ছুই হাত পাতি খোজাত কৃষ্ণই গোপীবিলাকক কাপোৰ দিলে ; গোপীবিলাকে কাপোৰ পিন্ধি আঠু লৈ কৃষ্ণক স্তুতি কৰিব ধৰিলে । কৃষ্ণই গোপীবিলাকৰ মাজত বহি আগহাত দাঙি আশ্বাস দিছে—
হে গোপীসকল, তোমালোকে কাত্যায়নী পূজাৰ ফল পাবা । মোৰ লগত শবংকালত ক্রীড়া কৰিব পাবিবা ; এতিয়া ঘৰলৈ যোৱা ।

“আসিবে শৰং বাত্ৰি বিতোপন
বিকশিত বৃন্দাবন ।
মই সমন্বিতে কৰিবাহা ক্রীড়া
পবম আনন্দ মন ॥”

গোপীসকল আৰু শ্রীকৃষ্ণৰ গোকুললৈ প্রত্যাবৰ্ত্তন :
ভগবান কৃষ্ণই গোপীবিলাকক আশ্বাস দি বিদায় দিলত, কৃষ্ণাসক্ত গোপীসকল কোনোৱে কৃষ্ণৰ ফালে, কোনোৱে পাছৰ ফালে আৰু কোনো কোনোৱে গন্তব্য পথৰ ফালে চাই গোকুললৈ গল ।

শ্রীকৃষ্ণাকা গোপিয়োঁকো আশ্বাস : जब गोपिनीगणने दोनोँ हाथ पसार वस्त्र मांगे तो कृष्णने गोपियोंको कपड़े दे दिये । गोपिनीगण कपड़े पहनकर घुटने टेककर कृष्णकी सुति कर रहीं हैं । कृष्ण गोपियोंके बीचमें बैठकर दाहिना हाथ उठाकर आश्वसन दे रहा है—हे गोपियोँ, तुमलोगोंको कात्यायनी पूजाका फल मिलेगा । मेरे साथ शरत्कालमें क्रीड़ा कर सकोगी । अब घर लौट जाओ ।

गोपियोँ और श्रीकृष्णका गोकुलमें प्रत्यावर्त्तन :
भगवान कृष्णके विदा देनेके बाद भी कृष्णामक्त गोपियाँ कृष्णकी ओर देखती देखती गोकुल में आ रही हैं । कृष्णभी हाथ



গোপীসব ব্রজত প্রবেশ ভৈল।

কৃষ্ণে গোপীক বিদায় দিছন্ত।

কৃষ্ণই হাত দাঙি গোপীসকলক বিদায় দি লগবীয়া গোপশিশুৰ
লগত গোকুললৈ যাব ধবিলে।

ভঠাৰ গোপিয়ঁকো বিদা দেকৰ সাথী গোপশিশুসকলক সাথ গোকুল
জা রহি হৈ।



শ্ৰীদাম। স্বদাম। কৃষ্ণ। বলভদ্র।

শ্ৰীকৃষ্ণৰ গোপবালকৰ সৈতে বৃন্দাবন-লীলা :—আন এদিন
কৃষ্ণই গোপবালকবিনাকক এৰি দি এঠাইত বহিল। গকবোৰে

শ্ৰীকৃষ্ণাকা গোপবালগণকী মাথ বৃন্দাবন-লীলা :
একদিন কৃষ্ণ গোপবালককী সাথ বৃন্দাবন জাৰ গায়ঁকী ছোড় এক

ঘাঁহ খাবলৈ ধৰিলে; কোনো কোনো গাঠিয়ে দামুৰি পিয়াব ধৰিলে। এই সময়ত কৃষ্ণই গোপবিলাকৰ আগত আগ হাত দাঙি গছবোৰ দেখুৱাই সেইবোৰৰ গুণ বৰ্ণনা কৰিব ধৰিছে। বলদেৱে কৃষ্ণৰ পিছৰ ফালে বাহি হাত দাঙি যেন কৃষ্ণৰ বৰ্ণনাকে অনুমোদন কৰিছে। সমুখত গোপশিশুসবে হাত পাতি কৃষ্ণত যেন কিবা খুজিছে।

जगह बैठ गया। गायें घाँस खानि लगीं। कीई कीई गाय वच्छड़ाकी दूध पीलानि लगी। इसी समय कृष्ण गोपयोंके सामने पेड़ोंको दिखाकर उनके गुणोंका वर्णन कर रहे हैं। बलदेव कृष्णके पीछे बैठकर हाथ उठाकर मानो कृष्णके वर्णनका ही अनुमोदन कर रही हैं। सामने गोपशिशुगण हाथ पसारकर कुछ मांग रहे हैं।



গোপগণে কৃষ্ণত অন্ন প্ৰাৰ্থিছা।

কৃষ্ণ।

বাম।

স্বদাম।

বিপ্ৰপত্নী-প্ৰসাদ :—এদিনাখন এনেদৰে গৰু চাবি থাকোঁতে গ্ৰীষ্মকালৰ ব'দত ভোক-পিয়াহত আতুৰ হৈ গোপশিশুসবে হাত-যোৰ কৰি অন্ন খুজিছে। তাকে দেখি কৃষ্ণ-বলবামে আগ হাত দাঙি শিশুবিলাকক আশ্বাস দি কৈছে—ভাইসকল কাভব নহবা, এতিয়াই অন্ন অনাই দিয়াম।

विपपत्नी-प्रसाद : एकदिन इसी तरहसे गायें चराते समय धूपमें भूख प्याससे आतुर होकर गोपशिशुगण हाथ जोड़कर अन्न मांग रहे हैं। कृष्ण-बलराम शिशुओंको आश्वासन देकर कहते हैं—भाइयों! कातर न होओ, अभी अन्न लाकर खिलायेंगे।



গোপে অন্ন প্রার্থিছা বিপ্রসবত ।

অগ্নি ।

বিপ্রগণে যজ্ঞ কৰিছা ।

সেই সময়ত বৃন্দাবনৰ ওচৰৰ এখন গাঁৱত মুনিবিলাকে এটা যজ্ঞ পাতিছে। হোমৰ কুণ্ডত পুৰোহিতে আহুতি দিবলৈ ধৰিছে; আন আন মুনিয়ে হাত তুলি মন্ত্ৰপাঠ কৰিছে। কৃষ্ণই যজ্ঞৰ খবৰ পাই কেইজনমান গোপশিশুক অন্ন খুজিবলৈ যজ্ঞলৈ পঠালে। গোপবালকবিলাক যজ্ঞশালালৈ গল আৰু আঠু লৈ হাত আজলি কৰি ব্ৰাহ্মণসকলত অন্ন প্ৰাৰ্থনা কৰিছে। ব্ৰাহ্মণসকলে তেওঁলোকৰ ফালে দৃষ্টি নকৰাত গোপবালকবিলাকে বিষন্ন মনে উলটি আহিব ধৰিছে।

কৃষ্ণ-বলবাম আৰু সুদাম বহি আছে। গোপবালকবিলাক বিফল মনোৰথ হৈ উলটি গৈ কৃষ্ণৰ ওচৰত হাতযোৰ কৰি ব্ৰাহ্মণসকলে ফিৰি নোচোৱাৰ কথা কলে গৈ। তাকে শুনি কৃষ্ণই

উস সময় বৃন্দাবনকে পাসকে এক গাঁৱমঁ মুনিগণ এক যজ্ঞ কৰিছে হৈঁ। হোমকে কুণ্ডমঁ পুৰোহিত আহুতি দিছে হৈঁ। আৰু আৰু মুনি হাত উঠাৰ মন্ত্ৰকা পাঠ কৰিছে হৈঁ। যজ্ঞকী খবৰ পাকৰ কৃষ্ণ গোপশিশুকী অন্ন মাংগনকে লিএ ভিজত হৈঁ। গোপবালকগণ যজ্ঞশালামঁ গয়ি ব্ৰাহ্মণসঁ অন্নকী প্ৰাৰ্থনা কী। পর, ব্ৰাহ্মণসঁ উনকী আৰু দৃষ্টি ন ডালী তী গোপবালকগণ বিষন্ন মনসে লীটকৰ আ হৈঁ হৈঁ।

কৃষ্ণ, বলরাম আৰু সুদাম বৈঠি হুএ হৈঁ। গোপবালকগণ অৰ্থ মনোরথ হী লীট কৰ কৃষ্ণকে পাস ব্ৰাহ্মণসঁকী মুঁহ মীড়কৰ ন দেখনকী বাত কহী। উসে সুনকৰ কৃষ্ণনে



গোপগণে কৃষ্ণত অন্ন প্রার্থিছা ।

শ্রীনাম গোপ ।

কৃষ্ণ ।

বাম ।

সুদাম ।

বামুনীসকলর ওচরত অন্ন মাগিবলৈ গোপবালকবিলাকক হাত
দাঙি আদেশ দিলে ।

ব্রাহ্মণিয়ঁকে पासসে অন্ন মাংগনিকৈ লিএ গোপবালকী'কী
আদিষ দিয়া ।



গোপে অন্ন প্রার্থিছা ব্রাহ্মণীসবত ।

ব্রাহ্মণীসব ।

কৃষ্ণর কথামতে গোপশিশুসকল পুনর অন্ন খুজিবলৈ বিপ্র-
পত্নীসকলর ওচরলৈ গল গোপবালক সকলে গলত কাপোর লৈ

ক্ৰুষ্ণকী বাত মানকর গোপশিশুগণ ফির অন্ন মাংগনিকৈ লিএ
বিপ্র-পত্নিয়ঁকে पास গয়ে । গোপবালকী'নি গলেমঁ কপড়ৈ লৈকার হাথ

হাতযোৰ কৰি বহি বিপ্রপত্নীসকলৰ ওচৰত অন্ন খুজিলে। বিপ্র-পত্নীসকলে কৃষ্ণই অন্ন খোজা শুনি আগহাত তুলি অন্ন দিম বুলি গোপবালকবিলাকক বিদায় দিলে।

জোড়কৰ বৈঠকৰ বিপ্র-পত্নীসকলে অন্ন মাংগা। বিপ্র-পত্নীসকলে কৃষ্ণ অন্ন মাংগতি হৈঁ সুনকৰ অন্ন দূঁগী কহকৰ গোপবালককোঁকোঁ বিদা কিয়া।



বিপ্রপত্নীসকলে অন্ন নিছা।

বিপ্রসকলে নিষেধিছা।

গোপবালকৰ মুখত কৃষ্ণই অন্ন খোজা শুনি বিপ্রপত্নীসকলৰ কোনোৱে অন্নৰ খাল মূৰত লৈ, কোনোৱে বা পানী কলহ কাষত লৈ যেতিয়া কৃষ্ণৰ ওচৰলৈ যাবলৈ ওলাল, তেতিয়া কোনো কোনো ব্রাহ্মণে তেওঁলোকক আগ ভেটি ধৰি হাত তুলি মাৰিবলৈ ভয় দেখাই যাবলৈ বাধা দিলে। কোনো কোনো বিপ্রপত্নীৰ লৰা আদিও মাকৰ আগত থিয় হৈ হাত তুলি মাকক যাবলৈ নিষেধ কৰিছে।

গোপবালককোঁকোঁ মুঁহসে কৃষ্ণকোঁ অন্ন মাংগনীকোঁ বাত সুনকৰ বিপ্র পত্নীসকলে কোঁই পানীকোঁ ঘড়া বগলমিঁ লৈকৰ, কোঁই অন্নকোঁ থালী সিরপৰ লৈকৰ জব কৃষ্ণকোঁ পাশ জানি লগীঁ তব কোঁই কোঁই ব্রাহ্মণ ওহঁ সামনেসে রোককৰ হাথ উঠাকৰ পীটনীকোঁ ডৰ দিছাকৰ মনা কৰ রহা হৈ। কিসী কিসী বিপ্র-পত্নীকোঁ লড়কা মী মাঁকোঁ সামনে খড়া হী হাথ উঠাকৰ মাঁকোঁ জানিকোঁ মনা কৰ রহা হৈ।

কৃষ্ণাসক্তমনা বিপ্রপত্নীসকলে স্বামী-পুত্ৰৰ নিষেধ নামানি প্রতিজনে একোখন কাঁহীত নানাবিধ অন্ন ব্যঞ্জন ভৰাই মূৰত লৈ

কৃষ্ণাসক্ত বিপ্র-পত্নীগণ স্বামী-পুত্ৰকোঁ রুকাবট ন মানকৰ থালীমিঁ অন্নক প্রকাৰকোঁ ব্যঞ্জন ভৰকৰ সিরপৰ রখকৰ পক্তি



বিপ্রপত্নীসবে অন্ন নিছা।

কৃষ্ণ। গোপ।

শাবী ধরি কৃষ্ণর ওচরলৈ যাব ধরিলে। কিছুমানে একোটা কমণ্ডলুত পানী নিছে। বিপ্রপত্নীসকল অহা দেখি কৃষ্ণই এজন গোপব গলত বাওঁহাতেবে ধরি আগ হাতেবে পদ্যফুল এটা লৈ বিপ্রপত্নীসকলর ফালে চাই আনন্দ কৰিছে। সম্মুখত গাইবোৰে ঘাঁহ খাই আছে।

কৃষ্ণ গোপবালকসকলর সৈতে বহি আছে। বিপ্র-পত্নীসকলে অনা অন্ন-পানী কৃষ্ণর আগত নিবেদন কৰি আঠু লৈ হাতযোৰ কৰি নানাভাৱে স্তুতি কৰিব ধরিলে। তেওঁলোকৰ স্তুতিত কৃষ্ণ তুষ্ট হৈ আগ হাত দাঙি 'মই তোমালোকৰ ব্যৱহাৰত তুষ্ট হৈছোঁ' বুলি যেন আশ্বাস দিছে। গোপবালকবিলাকেও আগ হাত দাঙি আনন্দৰ

বাঁধকর कृष्णके पास जा रहो हैं। विप्र-पत्नियोंको आति देखकर कृष्ण आनन्दसे एक ग्वालकी गलेमें बाँये हाथसे पकड़कर दाहिनी हाथसे एक कमलका फूल लेकर विप्र-पत्नियोंकी और ताककर दिखारहा है। सामने गायें चर रहीं हैं।

कृष्ण गोपबालकोंके साथ बैठा है। विप्र-पत्नियाँ लाये हुए अन्न-पानी कृष्णके सामने निवेदन करके घुटने टेककर हाथ जोड़कर नाना भावोंसे स्तुति कर रहीं हैं। उनकी स्तुतिसे संतुष्ट होकर कृष्ण दाहिना हाथ उठाकर मैं तुमलोगोंके बर्तावसे प्रसन्न हुआ हूँ कहकर मानो आश्वासन दे रहा है। गोपबालकगणभी



ব্রহ্মা আদি দেবগণ ।



বিপ্রপত্নীসবে কৃষ্ণক প্রণামিছা ।

ভার প্রকাশ কবিছে । বিপ্র-পত্নীসকলৰ ভক্তিৰ কাৰণে কৃষ্ণ তুষ্ট হৈ ইন্দ্র, কুবের, অগ্নি, বৰুণ, শিৱ, ব্রহ্মা, চন্দ্র আদি দেৱতাসকলক নিজ নিজ বাহনত উঠি অহা দেখুৱাই দি বিদায় দিলে ।

বিপ্রসকলৰ সস্ত্রীক যজ্ঞাহুতি আৰু এক বিপ্র-পত্নীৰ কৃষ্ণ-ধ্যানত প্রাণত্যাগ : — বিপ্রপত্নীসকলে সভক্তিবৈ কৃষ্ণৰ

আনন্দ প্রগট কর রহি हैं । विप्र-पत्नियोंकी भक्तिसे संतुष्ट होकर कृष्णाने इन्द्र, कुबेर, अग्नि, बरुण, शिव, ब्रह्मा, चन्द्र आदि देवताओंको अपनी अपनी सवारीपर चढ़कर आयेहुवोंको बिदा किया ।

विप्रगणका सस्त्रीक यज्ञाहुति और एक विप्र-पत्नीका कृष्णके ध्यानमें प्राणत्याग : विप्र-पत्नीगणके घर



ছাব বান্ধি যামী বাধল :
বিপ্রপত্নীর প্রাণত্যাগ ।

বিপ্রসবে হোম কবিছা। বিপ্রপত্নীসব ।

বিপ্রপত্নীসবক কৃষ্ণে বিদায় দিছা ।

চরণত প্রণাম করি বিদায় লৈ কৃষ্ণমূর্তি ধারণা করি ঘরলৈ ঘূরি
আছিলত বিপ্রসকলে বং মনে সস্ত্রীক যজ্ঞত আছতি দিনে ।
হোতাষ্ট ঝক ঝরলৈ থিয় হৈ পূর্ণাছতি দিব ধরিছে । বিপ্র-
পত্নীসকল হোমব ওচবত হাত তুলি থিয় হৈ আছে । এজনী
বিপ্রপত্নীক পতিয়ে ঋতুমূর্তি হৈ টাঙোন দাঙি যাবলৈ বাধা দিয়াত
বিপ্র-পত্নীজনীয়ে কৃষ্ণকপ চিত্তা কবি বহিয়েই প্রাণত্যাগ কবিছে ।

লীট আনিপর বিপ্রগণনে আনন্দ মনসে সস্ত্রীক যজ্ঞমে আহুতি দী ।
হীতা শুক পূর্ণাহুতি দে রহি হৈ । বিপ্রপত্নীগণ হোমকে পাশ খড়ী
হৈ । এক বিপ্র-পত্নীকা পতি ক্রোধিত হী উন্ডা উঠাकर আনিसे मना
करनेपर विप्रपत्नी कृष्णरूपकी चिन्ता करते करते प्राण त्याग
देती है ।

বিপ্র-সকলৰ অনুতাপ :—ভগবান কৃষ্ণই বিপ্র-পত্নীসকলক
বিদায় দি তেওঁলোকে দিয়া পিঠা-পবমান্ন আদি গোপ-

বিপ্রগণকা অনুতাপ : भगवान कृष्ण विप्र-पत्नियोंको
ब्रिदा देकर उनके दिए हुए भोजनको गोपवालाको में बाँट दिया ।



বাগকক্ষে গোপগণসমে ভোজন করিছা।

বালকবিলাকক ভগাই দিলে। সকলোরে বং মনে খাবলৈ
বহিল। ইফালে যজ্ঞশালাত থকা ব্রাহ্মণসকলে পত্নীসকলক
কুম্ভৰ ওচৰলৈ যাবলৈ বাধা কৰা বাবে অনুতপ্ত হৈ আঁঠুকাঢ়ি মূৰে
কপালে হাত দি হুথ কৰিবলৈ ধৰিলে।

मभी आनन्दमनसे खारहे हैं। इधर यज्ञशालामें ब्राह्मणगण
पत्नियोंको लक्षणके पास जानिसे रोकनेके कारण पश्चान्ताप
कर रहे हैं।

তেওঁলোকে যে কেৱল গছবোৰকেই কৃষ্ণৰ খবৰ সুধিছে এনে নহয়,—গছৰ ডালত, বননিত, আৰু পানীত যিবোৰ চৰাই আছিল, সেই চৰাইবোৰতো কৃষ্ণৰ খবৰ লৈছিল। কোনো গোপীয়েবা গছৰ গুৰিত থিয় হৈ কৃষ্ণ ভাৱত বিভোৰ হৈ “তুমি আমাৰ কৃষ্ণৰ খবৰ দিয়া, তুমি তেওঁৰ প্ৰিয়” ইত্যাদি কথা কৈ আকুল হৈছে।

वे सिर्फ़ पेड़ोंसेही कृष्णकी खबर पृच्छ रही हैं' ऐसा नहीं। पेड़की टहनियोंसे, वनसे और उन चिड़ियोंसे भी कृष्णकी खबर लीं। कोई गोपी फिर पेड़के नीचे खड़ी होकर कृष्णभावमें विभोर होकर “तुम हमारे कृष्णकी खबर दो, तुम उनके प्रिय हो” कह कर आकुल हो रही है।



তৃণাবৰ্ত্ত হই গোপী
গোপীক হৰিছা।

পূতনাৰ বেষে
তন দিছা।

শকট হুয়া গোপী বহিছা :
কৃষ্ণ হুয়া চৰণে উভতাইছা।

যশোদাৰ বেষে গোপীক
মাৰটাইছা।

গোপীবিলাক কৃষ্ণভাবত ইমান মুগ্ধ হৈ পৰিল যে তেওঁলোকে শ্ৰীকৃষ্ণৰ শিশুস্বীলা নিজে নিজে কৰি আনন্দ কৰিবলৈ ধৰিলে। কোনোৱে দৈত্যবেশ ধৰি, কোনো গোপীৰূপ কৃষ্ণক কান্ধত তুলি ওপৰলৈ লৈ গৈছে। কোনোবা গোপী পূতনা হৈ কোনো গোপীৰূপ কৃষ্ণক স্তনপান কৰাইছে। কোনোবা গোপী শকটাকাৰ ধাৰণ কৰিছে,

गोपियाँ कृष्ण भावसे इतनी मुग्ध हो पड़ीं कि वे श्रीकृष्णकी शिशुस्वीला आपही आप करके आनन्द मनाने लगीं। कोई दैत्यवेश धर कर किसी गोपीरूप कृष्णकी कंधेपर उठा ले जाती है। कोई गोपी पूतना होकर किसी गोपीरूप कृष्णकी स्तन पिलाती है। कोई गोपी शकटका रूप धारण करती है, कोई

কোনো বা তার তুলত কৃষ্ণকপে থিয় দি আছে। কোনো
বা গোপী যশোদা হৈ কোনো গোপীকপ কৃষ্ণক সারটি ধৰিছে।

গোপী उसके নীচে कृष्ण रूपसे खड़ी है। कोई गोपी यशोदा
होकर किसी गोपीरूप कृष्णको पकड़ रही है।



তৃণাবর্ন্তব বেশে শিলাত পৰিছা। গোপী কৃষ্ণ যশোদা হইছা। কৃষ্ণ হইছা।
হইছা।

বংশী ডাক দিছা। কৃষ্ণ হই গোপীব
কান্ধত হাত থৈছা।

কোনোবা গোপীকপ কৃষ্ণই আন গোপীকপ তৃণাবর্ন্ত অশুবক
গলত টিপি মাৰি তাৰ ওপৰত বহিছে। কোনোবা গোপী কৃষ্ণ
হৈছে আৰু কোনো গোপী যশোদা হৈ তেওঁৰ কাষত থিয় দি
আছে। কোনোবা গোপী শিশুকৃষ্ণ হৈ আঠু কাঢ়ি ফুৰিবলৈ
ধৰিছে। কোনোবা গোপী যশোদা হৈ কোনো গোপীকপ কৃষ্ণক
হাতেৰে ওপৰলৈ তুলি দিগ্ দিগ্ দিছে। কোনো দুজনী
গোপীয়ে পৰস্পৰে পৰস্পৰ হাতত ধৰাধৰি কৰি বকাসুৰৰ ভাও
কৰিছে। কোনোবা গোপীয়ে কৃষ্ণৰ দৰে মধুৰ বংশী বজাইছে।
কোনোবা গোপী নিজক কৃষ্ণ কৰি আন গোপীব কান্ধত নিজৰ বাওঁ
হাত থৈ বংশীৰ ধ্বনিৰে যেন আকৃষ্ট হৈ গোপীক টানি আনিছে।

কোনো গোপীকপ কৃষ্ণই আন গোপীকপ তৃণাবর্ন্ত অশুবক
গলত টিপি মাৰি তাৰ ওপৰত বহিছে। কোনোবা গোপী কৃষ্ণ
হৈছে আৰু কোনো গোপী যশোদা হৈ তেওঁৰ কাষত থিয় দি
আছে। কোনোবা গোপী শিশুকৃষ্ণ হৈ আঠু কাঢ়ি ফুৰিবলৈ
ধৰিছে। কোনোবা গোপী যশোদা হৈ কোনো গোপীকপ কৃষ্ণক
হাতেৰে ওপৰলৈ তুলি দিগ্ দিগ্ দিছে। কোনো দুজনী
গোপীয়ে পৰস্পৰে পৰস্পৰ হাতত ধৰাধৰি কৰি বকাসুৰৰ ভাও
কৰিছে। কোনোবা গোপীয়ে কৃষ্ণৰ দৰে মধুৰ বংশী বজাইছে।
কোনোবা গোপী নিজক কৃষ্ণ কৰি আন গোপীব কান্ধত নিজৰ বাওঁ
হাত থৈ বংশীৰ ধ্বনিৰে যেন আকৃষ্ট হৈ গোপীক টানি আনিছে।



গোপী মন্দর বুলি আকুল
তুলিছা।

গোপী গোপী-
কালিক দমিছা।

অগ্নিভয় কহিছা।

যশোদা হই খেদিছা।

যশোদার বেশে গোপীক বান্ধিছা।

কোনো গোপীয়ে নিজক কৃষ্ণ কবি কাপোবর আঁচলক মন্দর পর্বত কবি ওপবলৈ তুলি ধরিছে। তাব তলত কোনো গোপী বহি আছে। কোনো গোপী কালি নাগ হৈ বহি আছে আৰু কোনো গোপী কৃষ্ণ রূপ ধারণ কবি সেই গোপীৰ মূৰত উঠি তাক দমন কৰিছে। কোনো গোপীয়ে কৃষ্ণ হৈ কোনো গোপীৰূপ গোপবালকৰ আগত যেন অগ্নিৰ (বনৰ দাবানলৰ) ভয়ৰ কথা কৈছে। কোনো গোপী যশোদা হৈ কৃষ্ণক পাছে পাছে খেদিছে আৰু কোনো গোপী কৃষ্ণ হৈ আগে আগে লবিছে। কোনো গোপীয়ে যশোদাৰ রূপ ধৰি গোপীৰূপ কৃষ্ণক পাই গলত বান্ধে আৰু মুখ চাই থাকে।

কোই গোপী অপনকো কৃষ্ণ বনাৰু কপড়েকী আঁচলকো মন্দরকা পহাড় বনাৰু জপৰ উঠাতী হৈ। উসকে নীচি কোই গোপী বৈঠী হৈ। কোই গোপী কালীয় নাগ হীকৰ বৈঠী হৈ আঁর কোই গোপী কৃষ্ণ রূপ ধর কৰ উস গোপীকে সিরপৰ চড়কৰ উসকা দমন কৰ রহী হৈ। কোই গোপী কৃষ্ণ বনকৰ কিসী গোপীৰূপ গোপবালককে সামনে মানী অগ্নিকে (দাবাগ্নি) উরকী বাত কহ রহী হৈ। কোই গোপী যশোদা হীকৰ কৃষ্ণকো পীকে পীকে দৌড় রহী হৈ আঁর কোই গোপী কৃষ্ণ বনকৰ আগি আঁগি ভাগ রহী হৈ। কোই গোপী যশোদাকা রূপ ধর কৰ গোপী রূপ কৃষ্ণকো বাঁধতী হৈ।



যশোদা-কৃষ্ণ হইছা । খেলু হইছা । কৃষ্ণ হই বংশী খেলুকাস্তব
ডাক দিছা । হইছা ।

গোপী কৃষ্ণ হই শুভিছা ।

নন্দ বকণদূত হইছা ।

কোনোবা গোপীয়ে যশোদা হৈ আকৌ গোপীকপ কৃষ্ণক কোলাত লৈছে । কোনো গোপী খেলুকাস্তব হৈ আঠু কাটি যেন গোকুলত সোমাইছে । কোনোবা গোপী কৃষ্ণ হৈ মধুর বংশীধ্বনি কৰিছে । কোনো গোপী খেলুকাস্তব হৈছে : আক আন গোপীকপ কৃষ্ণই ভৰিত ধৰি ওপবলৈ তাক মাৰি পঠাবলৈ উদ্যত হৈছে । কোনোবা গোপী পাত-শয্যা হৈ মাটিত পৰিছে, অন্ত গোপীকপ কৃষ্ণই তাৰ ওপৰত শুই পৰিছে । কোনো গোপী নন্দ বাজৰ বেশ ধারণ কৰিছে আক তেওঁৰ কাষত অন্ত এক গোপী কৃষ্ণ হৈ আঠু কাটি বহি আছে । আকৌ কোনো গোপী কৃষ্ণ হৈ হাত পাতি দাবানল পান কৰিছে ।

কোঁ গোপী ফির যশোদা হোঁকর गोपीरूप कृष्णको गोदमें ले रही है । कोँ गोपो धेनुकासुर बनकर घुटने टककर मानो गोकुलमें घुस रही है । कोँ गोपी कृष्ण बनकर मधुर वंशीध्वनि कर रही है । कोँ गोपी धेनुकासुर बन और दूसरी गोपीरूप कृष्ण पैर पकड़कर ऊपर फेंकनेका उद्यम कर रहा है । कोँ गोपी पत्र-शय्या बनकर जमीन पर गिरी, दूसरी गोपीरूप कृष्ण उसके ऊपर सो रहा है । कोँ गोपी नन्दराजका रूप धर रही है और दूसरी एक गोपी कृष्ण होकर उसके पास घुटनोंके बल बैठी है । फिर कोँ गोपी कृष्ण होकर हाथ पसारकर दावानलका पान कर रही है ।



গোপী বার্তা পুচ্ছা। বিলাপ।

গোপীর কৃষ্ণপদ অহুম্বণ।

কোনো এক গোপী আন গোপীত আঠু লৈ হাত পাতি খবৰ সুধিছে। সেই গোপীয়ে যেন থিয় দি হাত তুলি কৃষ্ণবিবহৰ খবৰ কৈছে। আকৌ অন্যান্য গোপীয়ে কৃষ্ণৰ ভবিৰ খোজ হালি হালি দেখুৱাই যেন কৃষ্ণক অন্বেষণ কৰিছে।

कोई एक गोपी दूसरी गोपीके सामने घुटने टेककर हाथ पसारकर खबर पूछती है। तब गोपी मानां खड़ी होकर हाथ उठाकर कृष्ण विरहकी खबर कहती हैं। फिर दूसरी गोपी झुकी झुकी मानां कृष्णको खोज रही है।



গোপীয়ে কৃষ্ণ-পদ-চিহ্ন কথা কহিছা।

যমুনাৰ তীৰৰ বালিত কৃষ্ণৰ খোজ পৰি থকা দেখি গোপী-বিলাকে ইটোৱে সিটোৱে ফালে চাই, পৰস্পৰে পৰস্পৰৰ আগত কৃষ্ণৰ পদচিহ্ন থকাৰ কথা কবলৈ ধৰিছে।

यमुनाके तीरपर बालुमें कृष्णके पदचिह्नोंको देखकर गोपियाँ एक दूसरीकी ओर ताक कर परस्परमें बात कह रही है।



গোপী ।

গোপী কৃষ্ণক নেদেখি মূচ্ছিত হৈছা ।

গোপীব আগত কৃষ্ণ
অন্তর্ধান ভৈলা ।

কৃষ্ণ ।

অভিমানী গোপী ।

শ্রীকৃষ্ণই লগত নিয়া গোপীব অহঙ্কার অতিকে চৰি উঠা দেখি শ্রীকৃষ্ণ হঠাৎ অন্তর্ধান হয়। তেতিয়া কৃষ্ণৰ বিবহত সেই গোপী মূচ্ছিত হৈ মাটিত বাগৰি পবিল। চিত্রকৰে এই গোপীৰ* ভিন্ন ভিন্ন অৱস্থা ইয়াত অঙ্কন কৰিছে।

* চিত্রকৰে এই গোপীক 'বাধা' বুলি অনুমান কৰিছে।

श्रीकृष्ण साथकी गोपीकी अत्यंत बड़े हुए अहंकारकी देखकर हठात् अन्तर्धान हो गये। तब कृष्णकी विरहसे गोपी मूर्च्छित होकर मिट्टीमें गिर पड़ी। चित्रकारने इस गोपीकी* भिन्न भिन्न अवस्थाओंका यहाँ अंकन किया है।

* चित्रकारने इस गोपीकी 'बाधा' समझा है।



গোপীসবে কৃষ্ণবার্তা পুচ্ছা।

ইয়াৰ পাছত গোপীবিলাকে কৃষ্ণ বিৰহত আকুল হৈ কৃষ্ণক বিচাৰি ফুৰোঁতে সেই গোপীক লগ পাইছে আৰু তেওঁত কৃষ্ণৰ খবৰ সোধিছে। কৃষ্ণৰ সহিত যোৱা গোপী বহি আছে। আন গোপী-বিলাকৰ কোনোৱে আগ হাত পাতি, কোনোৱে বা হাত দাঙি কৃষ্ণৰ খবৰ লৈছে।

গোপিয়াঁ কৃষ্ণ বিৰহসে আকুল হীকৰ কৃষ্ণকী ঢুঁড়তি ঢুঁড়তি উস গোপীসে মিলী' অীৰ পূছ রহী হীঁ। কৃষ্ণকে সাথ গযী গোপী বৈঠী হী।



যমুনাৰ বালিত কৃষ্ণৰ গুণ বৰ্ণাইছা।

ইয়াৰ পিছত গোপীসকলে সেই অন্ধকাৰ বাতিত ঘৰলৈ নাভাবি কৃষ্ণবিৰহানলত দেই পুৰি যমুনাৰ বালিত বহি কৃষ্ণময় প্ৰাণ হৈ হাতযোৰ কৰি কৃষ্ণৰ গুণ গাই গাই ধ্যান কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিলে।

তাৰ পাছত ভক্তবৎসল ভগবান দৈৱকী নন্দনে গোপীবিলাকৰ তেনে দুখ দেখি আৰু ঐকান্তিক প্ৰেম দেখি সন্তুষ্ট হৈ হঠাৎ

গোপিয়াঁ উস অ'ধেৰী ৰাতমঁ ধী ধৰকী চিন্তা ন কৰকী কৃষ্ণ-বিৰহানলসে জলতী জমুনাके बालुमँ बैठी कृष्ण ध्यानमँ ही निमग्न हो रही हैं।

भक्तवत्सल भगवान दैवकी नन्दन गोपियोंकी ऐसी अवस्था और ऐकान्तिक प्रेम देख कर संतुष्ट हो हठात् गोपियोंके बीच हाथ पर



কৃষ্ণ গোপীৰ সন্ধ্যাত বেকত হুইছা।

গোপীবীলাকৰ মাজত হাতত বংশী লৈ ত্ৰিভঙ্গ মূৰ্ত্তিত আবিভূত হুই। তেতিয়া গোপীবীলাকে পৰমানন্দ লাভ কৰি বহি কৰযোৰে স্তুতি কৰিবলৈ ধৰিলে।

বংশী লৈকৰ ত্ৰিভংগ মূৰ্ত্তিসে আবিভূত হুই। তৰ গোপীয়াঁ পৰমানন্দ পাৰক হাত জোড়কৰ স্তুতি কৰনি লগী।



কৃষ্ণক পাই গোপীসবে উন্নতভাৱে ধৰিছা।

হঠাৎ শ্রীকৃষ্ণক ত্রিভঙ্গ মূর্তিত আবির্ভাব হোৱা দেখি মৰা মানুহে জৌৱ পোৱাৰ দৰে হৈ কোনো গোপীয়ে কৃষ্ণৰ ওচৰলৈ লৰি গৈ হাত মেলি কিবা প্ৰাৰ্থনা কৰিছে ; কোনোবা গোপীয়ে কিবা খাচু হাতত লৈ কৃষ্ণক যাচিছে। কোনোবা গোপীয়ে কৃষ্ণৰ চৰণত দৌঘল দি পৰিছে। কোনোবা গোপীয়ে কৃষ্ণক আথেবেথে সাৰোট মাৰি ধৰিছে। ভগবান কৃষ্ণয়ে কোনো গোপীৰ মাজত থিয় হৈ ত্রিভঙ্গ মূৰ্ত্তিৰে বংশী বজাইছে। কাকো বা মূৰত ধৰি আশ্বাস

দিছে ; আকো কাৰো গলত সাৰোটমাৰি ধৰি আলিঙ্গন দি যথাযোগ্য ভাৱে সকলোকে সন্তুষ্ট কৰিছে।



নানা ভাবসি ভগবানকী গোপিয়াঁ অপনি ভগবানকী খিলা রহী हैं और उनके प्यारि चितचोर भी उन्हीं के बीच अपनी मोहककटा बिखरति हुए बंगी बजा उन्हे बिभोर कर रहै हैं।



পক্ষীগণে জলক্রীড়া কৰিহা।

কৃষ্ণ। গোপী।

কোনোবা গোপী প্ৰেমমগ্ন হৈ কৃষ্ণৰ ওচৰলৈ গৈ কৃষ্ণৰ হাত টানি আনি নিজৰ গালৰ ওপৰত দি গা ঘঁহিয়াই বহি গৈছে। কোনো গোপবালাই বহি নিজৰ কোলাত কৃষ্ণৰ ভৰি তুলি পদসেৱা কৰিছে। কোনো গোপীয়ে ফুলৰ মালা গাঁথি শ্রীকৃষ্ণৰ মূৰত দিছে। আকো কোনো গোপৰমণীয়ে বহি কোলাত কৃষ্ণৰ চৰণ লৈ আগ হাত তুলি কপালত ফোট দিব ধৰিছে। কৃষ্ণয়ে কোনো গোপ-কুমাৰীক মুখ দাঙি আদৰ কৰিছে। আন ফালে যমুনাৰ তীৰৰ গছত নানা চৰাই পৰি আনন্দ কৰিছে আৰু জলচৰ পক্ষীবোৰে জলক্রীড়া কৰিব ধৰিছে।

কোই গোপী প্ৰেমমগ্ন হীকর कृष्णके हाथको खींचकर अपनी कपोलपर रखकर बैठी है। कोई गोपबाला अपनी गोदमें कृष्णका पाँव रखकर पदसेवा कर रही है। कोई गोपী फूलोंकी माला गंथकर श्रीकृष्णको पहना रही हैं। और कोई गोपरमणी दाहिना हाथ उठाकर मस्तकपर तिलक कर रही है। कृष्णभी किसी गोपकुमारीको मुँह उठवाकर आदर कर रहै हैं। उधर जमुनाके तीरके पेड़ोंपर चिड़ियाँ बैठकर आनन्द कर रही हैं और जलचर पक्षीगण जलक्रीड़ा कर रहै हैं।



হংস।

গোপী।

কৃষ্ণ।

কদম্ব।

কৃষ্ণক পাই গোপীবিলাক অতি বিহ্বল হৈ কৃষ্ণতে মন মজাই
সেই হংসাদি পখী, কদম্ব আদি তরু লতা আদিবে স্পৃশোভিত
যমুনার পাবত বহি আনন্দত মগ্ন হৈ পবিছে। কোনো গোপীয়ে
কৃষ্ণর হাতত ধরিছে। কোনোরে বা কঁকালত সারোট মাৰি ধরিছে
আক কোনোরে বা কৃষ্ণর ওচরত বহি হাতঘোর কৰি স্তুতি
কবিব ধরিছে।

तरुलतासे सुशोभित उस यमुनाके तीरपर अपने प्रिय सखाके
सांनिध्यमें गोपललनाये कृष्णमत्त बनी भगवानके आलिंगन, सेवा
और स्तुतिमें अपनेको कृतार्थ कर रही हैं।



বাস।

ভগবান কৃষ্ণই গোপীবলাকক সাস্ত্রনা কবি কলে, 'যে তোমা-লোকৰ মনব আশা শবৎকালব পূৰ্ণিমা বাতিত পূৰ্ণ কবিম'। সেই অনুসাৰে ভগবান কৃষ্ণই বাসক্ৰীড়া আবস্ত কৰিলে; যত গোপী তত কৃষ্ণ হৈ গোপীসকলৰ লগত নানা প্ৰকাৰ বাসক্ৰীড়া আবস্ত কৰিলে। কৃষ্ণই কোনো গোপীৰ গলত ধৰি, কাৰো হাতত ধৰি, কাৰো মুখত চুমা দি ইত্যাদি নানাভাৱে বতীক্ৰীড়াৰ দ্বাৰা গোপীৰ মন তুষিৰলৈ প্ৰবৃত্ত হল।

ভগবান কৃষ্ণই গোপীসকলক সাস্ত্রনা কবি কলে, 'যে তোমা-লোকৰ মনব আশা শবৎকালব পূৰ্ণিমা বাতিত পূৰ্ণ কবিম'। সেই অনুসাৰে ভগবান কৃষ্ণই বাসক্ৰীড়া আবস্ত কৰিলে; যত গোপী তত কৃষ্ণ হৈ গোপীসকলৰ লগত নানা প্ৰকাৰ বাসক্ৰীড়া আবস্ত কৰিলে। কৃষ্ণই কোনো গোপীৰ গলত ধৰি, কাৰো হাতত ধৰি, কাৰো মুখত চুমা দি ইত্যাদি নানাভাৱে বতীক্ৰীড়াৰ দ্বাৰা গোপীৰ মন তুষিৰলৈ প্ৰবৃত্ত হল।



বাস।

কৃষ্ণপ্ৰেমত মজি গোপীসকল আত্মহাৰা হৈ কোনো কোনোৱে শ্ৰীকৃষ্ণৰ ওচৰত গা হলাই দিলে। শ্ৰীকৃষ্ণই কাৰো কান্ধত ধৰিলে, কাৰো আঁচল দাঙি দিলে, কাৰো বা গলত বাওঁ হাত দি আলিঙ্গন কৰিলে। কোনো কোনো গোপীয়ে শ্ৰীকৃষ্ণৰ গলে কঁকালে সাৰোট মাৰি ধৰিলে। কোনো গোপীয়ে শ্ৰীকৃষ্ণৰ উত্তৰীয় বস্ত্ৰ টানিলে। কোনোৱে বা মালা পিন্ধাবলৈ মন কৰিলে।

কৃষ্ণপ্ৰেমমম ডুবকৰ গোপীয়াঁ আত্মহাৰা হৈকৰ ক্ৰীড়া কৰ রहीं हैं। श्रीकृष्णने किसीका कंधा पकड़ा, किसीका आँचल उठा दिया, तो किसीके गलेपर बाँया हाथ रखकर आलिंगन किया। कोई कोई गोपी श्रीकृष्णके गलेमें कमरमें जकड़कर पकड़ रही है। किसी गोपीने श्रीकृष्णके उत्तरीय वस्त्रको खींचा तो कोई माला

কোনো কোনো সময়ত শ্রীকৃষ্ণ থিয় দি থাকিল, কেতিয়াবা ত্রিভঙ্গ মৃতি ধৰি গোপীক স্পর্শ কৰিলে। কেতিয়াবা কেতিয়াবা শ্রীকৃষ্ণৰ হুই ফালে হুই গোপী কৃষ্ণৰ হাতে কান্ধে ধৰি আলিঙ্গন কৰিবলৈ ইচ্ছা প্রকাশ কৰিলে।

पहना रही है। भगवान् अपनीही क्रीड़ाकी आपही कभी कभी रुक रुक कर देखते हैं।



কৃষ্ণ মহাবাস ক্রীড়া কৰিছা।

ভগবান শ্রীকৃষ্ণই গোপাঙ্গনাসকলক আনন্দ দিবলৈ তেওঁ-লোকক যমুনাৰ বালিত চক্ৰাকাৰে শাবী কৰিলে আৰু নিজ মায়াবলে নানা শৰীৰ হৈ প্রতিটা গোপীৰ লগত একোজন কৃষ্ণ হৈ নানা ভঙ্গিৰে বাসক্রীড়া আবস্ত কৰিলে।

भगवान् श्रीकृष्ण गोपांगनाओंकी आनन्द देनेके लिए उनकी जमुनाके बालुमें गोलाकारकी पंक्ति बनवाइ ; और अपनी मायाबलसे नाना शरीर होकर हर गोपीके साथ एक एक कृष्ण होकर नाना भंगियोंसे रास क्रीड़ा आरंभ करते हैं।



দেবতাগণ।

অপেশ্বৰা।

গন্ধৰ্ব।

বিছাধৰ।

অপেশ্বৰা।



কৃষ্ণ-গোপী।

ভগবান দৈবকীনন্দনৰ এনে অপূৰ্ব মনোহৰ বাসক্ৰীড়া দেখি আনন্দিত হৈ দেবতাবিলাক সস্ত্ৰীক শূন্যমার্গত বহি ব লাগি চাই বল। অম্বাসকলে নানা ভঙ্গিত হাত তুলি নৃত্য কৰিবলৈ ধৰিলে আৰু গন্ধৰ্ব বিছাধৰবিলাকে খোল তাল লৈ গীত ধৰিলে।

ভগবান দৈবকীনন্দনকী এমী অপূৰ্ব মনোহৰ , বাসক্ৰীড়া দেখি আনন্দিত হৈ দেবতাগণ সস্ত্ৰীক শূন্যমার্গমি বৈঠক এক টক তাক রহি हैं। अम्परायि' नाना भंगिमाओसि हाथ उठाकर नृत्य करन लगिं और गंधर्व विद्याधरगण खोल ताल लेकर गीत गानि लगि।



কৃষ্ণে গোপীক উকৃত বৈসাইছা ।

বাসোৎসবত শ্রীকৃষ্ণৰ লগত নানা বতিক্রীড়াত গোপীবিনাক
ভাগবিপৰিল । তেতিয়া শ্রীকৃষ্ণই কোনো গোপীৰ গলত ধৰি,
কাকো কোলাত লৈ, কাকো বা উকৃত বহুৱাই, কাকো বা কোলাত
শুৱাই, কাকো বা চন্দন আদিৰ অনুলেপন দি, নিজ পদহস্তেৰে
শ্রম দূৰ কৰিলে ।

রাসীক্সবমে শ্রীকৃষ্ণকে साथ নানা রতি ক্রীড়াশ্রীসে গোপিয়াঁ থক
গই' । তব শ্রীকৃষ্ণনে কিমী গোপীকে গলমে পকড়কর, কিসীকো
গোদমে লেকর, তো কিমীকো জাংঘপর বৈঠাকর, কিসীকো
গোদমে সলাকর, কিসীকো চন্দন আদিকে অনুলেপন দেকর
অপনে পদহস্তসে সবকা শ্রম দূর কিয়া ।



কৃষ্ণে গোপীসমে ক্রীড়া কৰিছা ।

श्रीकृष्ण हातब स्पर्श पाई गोपीविलाक सुख है पुनब क्रीड़ा करिवलै आबसु करबिले । कोनो गोपी भङ्गि करि थिय दि थाकिल । कोनोरेवा निजब बाँहातेबे कृष्ण बाँहातत धरि आगहातेबे कृष्ण मुख तुलि धरिले । कोनो गोपीये कृष्ण आगहात निजब काकत तुलि लले । कोनोरे आको कृष्ण काकत निजब हात तुलि दिले । कोनो प्रेमान्क गोपीये कृष्ण आकोरानि धरि तेँब मुखत मुख लगाई दिले आक कोनोवा गोपीये चमंकृत है हात भरि मेलि काँठब पुतुलाब दवे थिय दि बल ।

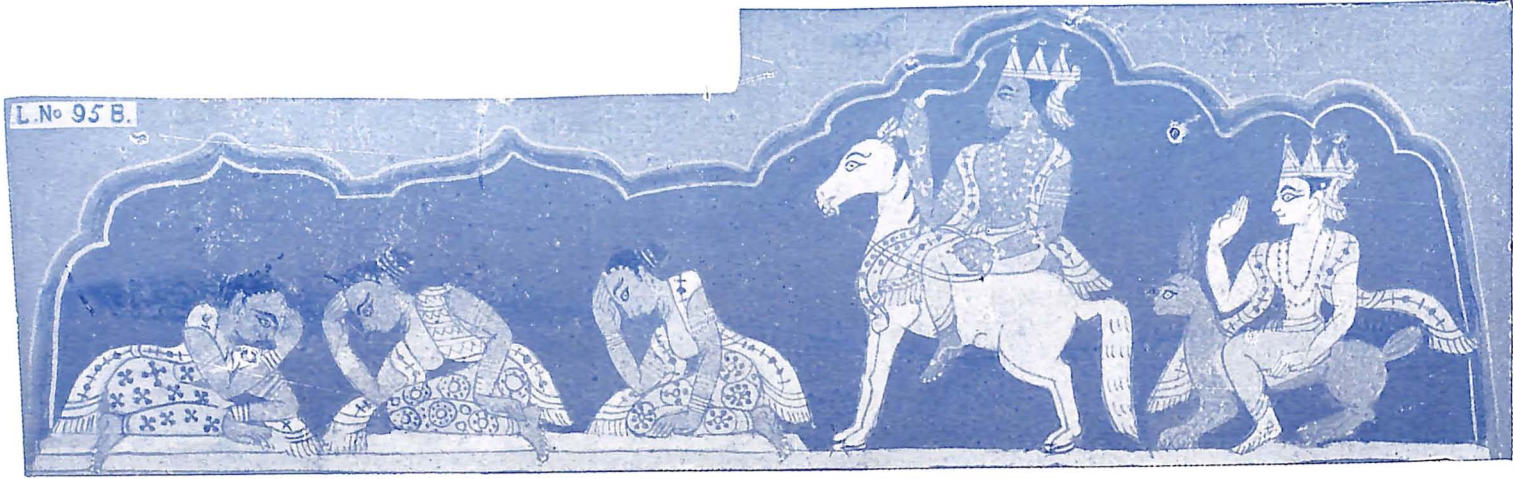
श्रीकृष्णके स्पर्शसे गोपियाँ स्वस्थ होकर फिर क्रीड़ा करने लगीं । कोई गोपी भान करके खड़ी रही । कोई अपने बाँये हाथसे कृष्णके बाँये हाथ पकड़कर दाहिने हाथसे कृष्णकी मुँहको उठा लिया । कोई गोपी कृष्णके दाहिने हाथको अपने कंधेपर उठा लेती है । कोई फिर कृष्णके कंधेपर अपना हाथ उठा लेती है । कोई प्रेमान्क गोपी कृष्णको पकड़कर कृष्णके मुँहमे मुँह लगा दिया और कोई गोपी चमत्कृत होकर हाथ पैर फैलाकर लकड़ीके खिलौने जैसे खड़ी रही ।



कृष्ण गोपीगण समे नाना भङ्गि करि क्रीडिछा ।

गोपीसकले श्रीकृष्णब लगत एहदरे क्रीड़ा कवा देखि, क्रीड़ा-दर्शनब बावे अहा देराङ्गनाविलाके गोपीसकलब सौन्दर्य आक सोभाग्यब प्रशंसा करिव धरिले आक निजक नितासु अभागी भावि विमर्षभावे गूबे कपाले हात दि विमर्ष है पविल । एहे

गोपियोंको श्रीकृष्णके साथ इसी तरह क्रीड़ा करते देखकर क्रीड़ा दर्शनके लिए आई हुईं 'देवांगनाये' गोपियोंके सौन्दर्य और सौभाग्यको तारीफ करने लगीं और अपनेको निहायसही भाग्यहीन समझकर, विमर्ष भावसे सिरपर कपालपर हाथ रखकर विमर्ष



দেবাস্থন।

ইন্দ্র।

পবন।

সময়ত ইন্দ্র উল্লেখ্যবা ঘোঁবাত আক পবন নিজৰ হৰিণ বাহনত
উঠি আহিছিল।

হী পড়ী। ইহ সময় ইন্দ্র উচ্চৈঃশ্রবা ঘোড়ৈপৰ আৰ পবন অপনী
হিরনকী সবারীপৰ বিৰাজমান থৈ।



কৃষ্ণে গোপীগণ সহিতে জলক্রৌড়া কৰিছন্ত।

দেবকীনন্দন শ্রীকৃষ্ণই এইদবে গোপীবিনাকব সৈতে স্থলক্রীড়া শেষ কবি জল-ক্রীড়া আৰম্ভ কৰিলে। কোনো গোপী কৃষ্ণৰ ওচৰত সাঁতোৰ মেলিছে। কোনো গোপীক বা পানীত হেঁচা মাৰি ধৰিছে। কেতিয়াবা কৃষ্ণই সাঁতোৰ মেলিছে। কেতিয়াবা কেতিয়াবা হাত আঁজলি কৰি গোপীসকলৰ সৈতে পানী সিঁচা-সিঁচি কৰিছে।

দেবকীনন্দন শ্রীকৃষ্ণই এইদবে গোপীবিনাকব সৈতে স্থলক্রীড়া সমাপ্ত কৰি জলক্রীড়া শুরুর কৰি। কোনো গোপী কৃষ্ণকৈ পাৰ তৈৰতী হৈ। কৰ্মী কৃষ্ণ তৈৰতী হৈ। কৰ্মী কৰ্মী হাথীকৈ অঁজলিমে এক দূসৰি পর পানী উলীচ রহি হৈ।



কৃষ্ণ জল-ক্রীড়া কৰিছন্ত।

ভগবান কৃষ্ণই যমুনাত নামি এইদবে জল-ক্রীড়া কৰিছে। তেওঁ কোনো কোনো গোপীৰ গাত পানী চতিয়াইছে। কাৰো বা হাতে গলে আকোৱালি ধৰিছে। গোপীবিনাকব কোনোৱে বা কৃষ্ণৰ কঁকালত ধৰিছে, কোনোৱে বা হাতত ধৰিছে আৰু কোনোৱে বা আঁজলি কৰি পানী চতিয়াই দিছে। ইফালে দেৱনাৰী-

ভগবান কৃষ্ণ জমুনামি জলক্রীড়া কৰিছে। কিসী গোপীকৈ বদন পর পানী ছিড়কতি হৈ, কিসীকৈ হাথী গলে জকড়তী হৈ। গোপিয়ীমেসি কৌই কৃষ্ণকী কমরকৌ পকড় রহী হৈ; তৌ কৌই হাথ পকড় রহী হৈ আঁর কৌই অঁজলিসে পানী ছিড়ক রহী হৈ। ইধর দেবনাৰিয়াঁ আমমানপর বৈঠকর বীণা বজাকর গানা



দেৱনাৰী ।

দেৱতাগণ ।

সিন্ধ ।

সকলে আকাশত বহি বীণা বজাই গান গাইছে। দেৱতাবিলাকে
পুষ্পবৃষ্টি কৰিছে ; আৰু সিন্ধবিলাকে হাত দাঙি নৃত্য কৰিছে।

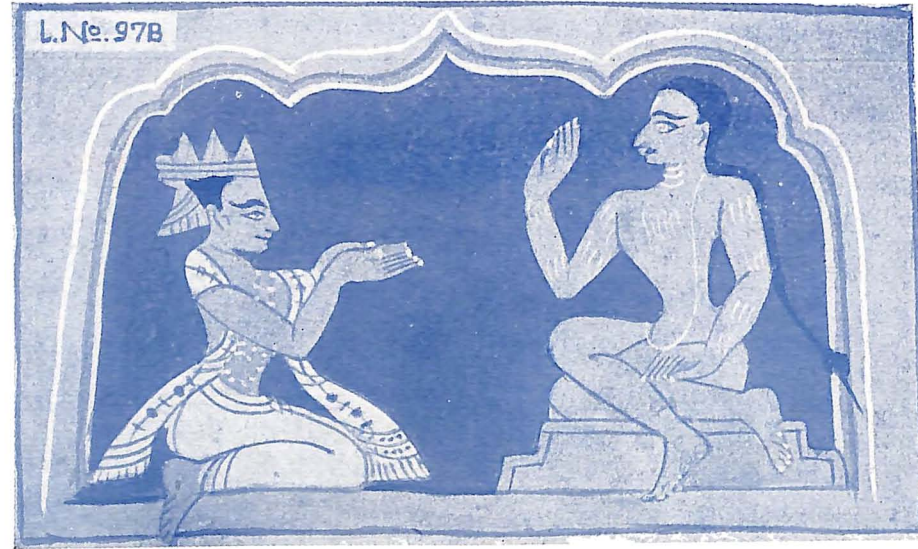
গাৱহীঁ হৈঁ। দেৱতাগণ পুষ্পবৃষ্টি কৰি হৈঁ আৰু সিদ্ধগণ হাত
উঠা কৰি নৃত্য কৰি হৈঁ।



গোপী কৃষ্ণক পুষ্প পিন্ধাইছা।

শ্ৰীকৃষ্ণই এইদৰে জল-ক্ৰীড়া শেষ কৰি যমুনাৰ পুলিনত বহিল।
সেই সময়ত কোনো গোপীয়ে কৃষ্ণক বিচনীৰে বিচিছে। কোনোৱে
বা কৃষ্ণৰ হাতত অলঙ্কাৰ পিন্ধাইছে। কোনোৱে বা চোঁৱৰ
তুলাইছে ; আৰু কোনোৱে বা সুগন্ধি ফুলৰ মালা গাঁঠি কৃষ্ণৰ মূৰত
দিব ধৰিছে।

শ্ৰীকৃষ্ণ ইয়াত জলক্ৰীড়া সমাপ্ত কৰি যমুনাৰ পুলিনত
আ বহি। তেওঁৰ সময়ত কোনো গোপী কৃষ্ণক পিন্ধাইছে।
কোনোৱে বা কৃষ্ণক হাতত জীৱ পিন্ধাইছে। কোনোৱে
চুলাইছে আৰু কোনোৱে সুগন্ধি ফুলৰ মালা গাঁঠি কৃষ্ণৰ
মূৰত দিব ধৰিছে।



রাজা পর্বীক্ষিত ।

শুকদেব ।

ভগবান কৃষ্ণই এইদেবে ক্রীড়া শেষ কবিলে। মহারাজ পর্বীক্ষিতে শুকদেবের ওচরত হাতযোব কবি এইবোব কথা স্মিছে আক শুকদেবে পর্বীক্ষিতব আগত কৈছে। কৃষ্ণব সৈতে সমস্ত বজনী এইদেবে গোপীসকলে ক্রীড়া কবি আছে, তথাপি কৃষ্ণ-মায়াত বে ঔলোকব স্বামীবিলাকে একোকে জানিব পবা নাই। তেওঁলোকব

ভগবান কৃষ্ণনে ইস तरह ক্রীড়া সমাপ্ত কী। মহারাজা পরীক্ষিত শुकदेवके पास हाथ जोड़कर ये बातें पूछ रहे हैं और शुकदेव परीक्षितके सामने कह रहे हैं। कृष्णके साथ सारी रात इसी तरह गोपियाँ क्रीड़ा कर रही हैं, तो भी कृष्णकी मायासे उनके स्वामी इसे नहीं जान सके। उनके पासही अपनी अपनी



গোপসবে হাত বুলাই দেখে কাছতে
আছে নিজজামা ।
বাজা পবীক্ষিত । শুকদেব ।
যশোদা দেখন্ত কৃষ্ণ শয্যাতে স্ততিছা ।

ওচৰতে নিজ নিজ ভাৰ্য্যাবিলাক আগবদৰে শুই থকা পাইছে ।
দেবী যশোদায়ো দেখিলে, যে কৃষ্ণ আগবদৰে নিজৰ কাষতে
শুই আছে ।
मार्यान्त्रोको पहले जैसी सीती हुई देखी । देवी यशोदानिभी देखा
कि कृष्ण पहले जैसे अपनी पासही सी रहि हैं ।



গোপীসবে কৃষ্ণসমে ক্রৌড়িছা ।
কৃষ্ণে বৃন্দাবনে বংশী ডাক দিছা ।
গোপী গৃহত চলিল ।
গৃহত গোপী কৃষ্ণক চিন্তিছা ।

চিত্র-ভাগবত

কৃষ্ণই ত্রিভঙ্গ মূর্তি ধরি বংশীধ্বনি করিছে। দুজনী গোপী কৃষ্ণের ছয়ো কাষত থিয় দি আছে। তাব পাছত কৃষ্ণ বহি গোপীসকলক প্রবোধ দি ঘবলৈ যাবলৈ কলে। গোপীবিলাকো উদাস মনে ঘবলৈ উভতি গল আৰু ঘবত গৈ কোনো গোপী নাকত হাত দি, কোনো গোপী বা বুকত হাত বান্ধি মনে মনে কৃষ্ণক ধ্যান কৰিবলৈ ধৰিলে।

কৃষ্ণ বংশীধ্বনি কর রহে हैं। दो गोपियाँ कृष्णकी दोनों तरफ खड़ी हैं। उसके बाद कृष्णने बैठकर गोपियोंको प्रबोध देकर घर जानि कहा। गोपियाँ भी उदास मनसे घर लौट गयीं और घर जाकर कोई गोपी नाकपर हाथ रखकर, कोई गोपी छातीपर हाथ बांधकर मन ही मन कृष्णका ध्यान करने लगीं।



অম্বিকাদেবী।

শঙ্কর।

গোপগণে শঙ্কর সহিতে অম্বিকাদেবী পূজিছা।

সুদর্শন বিদ্যাধরৰ শাপমুক্তি :—ইয়াৰ পাচত এদিন নন্দ আদি গোপবিলাকে মহাদেৱৰ সৈতে দেৱী অম্বিকাৰ পূজা পাতিছে। অষ্টভূজা দেৱীৰ মূৰ্তি কৰি দেৱীৰ ওচৰতে ত্ৰিশূল আৰু ডমৰু হাতত লৈ থকা মহাদেৱৰো মূৰ্তি কৰিছে। বিবিধ নৈবেদ্য, ধূপ, দীপ, গন্ধ, পুষ্প দি আঠুকাঢ়ি হাতযোৰ কৰি নন্দ,

सुदर्शन विद्याधरको शपमुक्ति : एकदिन नन्द आदि ग्वालगण महादेवके साथ देवी अम्बिकाकी पूजा कर रहे हैं। अष्टभुजा देवीकी मूर्ति बनाकर देवीके पास त्रिशूल और डमरु हाथमें लिए हुए महादेवकी भी मूर्ति बनाई। विविध नैवेद्य, धूप, दीप, गंध, पुष्पादिसे पूजन कर, हाथ जोड़कर नन्द, कृष्ण, बलभद्र

কৃষ্ণ, বলভদ্র আৰু সুদাম আদি গোপবিলাকে নিজৰ কল্যাণৰ অৰ্থে দেৱীক স্তুতি কৰিছে।

আৰু সুদাম আদি গোপগণে আপন কল্যাণক লিখি দেৱীক স্তুতি কৰিছে।



বিপ্ৰক দান দিছা।

উপবাস প্ৰয়াসত গোপগণ শাবী শাবী শুইছা।

পূজা শেষ হ'লত বিশিষ্ট ব্ৰাহ্মণক নিমন্ত্ৰণ কৰি খুৱাইছে আৰু গো দান কৰিছে। কোনো ব্ৰাহ্মণে গৰু ঘৰলৈ খেদি নিব ধৰিছে ; উপবাসত শ্ৰান্ত হোৱা নন্দ আদি গোপসকলে শাবী শাবী হৈ শুই পৰিছে।

পূজা সমাপ্ত হোৱাৰ পিছত ব্ৰাহ্মণগণে বুলি কৰি ভোজন কৰা কৰিছে আৰু গৌৰৱ কৰিছে। ব্ৰাহ্মণ গৌ হাঁক কৰি ঘৰ লৈ যা কৰিছে, তেওঁ আশনপৰ বৈঠ কৰি ভোজন কৰিছে। উপবাসত আন্ত নন্দ আদি গোপগণ সৌ কৰিছে।

এইদৰে শুই থাকোঁতে হঠাৎ ক'ববাৰ পৰা প্ৰকাণ্ড অজগৰ এটা আহি নন্দক কঁকাললৈ গিলি পেলালে। নন্দই সাৰ পাই আৰ্ত্তস্বৰে কৃষ্ণক নাম কাঢ়ি মাতিবলৈ ধৰিলে। কোনো এক

ইসে কৰিছে সৌ কৰিছে হঠাৎ কৰিছে এক প্ৰকাণ্ড অজগৰ সাঁপ আকৰ নন্দক কঁকালত গিলি পেলায়। নন্দ জাগকৰ আৰ্ত্তস্বৰে কৃষ্ণক নাম লৈ পুকাৰি লগি। কিসী এক



শ্রীদাম ।

বলভদ্র ।

কৃষ্ণ ।

.গোপগণে জোঞ্জালি পুঁবিছা ।

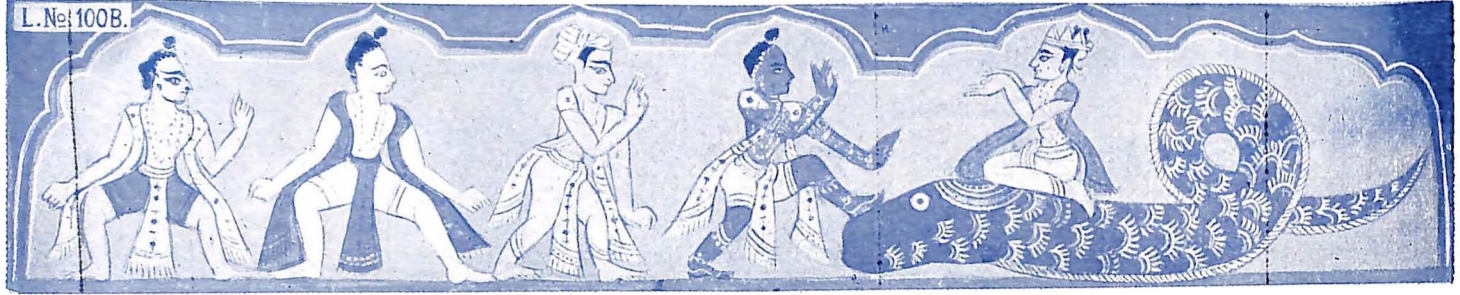
নন্দক অজগবে গিলিছা ।

গোপে অজগবর মুখত এডাল লক সুমাই দিলে । নন্দর চীৎকাব শুনি হাতত লক লৈ কৃষ্ণ, বলবাম আৰু সুদাম আদি লবি আহি উপস্থিত হলহি ।

ग्वालने अजगरके मुँहमें एक डंडा घुसेड़ दिया । नन्दकी चिल्लाहट सुनकर हाथमें डंडा लेकर कृष्ण, बलराम और सुदाम आदि दौड़कर आये ।

ভগবান কৃষ্ণ লবি আহি অজগবর মুখত ভৰি দিয়া মাত্রেই অজগবে সাপৰূপ এৰি দিব্য গন্ধৰ্বৰূপ ধাৰণ কৰিলে আৰু হাত-যোৰ কৰি কৃষ্ণক স্তুতি কবিবলৈ ধৰিলে । পিছত কৃষ্ণৰ আদেশ-

भगवान कृष्ण आकर अजगरके सिरपर पैर रखतेही अजगरने साँपका रूप छोड़कर दिव्य गंधर्वका रूप धारण कर लिया और हाथ जोड़कर कृष्णकी स्तुति करने लगा । कृष्णके आदेशानुसार



শ্রীদাম ।

বলভদ্র ।

নন্দ ।

শ্রীকৃষ্ণ ।

অজগবে দিব্য গন্ধর্ব-কণ ধবিছা ।

মতে সেই গন্ধর্ব পুনর স্বর্গ লৈ গল । বসুদেব, বলভদ্র আৰু নন্দ গাংধৰ্ব স্বৰ্গমিঁ চলা গয়া । বসুদেব, বলভদ্র আৰু নন্দ আদি ইম
আদিয়ে এই আচৰিত ঘটনা দেখি তথা লাগি চাই বল । অজীব ঘটনাৰ একটক নিহাৰ রহি হৈ ।



গোপগণে ব্রজক যাত্ৰ ।

নন্দ ।

কৃষ্ণ ।

বলভদ্র ।

গোপগণ ।

ৰাজা পৰীক্ষিত ।

শুকদেব ।

নন্দ আদি গোপসকলে এইদৰে অম্বিকাদেৱীৰ পূজা-ব্রত শেষ কৰি ব্রজলৈ উভতি আহিল ব্রজৰাজ নন্দ গৰুৰ গাড়ীত উঠি কৃষ্ণ সমাম কৰকি ব্রজ লীট আয়ে । ব্রজৰাজ নন্দ বৈলগাড়ী পৰ চড়কৰ

আৰু বলৰামৰ সৈতে ব্ৰজলৈ গল। অত্যাণ্ড গোপবিলাকো কান্ধত বাওঁহাতেৰে লক লৈ খোজকাটি যাবলৈ ধৰিলে। বজা পৰীক্ষিতৰ আগত এইবোৰ কথা শুকদেৱে আসনত বহি কৈছে; আৰু পৰীক্ষিতে হাতযোৰ কৰি শুনিব ধৰিছে।

কৃষ্ণ আৰু বলৰামকৈ সাথ ব্ৰজ গয়ি। দূসৰে গ্বালগণভো ক'ধেপৰ বাঁয়ি হাথসে ড'ডা লৈকৰ পৈদল জানি লগি। ৰাজা পৰীক্ষিতকৈ সামনে যি বাৰ্তি শুকটেব মহাৰাজ কহ: ৰহি হৈ আৰু পৰীক্ষিত হাথ জোড়কৰ সুন ৰহি হৈ।



যুগ।

কৃষ্ণ।

ৰাম।

গোপীসব।

শঙ্খচূড়।

শঙ্খচূড় বধ:—ইয়াৰ পিছত এদিন ভগৱান কৃষ্ণ সুগন্ধ চন্দনাদিৰে অলঙ্কৃত হৈ বলভদ্ৰৰ সৈতে সেই মনোহৰ গোকুলত বসনে ভূষণে বিভূষিত গোপীসকলৰ সৈতে ক্ৰীড়া কৰি আছে। কৃষ্ণ আৰু বলৰামে ত্ৰিভঙ্গ মোহন মূৰ্ত্তি ধৰি বাঁহী বজাইছে। গোপ-বননীসকলেও সেই বাঁহীৰ সুরত মতলীয়া হৈ যেন নৃত্যহে কৰি আছে। হেন সময়তে গোপীবিলাকৰ পিছফালৰ পৰা ঘোৰ কৃষ্ণবৰ্ণ বিকটাকাৰ শঙ্খচূড় নামে এটা অশ্ৰুবে আগহাতত এপাত

শঙ্খচূড় বধ: : ইসকৈ বাট একদিন ভগবান কৃষ্ণ সুগন্ধ চন্দনাদিৰে অলঙ্কৃত হীকৰ বলভদ্ৰকৈ সাথ উস মনোহৰ গোকুলমি বসন-ভূষণসে বিভূষিত গোপিয়োকৈ সাথ ক্ৰীড়া কৰ ৰহি থে। কৃষ্ণ আৰু বলৰাম ত্ৰিভঙ্গ মোহন মূৰ্ত্তি লৈকৰ বংশী বজা ৰহি হৈ। গোপৰমণিয়াঁভো উস বংশীকৈ সুরমে বাবলী হীকৰ নাচ ৰহী হৈ। ইসী সময় গোপিয়োকৈ পীক্ষিসে ঘোৰ কৃষ্ণবৰ্ণ বিকটাকাৰ শঙ্খচূড় নামকা এক অসুর দাহিনে হাথমে এক ত্ৰিশূল লৈকৰ গোপিয়োকৈ

ত্রিশূল লৈ লৰি গোপীসকলৰ ওচৰ পালেহি। অসুৰৰ ভবিব শব্দ শুনি এজনী গোপীয়ে পিছ ফিৰি চাই অসুৰক দেখি আচৰিত হল।

পাস আ गया। असुरके पैरोकी आवाज सुनकर एक गोपी मुँह मोड़कर ताककर असुरको देखकर अचरजमें आ गई।



গোপীদব।

বাম কৃষ্ণে বৃক্ষ উচাই পাছত খেদিছা। শঙ্খচূড়ে গোপীক হৰিল।

অসুৰ শঙ্খচূড়ে তৎক্ষণাৎ এজনী গোপীক কোনাত লৈ বেগাই যাবলৈ ধৰিলে। তাকে দেখি কৃষ্ণ-বলৰামে একোডাল গছ উভাৰি ছয়ো হাতেবে ধৰি শঙ্খচূড়ক মাৰিবলৈ পাছে পাছে খেদা দিলে। আন আন গোপীবিলাকে ভয়ত আতুৰ হৈ কৃষ্ণ-বলৰামৰ পাছত যাবলৈ ধৰিলে।

असुर शंखचूड़ भट एक गोपीको गोदमें लेकर तीजीसे जानि लगा। उसे देखकर कृष्ण बलराम एक एक पेड़ उखाड़कर शंखचूड़को मारनेके लिए पीछे पीछे दौड़े। दूसरी गोपियाँ डरसे आतुर होकर कृष्ण बलरामके पीछे पीछे जानि लगीं।

কৃষ্ণ-বলৰামৰ খেদাত শঙ্খচূড়ে গোপীক এৰি লৰ দিলে। ভগবান কৃষ্ণই ভয়াতুৰ গোপ-ৰমণীসকলক বাখিবলৈ বলৰামক থৈ নিজে শঙ্খচূড়ক পিছে পিছে খেদা দিলে। শঙ্খচূড় কৃষ্ণৰ আগে

कृष्ण, बलरामको आत देख शंखचूड़ गोपीको छोड़कर भागा। भगवान कृष्ण भयातुर गोपरमणियोंकी रक्षाके लिए बलरामको छोड़कर खुद शंखचूड़के पीछे दौड़ने लगे। शंखचूड़ कृष्णके आगे



গোপীক বাখি তথাত্তে বাম বহিলা ।

কৃষ্ণে একলে যক্ষক খেদন্ত ।

আগে লবি যাবলৈ ধবিলে । বলবামে কৃষ্ণৰ কথা মতে আগহাত
তুলি গোপীসকলক নিৰ্ভয় দিলে । সেই সময়ত গোপীবিলাকে
হাত তুলি যেন বাম-কৃষ্ণৰ ওচৰত নিজক বক্ষাবাহে প্ৰাৰ্থনা কৰিছে ।

আগি ভাগনি লগা । কৃষ্ণকী ভাত মানকৰ বলৰামনি দাহিলা হাথ
উঠাকৰ গোপিয়াকী নিৰ্ভয় দিয়া । उस समय गोपियाँ हाथ उठाकर
मानो राम कृष्णके पास अपनी रक्षाके लिए प्रार्थना कर रही हैं !



গোপী কৃষ্ণৰ হাত জাণ্ডিছা কোলাত বৈসাই ।

বামৰ হাতত কৃষ্ণে মণি দিহা ।

শঙ্খচূড়ৰ প্ৰাণ গল ।

কৃষ্ণই শঙ্খচূড়ক মাৰি পেলালে। অসুৰ দাঁত নিকতাই দৌঘল
দি মাটিত পৰি থাকিল। অসুৰৰ মূৰত এটা মণি আছিল;
কৃষ্ণই মণিটো আনি বলদেৱৰ হাতত দিলে। শঙ্খচূড়ক মড়া শুনি
গোপীসকল আনন্দত আত্মহাৰা হল। তেওঁলোকে আনন্দতে
কোনো গোপীয়ে পিছ ফালে থিয় দি কৃষ্ণৰ আগহাতখন আনি
নিজৰ গাত লগাই দিলে। কোনো গোপীয়ে বা বহি পিছফালৰ

কৃষ্ণানি শঙ্খচূড়কো মাৰ ডালা। অসুৰ দাঁত নিকালক
লম্বা হীকৰ জমীন পৰ গিৰ পড়া। অসুৰকে সিরপৰ এক মণি
থ্য। কৃষ্ণানি মণি লাকৰ বলদেবকে হাথমে দে দী। শঙ্খচূড়কো
মৰা সুনকৰ গোপিয়াঁ আনন্দমগ্ন হীগইঁ। কীই গোপী বঁঠ কৰ



কৃষ্ণৰ আদেশে গোপীসব গৃহক যাত্ৰ।

পৰা গা পিঠি দিব ধৰিলে আৰু কোনোৱে বা কৃষ্ণৰ ভৰি নিজৰ কোলাত তুলি লৈ কৃষ্ণৰ বাওঁহাতত আনি নিজৰ দুই হাতেৰে মৰ্দন কৰিবলৈ ধৰিলে।

পীঠীকী আৰু কৃষ্ণক শৰীৰ মলন লগী আৰু কীই কৃষ্ণক পাঁচকী অপনী গৌদমঁ উঠা কৰ অপনী দুইনোঁ হাথোঁসে মৰ্দন কৰনী লগী।

গোপীসকলৰ কৃষ্ণ-গীত :—ইয়াৰ পাছত শ্ৰীকৃষ্ণৰ আদেশ মতে গোপাঙ্গনাসকল শাবীপাতি গীত গাই ঘৰলৈ যাব ধৰিছে। মহাৰাজ পৰীক্ষিতে ভাগৱত কথা শুনিব ধৰিছে।

গোপীয়োঁকী কৃষ্ণগীত : ইসকে বাদ শ্ৰীকৃষ্ণকী আদেগা-নুসার গোপাংগনাগণ পংক্তি বনাकर गीत गाकर घर जा रही हैं।



ৰাজ পৰীক্ষিত।

শুকদেৱ।



গোপীসবে কৃষ্ণ কথা কৈছা।

গোপীসকল ঘৰ পাই সকলো গোপী মিলি এঠাইত বহি
পৰস্পৰে হাত দাঙি দাঙি শ্ৰীকৃষ্ণৰ সেই আচৰিত আচৰিত কথা-
বোৰৰ গুণ-গাণ কৰিছে।

ঘৰ পঁহুচকৰ সৰ্বী গোপীয়াঁ মিলকৰ এক জগহ বঁঠকৰ
হাথ উঠা উঠাকৰ শ্ৰীকৃষ্ণকী উন অজীৱ বাতীকা গুণগান
কৰ रही हैं।

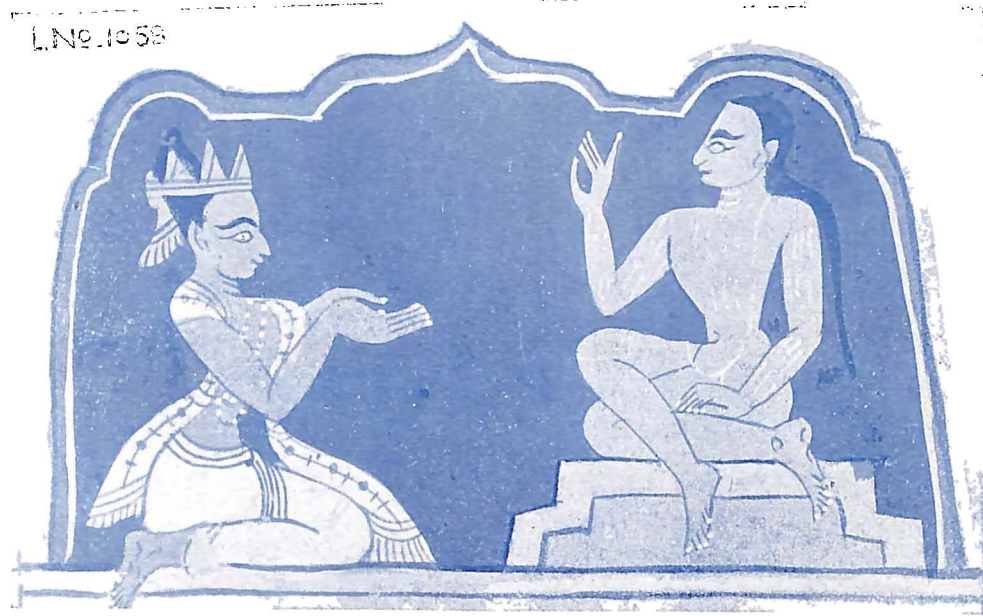


গোধূলি কৃষ্ণ আসিবা বাৰ্তা, যশোদাত গোপী কৈছা।

ব্ৰহ্মা কহুদেৱতাগণে কৃষ্ণক পন্থত নমিছা।

কৃষ্ণ গধূলি পৰত লগৰীয়া গোপসকলৰ সৈতে গৰু চৰাই
ঘৰলৈ উভতি আহিব ধৰিছে। এই খবৰ কোনো এজনী গোপী
আহি যশোদাত কৈছে। যশোদা সেই সময়ত এখন আসনত

গ্ৰামকী কৃষ্ণ সাথী গোপবালকীকী সাথ গী চৰাকৰ ঘৰ আ
রहै हैं। इस खबरकी कोई एक गोपी आकर यशोदासे कहती है।
यशोदा उस समय एक आसनपर बैठी है और पीछे एक गोपी



বাজা পরীক্ষিত ।

শুকদেব ।

বহি আছে আৰু পিছ ফালে থাকি এজনী গোপীয়ে চৌৱৰেবে তেওঁক বিচিব ধৰিছে । কৃষ্ণ আগত, পিছত বলৰাম, বাঁহী বজাই গীত গাই বাচুব লৈ ঘৰলৈ আহিব ধৰিছে ; মাজ বাটতে মহাদেৱে লগ পাই পৰম পুৰুষ জানি আঠুলৈ স্তুতি কৰিব ধৰিছে । মহাবাজ পৰীক্ষিতে প্ৰশ্ন কৰিব ধৰিছে আৰু শुकদেৱে ভাগৱত কব ধৰিছে ।

চঁৱৰ ডুলা ৰছী হৈ । কৃষ্ণ সামনি, পীঠি বলৰাম, বাঁসুৰী বজা বজাকৰ বহুড়ীকী লৈকৰ ঘৰ আ ৰহি হৈ । বীচ ৰাহমে মিলনিপৰ মহাদেব পৰমপুৰুষ জানকৰ ঘুটনে টেককৰ স্তুতি কৰ ৰহি হৈ । মহাৰাজা পৰীক্ষিত প্ৰশ্ন পুছতি হৈ আৰু শुकদেব ভাগৱত কহ ৰহি হৈ ।

অৰিষ্ঠাসুৰ বধ :—বাসৰ সময়ত গন্ধৰ্বসকলে নৃত্যগীত কৰি পুষ্প-বৰষা দেখি অৰিষ্ঠ নামৰ কংসৰ অনুচৰ এক যক্ষই ভয়ানক

অৰিষ্ঠাসুৰ বধ : ৰাসকে সময়মে গন্ধৰ্বকী নৃত্যগীত আৰু পুষ্পবৃষ্টি কৰতি দেখকৰ অৰিষ্ঠ নামকা কংসকা অনুচৰ এক যক্ষ



অবিষ্ট।

গোপব কাক্ত হাত থৈয়া কৃষ্ণে অবিষ্টক মাতিছ।

বাম।

গোপী।

বৃষভ আকৃতিৰে আহি অনিষ্ট কৰিবৰ অভিপ্ৰায়ে গোকুলত সোমায়। তাক দেখি ব্ৰজবাসীসকল ভীত হৈ শ্ৰীকৃষ্ণৰ শৰণাপন্ন হয়। তেতিয়া কৃষ্ণই সেই অবিষ্টৰ ফালে মুখ কৰি আগহাতেবে নিৰ্ভয় দিছে আৰু বাওঁহাতখন পিছৰ ফালে কৰি নিজৰ পিছত অহা গোপৰ গাত লগাই দি তেওঁলোকক আগবাঢ়ি আহিবলৈ হে যেন বাধ্য কৰিছে। গোপৰ পিছফালে বলৰামো যেন যুজিবলৈহে আহিছে। বলৰামৰ পিছৰফালে গোপী এজনী আন এজনী গোপীব গলত ভয়ত যেন সারটমাৰি ধৰিছে আৰু সিজনী গোপীয়ে “ভয় নাই, মনে মনে থাক” এই বুলি আগহাত তুলি যেন বাধা দিছে।

যেতিয়া গোপসকলৰ সৈতে কৃষ্ণ সেই অবিষ্টৰ অভিমুখে খেদি গল, তেতিয়া বৃষভ-কপী অবিষ্টয়ো লেজ ওপৰলৈ তুলি মূৰটো অলপ তলমূৰা কৰি শিং পাতি যুজিবৰ মনে কৃষ্ণৰ ফালে খোজ ললে। কৃষ্ণই

ময়ানক বৃষভাকৃতিমে অনিষ্ট কৰনিকৈ অভিপ্ৰায়সে গোকুলমে আ ঘূসা। উসে দেখকৰ ব্ৰজবাসীগণ ভীত হোকৰ শ্ৰীকৃষ্ণকে শরণাপন্ন হুএ। তব কৃষ্ণ উস অরিষ্টকী অর মুঁহ কৰকে দাহিনী হাথসে নিৰ্ভয় কৰতে হুয়ে অর বাঁয়ে হাথসে অর্পন পীঙ্কে আএ হুয়ে গোপগণীকী অর্গি বড় অর্নমে মানী মনা কৰ রহে হৈ। গোপীকী পীঙ্কে বলরামভী মানী লড়নিকী লিএ হী আয়ে হৈ। বলরামকে পীঙ্কে এক গোপী দূসরী গোপীকী গলমে ডরসে মানী জকড় রহী হৈ অর দূসরী গোপী “ডর নহী হৈ চুপ রহী” যহ কহ কৰ দাহিনী হাথসে মানী মনাহী কৰ রহী হৈ।

জব গোপীকী সাথ কৃষ্ণ উস অরিষ্টকী অর গয়ে তব বৃষভৰূপী অরিষ্ট ভী পুঁছ জপৰ উঠাকৰ সিরকী জরা ঝুকাকৰ সীগ তানকৰ লড়নিকী ইচ্ছাসে কৃষ্ণকী অর লপকা। কৃষ্ণ ভী অরিষ্টকী অর



অৰিষ্ট।

কৃষ্ণ।

বাম।

শ্ৰীদাম।

গোপী।

আগৰ দৰে পিছৰ লগৰীয়া গোপৰ গাত হাত দি অৰিষ্টৰ ফালে আগি বঢ়ে। বালরাম আৰু গোপীমী পীছেকী আৰু পহলেকী
আঙুৱালে। বলবাম আৰু গোপীও পিছৰ ফালে আগৰ দৰে থাকিল। তৰহৱহী।



অৰিষ্ট।

কৃষ্ণ।

বাম।

শ্ৰীদাম।

গোপী।

অৰিষ্ট যুক্তিবৰ মনে ফেৰ পাতি কৃষ্ণৰ ফালে অহা দেখি কৃষ্ণই
লগত অহা গোপসকলক তৎক্ষণাৎ এৰি আহি অৰিষ্টৰ শিৰ জোৰাত
অৱিষ্টকো লড়ৈনকী ইচ্ছাসে পৈতৰে বদলত দেখি কৃষ্ণ সাধমৈ
আৰু হুণ গোপীকো পীছে কীড় আগি বঢ়কৰ অৱিষ্টকে দুটা সিঁগীকো

দৃঢ়মুঠিবে ধরিলেহি। তাকে দেখি বলদের লবি আই কৃষ্ণ
পিছত উপস্থিত হল। আৰু শ্ৰীদাম আৰু গোপীবিনাকো
বলদেৱৰ পিছত আচৰিত হৈ হাত দাঙি থিয় দিলে।

জোরসে পকড় লিয়া। उसे দেখক বলদেব দৌড়ক
কৃষ্ণকে পৌছে আগয়ে আৰু শ্ৰীদাম আৰু গোপিয়াঁ
মৌ বলদেবকে পৌছে চকিত হৌক দেখনে লগী।



সিদ্ধ।

বিদ্যাধৰ।

দেৱনাৰী পুষ্পবৃষ্টি কৰিছ।

গন্ধৰ্ব।



কৃষ্ণে অৰিষ্টক বধিলা।

ৰাম।

বহুদাম।

গোপী।

ভগবান কৃষ্ণই অৰিষ্টক মাৰি পেলালে; সি মাটিত মুখথেকেচা
খাই বাগৰি পৰিল। তেতিয়া কৃষ্ণই তাৰ মূৰত ভৰি দি শিংজোৰা
উভাবিলে—এটা শিং আগহাতত আৰু আনটো শিং বাওঁহাতেবে
কাকত তুলি ললে। বলদেৱ আৰু অন্যান্য গোপ গোপীবিলাক

ভগবান কৃষ্ণনে অৰিষ্টকো মাৰি ডালা। বহু পৃথীপৰ গিৰ
পড়া। তৰ কৃষ্ণনে उसके सिरपर पैर रखकर सींगोंको उखाड़,
एक सींगको दाहिने हाथमें और दूसरेको बाँये हाथसे कंधेपर
रख लिया। बलदेव और दूसरे गोप गोपियाँ अचरजमें आकर

আচরিত হৈ কৃষ্ণৰ পিছফালে থিয় দিলে। ইফালে স্বৰ্গবাসীসকলে এই ঘটনা দেখি আনন্দিত হল। সিদ্ধবিলাকে হাতজোৰ কৰি স্তব কৰিব ধৰিলে, বিদ্যাধৰে খোল তাল ধৰি নৃত্য কৰিলে, দেৱাঙ্গনাসকলে আঠু লৈ বহি কট্টিবপবা ফুল লৈ পুষ্পবৃষ্টি কৰিলে।

পীছে খুড়ি হৈ। ইধৰ স্বৰ্গবাসীগণ ইস ঘটনাসে আনন্দিত হৈকর हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे। विद्याधर खोल ताल लेकर नृत्य करने लगे और देवांगनायें पुष्पवृष्टि करने लगे।



ৰোহিণী।

যশোদা।

নন্দ।

কৃষ্ণ।

বাম।

শ্ৰীদাম।

সুদাম।

ভগবান কৃষ্ণই এইদৰে অবিষ্টাস্বৰক বধ কৰি বলৰাম আৰু অক্ষয় গোপব সৈতে ব্ৰজলৈ উভতি গল। পুত্ৰৰ এই আচৰিত ঘটনা শুনি নন্দ-যশোদা আদি আনন্দিত হল। বজা নন্দই নিজে এখন আসনত বহি কাষতে কৃষ্ণ আৰু বলৰামক আসনত বহুৱাই আনন্দ লাভ কৰিলে। ৰোহিণী আৰু যশোদায়ো বজা নন্দৰ কাষতে

भगवान कृष्ण अरिष्टासुरका वध कर बलराम आदि सहित ब्रजको लौट आये। पुत्रकी इस अजीब घटना सुनकर नन्द यशोदा आदिकी बहुत आनन्द हुआ। राजा नन्द एक आसनपर बैठकर पासही कृष्ण और बलरामकी बिठाकर आनन्द मनाने लगे। रोहिणी और यशोदाभी राजा नन्दके पास खड़ी होकर इस

থিয় হৈ এই আনন্দ উৎসবত যেন যোগহে দিছে। বনদেবর পিছব ফালে কাষতলিত শিঙা লৈ শ্রীদাম আৰু তাৰ পিছব ফালে সুদাম এনেয়ে থিয় হৈ আছে।

आनन्द उत्सवमें भाग ले रही हैं। बलदेवकी पीछेकी तरफ भुजाके नीचे सींगा दबाये श्रीदाम और उसके पीछे सुदाम खड़ा है।



দৈৱকী-বশুদেৱ।

নাৰদে কংসত কৃষ্ণৰ কথা কহিছা।

অৱুতৰ।

নাৰদৰ আগমন :—কৃষ্ণ আৰু বলৰাম এইভাৱে ছদ্মবেশে গোকুলত আছে। এদিন দেৱৰ্ষি নাৰদ বাওঁহাতে বীণা লৈ কংস-বাজৰ ওচৰত উপস্থিত হল আৰু বশুদেৱে কৃষ্ণক গোকুলত লুকাই ৰখা সংবাদ দিলেহি। তাকে শুনি কংসই আগহাতেৰে খড়্গ তুলি আৰু বাওঁহাতেৰে ঢাল লৈ বশুদেৱক কাটিবলৈ উত্তত হোৱাত নাৰদে বাধা দিলে। সেই সময়ত বশুদেৱ-দৈৱকী মুখামুখি কৰি এঠাইত বহি আছে। নাৰদৰ বাধাত কংস নিবৃত্ত হৈ এখন

নারদকা আগমন : কৃষ্ণ আৰু বলৰাম ছদ্মবেশে গোকুলত আছে। এক দিন দেৱৰ্ষি নাৰদ বায়ে' হাথমে বীণা লৈ কংস রাজাকে পাস হাজির हुए और वसुदेवकी कृष्णको गोकुलमें छिपा रखनेकी खबर दी। उसे सुनकर कंस दाहिने हाथसे खड्ग उठाकर और बाये' हाथसे ढाल लेकर वसुदेवकी काटनेके लिए जब उद्यत हुआ तब नारदने मना किया। उस समय वसुदेव दैवकी आमने सामने बैठे हैं। नारदकी मनाहीसे कंस एक

সিংহাসনত বহিল। পিছৰ ফালে এটা অনুচৰে থিয় দি ছাতা
ধৰিলে। বজা কংসৰ সন্মুখৰ ফালে এখন আসনত নাৰদ ঋষিও
বীণাখন ছয়ো হাতেৰে ধাৰ বহিল।



চান্দুৰ।

ছত্ৰধৰা।

কংসে কেশীক গোকুলক পংচিছা।

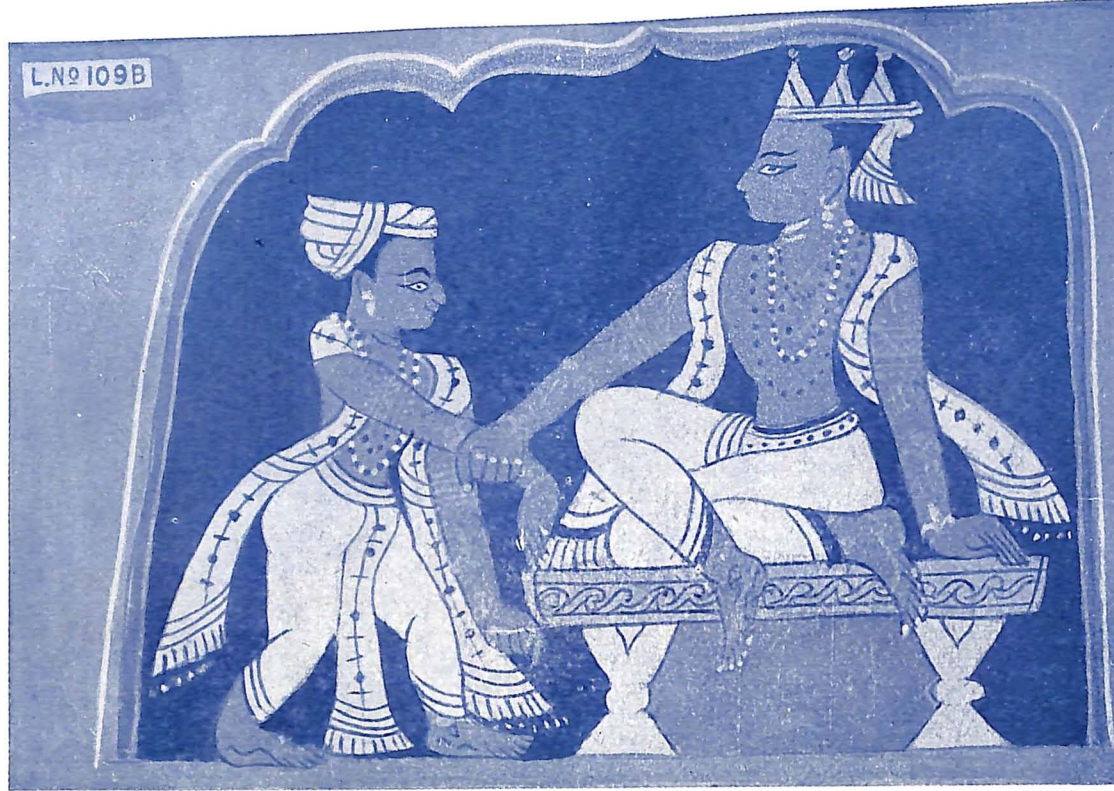
মুষ্টিক।

শল্ল।

তোমৰ।

বজা কংসই নাৰদৰপৰা কৃষ্ণৰ সংবাদ পাই ভীত হৈ কেনেকৈ
কৃষ্ণক মাৰিব পাৰিব তাৰ আলোচনা কৰিবলৈ দৈত্যসকলক
মাতিলে। কংসৰ আদেশত দৈত্যাৰিনাক আহি কংসৰ ওচৰত
আঠু লৈ হাতযোৰ কৰি আদেশ পাবলৈ বাট চাই বহিল। বজা
সিংহাসনত বহিছে, অনুচৰে ওপৰত ছত্ৰ ধৰিছে। বজাৰ পিছৰ
ফালে চান্দুৰে আগহাতেৰে তৰোৱাল, বাওঁহাতেৰে ঢাল লৈ
বহিছে। সন্মুখৰ ফালে হাতজোৰ কৰি কেশী, মুষ্টিক, শল্ল আৰু
তোমৰ বহিছে।

নাৰদ দ্বাৰা কৃষ্ণ-সংবাদে ভয়भीত রাজা কংস কৃষ্ণক
মাৰণকী योजना নিশ্চিত কৰণকৈ উদ্দেশ্যে দৈত्योंকী বুলায়া।
রাজা কংসকে আदेशसे दैत्य पास आकर घुटने टेककर हाथ
जाड़े खड़े हैं। राजा सिंहासनपर बैठा है, अनुचर ऊपर छत्र
डुला रहा है। राजाके पीछे चाणुर दाहिने हाथमें तलवार,
बायें हाथमें ढाल लिये बैठा है। सामने हाथ जोड़कर केशी,
मुष्टिक, मनु और तोमर बैठे हैं।



অক্রূৰ ।

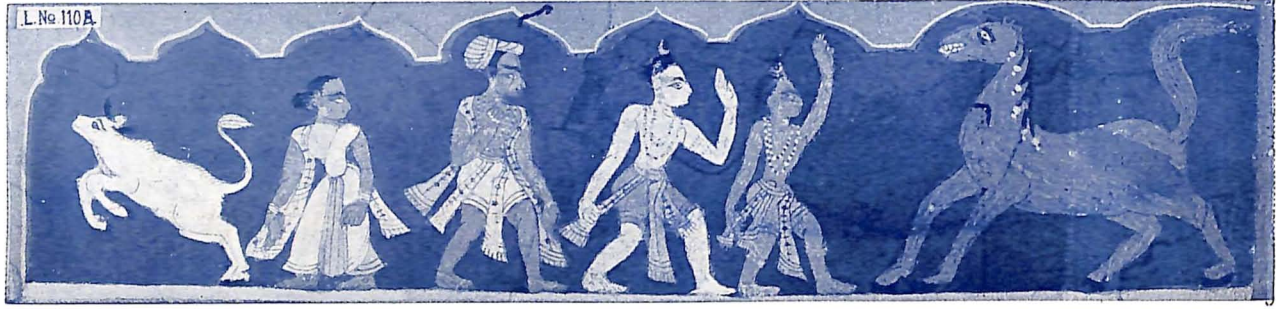
কংস ।

মন্ত্ৰীসকলৰ লগত পৰামৰ্শ কৰি ৰজা কংসই ইয়াকে ঠিক কৰিলে যে অক্রূৰ কৃষ্ণৰ মিত্ৰ; তেওঁৰ হতুৱাই কৃষ্ণক মাতি আনি মাৰিব লাগিব। এই বুলি অক্রূৰক মতাই অনাই ৰজা কংসই অক্রূৰৰ

মন্ত্ৰীসকলৰ সৈতে সলাহ কৰি ৰাজা কংসই এই নিশ্চয় কৰিছিল যে অক্রূৰ কৃষ্ণৰ মিত্ৰ হৈছে; তাকে দ্বাৰাহী কৃষ্ণকো বুলি কৰি মৰাৰ হোৱা হ'ব। এই সিদ্ধান্ত কৰি অক্রূৰকো বুলি কৰি ৰাজা কংসই

हातत धरि गोकुलक यावतै अनुबोध कबिछे । अक्रूर बजा कंसब ओचबत थिय दि आछे । कंसइ एखन आसनत बहि अक्रूरब हातत धरि आछे ।

अक्रूरसे गोकुल जानिके लिये अनुरोध कर रहा है । अक्रूर राजा कंसके पास खड़ा है ।



अक्रूर गौ केशीब गोकुल प्रवेण ।

केशी-वध :—इतिमधे केशी नामे दैत्यइ कंसब आदेश-अनुसारे अश्वरूप धरि गोकुलत सोमाइ सकलो गोप, गोपी आक गोकुलबोबर महात्रास लगाइ दिले । सेइ अश्वरूपी दानवे दाँत सेकेताइ मुख आक लेख ओपवतै तूलि कृष्णक माबिवतै खेदा दिछे । तेतिया कृष्ण आक बलबामे ओ युद्ध कबाब ईच्छाते हात दाँडि केशीक खेदि गैछे । केशीब तयत गरु-गाई भय खाई लब दिछे, गरुब पाहते एजनौ गोपीयेओ तयातुब है पिछब पिये चाई चाई लबिछे । एजन गोपो भय खाई आछे ।

येतिया केशी दैत्यइ कृष्णक खाँ वुलि खेदा माबि आहिल, तेतिया कृष्णइ छल कबि तार पिछ भबि छुखनत सारोटी माबि धरि

केशी वध : इसी बीच केशी नामके दैत्यने कंसके आदेशानुसार अश्वका रूप धर कर गोकुलमें सभी गोप, गोपियाँ और गौओंका महा त्रास होने लगा । वह अश्वरूपी दानव दाँत निकालकर मुँह और पूँछ ऊपर उठाकर कृष्णको मारनेके लिए झपटता है । तब कृष्ण और बलराम भी युद्ध करनेकी इच्छासे हाथ उठाकर केशीकी ओर झपटते हैं । केशीके डरसे गायें भाग रही हैं । उनके पीछे गोपीभी भयातुर होकर पीछेकी ओर देख कर भाग रही है ।

जब केशी दैत्य कृष्णकी ओर मुँह फैलाकर आया, तो कृष्णने छल करके उसके पीछेके दोनों पैरोंकी पकड़कर ऊपर उठाकर



কৃষ্ণ কেশীক বধ কৰিছা।

ওপৰলৈ তুলি কিছুপৰ আকাশত ঘূৰাই আছিল। পাছত লীলা কৰাৰ উদ্দেশ্যে তাক মাটিত পেলাই দিলত সি মুখ মেলি খাবলৈ পুনৰ আহিল; তেতিয়া কৃষ্ণই তাৰ সেই পৰ্বতৰ গুহা সদৃশ মুখৰ ভিতৰত বাঁওহাতখন সুমাই দি কেশীৰ উশাহ বন্ধ কৰি মাৰি পেলালে—কেশী দাঁত নিকতাই আঠুকাটি পৰি থাকিল।

আসমানম্নে খুব ঘুমায়া। বাদম্নে লোলা কৰনেকো উদ্দেশ্যে সেই জমীনপর फिक देनेपर वह मुँह खोलकर खानेको लिए फिर आया; तब कृष्णने उसकी पहाड़की गुफा जैसे मुँहके भीतर अपनी बायें हाथको घुसा कर श्वास-प्रश्वास बंद कर केशीको मार डाला। केशी दाँत निकालकर पड़ गया।

কেশীক মাৰা দেখি দেৱতাবিলাকে স্বৰ্গত আনন্দ কৰিছে। এক হাতত ত্ৰিশূল আন হাতত ডমক লৈ ব্ৰহ্মত উঠি মহাদেৱ, হংসবাহনত চৰি কমণ্ডলু, জপমালা, পদ্ম আৰু বেদলৈ চতুৰ্মুখ ব্ৰহ্মা আৰু কোনোৱে খোল, কোনোৱে বা তাল লৈ নৃত্য-গীত

केशीको मारते देखकर देवता स्वर्गमें आनन्द मना रहे हैं। एक हाथमें त्रिशूल, दूसरे हाथमें डंकर लेकर ब्रह्मपर चढ़कर महादेव, हंसवाहन पर चढ़कर कमंडलु, जपमाला, कमल और वेद लेकर चतुर्मुख ब्रह्मा और नाना वाद्ययंत्र लेकर नृत्यगीत



দেবতাগণ ।

মহেশ ।

ব্রহ্মা ।

বিঘ্নেশ্বর ।



কেশী মৰিল ।

গোবাল ।

কুম্ভ ।

গোপগণে কুম্ভক পূজিছা ।

গোপী ।

করি গন্ধর্বসকলে আনন্দিত হৈ আকাশত হর্ষ করিছে। কেশী যেতিয়া মরি মুখঠেকেচা খাই পবি বল, তেতিয়া ভগবান কুম্ভই তার মুখবপরা হাতখন উলিয়াই আনিলে। পিছত কুম্ভ এখন আসনত বহিলত এজন গোপ-বালকে বাওঁহাতত এটা পাত্র লৈ কুম্ভের কাষত

করতি করতি আনন্দিত হৌকর গন্ধর্বগণ আকাশमें हर्ष मना रहै हैं। केशी जब जीभ निकालकर पड़ गया तब भगवान् कृष्णने उसके मुँहसे अपना हाथ निकाल लिया। गोपबालक कृष्णकी अरच मगन कर उनके सालने प्रेमसे खानेकी चीज देरहे हैं और



নারদে কৃষ্ণক তুতি কবিছা।

বহিল আৰু আগহাতেৰে কিবাকিবি খোৱা বস্তু কৃষ্ণক দিলে। ভগবান হাৰিত মনসে খৌকাৰ হৰি হৈ। নাৰদ ঋষিয়ী ভগবান কৃষ্ণই সেই খোৱা বস্তু আগহাত পাতি লৈছে আৰু অত্যাৱ গোপ-কৃষ্ণক স্তুতি মনা ৰহি হৈ। গোপীয়ে কৃষ্ণক বেচি বহিছে। নাৰদে কৃষ্ণক তুতি কবিছে।



পৰীক্ষিত ।

শুকদেব ।



স্বদাম ।

কৃষ্ণ ।

বোম ।

বোমাস্তবে গহ্বৰত চুৰি কৰি থৈছা ।

ব্যোমাসুব বধ :—ভগবান কৃষ্ণই গোপ-বালকবিলাকৰ লগত বিবিধ ক্রীড়া কৰি আছে। এদিন গোপ-বালকবিলাকৰ কোনো সদাগৰ, কোনো ভৈৰা-ছাগলী আৰু কোনো চোৰৰ ভাৱৰীয়া হৈ “চোৰ-সদাগৰী” ক্রীড়া আৰম্ভ কৰিলে; এই সময়ত কংসৰ অনুচৰ বোম নামে এটা অশুৰে চোৰৰ ওচৰত চোৰ আৰু সদাগৰৰ ওচৰত সদাগৰ হৈ বহুত গোপবালকক চুব কৰি এটা গুহাত নি থলে আৰু গুহাৰ মুখত শিলৰ এখন ঢাকনি দিলে। সেই সময়ত কৃষ্ণ থিয় দি আছিল; সুদামো কৃষ্ণৰ পিছ ফালে থিয় দি বৈছে। মহাৰাজ পৰীক্ষিতৰ প্ৰশ্নত শুকদেৱে ভাগৱত কৈছে।

ব্যোমাসুর বধ : भगवान कृष्णके गोपबालकोंके साथ विविध क्रीडान्नोंमें रत रहते हुए एकदिन व्योम नामक कंसका अनुचर बहुतसे गोपबालकोंको चुराकर एक गुफामें छिपाकर गुफाकी मुँहकी पत्थरसे ढाँक दिया। उस समय कृष्ण खड़े थे; सुदामभी कृष्णके पीछेकी तरफ खड़ा है। महाराज परीक्षितका प्रश्न सुनकर शुकदेव भागवत कह रहा है।



দেৱতা।



গোপগণ ।

কৃষ্ণে বোমক বধিছা ।

বোমাসুরে একজন একজনকৈ গোপ-বালক চুর কৰি নিওঁতে নিওঁতে যেতিয়া কেৱলমাত্ৰ ৫১৬ জন গোপবালক বাকী থকা কৃষ্ণই দেখিলে, তেতিয়া শেষ বাৰ দৈত্য আহোঁতে তেওঁ তাৰ চুলিত ধৰি মাটিত আচাৰ মাৰি দিলে। ভীষণ কৃষ্ণবৰ্ণ বিপুলকায় সেই অসুৰ ততালিকে দাঁত নিকতাই মৰি গল। সেই সময়ত অৱশিষ্ট গোপ-বালকবিলাক কৃষ্ণৰ কাষত থিয় দি আছে; আৰু আকাশত দেৱতাবিলাকে আগহাত দাঙি কৃষ্ণৰ প্ৰশংসা কাঁবছে।

দেৱতাসকলে আকাশত খোল-তাল বজাই নৃত্য-গীত কৰিছে। কৃষ্ণই অসুৰক মাৰি গোপ-বালকবিলাকৰ সৈতে বেণু বজাই আগত ধেমু-বৎস লৈ গোকুললৈ উভতিব ধৰিছে। আগে আগে গৰুবোৰ

অ্যোমাসুৰ এক এক কৰ গোপবালকীকী চুৱা কৰ লৈ গয়া। তব কৃষ্ণানে আখিৰীবাৰ উসে জাতি দেখে উসকে বালীকী পকড় কৰ জমীন পৰ দে মাৰা। মাৰকে মকহিত বহু ভীষণকায় অসুৰ দাঁত নিকাল কৰ গিৰ কৰ মৰ গয়া; দেবগণ হৰ্ষান্নিত হী ভগবান্কা গুণগান কৰনি লগি।

দেবগণ আকাশমৈ বায় বজাকৰ নৃত্য গীত কৰ রহৈ হৈ। কৃষ্ণা অসুৰকী মাৰকৰ গোপবালকীকী সাথ বেনু বজাকৰ আগি ধেনু-বৎস লিকৰ গোকুল লীট রহৈ হৈ। আগি আগি গৌণ' জা রহী হৈ অঁৱ পীছি



দেবতাসব ।



যশোদা ।

কৃষ্ণ ।

কৃষ্ণে গোপসমে গোকুলক যান্ত ।

গৈছে আৰু পিছত গোপ-বালকৰ সৈতে কৃষ্ণ যাব ধৰিছে। কৃষ্ণ পীছে গোপবালকীকৈ সাথ কৃষ্ণ আৱহি হৈঁ। কৃষ্ণকৈ গোকুল
গোকুল পালত যশোদাই কৃষ্ণক কাষত বহুৱালে আৰু ছয়ো হাত পহুঁ চনী পৰ যশোদা কৃষ্ণসৈ ঘটনাকা বিবৰণ সুনৱহী হৈঁ।
তুলি যেন কিবা আচৰিত ঘটনাৰ বিৱৰণহে শুনিব ধৰিছে।



অক্রূৰে গোকুলক যান্ত।

অক্রূৰৰ আগমন :—ইফালে বজা কংসৰ আদেশমতে মহা-
মতি অক্রূৰে বিচিত্ৰ ঘোৰাৰ মনোহৰ বথত উঠি নিজ বথ চনাই
গোকুলৰ ফালে যাত্ৰা কৰিছে।

অক্রূৰকা আগমন : ইধৰ ৰাজা কংসকৈ আদিগানুসার
মহামতি অক্রূৰ বিচিত্ৰ ঘোড়াঁকৈ মনোহৰ ৰথ পৰ চড়কৰ খুদ ৰথ
হাঁক কৰ গোকুলকী আঁৱ যাত্ৰা কৰ ৱহি হৈঁ।



অক্রূবে কৃষ্ণব খোজ নমিছা ।

মহাত্মা কৃষ্ণভক্ত অক্রূব গোধূলি পৰত গোকুল পালে গৈ ।
তেওঁ পথত কৃষ্ণব ধ্বজ, বজ্র, যব, পঙ্কজ, অক্ষুশ শোভিত পদচিহ্ন
দেখি বথৰ পৰা নামিল আৰু “এই মোৰ প্ৰভুৰ পদচিহ্ন” বুলি
অতি প্ৰেমভাৱে আঠু লৈ প্ৰণাম কৰিলে ।

অক্রূব পুনৰ বথত উঠি কিছুদূৰ গৈ বথৰ পৰা নামিল ।
এই সময়ত ৰাম-কৃষ্ণই গাই খীৰাব ধৰিছে । অক্রূবে দৃবৈৰ পৰা

महात्मा कृष्णभक्त अक्रूर शामके समय गोकुल पहुँचे । रास्तेमें
ध्वजा, बज्र, यव, पंकज, अक्षुशसे शोभित कृष्ण-पदचिह्नोंको देखकर
रथसे उतरे और “यह मेरे प्रभुके पदचिह्न” समझकर अत्यंत
प्रेमभावसे घुटने टेककर प्रणाम किया ।

अक्रूर फिर रथपर चढ़कर कुछ दूर आकर रथसे उतरे । इस
समय राम-कृष्ण गायोंको दुह रहे थे । अक्रूर दूरसे देखकर



বনবাস ।

কৃষ্ণ ।

অক্রূব ।

বথত অক্রূব ।

আনন্দমনে ওচর চাপিল আরু কৃষ্ণর ভবিত প্রণাম কবিবলৈ হাত
ছুখন আগ বঢ়াই দিছে । কৃষ্ণই বাধা দি অক্রূব হাত ছুখনত
ধরিছে । বামে কৃষ্ণর পিছর ফালে থিয় দি ছয়ো হাত মেলি
অক্রূবক স্বাগত সম্ভাষণ জনাইছে ।

আনন্দমনসে পাস গয়ে আরু কৃষ্ণকে চরণোঁমি প্রণাম করনিকৈ লিঞ
দোনোঁ হাথ বঢ়া রহিঁ হৈঁ । কৃষ্ণ মনা কর অক্রূরকৈ দোনোঁ হাথ
পকড় রহিঁ হৈঁ । রাম কৃষ্ণকৈ পৌছেকী तरफ खड़े होकर दोनोँ
हाथ फैलाकर अक्रूरका स्वागत मत्कार कर रहै हैँ ।



নন্দ ।

কৃষ্ণে অক্রূবর চরণ ধুরাইছে ।

বামকৃষ্ণে অক্রূবর চরণ বাস্তুচি ।

নন্দ ।

কৃষ্ণ আরু বলরামে “আহক খুবা” বুলি অক্রূবক সমাদর
কবি ঘবলৈ নি সুরগ আসনত বহুরাইছে । সুরগ ভূঙ্গাবেবে

কৃষ্ণ আরু বলরাম “आइए चाचा” कह कर अक्रूरको
आदर सहित घर ले जाकर मोनिके आसनपर बैठाया । सोनिकी

বলৰামে পানী ঢালি দিছে আৰু কৃষ্ণই নিজে চৰণ ধুৱাইছে। অক্রূৰৰ পিছ ফালে বহি গোপৰাজ নন্দই ভায়েক অক্রূৰক গন্ধ-চন্দন এখন শৰাইত আগবঢ়াই দি বাতৰি সোধিছে। অক্রূৰে ভৰি-হাত ধুই সুস্থ হৈ আসনত বহিল, বলৰামে পিছৰ ফালে বহি হাত পিছিব ধৰিলে, আৰু আগৰ ফালে বহি কৃষ্ণই ভৰি তিপিবলৈ আৰম্ভ কৰিলে। বজা নন্দই ওচৰতে এখন আসনত বহি হাত তুলি মঙ্গল বাতৰি সোধিছে।

ভাৰীসে বলৰাম পানী ঢাল দিছে আৰু কৃষ্ণ চৰণীকো ধোৱা কৰিছে। অক্রূৰক পিছৰ ফালে বহুৱাই গোপৰাজ নন্দই ভায়েক অক্রূৰক গন্ধ, চন্দন এক টগীমি আগ বঢ়াই কুশল মংগল পূৰ্ণ কৰিছে। অক্রূৰ হাত পৈৰ ধৌকৰ স্বস্থ হৌকৰ আসনপৰ বৈঠে হৈ। বলৰাম পিছৰ ফালে বহুৱাই হাত মলনে লগি আৰু সামনেকী ফালে বহুৱাই কৃষ্ণ পানী দিয়া কৰিছে। ৰাজা নন্দ পাৰ্শ্বত এক আসনপৰ বহুৱাই সংভাষণ কৰিছে।



অক্রূৰ।

কৃষ্ণ।

ৰাম।

ইয়ার পিছত অক্রুর, কৃষ্ণ আৰু বলৰাম পৃথক পৃথক আসনত বহি সকলোৱে হাত তুলি গোপনে গোপনে যেন কিবা আলোচনা কৰিবলৈ ধৰিলে।

ইমকে বাদ অক্রুর, কৃষ্ণ আৰু বলৰাম আদি পৃথক পৃথক আসনপৰ বৈঠ বাৰ্তালাপ কৰিছে।



গুৰাল।

বাম-কৃষ্ণে মথুৰাক ঘাইবাক পিতৃসমে আলোচিছা।

ভগবান কৃষ্ণই অক্রুৰৰ পৰা জানিবলৈ পালে যে কংসই তেওঁক মাৰিবলৈ ছল কৰি ধনুৰ্যজ্ঞলৈ নিমন্ত্ৰণ কৰিছে আৰু দদাক বলৰামৰ সৈতে তেওঁক নিবলৈ অক্রুৰক পঠাইছে। কৃষ্ণই এই বহুশ্রুটি পিতাকক নকৈ ধনুৰ্যজ্ঞ চাবলৈ এনেয়ে নিমন্ত্ৰণ কৰা বুলি কলে। বলৰাম, কৃষ্ণ, নন্দ আৰু এজন গোপে এই নিমন্ত্ৰণৰ বিষয় আলোচনা কৰিছে। ইফালে এজন গোপে নন্দৰ আদেশ মতে এখন গৰু গাড়ীত কিছুমান দধি-দুগ্ধ কলহ ভৰাই লৈছে।

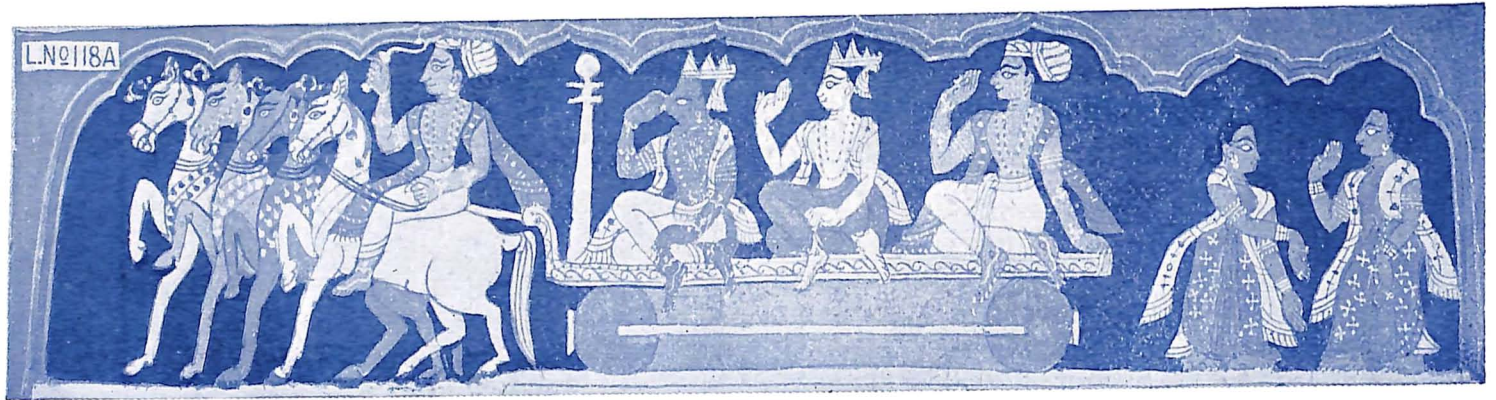
ভগবান কৃষ্ণক অক্রুৰে জ্ঞাত হুআ কি কংসে উল্লে মারনকৈ লিএ কল কৰহী ধনুৰ্যজ্ঞকৈ লিএ নিমন্ত্ৰণ দিয়া হৈ। আৰু মৈয়া বলৰামকৈ সাথ উল্লে লানকৈ লিএ অক্রুৰকৈ মৈজা হৈ। কৃষ্ণনে ইস রहस्यकी पितासे न कहकर केवल धनुर्यज्ञ निमंत्रणकीहो बात कही। बलराम, कृष्ण, नन्द और एक गोप इस निमंत्रणके बारेमें ही आलोचना कर रहे हैं। इधर एक गोप नन्दके आदेशसे एक बैलगाड़ीमें कुछ दही-दूधके घड़े रख रहा है।



গোপীসব ।

বাম-কৃষ্ণৰ মথুৰাযাত্ৰা—গোপীৰ বিলাপ :—অক্রূৰে কৃষ্ণক মথুৰালৈ নিব অহা সংবাদ পাই গোকুলত হাহাকাৰৰ বোল উঠিছে। গোপীবিনাকে ইজনীয়ে সিজনীৰ হাতত ধৰি ইজনীয়ে সিজনীৰ ফালে চাই নানা প্ৰকাৰে বেজাৰ কৰিব ধৰিছে।

राम-कृष्णकी मथुरायात्रा—गोपियोंका विलाप : अक्रूर द्वारा कृष्णकी मथुरा लेजानेकी संवादसे गोपियां व्याकुल हुईं आपसमें दूःख प्रकट कर रही हैं।



অক্রূৰ ।

কৃষ্ণ ।

বলভদ্র ।

নন্দ ।

গোপী ।

মহামতি অক্রুরের কথা মতে বাম-কৃষ্ণক মথুবালৈ যাবলৈ বজা নন্দই আদেশ দিলত অক্রুরে নিজে সারথি হৈ বথ চলালে। কৃষ্ণ, বলবাম আৰু স্বয়ং বজা নন্দ অক্রুরে বথত উঠিল। বথৰ পিছ ফালে ছুজনী গোপীয়ে পৰম্পৰে এজনীয়ে হাতযোৰ কৰাৰ দৰে কৰি আৰু আনজনীয়ে আগহাত দাঙি যেন কৈছে, যে কৃষ্ণ আমাক এৰি মথুবালৈ গল; তেওঁ যে আৰু ফিৰি আহিব আশা নাই।

মহামতি অক্রুরকৈ কথনানুসার राम कृष्णको मथुरा जानिका आदेश राजा नन्दके देनेपर अक्रूर खुद सारथि होकर रथ हाँकने लगे। कृष्ण, बलराम और स्वयं राजा नन्द अक्रूरके रथपर चढ़े। रथके पीछेकी तरफ दो गोपियाँ एक हाथ जोड़कर और दूसरी दाहिना हाथ उठाये मानो कह रही हैं कि कृष्ण हमको छोड़कर मथुरा जा रहे हैं शायदही वापिस आवें।



নন্দ।

অক্রুর।

বাম।

কৃষ্ণে গোপীক প্রবোধিছ।।

ইয়াৰ পিছত বজা নন্দই নিজে এখন গৰু-গাড়ীত যাবলৈ ধৰিলে; কৃষ্ণ-বলবাম অক্রুরে বথত গল। বথৰ পিছ ফালৰ পৰা গোপী-বিলাকে অতি কাতবভাৱে অক্রুরক গালি শাপনি দি কৃষ্ণ-বিবহত আতুৰা হৈ কান্দিবলৈ ধৰিলে। কৃষ্ণই গোপীসকলৰ ফালে ফিৰি চাই আগ হাত তুলি তেওঁলোকক বেজাৰ কৰিবলৈ হুকু দিছে। গোপীসকলক হাত তুলি যেন কৃষ্ণক যাবলৈ বাধাকেহ কৰিছে।

इसके बाद राजा नन्द खुद एक बैल गाड़ीपर जाने लगे; कृष्ण-बलराम अक्रूरके रथपर चढ़ गये। दुःखी गोपियाँ अक्रूरको कोस रही हैं और रथके पीछे पीछे जा रही हैं। कृष्ण उन्हें समझा रहे हैं पर वे कृष्णको न जानेके लिये मना रही हैं।



বাম।

কৃষ্ণ।

অক্রূৰ।

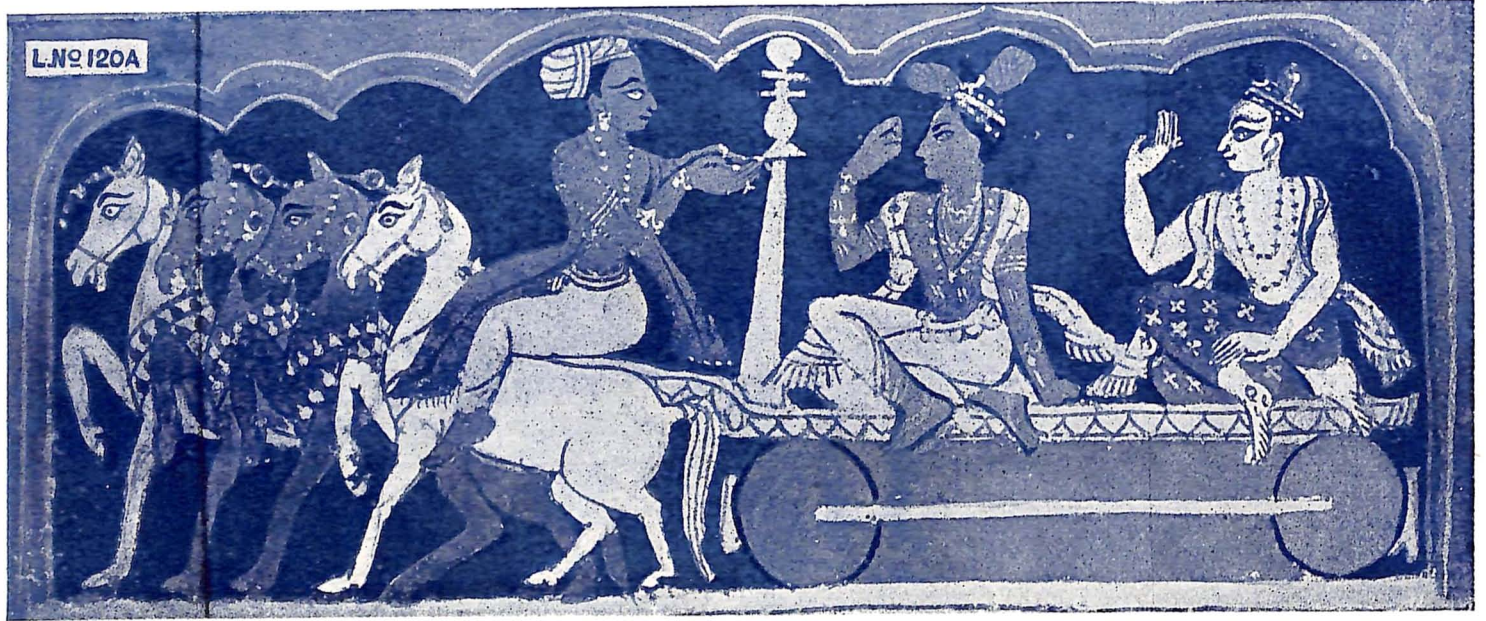
ব্রহ্মা।

পৰমেশ্বৰে অক্রূৰক দেখা দিছা।

অক্রূৰৰ কৃষ্ণ-মাহাত্ম্য দৰ্শন আৰু কৃষ্ণ-স্তৱঃ—অক্রূৰে বাম-কৃষ্ণক লৈ ছপৰ সময়ত কালিন্দী হৃদ পালে গৈ। তাত তেওঁ স্নান কৰে। বুলি কৃষ্ণ-বলৰামক বথত থৈ হৃদত ডুব মাৰোঁতে পানীৰ ভিতৰত কৃষ্ণ-বলৰামক দেখি আচৰিত হল। পানীৰ পৰা মূৰ উলিয়াই পাবলৈ চায় যে কৃষ্ণ-বলৰাম আগবদৰে বথতেই বহি আছে। নিজৰ ভ্ৰম হোৱা বুলি অক্রূৰে পুনৰ ডুব দি চায় যে ভগৱান কৃষ্ণ অনন্ত-শয্যাতে শঙ্খ-চক্ৰ-গদা-পদ্ম চাৰি হাতে ধৰি চতুৰ্ভুজ ৰূপে বহি আছে—উত্তৰত অনন্ত নাগে সহস্ৰ ৰূপাৰে ছত্ৰ ধৰিছে। সম্মুখত চতুমুখ ব্ৰহ্মাই কবচোৰে স্তুতি কৰিছে, আন ফালে সনকাদি ঋষিয়ে থিয় হৈ কবচোৰে স্তুতি কৰিছে। এনে অৱস্থা দেখি অক্রূৰে আঠুলৈ আজলি কৰি স্তৱ কৰিবলৈ ধৰিলে। বাম-কৃষ্ণই বথত বহি অক্রূৰৰ স্নান কৰা চাই আছে।

অক্রূৰকা কৃষ্ণা মাহাত্ম্য দৰ্শন আৰু কৃষ্ণ-স্তৱ :

অক্রূৰ দোপহৰকো ৰাম কৃষ্ণকো লৈকৰ কালিন্দী তটপৰ পহুঁচি। বহা স্নান কৰনেকি অৰিপ্রায়সে অক্রূৰনে জ্যো হী জলমি ডুবকী লগাই পানীকি অ'দৰ কৃষ্ণ বলৰামকী দেখক'ৰ অচৰজ হুঅ। পানীসে সির নিকালক'ৰ কিনাৰি গযে তো কৃষ্ণ বলৰাম পহলে জৈসে ৰথ পৰহী ব'ঠে হৈ। অপনা ভ্ৰম মানক'ৰ অক্রূৰনে ফিৰ ডুবকী মাৰক'ৰ দেখা কি ৰগৱান কৃষ্ণ শিষ শয্যাপ'ৰ শংখ, চক্ৰ, গদা, পদ্ম চাৰী হাথ্যমি লৈক'ৰ চতুৰ্ভুজ ৰূপসে বিৰাজমান হৈ। জপ'ৰ অনন্ত নাগ সহস্ৰ ফনোসে ছাঁহ ক'ৰ ৰক্বী হৈ। সামনে ব্ৰহ্মা হাথ জোড়ক'ৰ স্তুতি ক'ৰ ৰহে হৈ, দূস'ৰী আ'ৰ সনকাদি ঋষি খড়্গে হীক'ৰ হাথ জোড়ক'ৰ স্তুতি ক'ৰ ৰহে হৈ। এমী অৱস্থা দেখক'ৰ অক্রূৰ হাথ জোড়ক'ৰ স্তুতি ক'ৰনে লগি।



অক্রূবে কৃষ্ণক “সমস্তে অভূত তোক্ষাতেসে আছে” বুলিছা।

মহাত্মা অক্রূবে সেই অপকপ বিশ্বকপ দর্শন কবি যেতিয়া
বিস্ময়ান্বিত হল, তেতিয়া ভগবান অন্তর্হিত হল। অক্রূবে সেই
কপ দেখি আনন্দিত হৈ যথাযথ স্নানাদি ক্রিয়া সমাপন কবি
বথত উঠিলহি। তেতিয়া কৃষ্ণই হাঁহি মাৰি পলম হোৱাব
কথা স্মখিলত অক্রূবে কৃষ্ণৰ ফালে চাই কৰযোৰে তেওঁৰে
মহাত্ম্য বুলি কলে। কৃষ্ণ আৰু বলবামে হাত তুলি অক্রূবক যেন
আশ্বাস দিলে।

মহাত্মা অক্রূৰ उस अपरूप विश्वरूपका दर्शन कर जब
विस्मयान्वित हुए तब भगवान अन्तर्हित हुए। अक्रूर भी उस
रूपको देखकर आनन्दित होकर स्नानादि क्रिया समाप्त कर रथ पर
जा चढ़े। तब कृष्णने हँसकर देर करनेकी बात पुछनेपर
महাত्मा अक्रूरने कृष्णकी ओर ताककर कहा “यह आपहीकी
महिमा है”। कृष्ण और बलराम हाथ उठाकर अक्रूरको मानो
आश्वासन दे रहे हैं।



অক্রুর ।

কৃষ্ণ ।

বাণ ।

নন্দ ।

বাম-কৃষ্ণ আদির মথুরা প্রবেশ :—কৃষ্ণ-বলরামক লৈ অক্রুর বথ মথুরা পালে গৈ। মথুরাৰ ছুৱাৰত বথ লৈ অক্রুরে কবযোব কৰি কৃষ্ণ-বলরামক সেই দিনা তেওঁৰ ঘৰত আতিথ্য গ্ৰহণ কৰিবলৈ প্ৰাৰ্থনা জনালে। কৃষ্ণ-বলরামে বথৰ পৰা নামি থিয় দি আতিথ্য গ্ৰহণৰ নিষেধসূচক আগহাত তুলি পিছত থাকিল বুলি উত্তৰ দিলে। ইফালে বজা নন্দ যেতিয়া মথুরা আহি পালে তেতিয়া তেওঁক আদৰ কৰি এখন বিচিত্ৰ আসনত বহুৱাইছে। আক এজন বন্দীয়ে আগৰ ফালে আঠু লৈ বহি এটা বাটিত গন্ধ-চন্দন যোগাইছে। পিছ ফালৰ পৰা আন এজনে বহি বিচনীয়ে বিচিছে।

মনস্বী অক্রুরে কৃষ্ণ আগমমৰ বাতৰি কংসত জনাই ঘৰলৈ আহি এখন আসনত বহিল। তেওঁৰ গৃহিনীয়ে গন্ধ তেলব

বাম কৃষ্ণ আদিকা মথুরা প্ৰবেশ : কৃষ্ণ বলরামক লৈ অক্রুরক বথ মথুরা পহুঁচ গয়া। মথুরাকৈ দৰ্বাজিপর বথ যমাकर अक्रूरन कर जोड़कर कृष्ण बलरामसे उस दिनके लिए उनके घरमें आतिथ्य ग्रहण करनकी प्रार्थना की। कृष्ण बलरामभी बथसे उतर कर आतिथ्य ग्रहणका निषेध सूचक दाहिना हाथ उठाकर बादमें ठहरेंगे ऐसा कहा। इधर राजा नन्द जब मथुरा आ पहुँचे तब उनका आदर कर एक विचित्र आसनपर उन्हें बैठाया। और एक दास सामने एक कटोरिमें गंध-चन्दन दे रहा है और पाछेकी ओरसे दूसरा एक दास पंखा डुला रहा है।

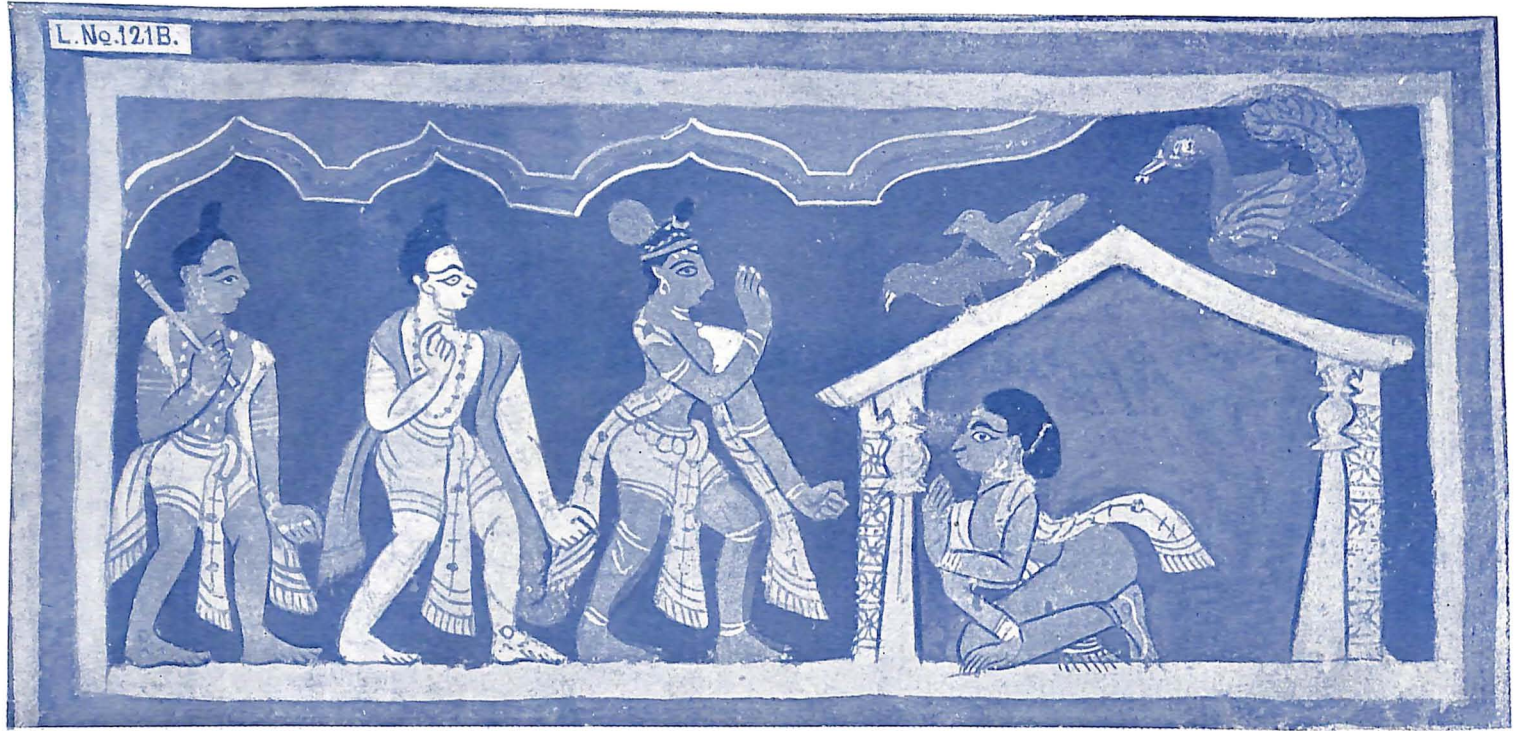
মনস্বী অক্রুর কৃষ্ণ বলরামসে আদেশ লৈকৰ 'ধৰ আ গয়ে।
উনকী পত্নীনে নৈবেদ্য সামৰনে ৰখা। ইধৰ বলরামকৈ সাথ কৃষ্ণ



অক্রুর গৃহত পশিল।

বাটি আনি আগত যোগাইছে। ইফালে বলবামব সৈতে কৃষ্ণ মথুরাত প্রবেশ করিলে। তেওঁলোকৰ পাছত হাতত বেণু লৈ গোপশিশুবিলাক যাব ধৰিছে। তেওঁলোকে বাটতে এজনী কুঁজী বমণী দেখা পালে।

मथुरामें प्रवेश कर रहे हैं। उनको पीछे हाथमें बेणु लेकर गोप-शिशुभी जानि लगे। राहमेंही कुजा नामकी एक रमणीको हाथमें गंधद्रव्य लेकर कंसके घर जाति देखा।



গোপশিখা ।

বাম ।

কৃষ্ণ ।

কুন্ডি ।

কৃষ্ণ আগত, মাজত বলদের আক পাছত সুদাম শাবীপাতি মনোহর গতিবে মথুরাব রাজবাটেদি যাব ধবা দেখি মথুরাব পুৰনারীসবে শ্রীকৃষ্ণক চাবলৈ অট্টালিকাৰ ওপৰত উঠিছে; কোনোৱে বা কৃষ্ণৰ ফালে চাই হাতযোৰ কৰিছে, কোনোৱে বা আগহাত তুলি আশ্চৰ্য্যান্বিত হৈ একেথৰে চাই আছে ।

সামনে কৃষ্ণ, बीचमें बलदेव और पीछे सुदामको पंक्ति बनाकर मनोहर गतिसे मथुराकी राजसड़कसे जाते देखकर मथुराकी पुरनारियां श्रीकृष्णको देखनेके लिए इमारतीके ऊपर चढ़ी हैं; कोई कृष्णकी और ताककर हाथ जोर रही है तो कोई चकितसी उनको निहर रहो है ।



নাবীসব কৃষ্ণক দেখিবে গৃহত চড়িছা ।

কৃষ্ণ ।

বাম ।

স্বদাম ।



ধোবা ।

কৃষ্ণে ধোবাক বধিছা ।

শুৱালে বস্ত্ৰ লৈছা ।

বজক বধ :- মথুৰাৰ ৰাজবাটে দি বলৰাম আৰু অন্যান্য গোপবালকৰ সৈতে গৈ থাকোঁতে ৰাজভবনৰ ফালে ধোৱা কাপোৰৰ বোজা লৈ যোৱা এটা ধোবাক দেখি কাপোৰ খুজিলে । ধোবাট

ৰজক বধ : মথুৱাৰাজী ৰাজসড়কসে বলৰাম আৰু দুসৰে গোপবালকীকৈ সাথ লুণ্ণনি ৰাজভবনকী আৰু এক ধোবীকী ধোণ হুণ কপড়ীকা বীভ লিকৰ জাতি দেখু ওসসে কপড়ী মাংগী । ধোবীকৈ

বাগান্নিত হৈ গালি পৰাত কৃষ্ণই চৰ মাৰি তাৰ গলটো ছিঙি পেলালে। ধোবাব মূৰ ছিঙি মাটিত পৰিল আৰু গাড়ী ডোখৰো হাত-ভৰি পেলাই বক্তাক্ত হৈ মাটিত পৰি গ'ল। বলদেৱ কৃষ্ণৰ পিছ ফালে থিয় দি আছে। ধোবা মৰিলত কৃষ্ণই ভাল ভাল কাপোৰবোৰ লগৰ গোপবালকবিলাকক ভগাই দিলে। কৃষ্ণই ধোবাক মৰা দেখি এজন মানুহে অতি দ্রুতবেগে এই খবৰটো যেন বজাত জনাবলৈ গৈছে।

ক্রোধিত হৈ গালী দেৱীপৰ ভগবাননি उसकी मार दिया और कृष्णने अच्छे अच्छे कपड़ोंकी साथके गोपबालकोंकी बाँट दिया। कृष्ण द्वारा धोबीकी मारत देखकर एक आदमी अत्यंत द्रुत वेगसे कंसके पास गया।



সুদাম।

কৃষ্ণ।

বলভদ্র।

গোপবাল।

ভগবান কৃষ্ণই তেনেকৈ ধোবাক মাৰি কংসলৈ আনা বিতোপন কাপোৰ পিন্ধি বলভদ্র আৰু গোপবালকবিলাকৰ সৈতে সুদামা মালীৰ ঘৰত সোমাল। সুদামাই অতি ভক্তিৰ সৈতে কৃষ্ণ, বলৰাম আৰু গোপসকলক আসনত বহুৱালে। পিছত মালী সুদামাই এখন শৰাইত সুগন্ধি পুষ্পৰ মালা আনি কৃষ্ণৰ আগত

भगवान कृष्ण धोबीकी मारकर कंसके कपड़े पहनकर बलभद्र और गोपबालकोंके साथ सुदामा मालीके घरमें घुसे। सुदामा अत्यंत भक्तिके साथ कृष्ण, बलराम और गोपबालकोंकी आसनपर बैठाया। बादमें माली सुदामा एक ठगीमें (फुलोंके वरतन) सुगंधी फुलोंकी माला लाकर कृष्णके सामने रखकर घुटने जोड़कर

থে আঠ জুৰি স্তুতি কৰিবলৈ ধৰিলে। কৃষ্ণই আগ হাত দাঙি
যেন সুদামাক আশীষ দিছে।

স্তুতি কৰনি লগা। কৃষ্ণ দাহিনা হাথ উঠাৰ মানো সুদামাকী
আশীষ দেৱে হৈছে।



কুঁজী।

বাম কৃষ্ণে কুঁজীত চন্দন খুজিছা।

গোবাল। কৃষ্ণে কুঁজীক ধৰু কৰিছা।

বাম। সুদাম।

কুঁজীৰ লগত কৃষ্ণ-বলৰামৰ সাক্ষাৎ :—মালাকাৰ সুদামাৰ
দ্বাৰা অভ্যর্থিত হৈ কৃষ্ণ-বলৰাম আৰু অশ্বাশ্ব গোপবালকবিলাকৰ
সৈতে মথুৰাৰ বাজবাটত গৈ থাকোঁতে কুঁজীৰ হাতত গন্ধদ্রব্য
বাটি লৈ যোৱা দেখি গন্ধ-চন্দন খুজি বৰ দিম বুলিলে। কুঁজী
কৃষ্ণত আসক্ত হৈ তেওঁলোকক গন্ধ-চন্দন দিলে। কুঁজী কৃষ্ণত
আসক্ত হোৱা জানি তেওঁৰ অভিপ্ৰায় পূৰণৰ আশায় তেওঁৰ গলত
ধৰি কৃষ্ণই আলিঙ্গন কৰিলে। কুঁজীয়ে কৃষ্ণৰ উত্তৰীয় বস্ত্ৰত
ধৰিলে কুঁজী সুন্দৰী বমণী হৈ উঠিল। কৃষ্ণৰ পিছৰ ফালে বলৰামে
হাতত বাঁহী লৈ আৰু তাৰ পিছৰ ফালে বাঁহী বজাই সুদামা থিয়
হৈ আছে।

কুঁজীৰ সাথ কৃষ্ণ-বলৰামকী সাক্ষাৎ : মালাকাৰ
সুদামাকী দ্বাৰা অভ্যর্থিত হৈ কৃষ্ণ, বলৰাম আৰু দূসৰে
গোপবালকগণ মথুৰাকী ৰাজসৰডকসে জানিকী সময় এক
কুঁজাকী হাথমে গন্ধ দ্ৰব্যকা কটোৱা লৈ জাতি দেখ গন্ধ চন্দন
মাংগকৰ ওসকী বদলেমে বৰ দেনেকী বাত কহী। কুঁজা কৃষ্ণপ্ৰেমসে
আসক্ত হী ওহে গন্ধ চন্দন দে দিয়া। কুঁজাকী আসক্তিকী
জানকৰ কৃষ্ণানে প্ৰেমালিঙ্গন কৰ ওসকী মনোকামনা পূৰ্ণ কী।
কুঁজা কৃষ্ণকে উত্তৰীয় বস্ত্ৰকী পকড়ে সুশীভিত লগ ৰহী হৈ।



পুত্র-স্ত্রী ।

গোপগণ ।

বলভদ্র ।

কৃষ্ণে কংসর ধনু ধরিছা ।

ধনুৰথীয়া সেনা ।

গুণ লগাই টঙ্কাব দিলে । তাকে দেখি ধনুৰথীয়া সেনাবিলাকে
ঢাল আৰু তবোৱাল লৈ কৃষ্ণক খেদি আহিল ।

অপনি হাতমি লৈকৰ টংকাৰ কিয়া । ভসে দেখকৰ ধনুকি পহৰিডাৰ
সৈনিকগণ ঢাল অৰি তলোৱাৰ লৈকৰ কৃষ্ণকি অৰি দৌৰ্ ।



কংসৰ সৈন্য ।

বাম-কৃষ্ণে ধনুৰথীয়াসবক বধিছন্ত ।

কংসৰ অনুচৰবিলাকে হাতত খড়্গ, ধনু আদি লৈ কৃষ্ণ-বলৰামক খেদি অহা দেখি ছয়ো ভাই-ককায়ে তীক্ষ্ণ অসিৰে কাকো কাটি, ধনুৰে কাকো বিদ্ধি ছিন্ন ভিন্ন কৰিলে। কংসৰ সৈন্যবিলাকেও ভয় নাখাই কৃষ্ণ-বলৰামক বেচি ধৰিলে।

কংসকী অনুচৰীকী আপনী স্বীৰ অতি দেখে কৃষ্ণ বলৰামকী দুইনোঁ ভাই মী আপনী আপনী শস্ত্ৰীসে উন সৈনিকী পৰ প্ৰহাৰ কৰ উহে তিতৰ বিতৰ কৰ দিয়া।



গোপবালক।

কৃষ্ণ।

বলৰাম।

গোপবালক।

কৃষ্ণ-বলৰামে কংসৰ সৈন্যবিলাকক মাৰি গোপবালকবিলাকৰ সৈতে নিৰ্ভয় চিন্তে নগৰৰ বাজবাটত ফুৰি সাজবেলিকো নগৰৰ বাহিৰত বল গৈ। পৰিশ্ৰান্ত কৃষ্ণ-বলৰামে হাত ভৰি থই ছয়ো দুখন বিচিত্ৰ বিছানাত শুইছে; দুজন গোপবালকে ভৰিৰ ওচৰত বহি ছয়োৰো ভৰি টিপিবলৈ ধৰিছে। আন এজন গোপবালক ওচৰতে চোঁৱৰ ধৰি আছে।

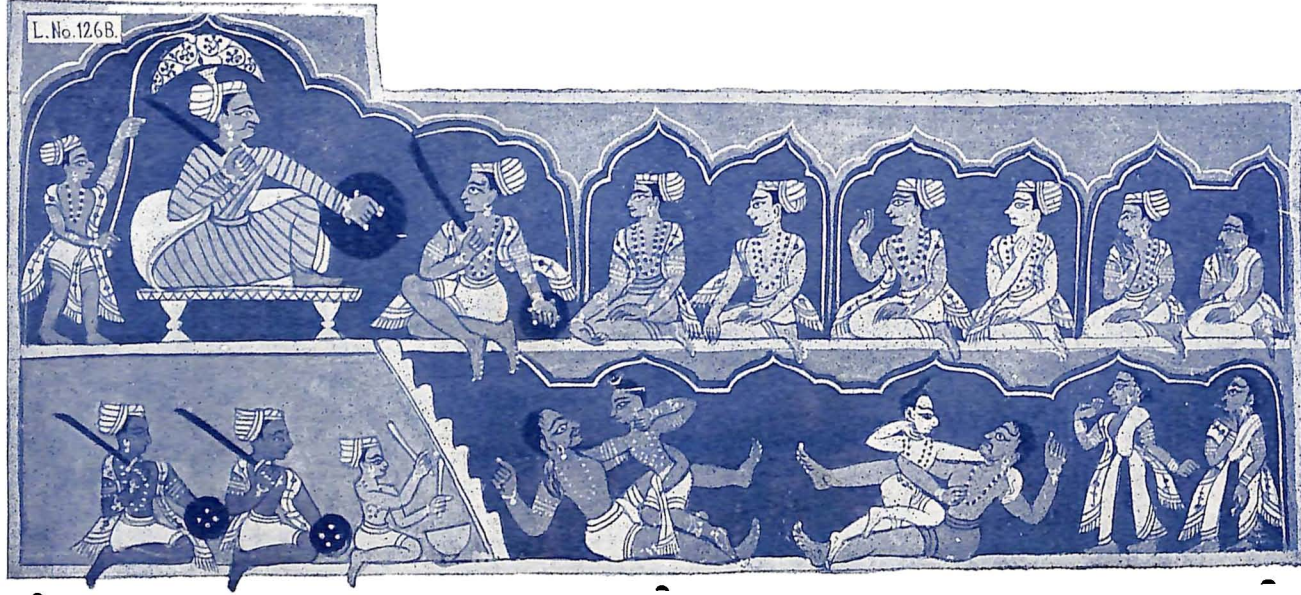
কৃষ্ণ বলৰাম কংসকী সেনাস্ত্ৰীকী মাৰকৰ গোপবালকীকী সাথ নিৰ্ময় চিন্তসে রাজমাৰ্গসে শাসকী নগৰকী বাহৰ আকৰ ঠহৰি। পৰিশ্ৰান্ত কৃষ্ণ বলৰাম হাত পৈৰ ধৌকৰ দুইনোঁ দু বিচিত্ৰ বিদ্ধি নাঁপৰ সৌ রহি হৈ; দু গোপবালক পৈৰীকী পাস বৈঠকৰ দুইনোঁকী পাঁব দৰা রহি হৈ। দুসৰা গোপবালক পাস হী চঁৱৰ ডুলা রহা হৈ।

কংসবাজা।

কংসব পাত্র।

বাজাগণ।

বসুদেব-দৈবকী।



মানসকল।

বাণ বজোরা।

বাম-কৃষ্ণে মানসমে যুজিছন্ত।

পুত্র-স্ত্রী।

মল্লবঙ্গ :—পাছ দিনা কংসৰ ধনুৰ্যজ্ঞ আৰম্ভ হল। বজা কংস উচ্চ আসনত হাতত ঢাল-তবোৱাল লৈ বহিছে। পিছফালৰ পৰা এজন চৰে মূৰৰ ওপৰত শুল্ক ছত্ৰ ধৰিছে। সম্মুখত এজনা পাত্রই হাতত ঢাল-তবোৱাল লৈ বহি আছে। তাৰ পিছৰ ফালে কংসৰ অভিযুখে চাপৰ আসনত আন আন বজাবিলাক যজ্ঞ চাবলৈ বহিছে। তাৰ পিছত মহামতি বসুদেৱ আৰু দৈৱকীও পুত্ৰৰ অলৌকিক শক্তি চাবলৈ যেন সভাত বহি আছে। আন এঠাইত কিচ্‌কিচীয়া কলা মানবিলাক ঢাল-তবোৱাল লৈ সুসজ্জিত হৈ বহি

মল্লযুদ্ধ : দূসৰে দিন কংসকা ধনুৰ্যজ্ঞ শুরু হুআ। রাজা কংস ऊँचे आसनपर हाथमें ढाल-तलवार लेकर बैठा है। पीछेकी ओर एक दास सिरपर शूल छत्र ड़ला रहा है। सामने एक सैनिक हाथमें ढाल-तलवार लेकर बैठा है। उसके पीछे कंसे आमने सामने नीचे आसनोंपर दूसरे राजागण यज्ञ देखनेके लिए बैठे हैं। उसके पाछे महामति वसुदेव और दैवकीभी पुत्रकी अलौकिक शक्ति देखनेके लिए सभामे बैठे हैं। दूसरी एक जगह भयंकर पहलवान ढाल-तलवार लेकर सुसज्जित होकर बैठे

আছে। পুৰবাসী বয়ণীবিনাকে আচৰিত হৈ থিয় দি মালযুঁজ চাবলৈ ধৰিছে। কৃষ্ণই এটা মালৰ লগত যুঁজ কৰি মালৰ গলত আগ-হাতেৰে সারোটি ধৰি তাক মাটিত পেলাই ধৰিছে, আৰু বলবামেও আন এটা মালক মাটিত পেলাই হেঁচি ধৰিছে।

হৈ'। পুৰবাসিন রমণিয়াঁ অচরজ হোঁকর खड़ी होँकर मल्लयुद्ध देख रही है'। कृष्ण एक पहलवानके साथ लड़कर मल्लके गलेमें दाहिने हाथसे पकड़कर उसे जमीनपर गिरा लिया है और बलरामभी दूसरे एक पहलवानको जमीनपर गिराकर दबा रखा है।



দ্বাবী।

অষ্টম হাথিগাৰ।

কৃষ্ণে অষ্টক মাতিছা।

বাম।

গোপগণ।

কুবলয় বধ :—ভগবান কৃষ্ণই বলবামৰ সৈতে ধনুৰ্যুজত কংসৰ মালবোৰক মাৰি গোপবিলাকৰ সৈতে পুৰত সোমাবলৈ ছুৱাবত উপস্থিত হ'ল গৈ। কুবলয় নামে এটা প্ৰকাণ্ড হাতীয়ে ছুৱাব বোধ কৰি থকা দেখি কৃষ্ণই মাউতক হাতীটো আঁতৰাই নিবলৈ কলে। মাউতে কৃষ্ণৰ আদেশ শুনি বাগান্বিত হৈ হাতীটোক অক্ষুশেৰে খুচি কৃষ্ণআদিৰ ফালে আগবঢ়াই দি তেওঁলোকক বাধাহে দিলে।

কুবলয় বধ : भगवान कृष्ण बलरामके साथ धनुर्युद्ध में कंसके पहलवानोंको मारकर ग्वालोंके साथ पुरमें घुसनेके लिए दरवाजे पर आये। कुबलय नामका एक प्रकांड हाथीको दरवाजा रोकै खड़ा देखकर कृष्ण महावतसे हाथीको हटा ले जानैकी कहा। महावत कृष्णके आदेश से क्रोधित होकर हाथीको अद्भुत चुभाकर कृष्ण आदिको और बढ़ा रहा है।



দ্রাবী ।

কুবলয় ।

কৃষ্ণে হস্তীক ধবিছা ।

বাম ।

গোপ ।

দ্রাবত এজন দ্রাবী থিয় হৈ আছে । মাউতৰ কাৰ্য্যত খং উঠি কৃষ্ণই তৎক্ষণাৎ খেদি গৈ সেই কুবলয় হাতীৰ লেজত ছয়ো হাতেবে খামোচ মাৰি ধৰি টান দিলে । কৃষ্ণৰ পিছৰ ফালে বলবাম আৰু বলবামৰ পিছৰ ফালে শিঙা বংশী বাই গোপবালক-বিলাকে কৃষ্ণৰ সেই আশ্চৰ্য্য কাৰ্য্য চাই থিয় দি আছে ।

दरवाजेपर एक प्रहरी खड़ा है । महावतको कार्यसे क्रुद्ध ही कृष्ण उस कुबलय हाथीकी पूँछकी जोरसे पकड़कर खींचते हैं । कृष्णके पीछेकी ओर बलराम और बलरामके पीछे की ओर गोपबालकगण कृष्णका वह अजीब कार्य खड़े खड़े देख रहे हैं ।



গোপগণ ।

বাম ।

কৃষ্ণে হস্তীৰ দাস্ত লৈবাক ধবিছন্ত ।

কৃষ্ণই কুৱলয়ৰ পিছৰ ফালে জোৰে টানি এৰি দিলত সি বেগৰ কোবত সন্মুখৰ ফালে মুখ ঠেকেচা খাই মাটিত পৰি গল। হাতীটো আগৰ ফালে পৰাৰ কাৰণে মাউত পিছৰ ফালে পৰিবৰ ভয়ত হাতীৰ ওপৰতে ফেঁটা পৰি বাওঁহাত মেলি বল হাতীটো মাটিত হামকুৰি খাই পৰা মাত্ৰকে কৃষ্ণ আগৰ ফালে গৈ তাৰ দাঁত ছুটাত খামোচ মাৰি ধৰিলে। তেতিয়া বলদেৱ প্ৰভৃতি গোপ-বালকবিলাকো কৃষ্ণৰ পিছ ধৰিলে গৈ।

কৃষ্ণ কুবলয়কো পীঠিকী আৰু জোৰে খীঁচকৰ হঠাত্ কীড় দৈন্যেৰে বহু বেগেৰে সামনে মুঁহুৰে কৈ বল জমীনেৰে গিৰ পড়তা হৈ। হাতীকৈ গিৰনকৈ কাৰণে মহাবত পীঠিকী আৰু লুড়ক পড়তা হৈ। জমীনেৰে পড়ি হাতীকৈ দুনো দাতোঁকৈ কৃষ্ণ উখাড় লৈতা হৈ।



বন্দী।

কংস।

কৃষ্ণ।

বলৰাম।

গোপমকল।

কৃষ্ণই সেই কুৱলয় হাতীক তাৰ দাঁতেৰেই মাউতৰ সৈতে মাৰি মাটিত পেলাই থৈ কংসৰ বহা চ'ৰা পালে গৈ। কংস এখন আসনেত হাতত ধনু-শৰ লৈ বহি আছে। পিছৰ ফালৰ পৰা এজন বন্দীয়ে ছত্ৰ ধৰিছে। কান্ধত গদা লৈ আগত কৃষ্ণ আৰু তাৰ পিছত বলৰাম কংসৰ ওচৰলৈ গল। লগতে শিঙা, বেণু বজাই গোপ-শিশুবিলাকো উপস্থিত হল গৈ

কৃষ্ণ উম কুবলয় হাতীকী আৰু মহাবতকী মাৰকৰ বীঠকখানীমে আ পঁহুচে। কংস এক আসনেৰে হাতমে ধনু-শৰ লৈকৰ বীঠা হৈ। কংসেৰে গদা লৈকৰ আগী কৃষ্ণ আৰু তনকৈ পীঠী বলৰাম কংসকৈ পাশ গয়ে। সাথহী গোপশিশু-গণমী হৈ।



পুৰ-স্ট্রীসকল ।

কৃষ্ণ ।

বাম ।

গোপগণ ।

কৃষ্ণ-বলরামৰ ধনুৰ্যজ্ঞত উপস্থিতি :—যেতিয়া কৃষ্ণ কংসৰ ধনুৰ্যজ্ঞত উপস্থিত হল, তেতিয়া তাত উপস্থিত হোৱা সমজুৱা-সকলে কৃষ্ণক দহ প্ৰকাৰে দেখিবলৈ পালে। যজ্ঞক্ষেত্ৰত কৃষ্ণ আৰু বলৰামে কান্ধত বাওঁহাতেৰে শিঙা লৈ লয়লাসে গোপবিলাকৰ সৈতে যেতিয়া প্ৰবেশ কৰিলে, তেতিয়া তাত উপস্থিত থকা বমণীবিলাকে কৃষ্ণ-দৰ্শনত মোহিত হৈ যেন পৰস্পৰে কৃষ্ণৰ গুণ-গানকে কৰিছে।

কৃষ্ণা-বলরামকা ধনুৰ্যজ্ঞমে উপস্থিতি : जब कृष्ण कंसके धनुष्यज्ञमें हाजिर हुए, तब वहाँ उपस्थित सभाजनोंने कृष्णको दस प्रकारसे देखा। यज्ञक्षेत्रमें कृष्ण और बलराम कंधेपर बाये हाथसे शिंगा लेकर लयसे गोपबालकोंके साथ जब प्रवेश करते हैं तब वहाँ उपस्थित रमणियाँ कृष्ण दर्शन से मुग्ध होकर परस्पर मानो कृष्णके ही गुणगान कर रही हैं।

বাম-কৃষ্ণই গোপসকলৰ সৈতে কংসপুৰত সোমায়ৈই মুষ্টিক আৰু চানুৰ নামে ভীষণ আকৃতিৰ মাল ছজনক দেখা পালে। কংসই বাম-কৃষ্ণক দেখিয়েই মুষ্টিক আৰু চানুৰৰ লগত তেওঁলোকক যুঁজ কৰিবলৈ আদেশ দিলত ছয়ো যুঁজ কৰিবলৈ প্ৰস্তুত হল।

राम-कृष्णाने ग्वालोंके साथ कंसके पुरमें घुस कर ही मुष्टिक और चानुर नाम "भीषण आकृतिके दो पहलवानोंको देखा। राम-कृष्णको देखतेही कंसके मुष्टिक और चानुरको लड़नेका आदेश देनेपर दोनों युद्ध करनेके लिए तैयार हुए। चानुर अग्नि



মুষ্টিক।

চান্দ্র।

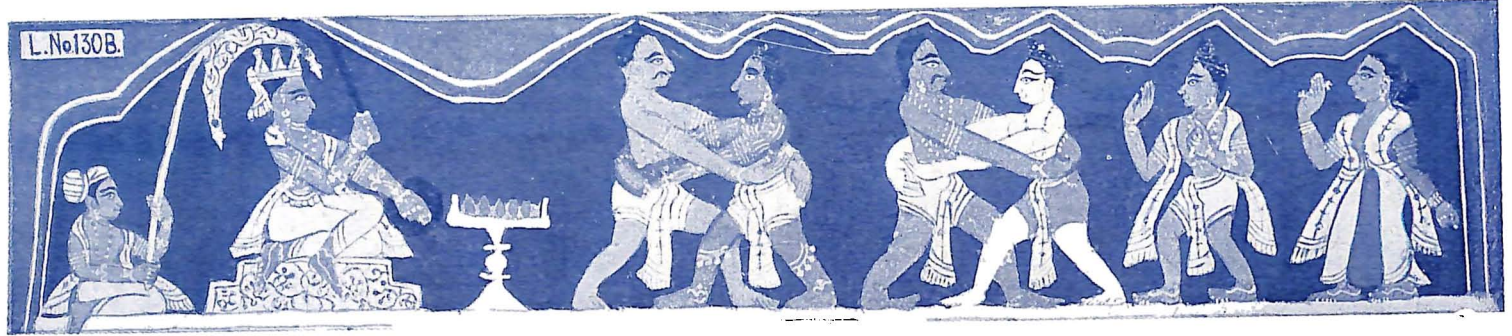
কৃষ্ণ।

বাম।

গোপগণ।

চান্দ্র আগত, মুষ্টিক পাছত, আন ফালে কৃষ্ণ, তাৰ পিছত বলবাম আৰু শেষত গোপগণ থিয় হৈ আছে।

মুষ্টিক পীঠি, দূসৰী আৰু আৰ্গি কৃষ্ণ উনকো পীঠি বলবাম আৰু শ্ৰীৰামে গ্ৰহণে খুঁড়ি হৈ।



বন্দী।

কংস।

বাম-কৃষ্ণে মালে সমে যুজিছন্ত।

পূব-স্ত্রী।

কংস আগবদৰে চাল-তবোৱাল লৈ আসনত বহি আছে। আগত উপহাস-দ্রব্য পূৰ্ণ এখন শৰাই আছে, আৰু পিছৰ ফালে

কংস পহলি জৈসে ঠাল-তলবার লৈকর আসনপর বৈঠা হৈ। সামনে মেটকে দ্রব্যপূৰ্ণ উপহার পড়ি হৈ। পীঠিকী তৰফ এক

এজন বন্দীয়ে বহি ছত্র ধৰিছে। সম্মুখত চান্দুবৰ সৈতে কৃষ্ণই আৰু মুষ্টিকৰ সৈতে বলদেৱে পোনতে কঁকালত ধৰাধৰি কৰি মল্লযুদ্ধৰ নিয়মানুসাৰে যুঁজ আৰম্ভ কৰিছে। পিছ ফালে গোপ-বালকগণ আৰু পুৰ-স্ত্ৰীসকল থিয় দি চাই আছে।

দাস চঁৱৰ ডুলা ৰহা হৈঁ। সামনে চানুরকৈ সাথ কৃষ্ণ আঁৱ মুষ্টিককৈ সাথ বলদেৱ মল্লযুদ্ধকৈ নিয়মানুসাৰ যুদ্ধ আৰম্ভ কৰ ৰহি হৈঁ। পীকৈ গোপবালকগণ খড়ি হীকৰ দেখ ৰহি হৈঁ।



পুৰবাসী স্ত্ৰী।

মুষ্টিক-বান।

কৃষ্ণ।

চান্দুব।

বলদেৱ।

দৈৱকী।

পিছত বাহুযুদ্ধৰ নিয়মানুসাৰে মুষ্টিক মাটিত ভৰি মেলি বহি পিছৰ ফালে আগহাত মাটিত গজা মাৰি বাওঁহাতেৰে সেই ভাৱে বহা বলদেৱৰ কঁকালত ধৰিছে। বলদেৱেও মুষ্টিকৰ কোলাত বহি এখন ভৰি কোচাই লৈ আনখন ভৰি আগুৱাই দি মুষ্টিকক টিপি ধৰি আগহাতেৰে মুষ্টিকৰ গলৰ ফালে টান দি বাওঁহাত ওপৰলৈ তুলি বৈছে। তেনেকৈ কৃষ্ণয়ো চান্দুবৰ আগখন হাতত নিজৰ বাওঁহাতেৰে মেৰপাক দি আগহাত দাঙি ঘেন মাৰিবলৈহে খুজিছে। সেই সময়ত পুৰবাসিনী স্ত্ৰীবিলাকে আগৰ ফালে আৰু দৈৱকী-বলদেৱৰ পাছৰ ফালে আসনত বহি চাই আছে।

বাহুযুদ্ধকৈ নিয়মানুসাৰ মুষ্টিক জমীনপৰ পৈৰ ফৈলাকৰ বৈঠকৰ পীকৈকী তৰফ দাহিনা হাথ মিটীপৰ টেককৰ বায়েঁ হাথসে ওসী ভাৱসে বৈঠ হুই বলৰামকী কমৰ পকড়ি হৈ। বলদেৱমী মুষ্টিককী গোদমৈ বৈঠকৰ এক পৈৰ মঁভালকৰ দুসৰি পৈৰ বঢ়াকৰ মুষ্টিককী দ্বাৰকৰ পকড়কৰ দাহিনি হাথসে মুষ্টিককৈ গলিকী আঁৱ খীচকৰ বায়েঁ হাথকী জপৰ ওঠা ৰহি হৈঁ। বৈসেহী কৃষ্ণমী চানুরকৈ দাহিনি হাথমৈ অৰুণে বায়েঁ হাথসে ঘেৰ ডালকৰ দাহিনা হাথ ওঠাকৰ মানী মাৰনাহী চাহতি হৈঁ। ওস সময় পুৰবাসিন স্ত্ৰীয়াঁ সামনে কী আঁৱ আঁৱ দৈৱকী বসুদেৱ পীকৈকী আঁৱ আসনপৰ বৈঠকৰ দেখ ৰহি হৈঁ।



দৈরকী বসুদেবে সন্তাপ কবিছা।

পুব-স্ত্রী।

বাম।

কৃষ্ণ।

কংস।

চানুর-মুষ্টিকৰ কৃষ্ণ-বলৰামৰ লগত যুদ্ধ দেখি বসুদেব-দৈরকী আৰু পুব-স্ত্রীসকলৰ বিষাদ:—বালক কৃষ্ণ আৰু বলৰামক সেইদেবে বিশাল আকাৰৰ মল্লৰ লগত যুদ্ধ কৰা দেখি দৈরকী আৰু বসুদেবৰ বিষণ্ণ হৈছে। পুব-স্ত্রীসকলে কৃষ্ণৰ আশ্চৰ্য্য কৰ্ম দেখি স্তম্ভিত হৈ আগহাত পাতি যেন নিৰ্দয় কংসৰ ওচৰত কৃষ্ণৰ প্ৰাণ ভিক্ষাহে কৰিছে; নাইবা কৃষ্ণ আৰু বলৰামক যুদ্ধৰ পৰা বিবত হবলৈ প্ৰাৰ্থনা কৰিছে। কংসই হাতত ঢাল-তৰোৱাল লৈ এখন আসনত অকলে বহি আছে। কৃষ্ণ-বলৰামে তেওঁৰ সম্মুখত যুদ্ধ কৰিবলৈ যেন প্ৰস্তুত হৈ আছে।

চানুর-মুষ্টিককী কৃষ্ণ-বলৰামকী সাথ লড়াই দেখকৰ বসুদেব-দৈবকী আৰু পুৰস্বিয়ীকী বিষাদ: বালক কৃষ্ণ আৰু বলৰামকী ওসী তৰহ বিৰাট আকাৰকী মল্লীকী সাথ লড়ত দেখকৰ দৈবকী আৰু বসুদেব লিতি হী রহি হৈ। পুৰস্বিয়ীকী কৃষ্ণকী অদ্ভুত কৰ্ম দেখকৰ স্তম্ভিত হীকৰ দাহিনী হাথ পসারকৰ মানী নিৰ্দয় কংসকী পাশ কৃষ্ণকী প্ৰাণকী ভিক্ষা মাংগ রহী হৈ যা কৃষ্ণ আৰু বলৰামকী যুদ্ধসে নিবৃত্ত হীকী লিপি প্ৰাৰ্থনা কৰ রহী হৈ। কংস হাথমঁ ঢাল-তলবার লীকৰ এক আসনপর অকীলী বীঠা হৈ। কৃষ্ণ-বলৰাম ওসকী সামনী যুদ্ধ কৰনকী লিপি তৈয়ার হৈ।

ধনুৰ্যজ্ঞশূলত দৈরকী-বসুদেব বহি আৰু পুব-স্ত্রীবিলাক থিয় দি চাই থাকোঁতেই বলভদ্রে মুষ্টিকক মাটিত চিৎ কৰি পেলাই দি

ধনুৰ্যজ্ঞশালামঁ দৈবকী বসুদেব আৰু পুৰস্বিয়ীকী দেখত দেখতহী বলভদ্রনে মুষ্টিককী মিটীপর চিত কৰকী ঘুসীসে (মুষ্টিকী প্ৰহাৰসে)



দৈবকী-বনুদেৱ ।

পূব-স্ত্ৰী ।

বনভদ্ৰে মুষ্টিকক বধিলা ।

কৃষ্ণে চানুৰক পাক ফুৰাইছা ।

গোপশিঙ ।

পূব-স্ত্ৰী ।

ভুকুৱাই মাৰি পেলালে । তেনেকৈ কৃষ্ণয়ো কৌশল কৰি চানুৰক
আগহাতেৰে ওপবলৈ তুলি তাতে পাক ফুৰাই মাৰি পেলালে ।

মাৰ ডালা । বৈসেহী কৃষ্ণানিৰ্মী কৌশলসে চানুৰকো দাৰ্চিনি হাতসে
জপৰ উঠাৰে বহী ঘুমাৰে মাৰ ডালা ।



ছত্ৰধাৰী । কংসৰাজা ।

সেৱক ।

বনভদ্ৰে কূটমল্লক বধিলা ।

কৃষ্ণে ভৌষকমল্লক বধিলা ।

চানুৰ, মুষ্টিক আদিৰ বধত কংসৰ ক্ৰোধ :- বজা কংস
আগবদৰে আসনত বহি থাকি চানুৰ আৰু মুষ্টিকৰ মৃত্যু দেখি

চানুৰ, মুষ্টিক আদিকৈ বধসে কংসকা ক্ৰোধ :
ৰাজা কংস চানুৰ আৰু মুষ্টিককী মৃত্যু দেখকৰ অত্যাঁত বিস্ময়ান্বিত

অতি বিস্ময়ান্বিত হল। পাছত কূট নামে এক মাল বণত প্রবেশ কৰিলত বলভদ্রে তাক এক ভুকুতে মাৰি মাটিত মুখঠেকেচা খুৱাই মাৰি পেলালে। তাৰ পিছত তোমল্ল আৰু শল্ল নামে দুটা মালে যুদ্ধ কৰে। বুলি সেই ঠাইত উপস্থিত হল। কৃষ্ণই ছয়োকে গোব মাৰি মূৰ ছিঙি পেলালে; মূৰ দুটা এঠাইত আৰু গাৰি দুডোখৰ আন ঠাইত বাগৰি পৰিল। এজনৰ ছিঙা গাৰিৰ ওপৰত কৃষ্ণৰ বাওঁ ভৰিখন লাগি থাকিল। কংসই এই ঘটনা দেখি বিস্ময়ান্বিত হৈ খঙত কঁপিবলৈ ধৰিলে।

হুয়া। बादमें कूट नामका एक मल्लके रणमें प्रवेश करनेपर बलभद्रने उसीही मुष्टिके एकही प्रहारसे मारकर फेंक दिया। उसके बाद तोमल्ल और शल्ल नामके दो मल्ल लड़ाई करनेके लिए उसी जगहपर आये। कृष्णने दोनोंकी लात मारकर सिरोंकी तोड़ डाला; दोनों सिर एक जगह और धड़के दोनों टुकड़े दूसरी जगह गिर पड़े। इस घटनाको देखकर विस्मयान्वित होकर कंस कांपने लगा।



দৈৱকী।

বসুদেৱ।

পূব-স্ত্ৰী।

বলৰাম।

শ্ৰীকৃষ্ণ।

গোপবালকসকল।

কৃষ্ণ-বলৰামৰ আনন্দ :—ভগৱান কৃষ্ণই কংসৰ মালবিলাকক মাৰি আনন্দিত হৈ বলৰাম আৰু গোপ-বালকবিলাকৰ সৈতে নাচিবলৈ ধৰিছে। কৃষ্ণ-বলৰামে নানা ভঙ্গি কৰি নাচিছে আৰু গোপ-বালকবিলাকে চাপৰি ধৰিছে। বসুদেৱ-দৈৱকীৰ সৈতে পূৰ্ণাবাবীবিলাকে এই আনন্দ-নৃত্য যেন আগ্ৰহেৰে চাব ধৰিছে।

कृष्ण-बलरामका आनंद : भगवान कृष्ण कंसके मल्लोंकी मारकर आनन्दित होकर बलदेव और गोपबालकोंके साथ नाच रहे हैं। कृष्ण और बलराम नाना भंगियोंसे नाच रहे हैं और गोपबालकगण ताली बजा रहे हैं। वसुदेव-दैवकीके साथ पूरुवाबीगण इस आनन्द-नृत्यकी मानो चावसे देख रहे हैं।



কংসে ক্রোধে বন্ধিছা।

পাত্র।

মল্লী।

কৃষ্ণ।

বায়ু।

কংসের ক্রোধ আৰু কৃষ্ণৰ হাতত মৃত্যু :—কৃষ্ণ-বলবামে মালবিলাকক মাৰি তেনেকৈ আনন্দত মৃত্যু কৰা দেখি বজা কংস ক্রোধত অস্থিৰ হৈ পৰিল। আৰু আসনত বহি থাকিয়েই বাঙহাতেবে ঢাল আৰু আগহাতেৰে অস্ত্র মুঠি দাঙি যেন পাত্ৰক সম্বোধন কৰি ক্রোধৰ ভাব প্ৰকাশ কৰিছে।

বজা কংস ক্রোধত ক্ৰমমূৰ্ত্তি হৈ হাতত ঢাল-তৰোৱাল লৈ কৃষ্ণক খেদি গল। কৃষ্ণই কংসৰ খং আৰু বেচিকৈ তুলিবলৈ খিল খিল কৰি হাঁহি মাৰি কঁকালত পীতবস্ত্ৰ বান্ধি বুক ফিন্দিয়াই হাত দাঙি খেদা মাৰি গল। সেই সময়ত দৈৱকী আৰু বহুদেৱ বিঘ্ন মনে

কংসক ক্রোধ আৰু কৃষ্ণক হাতত মৃত্যু : কৃষ্ণ বলৰামকী মল্লীকী মাৰকৰ আনন্দসে নৃত্য কৰতি দেখকৰাজা কংস ক্রোধসে অস্থিৰ হী পড়া আৰু আসনপৰ বৈঠ বৈঠহী বায়ে' হাতসে ঠাল আৰু দাহিনি হাতসে মুঠি উঠাকৰ মানী প্ৰহৰীকী সম্বোধন কৰকী ক্রোধকা ভাব প্ৰগট কৰ ৰহা হৈ।

ৰাজা কংস ক্রোধসে ক্ৰমমূৰ্ত্তি হীকৰ হাতত ঠাল-তলবাৰ লেকৰ কৃষ্ণকী আৰু ভপটা। কৃষ্ণ কংসকী ক্রোধকী আৰু বড়ানীকী লিএ হাঁসতি হাঁসতি কৰকৰ ক্ৰমকৰ ছাতী ফুলাকৰ হাত উঠাকৰ কংসকী আৰু লপকী। উস সময় দৈৱকী আৰু বহুদেৱ বিঘ্ন মনে বৈঠ হৈ।

कंससे खाण्वाक धरिछा ।

कृष्ण मक्षत चडिछा ।



गुरान ।

दैरकी ।

वसुदेव ।

बलभद्र ।

श्रीदाय ।

पुव-श्री ।

मुखत हात दि बहि आछे । वलदेव, गोपबालक आक पुव-श्री-सकले आश्चर्यावित है येन कृष्ण आक कंसब युद्धहे चाबलै अपेक्षा करिछे ।

बलदेव, गोपबालक और पुरस्त्रियाँ आश्चर्यान्वित होकर मानो कृष्ण और कंसकी लड़ाईही देखनेकी इन्तजारमें हैं ।

दैरकी-वसुदेव आगबदरे बहि आछे । वलदेव, सुदाम आक पुव-श्रीसकले थिय दि कंस आक कृष्णर युँज चाई आछे । आन

दैवकी-वसुदेव पहले जैसे बैठे हैं । बलदेव, सुदाम और पुरस्त्रिय खड़ी होकर कंस और कृष्णकी लड़ाई देख रही हैं ।

কৃষ্ণে কংসৰ চুলিত ধৰিছা।



অশ্বৰ।

দৈৱকী।

বহুদেৱ।

বলদেৱ।

সুদাম।

পুৰন্দ্রী।

এজন কংসৰ অনুচৰ অশ্বৰে বাওঁহাতেৰে ঢাল আৰু আগহাতে তৰোৱাল লৈ আগআঠু কাঢ়ি বাওঁআঠু অলপ বেঁকা কৰি অতি তীক্ষ্ণ দৃষ্টিৰে ক্ৰোধান্বিত হৈ যেন যুজুংসুভাৱে সেই কংস আৰু কৃষ্ণৰ ফালে চাই বৈছে। যুঁজ কৰি থাকোঁতে কৃষ্ণই হঠাৎ কংসক থাপুমাৰি আগহাতেৰে চুলিত ধৰি পেলাই দিলে। কংস অলপ মূৰ হলাই হাতত ঢাল তৰোৱাল লৈয়ে যেন বিমৰ্ষ হল।

কংসকে দূসৰে এক অনুচৰ বায়ে' হাথমেঁ ঢাল আৰু দাহিনী হাথমেঁ তলুৱাৰ লৈকৰ দাহিনী ঘুটনা টেককৰ বায়াঁ ঘুটনা জৰা মুকাকৰ অতি তীক্ষ্ণ দৃষ্টিৰে ক্ৰোধান্বিত হোঁকৰ মানো লড়াইৰ ভাৱে উস কংস আৰু কৃষ্ণকী আৰু দেখি ৰহা হৈ। লড়াই কৰতি ৰহনেকৈ সময় কৃষ্ণনে হঠাৎ কংসকো থপেড়ি মাৰকৰ দাহিনী হাথসে বালোঁকো পকড়কৰ গিৰা দিয়া।



সেরক । কৃষ্ণে কংসৰ উপৰত জগতৰ ভৰে পৰিচা । বাম । সুদাম । পূব-শ্ৰী । বাজগণ ত্রাসে পনায় ।

কৃষ্ণই খণ্ডেৰে কংসক চুলিত ধৰি চিংকৰি মাটিত পেলাই দি তাৰ ওপৰত উঠি আঠুৰে কংসৰ কঁকালত আক বাওঁহাতেৰে কংসৰ আগহাতত হেঁচা দি উঠিব নোৱাৰাকৈ ধৰি আগহাতেৰে যেন প্ৰাণনাশ কৰিবলৈ উদ্ভত হৈছে বলৰাম, সুদাম আৰু পূব-শ্ৰী-বিলাক আশ্চৰ্য্যান্বিত হৈ সেই ঘটনা চাই আছে। কংসক সেইদৰে সমৰত পৰা দেখি আন আন বজা আৰু সেরকসকল দশোদিশে পলাবলৈ ধৰিছে।

ভগবান কৃষ্ণই কংসক সেইদৰে মাৰি তাৰ চুলিত ধৰি দৌঘলকৈ পেলাই দিছে। দৈৱকী আৰু বসুদেৱ আচৰিত আৰু আনন্দিত হৈ যেন কৃষ্ণক আগবঢ়াই আনিবলৈহে মৰমেৰে আগহাত মেলি

কৃষ্ণ ক্ৰোধসে কংসকে বালীকী পকড়কৰ চিতকৰ জমীনপৰ গিৰাকৰ ওসকে জপৰ চড়কৰ ঘুটনসে কংসকে কমৰমঁ আৰি বায়ে হাথসে কংসকে দাহিনী হাথপৰ দবাৰ ডালকৰ দাহিনী হাথসে মানী ওসকী জান লেনিকৈ লি়ে উদ্যত হুএ। বলৰাম, সুদাম আৰি পুৰন্যৰিয়াঁ আশ্চৰ্য্যান্বিত হীকৰ ওস ঘটনাকী দেখি রহী হৈ। কংসকী ওসী তৰহ সমৰমঁ গিৰতি দেখকৰ আৰি আৰি ৰাজা আৰি সেবকসমূহ জহাঁ তহাঁ ভাগনি লগি।

ভগবান কৃষ্ণনে কংসকী ওসী তৰহ মাৰকৰ ওসকে বালীকী পকড়কৰ লংবা কৰকী ফেঁক দিয়া। কংস দাঁত নিকালকৰ হাথ পৈৰ ফেঁলাকৰ পড়া হৈ। দৈবকী আৰি বসুদেব আশ্চৰ্য্যান্বিত আৰি



देवतागण ।



दैवकी-बन्धुदेव ।

कृष्ण कंसक घमाईछ ।

सुदाम ।

बाम ।

श्रीदाम ।

पुब-श्री ।

बसुदाम ।

गैछे । सुदाम आक बलबामे आनन्दित है वंशी बजाई आछे । श्रीदाम, बसुदाम प्रभृति गोपसकल आक पुब-श्रीविलाके आनन्दित है येन उल्लास प्रकाश कबिछे । कंस-निपात देखि आनन्दित

आनन्दित होकर मानो कृष्णके स्वागत करनके लिएही हाथ पसार रहे हैं । सुदाम और बलराम खुश होकर वंशी बजा रहे हैं । श्रीदाम, बसुदाम प्रभृति गोपगण और पुरस्त्रियाँ आनन्दित होकर

হৈ আকাশত দেবতাবিলাকৰ কোনোৱে ফুলৰ কটি হাতত লৈ
পুষ্পবৃষ্টি কৰিছে ; কোনোৱেবা খোল-তাল ধৰি আৰু কোনোৱেবা
এনেই হাত তুলি নৃত্য-গীত কৰিছে ।

মানী উল্লাস প্রকট কর रहे हैं। कंसके निधनसे खुश होकर
आकाशमें देवता पुष्पवृष्टि कर आनन्दसे नृत्य कर रहे हैं ।



কংস বৈকুণ্ঠক যাত্ত ।



दैवकी ।

शुभान ।

वसुदेव ।

नन्द ।

बलभद्र ।

कृष्णक कंस नमिछा ।

कंस भगवान कृष्ण हातत मबिल, तेठुं भगवानक वैवभारे चिन्ता कबाव फलत चतुर्भुजकप लात कबिले । आक चाबि हाते शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म धबि मूब दौराइ कृष्ण चवगत भक्ति कबिले । कृष्णइ त्रिभङ्ग-भङ्गिमावे मोहनवेशे येन कंसभ भक्ति हात पाति ग्रहण कबिछे । दैवकी, वसुदेव, नन्द आक बलराम आदिये एइ अद्भुत घटनारनी दर्शन कबि आनन्दित आक विस्मयान्वित है तथा लागि चाइ आछे । इयाव पिछत कंसइ शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म धबि चतुर्भुजकपे विमानत चबि बैकुण्ठलै प्रयाण कबिले ।

भगवानकी वैरीरूपसे भजनके फलसे कंसने चतुर्भुज रूप प्राप्त किया । और चारों हाथोंमें शंख, चक्र, गदा, पद्म लेकर सिर झुकाकर कृष्णके चरणोंमें भक्ति करने लगा । कृष्ण त्रिभंग भंगिमासे मोहन वेशसे मानो कंसकी भक्ति हात फौलाकर ग्रहण कर रहे हैं । दैवकी, वसुदेव, नन्द और बलराम आदि इस अद्भुत घटनाको देखकर आनन्दित और विस्मयान्वित होकर एक टक ताक रहे हैं । इसके बाद कंस शंख, चक्र, गदा पद्म सहित चतुर्भुज रूपसे विमानपर चढ़कर बैकुण्ठको प्रयाण किया ।

कंस मबा खब नगरत बाह्र हलत कंसभ भायैकसकले कृष्णक माबिबतैल टाल-तबोराल लै खेदि आहिल । ताके देखि बलरामे आगभेटी धबि अकले गोटेइबिलाकक गदावे कोवाइ माबि

कंसके मरनेकी खबर सुनकर कंसको भाइ-बंधु ढाल-तलवार लेकर कृष्णकी मारनेके लिए आये । उसे देखकर बलरामने आगे बढ़कर अकेलेही सभीको गदासे प्रहार कर मार



কংসের ভ্রাতৃসবক বলভদ্রে গদা ধরি কোবাই মাঝিছা।

সুদাম। কৃষ্ণ।



মহেশ।

ব্রহ্মা।

সিদ্ধ।

অপেশ্বৰ।

বিছাধৰ।

গন্ধৰ্ব।

পেনালে। কোনো হাত ভরি ভাঙি গল মূৰ বেঁকা হৈ, কোনো কঁকাল ভাঙি আঠুকাটি আক কোনোবা ক্ষত-বিক্ষত হৈ বিকপ-ভাবে পৰি মৰি থাকিল। সেই সময়ত সুদাম গোপে বহি কৃষ্ণক ভক্তি করিছে। কৃষ্ণই আগহাত তুলি সুদাম ভক্তক যেন আশ্বাস দিছে। ইফালে আকাশত মহাদেৱে হাতত ত্ৰিশূল ধৰি বৃষভত উঠি, চতুমুখ ব্ৰহ্মাই হংসত চৰি সেই কংসবধ-উৎসৱ চাই আছে। আক লগতে অপ্সৰা আক গন্ধৰ্ববিলাকে তাল-খোল ধৰি নৃত্য-গীত আক বাজ কৰিছে।

ডালা। কিসীকে হাথ পৈৰ তোড়কর, গলা-সির বক্র करके और किसीको क्षत-विक्षत कर कुरूप बना दिया। आकाशमें महादेव हाथमें त्रिशूल लेकर वृषभपर चढ़कर चतुर्मुख ब्रह्मा हंसपर चढ़कर उस कंसवध उत्सवको देख रहे हैं और साथही अप्सरा और गंधर्वगण ताल खोल लेकर नृत्यगीत और बाजा बजा रहे हैं।



পূৰোহিতে কংসৰ প্ৰেতকাৰ্য্য কৰাইছা। শ্ৰীকৃষ্ণ।

কংসৰ ভাৰ্য্যাসকল।

কংস মৰিলত কংসৰ ভাৰ্য্যাসকলে স্বামীৰ বিয়োগত অত্যন্ত কাঁতৰা হৈ কেইগৰাকীমানে মাটিত বাগৰি আৰু কেইগৰাকীমানে মূৰে কপালে ভুকুৱাই কান্দিবলৈ ধৰিলে। তাকে দেখি ভগৱান কৃষ্ণটো মিঠাকথাৰে হাত তুলি তেওঁলোকক আশ্বাস দিলে, আৰু পূৰোহিত মতাই আনি কংসৰ প্ৰধানা মহিষীৰ হতুৱাই প্ৰেতকাৰ্য্য কৰোৱাৰ দিহা কৰিলে। পূৰোহিত আসনত বহি বিধি অনুসাবে বাজপ্ৰথা মতে কংসৰ প্ৰধানা মহিষীৰ দ্বাৰা প্ৰেতকাৰ্য্য আৰম্ভ কৰিলে। মহিষীয়ে যথোচিত আসনত বহি প্ৰেতকাৰ্য্য কৰিবলৈ ধৰিলে।

কংসকে মৰনেপৰ কংসকী স্ত্ৰিয়া স্বামীকো বিয়োগসে অত্যাঁত কাঁতৰ হোৱা কৰি কই জমীনপৰ গিৰকৰ আৰু কই সির পীটকৰ বোনি লগী। উসে দেখকৰ ভগবান কৃষ্ণনে মিঠী বাতীসে হাত উঠাকৰ উহে আশ্বাসন দিয়া আৰু পুৰোহিত বুলবাকৰ কংসকী প্ৰধান মহিষী দ্বাৰা প্ৰেতকাৰ্য্য কৰবানীকী অবস্থা কী।

বসুদেৱ-দৈৱকীৰ বন্ধন মোচন :—কংসৰ প্ৰেতকাৰ্য্যৰ পাছত নগৰ কিছু শান্ত হ'লত কৃষ্ণই পিতৃ-মাতৃক বন্ধন-মুক্ত কৰি তেওঁলোকৰ ওচৰত দদাকৰ সৈতে আঠু ললে। বসুদেৱ-দৈৱকীয়ে ছয়োকা আকোৱালি ধৰি কোলাত ললে। দৈৱকীয়ে কৃষ্ণক আৰু বসুদেৱে বলৰামক কোলাত লৈ বহুদিনৰ সঞ্চিত পুত্ৰ-স্নেহ যেন ঢালি দিব ধৰিছে। বসুদেৱ-দৈৱকীৰ ওচৰত এজন সেরকে

বসুদেৱ-দৈৱকীকো ব'ধন মোচন : কংসকে প্ৰেতকাৰ্য্যকো বাত কৃষ্ণ পিতৃ-মাতৃকো ব'ধন খোলকৰ উনকো চৰণী'মিঁ দাজকো সাথ প্ৰণাম কিয়া। বসুদেৱ দৈৱকী দুইনো' ভাৰ্য্যীকো লেকৰ বহুত দিনীকো স'চিত পুত্ৰস্নেহকো মানো উতৰ ৰহে হৈ। ইসকো বাত বসুদেৱ আৰু দৈৱকী খুঙে হোৱাক হাত পসারকৰ দুইনো' পুত্ৰীকো আলিগ'ন



বসুদেব-দৈবকী পুত্র কোলে লৈছা।

দৈবকী।

বসুদেব।

বাম-কৃষ্ণ পিতৃ-মাতৃক তুতি কৰিছা।

গুৱাল।

কৰযোবে বিনয় জনাইছে। ইয়াৰ পাছত বসুদেব আৰু দৈবকী
খিয় দি হাত মেলি পুতেক দুজনক আলিঙ্গন কৰিবলৈহে যেন
পুনৰ ইচ্ছা কৰিছে। কৃষ্ণ আৰু বলৰামে বিনীতভাৱে আঠু লৈ
কৰযোবে পিতৃ-মাতৃক স্তুতি কৰিছে, লগতে গুৱালেও তেওঁলোকক
ভক্তি জনাইছে।

কৰণেৰে হী মানো ফিৰ ইচ্ছা প্ৰকট কৰিছে। কৃষ্ণ আৰু
বলৰাম বিনীত ভাৱে ঘূৰি গৈ টকি কৰি হাত জোড় কৰি পিতৃ-মাতৃক
স্তুতি কৰিছে। সাথৰে এক গুৱালীও তেওঁলোকক
বহা হৈ।



সেৱক।

বাম-কৃষ্ণ।

উগ্ৰসেনক ৰাজ্য পাত্ৰিছা।

উগ্ৰসেনৰ স্তুতিসকল।

উগ্রসেনক রাজপদত স্থাপন :—ইয়াৰ পিছত কৃষ্ণই পাত্ৰ-মন্ত্ৰী সকলোৰে সম্মতি লৈ উগ্রসেনক বজা পাতিলে। উগ্রসেনে রাজধৰ্ম্ম অলুপাৰে সিংহাসনত বহিছে। এজন অনুচৰে এফালে ধৰল ছত্ৰ ধৰিছে, আন ফালে আন এজন অনুচৰে চৌৱৰ ঢুলাইছে। সম্মুখৰ ফালে সেরকবিলাকে আৰু কৃষ্ণ-বলবামে আঠু লৈ বাজ-সেৱাৰ নিদৰ্শন দেখুৱাইছে। অনপ আঁতৰত উগ্রসেনৰ নাতি আৰু অন্যান্য পুৰ-স্ত্ৰীবিলাকৰ কোনোৱে বহি কোনোৱে থিয় দি শোভা দৰ্শন কৰিছে।

উগ্রসেনকী রাজ্যপ্ৰাপ্তি :—ইসকে বাদ কৃষ্ণনে মন্ত্ৰীযোঁকী সম্মতি লৈকৰ উগ্রসেনকী রাজা বনায়। উগ্রসেনে রাজধৰ্ম্মানুসারে সিংহাসনপৰ বৈঠে হৈ। এক অনুচৰ এক তৰফ ধবল ছত্ৰ পকড় ৰহা হৈ, দুসৰী তৰফ এক দুসৰা অনুচৰ চঁৱৰ ডুলা ৰহা হৈ। সামনে সেৱকগণ আৰু কৃষ্ণ-বলৰাম ঘুটনে টেককৰে রাজসেৱাকা নিদৰ্শন কৰ ৰহে হৈ। শোড়ী দূৰীপৰে রাজ-পৰিৱাৰ আৰু পুৰস্ত্ৰীয়াঁ ইস শোভাকী নিহাৰ ৰহে হৈ।



সুদাম।

শ্ৰীদাম।

বাম।

কৃষ্ণক নন্দে আশ্বাস কৰিছা।

উপনন্দ।

গুৱান।

নন্দ আদি গোপসকলৰ ব্ৰজলৈ প্ৰত্যাবৰ্ত্তন :—ইয়াৰ পিছত ভগবান কৃষ্ণ মথুৰাত কিছুদিন থকাৰ অভিপ্ৰায়ে পিতা নন্দক গোকুললৈ উলটি যোৱাৰ কথা কলে। কৃষ্ণ-প্ৰেমাঙ্গন নন্দই কৃষ্ণক এৰি যাবলগা হোৱাত অতি স্নেহেৰে কৃষ্ণক সাৰোট মাৰি ধৰি আলিঙ্গন কৰিছে। কৃষ্ণয়ে সেইদৰে নন্দৰ কঁকালত সাৰোট মাৰি যেন স্নেহ ঢালি দিছে। এই সময়ত সুদাম, শ্ৰীদাম, বলবাম,

নন্দ আদি গোপোঁকা ব্ৰজ প্ৰত্যাবৰ্ত্তন :—ইসকে বাদ ভগবান কৃষ্ণ মথুৰামেঁ কিছুদিনোঁকৈ লৈ টহৰনেকৈ অভিপ্ৰায়সে পিতৃ নন্দসে গোকুল লুট জানেকী বাত কহী। কৃষ্ণপ্ৰেমাঙ্গন নন্দ কৃষ্ণকী ছুড়কৰ জানি পৰ অত্যন্ত স্নেহসে কৃষ্ণকা আলিঙ্গন কৰতে হৈ। কৃষ্ণাৰ্থী স্নেহসে পিতাকী আলিঙ্গন কৰতে হৈ। ইস সময়

উপনন্দ আৰু অন্যান্য গোপবিনাক চাৰিওফালে থিয় হৈ আছে। এনে বোধ হয় যেন তেওঁলোকে কৃষ্ণক এৰি যাবলগা হোৱাত অতি উদ্‌বিগ্নচিত্ত হৈ অসন্তোষেহে প্ৰকাশ কৰিব ধৰিছে।

সুদাম, শ্ৰীদাম, বলৰাম, উপনন্দ আৰু দূসৰে গ্বালগণৰো কৃষ্ণাকো ছোড়কৰ জানিমে অত্যন্ত উদ্‌বিগ্নতা প্ৰদৰ্শন কৰিছে।



নন্দে গোকুলক পাইলা।

যশোদা পুত্ৰ নাশিবাক দেখি সন্তাপ কৰিছা।

গোকুলবাসীৰ বিৰহ :- ইফালে গোকুলত যশোদাই কৃষ্ণক বহুদিন দেখা নাপাই পুত্ৰবিৰহত আতুৰা হৈ মূৰে কপালে হাত দি বেজাৰ কৰিছে। আন আন গোপীসকলে যশোদাৰ গাত হাত বুলাই “কৃষ্ণ বেগেতে আহি পাব, বেজাৰ নকৰিবা” বুলি সান্ত্বনা দিছে। আন এজনী গোপীয়ে আকৌ হাত তুলি যেন নিৰ্ভয় দিছে। এনে সময়তেই গোপবাজ নন্দ গৰুৰ গাড়ীত উঠি গুৱাল-বিনাকৰ সৈতে গোকুল পালেহি।

গোকুলবাসীৰোঁকা বিৰহ : ইধৰ গোকুলমেঁ যশোদা কৃষ্ণকো বহুত দিন ন দেখকৰ পুত্ৰবিৰহে কাতেৰ হোকেৰে ৰোৱা হৈ। আৰু আৰু গোপীয়াঁ যশোদাকে বদনপৰ হাত ফেৰতী হুই “কৃষ্ণ শীঘ্ৰহী আ পহুঁচেগা, চিন্তা ন কৰো” কহকৰ আশ্বাসন দেৱা হৈ। এনে সময়হী গোপৰাজ নন্দ বৈলগাড়ীপৰ চড়কৰে গ্বালোঁকে সাথ গোকুল পহুঁচে।

ৰাম-কৃষ্ণৰ উপনয়ন সংস্কাৰ :- আজি মথুৰাবাসীৰ আনন্দৰ সীমা নাই। কৃষ্ণ-বলৰামৰ অদ্ভুত কাৰ্য্য দেখি নগৰবাসী আনন্দত

ৰাম-কৃষ্ণকো উপনয়ন-সংস্কাৰ : আজি মথুৰা-বাসীৰোঁকা আনন্দ বেহুত হৈ। কৃষ্ণ বলৰামকে অদ্ভুত কাৰ্য্য



ব্রাহ্মণক খেছ দান দিছা বসুদেবে ।

নর্ভকসকল ।

বাম-কৃষ্ণক গর্গে যজ্ঞশূত্র দিছা ।

বশুদেবে ।

আত্মশ্রাবা । বসুদেবে পুরোহিতক আগত লৈ বিধি অনুসারে পুত্র ছুটিৰ উপনয়ন কৰ্ম সমাপন কৰিছে—ব্রাহ্মণক খেছদান কৰিছে । ব্রাহ্মণে আনন্দমনে খেছ লৈ ঘৰমুৱা হৈ যাব ধৰিছে । নটুৱাসকলে খোল-তাল লৈ নানা ভঞ্জেৰে নৃত্য কৰি গীত গাব ধৰিছে । কৃষ্ণ-বলৰামে দণ্ড-কমণ্ডলু হাতত লৈ ব্রহ্মচারী হৈ বিজ্ঞাত্যাস কৰিবলৈ গুৰুগৃহলৈ যাত্ৰা কৰিছে ।

“বিজ্ঞাব উদ্ভব তুমি সৰ্ব্বজ্ঞ সুৰাৰি ।

দিলন্ত গায়ত্ৰী সঞ্জে ভৈল ব্রহ্মচারী ॥” ১১৪৮

দেখক নগরবাসী আনন্দমগ্ন হৈ । বসুদেব পুরোহিতী দ্বাৰা বিধি অনুসার দোনোঁ পুত্ৰীকো উপনয়ন কৰ্ম কৰিছে হৈ । ব্রাহ্মণীকো ধেনুদান কৰিছে হৈ । ব্রাহ্মণ আনন্দ মনসে ধেনু লৈকৰ ঘৰকী অঁৱৰ জা কৰিছে হৈ । নটগণ নানা ভংগীসে নৃত্য কৰি গীত কৰিছে হৈ । কৃষ্ণ-বলৰাম দণ্ড কমণ্ডলু হাতমে লৈকৰ ব্রহ্মচারী হৈকৰ বিদ্যাভ্যাস কৰনিকৈ লৈ গুৰুগৃহকী যাত্ৰা কৰিছে হৈ ।

সান্দৌপনি মুনিৰ ওচৰত বিজ্ঞাত্যাস :—কৃষ্ণ-বলৰামে বিজ্ঞাত্যাস কৰিবলৈ যোৱাৰ সময়ত মাক দৈৱকী আৰু বোহিণীৰ

সান্দৌপনি মুনিৰ পাৰে বিদ্যাভ্যাস : কৃষ্ণ বলৰাম বিদ্যাভ্যাসকৈ লৈ জাতি সময় মাঁ দৈৱকী অঁৱৰ বোহিণীকৈ পাৰে বিদ্যা



बोहिणी । दैरकी । कृष्ण । बाम ।

बाम-कृष्णक सान्दीपनि पढ़ाईछा ।

उचरत विदाय लवलै गैछे । दैरकी-बोहिणी अस्तुःपुवत आसनत बहि आछे । कृष्ण-बलबामे बाउँहातेबे काकृत दणु धारण कवि उपस्थित हल गै । दैरकी-बोहिणीये आगहात आगवट्टाई दि येन पुत्रक सादरे आह्वान कबिछे । कृष्ण-बलबाम सान्दीपनि मुनिब पढाशालिलै गै विधि अनुसारे आठू लै विनीतभावे ठेगात पुथि लै पाठ आवस्तु कबिछे । मुनिये आसनत बहि आगहात तूलि येन शास्त्रब समस्त बहस्य प्रकाश कवि शिक्षा दिव धबिछे ।

लेनके लिए जा रहे हैं । दैवकी रोहिणी अन्तःपुरमें आसनोंपर बैठी हैं । कृष्ण बलराम बाँये हाथसे कंधेपर टाँड लेकर वहाँ आये । दैवकी रोहिणी दाहिने हाथ बढ़ाकर पुत्रोंको मानों सादर आह्वान कर रही हैं । कृष्ण बलराम सान्दीपनि मुनिकी पाठशालामें जाकर विधि अनुसार विनोत भावसे विद्या अध्ययन आरंभ करते हैं । मुनि आसनपर बैठे शास्त्रके सभी रहस्योंको प्रगट करके शिक्षा दे रहे हैं ।

कृष्ण-बलबामब गुरु-दक्षिणा :—चौषष्टि दिनत चौषष्टि-कला शिक्षा शेष हलत कृष्ण-बलबामे गुरुक उचरत विनीत वेशे बहि, विद्यार्थी ब्रह्मचारीब नियम अहूसाबे गुरु-दक्षिणा दियाव उद्देशे गुरुक सुधिले—“गुरुदेव, आपोनाक कि दक्षिणा दिम, लाज नकबि

कृष्ण-बलरामकी गुरुदक्षिणा : चौसठ दिनोंमें चौसठ कलाओंकी शिक्षा समाप्त कर कृष्ण बलराम नियमानुसार गुरु-दक्षिणा देनेके उद्देश्यसे गुरुसे पूछा “गुरुजी, आपको हम क्या दक्षिणा दें ?” तब गुरुजीने भार्याके साथ आलोचना कर उनके



বাম-কৃষ্ণে গুরুত স্মিচ্ছা কি দিব দক্ষিণা।

সান্দিপনি ভাষ্যাসমে মৃতপুত্র মাগিছা।



বাম-কৃষ্ণে গুরুপুত্র আনিবাক যাস্ত ।

বেগেতে কণ্ডক।” তেতিয়া গুরুরে ভার্য্যাবে সৈতে আলোচনা কৰি তেওঁলোকৰ প্ৰভাসত মৰা পুত্ৰক আনি দিয়া ৰূপ দক্ষিণা খুজিলে। কৃষ্ণ-বলবামে তাকেই দিবলৈ স্বীকাৰ কৰি সুন্দৰ বেগী ঘোৰাবে সুসজ্জিত বথত উঠি প্ৰভাসলৈ যাত্ৰা কৰিলে।

प्रभासमें मरि हुए पुत्रोंकी वापिस देनकी दक्षिणा मांगी। कृष्ण बलरामने स्वीकृति देकर सुन्दर तेज घोड़ोंसे सुसज्जित रथपर चढ़कर प्रभास की यात्रा की।



বাম-কৃষ্ণ ।

সাগবে পূজা করিছা কৃষ্ণক ।

সাগবর স্তব :—ভগবান কৃষ্ণ আৰু বলৰাম বথত উঠি গুৰু-পুত্ৰক বিচাৰি গৈ সাগবৰ তীৰত উপস্থিত হল গৈ। সাগবে কৃষ্ণ-বলৰামক পৰম পুৰুষ জানি মূৰ্ত্তি ধৰি গলবস্ত্ৰ হৈ আঠু লৈ ধূপ, দৌপ, নৈবেদ্য দি কবযোবে স্তব কৰিব ধৰিলে।

সাগৰকা স্তবন : ভগবান কৃষ্ণ আৰু বলৰাম ৰথপৰ চড়কৰ গুৰুপুত্ৰকী টুঁড়কৰ সাগৰকী তীৰপৰ হাজিৰ হুএ। সাগৰ কৃষ্ণ বলৰামকী পৰমপুৰুষ জান কৰ মূৰ্ত্তি ধারণ কৰ গলবস্ত্ৰ দেকৰ ঘুটনে টেককৰ ধূপ, দৌপ, নৈবেদ্য দেকৰ হাত্ৰ জোড়কৰ স্তবন কৰনে লগা।

পঞ্চজন্য অসুৰ বধ :—সাগবৰ স্তবত তুষ্ট হৈ ভগবানে গুৰু-পুত্ৰৰ বাতৰি সোধাত পঞ্চজন্য নামে শঙ্খকপধাৰী অসুৰে হৰি নিয়া বুলি কলে। তাকে শুনি কৃষ্ণই সাগবত বুৰ দি সেই পঞ্চজন্যৰ ওচৰ পালে গৈ। কৃষ্ণই অসুৰক ছয়োহাতেৰে খামোচ মাৰি ধৰিলে; তেতিয়া সেই শঙ্খাকৃতি অসুৰেও কৃষ্ণৰ আগভৰিত

পঞ্চজন্য অসুৰকা বধ : সাগৰকী স্তুতিসে সন্তুষ্ট হোকাৰ ভগবানে গুৰুপুত্ৰকী বাৰ্তা পূৰ্ণনেপৰ, পঞ্চজন্য নামক শঙ্খ রূপধাৰী অসুৰ হৰণ কৰ লৈ গয়া সাগৰনে বতলায়া। উসে সুনকৰ কৃষ্ণ সাগৰমেঁ ভুব মাৰকৰ উস পঞ্চজন্যকী পাস পহুঁচে। কৃষ্ণনে অসুৰকী দৌনী হাত্ৰকী পঁজীসে পকড়া, তৌ উস শংখাকৃতি অসুৰনেমী কৃষ্ণকে



পঞ্চভ্রম ।

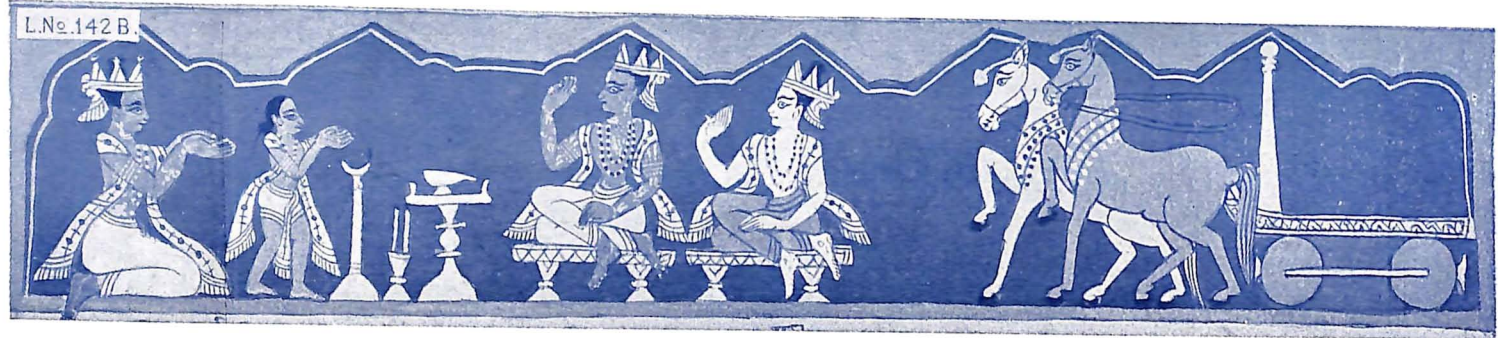
কৃষ্ণ ।

বাম ।

কৃষ্ণ ।

ছয়োহাতেবে খামোচ মাৰি ধৰিলে । কৃষ্ণই তেতিয়া সেই অসুৰক
মাৰি তাৰ শৰীৰৰ শঙ্খ পখালি লৈ বথত উঠিল গৈ ।

दाहिने पावमें दोनो पंजोसे जकड़कर पकड़ा । कृष्ण तब उस
असुरको मारकर उसके बदनके शंखको लेकर रथपर चढ़ गये ।



যমৰাজা বিপ্রহৃত দিছা ।

কৃষ্ণ ।

বাম ।

বিপ্রপুত্র আনয়ন :—কৃষ্ণ-বলৰামে সাংগবত গুরুপুত্রক বিচাৰি
নাপাই যমৰ নগৰী পালে গৈ । যমপুৰী প্ৰবেশ কৰিয়েই কৃষ্ণই

विप्रपुत्रका आनयन : कृष्ण-बलराम सांगरमें गुरुपुत्रको
ढूँढ़कर न मिलनपर यम नगरमें पहुँचे । पुरीमें प्रवेश करतही

পাঞ্চজন্য শঙ্খত ফুক দিলত সকলোবে হৃদয় কঁপি উঠিল। ধর্মরাজ যমে শ্রীকৃষ্ণ বুলি বুজি পাই আথেবেথে আগ্রহেবে আগবঢ়াই আনিলে গৈ। কৃষ্ণ-বলবামে বথ এৰি থৈ যমৰ সভাত বিচিত্র আসনত বহিল। যমে পাণ্ড, অৰ্ঘ আৰু মধুপৰ্ক দি, গন্ধ পুষ্প, ধূপ, দৌপেবে পবম ভক্তিভাৱে পূজা কৰিলে। কৃষ্ণই আগহাত তুলি যমক আশ্বাস দি গুৰুপুত্ৰৰ সংবাদ স্তম্বিলত, যমে বিপ্রপুত্ৰক কৃষ্ণৰ আগত আনি দিলে। বিপ্রপুত্ৰ কৃষ্ণ-বলবামৰ আগত হাতযোৰ কৰি থিয় দি বল।

কৃষ্ণকে পাঞ্চজন্য শংখমিঁ ফুকু দেনেসে সমীকা হৃদয় কাঁপ উঠা। ধর্মরাজ যমने श्रीकृष्णकी जानकर तत्परतासे स्वागत किया। कृष्ण-बलरामको समामिँ विचित्र आसनपर बैठाके यमने पाण्ड, अर्घ्य, मधुपर्क, गंधपुष्प, धूप, दीपके साथ परम भक्तिभावसे पूजा की। कृष्ण हारा गुरुपुत्रका संवाद पूछनेपर यमने विप्रपुत्रको कृष्णके सामने खड़ा कर दिया।



বাম।

কৃষ্ণ।

ব্রাহ্মণে ভাৰ্যাসমে পুত্ৰক ধৰিছ।

কৃষ্ণ-বলবামৰ বিদায় গ্ৰহণ :—কৃষ্ণ-বলবাম যমৰপৰা বিদায় লৈ গুৰুপুত্ৰক আনি গুৰুৰ আগত দিলেহি। গুৰু অতি আনন্দিত হৈ পত্নীৰ সৈতে পুত্ৰক সারট মাৰি মৰমৰ চকুলোবে তেওঁক অভিষিক্ত কৰিছে। কৃষ্ণ-বলবাম ওচৰা-উচৰি কৰি এখন আসনত বহি হাত মেলি যেন গুৰুৰপৰা বিদায় প্ৰাৰ্থনাহে কৰিছে।

कृष्ण-बलरामकी विदाईका ग्रहण : कृष्ण-बलराम यमसे विदा लेकर गुरुपुत्र सहित गुरुके सामने आये। गुरु, पत्नी अत्यंत प्रसन्न होकर पुत्रकी प्रेमाशुश्रींसे सिंचित करने लगे। कृष्ण बलराम पासही एक आसनपर बैठे गुरुसे विदा मांग रहे हैं।



কৃষ্ণ-বাম মথুরাক যাস্ত।

সান্দিপনি। গুরুপুত্র। বিপ্রপত্নী। পুত্র-স্ত্রী।

কৃষ্ণ-বলরামের মথুরা আগমন :—কৃষ্ণ-বলরামে গুরুবপবা বিদায় লৈ বথত উঠি মথুরালৈ যাত্রা কবিলে। কৃষ্ণই পাঞ্চজন্ম শঙ্খ হাতত লৈ বথর আগত বহি বথ চলাবলৈ ধবিলে। বথর পিছফালে মহামুনি সান্দিপনি হাতযোৰ কবি কৃষ্ণ-বলরামক পবম দেৱতা বুলি শিশু হলেও স্তুতি কবিছে। গুরুপুত্র, গুরুপত্নী আৰু আন আন পুৰবাসী স্ত্রীসকলে কৃষ্ণ-বলরামক হাত তুলি আশীৰ্বাদ দি বিদায় দিছে।

কৃষ্ণ-বলরামকা মথুরা আগমন : কৃষ্ণ-বলরাম গুরুসে বিদা হোৱাৰ পৰে চড়বৰ মথুরাৰী যাত্ৰা কৰি। কৃষ্ণ পাঞ্চজন্য শঙ্খকো হাতত লৈকৰ বথ হাঁকনি লগি। উসকে পিছে মহামুনি সান্দিপনি হাত জোড়কৰ কৃষ্ণ বলরামকো পৰম দেবতা জানকৰ শিশু হোৱাৰপৰী স্তুতি কৰ ৰহে হৈ। গুরুপুত্র, গুরুপত্নী স্ত্রীৰ দুসৰী পুৰবাসী স্ত্ৰীয়াঁ কৃষ্ণ-বলরামকো হাত উঠাকৰ আশীৰ্বাদ দেকৰ বিদা কৰ ৰহে হৈ।

কৃষ্ণ-বলরাম মথুরা পালত মথুরাবাসী আনন্দত বিভোৰ হৈ কোনোৱে টাক বজাব ধবিলে, কোনোৱে মৃদঙ্গ বজাব ধবিলে,

কৃষ্ণ বলরামকো মথুরা পহুঁচনিপৰ মথুরাবাসী আনন্দ বিধোৱা হোৱাৰ বাবে বজনি লগি " পুৰস্ত্ৰীয়াঁ আনন্দসে বাবলী হোৱাৰ



বাগসব বজাইছা।

পুববাসী প্রজাসবে আনন্দ কৰি আগ বাঢ়িছা।

বসুদেৱে পুত্রক আখাস কৰিছা। কৃষ্ণসঙ্ঘী।

কোনোৱে বাঁহী ফুকিয়াব ধৰিলে আৰু কোনোৱে বা শঙ্খ
বজাব ধৰিলে। পুব-স্ত্ৰীবিলাকো আনন্দত উদ্‌বাউলী হৈ কৃষ্ণ-
বলবামক বৰি আনিবলৈ আগবাঢ়ি যাব ধৰিলে। বসুদেৱে কৃষ্ণক
পাই সারট মাৰি ধৰিছে, কৃষ্ণয়ো পিতাকক সারটি ধৰিছে।
বলদেৱে কৃষ্ণৰ পিছৰ ফালে থিয় দি আছে।

স্বাগতকৈ লিখি অগি বড়নি লগী। বসুদেৱ কৃষ্ণকো প্ৰেমাংলিগন
কৰিছে হৈ।

কৃষ্ণ-বলবাম গুৰুগৃহৰপৰা ঘূৰি যোৱা দেখি বোহিণীয়ে
বলবামক আৰু দৈৱকীয়ে কৃষ্ণক অতি স্নেহেৰে সারটি ধৰি বুকব

কৃষ্ণ বলবামকো গুৰুগৃহৰপৰা আয়া সুনকৰি বোহিণী বলবামকো
আৰু দৈৱকী কৃষ্ণকো অতি স্নেহেৰে ছাতিয়ে লগা কৰিছে হৈ। আৰু



ৰোহিণী বলৰামক আৰু দৈৱকীয়ে কৃষ্ণক মাৱটি ধৰিছা।

পূৰ শ্ৰীমত।

ভিতৰত যেন স্নান ললে। আন আন পুৰ-শ্ৰীমতকলে কৃষ্ণ-বামক চাবলৈ লৰি লৰি যেন আগহাত দাঙি আশীৰ্বাদ দি বসুদেৱৰ ঘৰলৈ আহিবলৈ ধৰিছে।

শ্ৰী পুৰস্তিয়াঁ কৃষ্ণ বলৰামকো দেখনি লিএ দৌড় দৌড়কৰ বসুদেবকো ঘৰ আনি লগী।

শ্ৰীকৃষ্ণৰ দ্বাৰা উদ্ধৱক ব্ৰজলৈ প্ৰেৰণ :—ভগবান শ্ৰীকৃষ্ণ গুৰুগৃহৰপৰা বিদ্যালভ কৰি অহাৰ পিছত এদিন প্ৰিয় ভক্ত উদ্ধৱৰ সৈতে গোপনে গোপীসকলৰ প্ৰেম-ভক্তিৰ কথা আলচ কৰিছে। কৃষ্ণ এখন আসনত বহিছে আৰু সম্মুখত মাটিত আঠলৈ

শ্ৰীকৃষ্ণকি দ্বাৰা উদ্ধৱক ব্ৰজ প্ৰেৰণ : ভগবান শ্ৰীকৃষ্ণ গুৰুগৃহৰপৰা বিদ্যালভ কৰি আনকি বাদ এক দিন প্ৰিয় ভক্ত উদ্ধৱকো সাথ গোপীসকলকো প্ৰেমভক্তিৰ চৰ্চা কৰিছে। কৃষ্ণ এক আসনত বহিছে আৰু সামনে জমীনত গুটনি টেককৰি ভক্তিৰ সাথ



ৰাজা পৰীক্ষিত ।

শুকদেব ।

মহাৰাজ পৰীক্ষিতে প্রশ্ন কৰিছে শुकদেবে ভাগৱত কৈ গৈছে ।



উদ্ধব ।

কৃষ্ণ ।

সভক্তিরে উদ্ধব বহিছে । কৃষ্ণই মৰমেবে প্রিয় ভক্ত উদ্ধবর হাতত
ধরি আস্তবিক প্রীতি জনাই গোকুললৈ যাবলৈ অনুবোধ কৰিছে ।

“বহুস্থ থানক লাগি তান্ন মাতি আনি ।

হাতত ধৰিয়া হাতে বুলিলন্ত বাণী ॥

মথুরাপুরি সিটো বৃষ্ণিবংশ মাজে ।

নাই মোৰ সখি মুখ্য মন্ত্ৰী তুমি বাজে ॥” ২২২৬

उद्धव बैठे हैं । कृष्ण स्नेहसे प्रिय भक्त उद्धवकी आन्तरिक प्रेमके
साथ गोकुल जानिके लिए अनुरोध कर रहे हैं ।



উদ্ধব ।

কৃষ্ণ ।

বীম ।

ভক্ত উদ্ধবে খিয় হৈ হাতযোৰ কৰি কৃষ্ণৰ আদেশ শুনিলে
আৰু গোপ-গোপীক কৃষ্ণৰ সংবাদ দিবলৈ প্ৰণাম জনাই বথত উঠি
গোকুললৈ যাত্ৰা কৰিলে । সেই সময়ত কৃষ্ণ-বলৰাম ছয়ো হুখন
আসনত বহি আগহাত তুলি যেন উদ্ধবক বিদায় সম্ভাষণহে
জনাইছে । উদ্ধবৰ বথৰ ঘোৰা অতি দ্ৰুতবেগে গোকুল অভিমুখে
যাবলৈ উঠত হৈছে । গাড়ীৰ শব্দ শুনি গাই দামুৰি লব দিছে ।

ভক্ত উদ্ধবনে খড়্গে হীকৰ হাত জোড়কৰ কৃষ্ণক আদেশ শুনা
আৰু গোপ গোপীক কৃষ্ণক সংবাদ দিবলৈ প্ৰণাম কৰি বথত
উঠি গোকুললৈ যাত্ৰা কৰিছে । সেই সময়ত কৃষ্ণ-বলৰাম
ছয়ো হুখন আসনত বহি আগহাত তুলি যেন উদ্ধবক বিদায়
সম্ভাষণহে জনাইছে । উদ্ধবৰ বথৰ ঘোৰা অতি দ্ৰুতবেগে
গোকুল অভিমুখে যাবলৈ উঠত হৈছে । গাড়ীৰ শব্দ শুনি
গাই দামুৰি লব দিছে ।



সৰ্বোদয়-বাজহংস ।

বশোদা ।

নন্দ ।

উদ্ধব ।

গোপী দধি মথিছা ।

উদ্ধর বেগেতে গৈ গোকুল পালে। গোপবাজ নন্দ আৰু বাণী যশোমতীয়ে উদ্ধরক আদৰি আনি আসনত বহুৱালে; আৰু ছুয়ো মাটিতে বহি ধূপ, দীপ আৰু শবাইত নৈবেদ্য তামোল দি যথোচিত সৎকাৰ কৰিলে। উদ্ধর আসনত বহি অতি আপ্যায়িত হৈ আগহাত তুলি অতিৰিক্ত অভ্যর্থনা কৰিব নালাগে বুলিহে যেন কৈছে। ইফালে গোপীসকলে কলহত দধি মথিবলৈ ধৰিছে। পুখুৰীবোৰত ফুলা পদ্ম আৰু চৰিফুৰা বাজহাঁহবোৰে গোকুলৰ শোভা বিস্তাৰ কৰিছে।

উদ্ধব তেজীসে জাকৰ গোকুল পহুঁচে। গোপৰাজ নন্দ আৰু ৰানী যশোমতীনে উদ্ধবকো আদৰসে বুলা কৰ আসনপৰ বৈঠায়া আৰু দুয়ো জমীনপৰহী বৈঠকৰ ধূপ, দীপ আৰু নৈবেদ্য, তাম্বুলাদিসে যথোচিত সৎকাৰ কৰিয়া। উদ্ধব আসনপৰ বৈঠকৰ অত্যন্ত আপ্যায়িত হৈকৰ হাত উঠাৰ মানো “জ্যাডা স্বাগতকী জরুরত নহীঁ হৈ” যহী কহ ৰহি হৈঁ। ইধৰ গোপিয়াঁ ঘড়ীমৈঁ দহী মথ ৰহী হৈঁ। তালাৰীমৈঁ ফুলে হুণ কমল আৰু চৰতে হুণ ৰাজহঁস গোকুলকী শ্ৰীমাকী বড়া ৰহি হৈঁ।



যশোদা।

নন্দ।

উদ্ধব।



যশোদা ।

নন্দ ।

উদ্ধর ।

অতিথি সংকাব হৈ যোরাব পিছত নন্দ আৰু যশোদা দুখন আসনত বহি, আগহাত পাতি আগ্ৰহেৰে উদ্ধরক আসনত বহুৱাই লৈ মথুৰাবাসীসকলব এজন এজনকৈ সকলোবে কুশল বাতৰি সুধিব ধৰিছে। উদ্ধরেও হাত তুলি মথুৰাব সকলো খবৰ কবলৈ আৰম্ভ কৰিছে।

“যাদৱ বংশৰ . কল্যাণ কথাক
উদ্ধর কৈয়ো সহৰে।



অতিথিকা স্বাগত হী জানকি বাট নন্দ অীর যশোদা আয়হসে উদ্ধবসে মথুৱাসিয়োকী এক এক কৰকী সম্বোধনী খুশ-খবৰ পূৰ্ণ
ৰহি হৈ।

পত্নী স্মৃত সমে কুশলে আছন্ত
সখি বসুদেৱ মোৰে ॥” ১২৭৮০



L.No.148 A.

যশোদা ।

নন্দ ।

উদ্ধর ।



L.No.148 C.

গোপীসবে দধিমখন ক'বিছা।

গোকুলত গোপীবিলাকে প্রভাত সময়তে উঠি চোতাল-ঘব পৰিষ্কার কবি গা-মূৰ ধুই শুচি হৈ ধূপ-ধূনা দি কৃষ্ণগুণ গাই ছুজনী ছুজনী গোপীয়ে লগলাগি বহি একোটা কলহত গাখীৰ ভবাই দধি

গোকুলমি গোপিয়াঁ সবেৰেহী উঠকর घर-आँगन साफ कर तन-वदन धोकर पवित्र होकर धूप, धूना देकर कृष्णगुण गा कर दो दो गोपियाँ मिलकर बैठकर घड़ेमें दही भरकर मथनिका आरंभ



পৰীক্ষিত বাজা ।

শুকদেব ।

মথিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে । সূৰ্য্য উদয় হোৱাৰ পিছতে তেওঁলোকে নন্দৰ ছুৱাৰমুখত অতি উজ্জ্বল বথ এখন দেখিবলৈ পালে ।

কর रही है' । सूरज उदय होनेके बादही नन्दके दरवाजेपर अत्यंत उज्ज्वल एक रथ उन्हे दिखाई दिया ।



গোপীসব ।

নন্দ ।

উদ্ধর ।

বথখন দেখাত তেওঁলোকৰ মনত নানা সন্দেহ জন্মিল আৰু পৰস্পৰে নানা আশঙ্কাৰ কথা আলাপ কৰিবলৈ ধৰিলে । এনেতে হৰিদাস উদ্ধৰে কালিন্দীত নিত্যকৃত্য কৰি কৃষ্ণৰ সাজে সজ্জিত হৈ গোপীসকলৰ ওচৰ পালেহি । গোপীবীলাকে কৃষ্ণৰ একান্ত ভক্ত বুলি বুজি উদ্ধৰক বেচি ধৰিলে । উদ্ধৰে বজা নন্দৰ লগত নানা প্ৰকাৰ আলাপ কৰিবলৈ ধৰিলে । গোপীবীলাকে পৰস্পৰে হাত তুলি কৃষ্ণৰ সংবাদ পোৱাৰ ভৱসাত যেন আনন্দত বিভোৰ হৈ পৰিল ।

रथ देखकर उनके मनमें नाना तरहके संदेह पैदा हुए और परस्पर नाना आशंकाओंके बारेके आलाप करने लगीं । इतनेमें उद्धव कालिन्दीमें नित्यकृत्य करके कृष्णके विशसे सज्जित होकर गोपियोंके पास पहुँचे । गोपियोंनि एकान्त भक्त जानकर उद्धवकी घेर लिया । उद्धव राजा नन्दके साथ नाना प्रकारकी चर्चायें करने लगे । गोपियाँ परस्पर हाथ उठाकर कृष्णके संवादके पानिके भरोसेमे मानो आनन्दसे विभीर हो पड़ीं ।



গোপীসব ।

উদ্ধর ।

উদ্ধৱৰ গোপীসকলৰ লগত আলাপ :—নন্দৰ লগত আলাপ শেষ কৰি ভক্ত উদ্ধৱে গোপীবিনাকৰ সৈতে বিৰলত বহি কৃষ্ণ বিষয়ৰ নানাবিধ আলাপ কৰিবলৈ ধৰিলে। গোপীবিনাকেও হৰ্ষ-পুলকিত চকুৰে ভক্তি-প্ৰেমাশ্ৰু বিসৰ্জন কৰি উদ্ধৱত কৃষ্ণৰ নানা কথা শ্ৰুতিব ধৰিলে। উদ্ধৱে হাত তুলি আশ্বাস দি উত্তৰ দিবলৈ ধৰিলে।

উদ্ধৱকা গোপিয়োকী সাথ আলাপ : নন্দকে সাথ আলাপ সমাপ্তকৰ ভক্ত উদ্ধৱ গোপিয়োকী সাথ একান্তমৈ বৈঠকৰ কৃষ্ণকে বাৰিমৈ নানা তৰহকী চৰ্চায়ৈ কৰনি লগি। গোপিয়াঁ মী হৰ্ষসৈ পুলকিত আখোসৈ প্ৰেমাশ্ৰু বিসৰ্জন কৰ উদ্ধৱসৈ কৃষ্ণকী নানা বাৰ্ত পূছনি লগী। উদ্ধৱ হাথ উঠাকৰ আশ্বাসন দেকৰ সমাধান কৰনি লগি।



গোপীসৰ।

উদ্ধৱ।

যমুনা।

গোবৰ্দ্ধন গিৰি।

কালিন্দী।

মহামতি উদ্ধৱে গোপীবিনাকৰ সৈতে কথোপকথন শেষ কৰি ভক্তিৰ স্মৃতিস্তম্ভ-স্বৰূপ গোবৰ্দ্ধন পৰ্বত চাবলৈ গল। লগতে গোপীসবো গল। যমুনাৰ পৱিত্ৰ জলকণাৰে স্মৃশোভিত সেই গোবৰ্দ্ধন পৰ্বত আৰু কালিন্দী হ্ৰদ চাই উদ্ধৱে অপাৰ আনন্দ-বোধ কৰিলে।

মহামতি উদ্ধৱ গোপিয়োকী সাথ বাতচীত সমাপ্তকৰ ভক্তিকে স্মৃতিস্তম্ভ-স্বৰূপ গোবৰ্দ্ধন পৰ্বতকো দেখনি গয়ে। সাথহী গোপিয়াঁমী গয়ী। জমুনাৰ পবিত্ৰ জলকণাৰে স্মৃশোভিত উস গোবৰ্দ্ধন পৰ্বত আৰু কালিন্দী হ্ৰদকো দেখকৰ প্ৰেম-বিভোৰ হী গয়া।



গোপী ।

উদ্ধর ।

গোপী ।

উদ্ধরে গোরক্ষিন পর্বত দর্শন কৰি ঘূৰি আহি গোপীসকলৰ
লগত বহি আকৌ কৃষ্ণ-বিষয়ৰ নানা কথা পাতিলে ।

গোবৰ্ধন পহ্লাডুকা দৰ্শন সমাপ্তকৰ লীট আকৰ গোপিয়াকৈ মাথ
বঁঠকৰ ফিৰ ক্ৰম্বকৈ বৰিমি নানা বাতীকী শুহ কী ।



উদ্ধর মথুরাক যাস্ত ।

নন্দ-যশোদা গোপীসমে উদ্ধরক আগবঢ়াস্ত ।

উদ্ধর মথুরালৈ প্রত্যাবর্তন : — মহামতি উদ্ধরে নন্দ, যশোদা আৰু গোপীসকলৰপৰা বিদায় লৈ বথত উঠি মথুৰা অভিমুখে যাত্ৰা কৰিলে। উদ্ধর বথত উঠিলত, বজা নন্দ, বাণী যশোমতী আৰু অন্যান্য গোপীসকলে উদ্ধরৰ বথৰ পিছে পিছে কিছু দূৰ আগবাঢ়ি যাবলৈ ওলাল।

उद्धवका मथुरामें प्रत्यावर्त्तन : महामति उद्धवने नन्द, यशोदा और गोपियोसे विदा होकर रथपर चढ़कर मथुराकी यात्रा की। उद्धवके रथपर चढ़नेपर राजा नन्द, रानी यशोमती और दूसरी गोपियाँ उद्धवके पीछे पीछे कुछ दूरी तक आये।



উদ্ধর ।

কৃষ্ণ বলরাম ।

উদ্ধর ।

উগ্রসেন ।

ছত্রধৰা ।

কেইবা দিনৰ মূৰত গোকুলৰ খবৰ লৈ উদ্ধৰ আহি মথুৰা পালেহি। উদ্ধৰ বথৰপৰা নামিয়েই পোনতে কৃষ্ণ-বলৰামৰ ওচৰত আঠুলৈ হাতযোৰ কৰি গোকুলৰ সংবাদ কৈছে। কৃষ্ণ-বলৰামে আসনত বহি আগহাত তুলি গোকুলবাসীৰ কুশল বাতৰি সুধিছে। তাৰ পিছত উদ্ধৰ বজা উগ্রসেনৰ ওচৰলৈ গৈ বাজোচিত সম্মান দেখুৱাই কবযোৰে গোকুলৰ খবৰ কৈছে। বজা উগ্রসেন বাজসিংহাসনত বহি আছে; এজনে পিছৰ ফালে ছত্ৰ ধৰিছে। বজাৰ সম্মুখত দ্ৰব্যপূৰ্ণ শৰাই আৰু জনপূৰ্ণ ভূঙ্গাৰ আছে।

কই দিনোঁকি बाद गोकुलकी खबर लेकर उद्धव मथुरा पहुँचि। उद्धव रथसे उतरकर पहली कृष्ण बलरामके पास छुटने ठेककर हाथ जोड़कर गोकुलका संवाद कह रहि हैं। कृष्ण बलराम आसनपर बैठकर गोकुलवासियोंकी खुश-खबर पूछ रहि हैं। उसके बाद उद्धव राजा उग्रसेनके पास जाकर राजोचित सम्मान दिखलाकर करजोड़ कर गोकुलकी खबर कह रहि हैं। राजा उग्रसेन राजसिंहासनपर बैठि हैं; एक पोछेकी तरफसे छत्र पकड़ रहा है। राजाके सामने द्रव्योंसे पूर्ण ठगी और जलपूर्ण गंगासागर है।

